# राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 5] बारहवीं विधान सभा के पंचम सत्र का पहला दिवस [संख्या : 9

शनिवार

11 मार्च, 2006

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे

विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री अध्यक्ष: कृपया शांत रहें।

## स्थगन प्रस्तावों पर अध्यक्षीय व्यवस्था

मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि निम्नांकित स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई है:-

(1) श्री खुशवीर सिंह एवं नौ अन्य सदस्यों की ओर से पाली के वस्त्र उद्योग से फैल रहे जल प्रदूषण के सम्बन्ध में।

स्थगन प्रस्ताव के रूप में अनुमति देने में असमर्थ हूं, फिर भी माननीय सदस्य श्री खुशवीर सिंहजी को दो मिनट में अपनी बात रखने की अनुमति होगी।

(2) श्री हेमाराम चौधरी, सदस्य की ओर से जिला बाड़मेर में अकाल राहत प्रबन्ध नहीं करने व पशु शिविर नहीं खोलने के सम्बन्ध में।

राज्य में अकाल राहत प्रबन्धन के सम्बन्ध में मंत्री द्वारा कल जो वक्तव्य दिया गया था, उसमें अकाल पर विस्तृत चर्चा हुई है और प्रतिपक्ष के सुझाव पर एक समिति का गठन भी कर दिया गया है, अत: पुन: चर्चा का कोई अर्थ नहीं रह गया।

(3) श्री मांगीलाल गरासिया एवं 11 अन्य सदस्यों की ओर से उदयपुर की पंचायत समिति कोटड़ा के विद्यालयों का मिड-डे-मील पोषाहार बेचे जाने के सम्बन्ध में।

यह मोबाइल किसका बज रहा है?

**श्री अमराराम** (धोद): गुर्जर साहब का बज रहा है मोबाइल। (व्यवधान) माननीय मंत्रीजी का यह हाल है तो माननीय सदस्यों का क्या होगा?

**श्री अध्यक्ष:** माननीय मंत्रीजी, जब आसन की ओर से आपको कई बार दोहराया जा चुका है, या तो आप लेकर नहीं आयें या फिर आप इसे बन्द करके लायें (व्यवधान) जब यह बात कही जा चुकी है कई बार, उसके बाद भी आप इसे खुला रखते हैं, उचित नहीं है। (व्यवधान) और मैं जब्त कर लूंगी आइन्दा।

**श्री राजेन्द्र राठौड़ :** जब्त करो साहब, अभी करो साहब। अभी जब्त करो साहब।

**श्री अध्यक्ष:** पी.ए.डी. मिनिस्टर कह रहे हैं कि अभी जब्त करो, यहां लाकर रख दो। (व्यवधान) रख दो यहां लाकर, हां, ये रख देंगे। (व्यवधान) आसन अभी तो पांवों पर है, आसन जब बैठ जाएगा तब आप यहां लाकर रख दीजिये।

**श्री जीतमल खांट** (बागीडोरा): सबकी जेबें चैक की जाएं।

**श्री अध्यक्ष:** जेब की तलाशी की आवश्यकता नहीं है, बन्द करके रखें, उसकी अनुमति है लेकिन यदि किसी की घंटी बोलेगी तो उसका जब्त किया जायेगा। (व्यवधान)

उपरोक्त प्रस्ताव का विषय ऐसा नहीं है कि सदन की पूर्व निर्धारित कार्यवाही को रोककर इस पर विचार किया जाए, अतः अनुमति देने में तो असमर्थ हूं और वैसे भी माननीय सदस्य को बजट पर सामान्य वाद-विवाद के अवसर पर अपनी बात रखने का अवसर मिलेगा।

इससे पहले कि मैं प्रक्रिया के नियम 295 के अन्तर्गत प्राप्त सूचनाओं को पढ़कर सुनाऊं, पर्ची हमेशा ऐसे विषय पर दी जाती है जिसका रीसेंट आकरेंस हो मतलब फौरन ही, कुछ ही समय पहले जो घटना घटी हो और इतनी महत्वपूर्ण घटना हो कि उसके ऊपर अपनी बात सदन में रखनी आवश्यक हो लेकिन मैं यह देख रही हूं कि पर्ची चाहे जिसकी आप लोग उठाकर देते हैं, मैं समझती हूं कि उस पर इस तरह से चर्चा करके सदन का समय है, वह एक तरह से बरबाद तो मैं नहीं कहूंगी, हां, व्यर्थ में गंवा रहे हैं, जबकि बहुत महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा की जा सकती है।

(श्री अध्यक्ष)

# नियम 295 के अन्तर्गत प्राप्त विशेष उल्लेख की सूचनाएं

(1) श्री संयम लोढ़ा, सदस्य की ओर से जिला सिरोही के बरलूट थाना पुलिस द्वारा जावाल के एक व्यापारी को अफीम के मामले में झूठा फंसाने के सम्बन्ध में।

यहां किसी व्यक्तिगत, किसी की भी पैरवी करने के लिए इस सदन में माननीय सदस्य का कुछ भी कहना, मैं उचित नहीं समझती हूं। (व्यवधान)

(2) श्री भरत सिंह, सदस्य की ओर से कोटा सम्भाग में जैविक खाद की मांग नहीं होने के उपरान्त भी ग्राम सहकारी समितियों को वितरित करने के सम्बन्ध में।

(3) श्री शिवजीराम मीणा, सदस्य की ओर से देवली से माण्डल सड़क का निर्माण शीघ्र करवाने के सम्बन्ध में।

(4) श्री वीरेन्द्र बेनीवाल, सदस्य की ओर से सिंचित क्षेत्र के काश्तकारों को आवंटित भूमि की किस्म परिवर्तन के नाम पर अन्तर राशि लिये जाने के सम्बन्ध में।

(5) श्री नवरतन राजोरिया, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र फुलेरा के कालख बांध की पाल पर भीखावास की सिवाय चक भूमि का नियम विरुद्ध किये गये आवंटन के सम्बन्ध में।

(6) श्री बद्रीलाल जाट, सदस्य की ओर से दी मेवाड़ शुगर मिल्स लिमिटेड भूपालगढ़ को बन्द कर दिये जाने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में।

(7) श्री हरिसिंह रावत, सदस्य की ओर से भीम में राजकीय महाविद्यालय एवं राजकीय तकनीकी शिक्षण केन्द्र खोलने के सम्बन्ध में।

(8) श्री मोहन मेघवाल, सदस्य की ओर से जोधपुर के प्रताप नगर क्षेत्र के बालिका विद्यालय में विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय खोलने के सम्बन्ध में।

(9) श्री पुष्पेन्द्र सिंह, सदस्य की ओर से अनुसूचित जाति/जनजाति

(श्री अध्यक्ष)

के गरीब पशुपालकों, भेड़पालकों के बीमित पशुओं का बीमा कम्पनियों द्वारा दावा राशि का भुगतान नहीं करने के सम्बन्ध में।

(10) श्री बाबूसिंह राठौड़, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र शेरगढ़ में कृषि उपज मण्डी यार्ड की स्वीकृति एवं भूमि आवंटन के सम्बन्ध में।

(11) श्री नन्दलाल पूनिया, सदस्य की ओर से तहसील राजगढ़ के ग्राम डिंगली के बालिका विद्यालय में बालकों को भी प्रवेश देने के सम्बन्ध में।

(12) श्री बीरूसिंह राठौड़, सदस्य की ओर से जयपुर विकास प्राधिकरण से मान्यता प्राप्त एक आवासीय कालोनी का सैकड़ों वर्ष पुराना आम रास्ता 61 सब एरिया के सैनिक अधिकारियों द्वारा जबरन बन्द कर देने के सम्बन्ध में।

माननीय सदस्यों को उनके द्वारा दी गई सूचना को पढ़ने की अनुमति होगी।

**श्री जुबेर खान** (रामगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, हम 30-35 माननीय सदस्यों ने एक स्थगन प्रस्ताव लगाया था एक हफ़्ता पहले आपने चार दिन पहले यह व्यवस्था दी थी कि सरकार को भेजा गया है और जवाब आने के बाद व्यवस्था दी जाएेगी। मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि...

**श्री अध्यक्ष** : कौनसा प्रस्ताव? कौनसा प्रस्ताव?

**श्री जुबेर खान** : राजस्थान सरकार के एक केबिनेट स्तर के मंत्री द्वारा 26 जनवरी, 2006 गणतंत्र दिवस के पावन पर्व पर जिस तरह का भाषण कोटा के उम्मेदसिंह स्टेडियम में दिया गया, वह चिंता का विषय है। उस पर आप सरकार से कहिये कि वह अपना जवाब तुरन्त भेजे और आप उसको लिस्ट करिये।

**श्री अध्यक्ष**: आप स्थान ग्रहण करें। यह अभी अभी प्राप्त हुआ है और इसे मैं देख रही हूं और देखने के बाद उस पर कोई व्यवस्था दूंगी। श्री खुशवीर सिंह।

**श्री संयम लोढ़ा** (सिरोही) : माननीय अध्यक्ष महोदय, एक ऐसा महत्वपूर्ण मामला मुझे साढ़े नौ बजे के बाद प्राप्त हुआ है जिसमें पुलिस निदेशालय दूरसंचार ने फिजिकल के लिए लड़के-लड़कियों को बुला लिया जो लिखित परीक्षा में पास हुए थे और वे अपनी 12वीं के एग्जाम को छोड़कर फिजिकल देने के लिए आये और उसके बावजूद उनका फिजिकल लिया नहीं और उनको बाहर निकाल दिया।

**श्री अध्यक्षः** काहे के इन्टरव्यू पर बुलाया?

**श्री संयम लोढ़ाः** यह भर्ती जो निकाली थी पुलिस महानिदेशक ने, मैं उस सम्बन्ध में आपकी आज्ञा से निवेदन करना चाहता हूं।

**श्री अध्यक्षः** पुलिस भर्ती? अच्छा।

**श्री संयम लोढ़ाः** माननीय अध्यक्ष महोदय, पुलिस महानिदेशक कार्यालय, राजस्थान, जयपुर ने 14 जून, 2005 को इस सम्बन्ध में विज्ञप्ति जारी की थी भर्ती के लिए और इस पर बहुत स्पष्ट लिखा था कि इस विज्ञापन के बिन्दु (12) में जो योग्यता लिखी हुई है, पुलिस दूरसंचार के लिए हायर सैकण्डरी विज्ञान मय भौतिकी शास्त्र एवं गणित...

**श्री राजेन्द्र राठौड़ः** अध्यक्ष महोदय, पर्ची भी नहीं है इनकी, इनका स्थगन भी नहीं है, आप काहे पर अनुमति दे रहे हैं? इनकी कोई पर्ची नहीं है, कोई स्थगन नहीं है।

**श्री संयम लोढ़ा** : जिन बेरोजगारों को आपने...

**श्री अध्यक्ष** : ऐसा है कि ये मुझसे चैम्बर में मिले थे।

**श्री राजेन्द्र राठौड़** : अच्छा, आपने अनुमति दे दी है, फिर ठीक है।

**श्री अध्यक्षः** मैंने अनुमति इसलिए दी है कि जो लड़कियां अपना एग्जामिनेशन छोड़कर इन्टरव्यू के लिए आई, उन्हें इस आधार पर मना किया गया कि हमें साइंस वाली नहीं चाहिए। साइंस बायोलोजी वालों का हम इन्टरव्यू नहीं लेंगे, जबकि पहले उन्हें साक्षात्कार के लिए बुला लिया गया। यह इतना महत्वपूर्ण मामला था इसलिए मैंने उन्हें इसकी अनुमति दी है।

**श्री अमराराम** (धोद) : आप क्या उसके खिलाफ हो?

**श्री राजेन्द्र राठौड़** : नहीं, आपने अनुमति दी है तो ठीक है।

# सूचना

## लिखित परीक्षा पास अभ्यर्थियों के शारीरिक परीक्षण से पुलिस (दूरसंचार) निदेशालय का इन्कार

**श्री संयम लोढ़ा** (सिरोही) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि कार्यालय महानिदेशक, पुलिस, राजस्थान ने 14 जून, 2005 को विज्ञापन भर्ती के लिए जारी किया था, इसमें बहुत स्पष्ट 12वें बिन्दु में योग्यता पुलिस दूरसंचार के द्वारा मांगी गई थी- हायर सैकण्डरी विज्ञान मय भौतिकी शास्त्र एवं गणित, अथवा समकक्ष। उसके बाद, माननीय अध्यक्ष महोदय, पुलिस निदेशालय ने 16 अक्टूबर, 2005 को इस सम्बन्ध में परीक्षा आयोजित की और जो लोग इस परीक्षा में पास हो गये, उनको 14 फरवरी, 2006 को पत्र भेजा कि आप शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए 9 मार्च, 2006 को जयपुर आएं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इम्तिहान चल रहे हैं बोर्ड के, इसके बावजूद नौकरी की आस में बड़ी संख्या में बच्चे और बच्चियां उस शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए जयपुर आये। लेकिन 9 मार्च को जो शारीरिक दक्षता की परीक्षा जयपुर में सरकार ने रखी हुई थी उसमें उनको एपीयर होने देने के लिए मना कर दिया। वो बच्चियां उधर एग्जाम से भी चूकीं और यहां नौकरी की आस में आयी थी वो भी नहीं हुआ यह मेरे पास पुलिस महानिदेशक का विज्ञापन मौजूद है जिसमें समकक्ष को अलाउ किया गया था। मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं कि इस संबंध में जिन बच्चों को शारीरिक दक्षता परीक्षा से वंचित किया गया है, विज्ञापन देने के बाद इस आधार पर वंचित किया गया कि वो ...

**श्री अध्यक्ष:** और परीक्षा से भी वंचित कर दिया गया है।

**श्री संयम लोढ़ा:** इसलिए मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसी जिन बच्चियों को वंचित किया गया है उनके लिए सीट आरक्षित रखने की घोषणा करें जिससे उनकी वापस शारीरिक दक्षता परीक्षा ली जा सके और उन बच्चियों की जो योग्यता है उसके आधार पर उनका फैसला किया जा सके। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह है सुमन सांखला पुत्री श्री नाथूलाल सांखला जिसको शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए बुलाया गया था, उसके बावजूद उसको एपियर नहीं होने दिया गया इसमें तमाम विवरण

(श्री संयम लोढ़ा)

उसका मौजूद है और इस तरह वह अकेली बच्ची नहीं है, माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें कम से कम डेढ़-दो दर्जन बच्चे बच्चियां ऐसी हैं जिनको शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए बुलाया गया लेकिन उसके बाद उनको बाहर निकाल दिया गया और इतना ही नहीं, माननीय अध्यक्ष महोदय, जब डी.जी. साहब से मिलने के लिए वो तमाम बच्चे-बच्चियां जा रही थीं तो उनके दुःख पर उनके जले हुए पर, नमक छिड़कने के लिए गुमानसिंह थानेदार ने उनकी जीप का चालान कर दिया। इसलिए, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय गृह मंत्रीजी विराजमान हैं, हमारे नौजवानों के भविष्य का मामला है कि वो एक तरफ तो इम्तिहान से भी चूके और दूसरी तरफ यहां नौकरी का भी फेर पड़ गया, इस संबंध में सरकार की ओर से स्थिति स्पष्ट करें।

**श्री गुलाब चन्द कटारिया** (गृह मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, यह विषय एकदम मेरे सामने आया है तो पूरी डिटेल मेरे पास नहीं है पर जो तथ्य आपने सामने रखे हैं उनको ध्यान में रखते हुए मैं तमाम अपने अधिकारियों के साथ बैठ कर, के यह कहां क्या भूल हुई है क्या गलती हुई है, जो कुछ भी हुआ है उसमें जहां कहीं भी अगर गलती हुई है तो उसको सुधारने में हमको कोई किसी प्रकार का कोई मन में संदेह होने का कारण नहीं है। आपने विषय रखा है। मैं विषय को देखूंगा क्योंकि तुरन्त उठाया तो मेरे पास उसके बारे में डिटेल जानकारी इस समय नहीं है । मैं निश्चित रूप से उसकी जानकारी भी करूंगा और अगर आप आसन से कहेंगे तो सदन में मैं जानकारी के बारे में...

**श्री अध्यक्ष:** 4 बजे आप इस बारे में वक्तव्य दें, क्योंकि ऐसा न हो कि वो बच्चियां परीक्षा से भी वंचित रह जाएं परीक्षा भी न दे पाएं। शिक्षा मंत्री जी, कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा भी न दे पाएं और ये भी कोई परीक्षा न लें, दोनों तरफ से ही चली गईं।

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** मैं सोचता हूं कि इस विषय की जानकारी करके इस सदन को आपने 4 बजे के लिए का है मैं 4 बजे दे दूंगा।

**श्री अध्यक्ष:** ठीक है।

## ओलावृष्टि से फसल को क्षति

**श्री रामनारायण चौधरी** (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, मेरे पास

(श्री रामनारायण चौधरी)

अभी सुबह जिला कांग्रेस कमेटी झालावाड़ से टेलीफोन आया कि हाड़ौती क्षेत्र में इतनी भयंकर वर्षा हुई कि पूरे हाड़ौती क्षेत्र में फसल का भयंकर नुकसान हुआ है, सारी फसल लेट गयी है। और राज्य सरकार की तरफ से अभी तक कोई हलचल नहीं है। मैं आपकी मार्फत अनुरोध करूंगा सरकार से कि वहां वास्तविक स्थिति क्या हुई, कृषि मंत्री जी इस संबंध में जानकारी जब आप ठीक समझें आज या कल दिलवा दें।

**श्री अध्यक्ष:** कृषि मंत्री से चाहेंगे या अकाल राहत मंत्री से चाहेंगे।

**श्री रामनारायण चौधरी:** उधर मेरे ख्याल से बीमा भी होता है तो कृषि मंत्री से दिलवा दें। चाहें राहत मंत्रीजी से दिलवा दें। आपकी इच्छा हो वैसे ही दिलवा दें।

**श्री अध्यक्ष:** राहत मंत्री देंगे इस बारे में।

**श्री अमराराम** (धोद): अध्यक्ष महोदय, कोटा में ही नहीं सीकर में भी भयंकर ओलावृष्टि हुई है जिससे शत प्रतिशत बहुत भयंकर...(व्यवधान)...

**श्री अध्यक्ष:** आपके नेता बोल लिये बाकी क्या रह गया, यह बताइये?

**श्री महादेव सिंह** (खण्डेला): नेता महोदय ने हाड़ौती की बात कही है मैं तो श्रीमाधोपुर तहसील के रींगस कस्बे और श्रीमाधोपुर के पास अति ओलावृष्टि से जो नुकसान हुआ है उसके बारे में....

**श्री अध्यक्ष:** हाड़ौती वाले तो पहुंच सकते हैं नेता के पास और खंडेला वाले नहीं पहुंच सकते अपनी बात कहने के लिए?

**श्री महादेव सिंह :** खंडेला वाले तो खुद ही बैठे हैं तो आपको डाइरेक्ट कह देंगे, नेता महोदय को क्यों कहेंगे। जब मैं आलरेडी यहां बैठा हूं तो मैं डाइरेक्ट आसन से कहूंगा, सरकार से कहूंगा। ...(व्यवधान)...

**श्री सुभाष चन्द्र शर्मा** (कोटपूतली): अध्यक्ष महोदय, मेरे कोटपूतली विधान सभा क्षेत्र में भी कल ओलावृष्टि हुई है भयंकर तरीके से। कोटपूतली, नीमकाथाना में भी भयंकर ओलावृष्टि हुई है और काफी फसल तबाह हो गयी है। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं सरकार से कि इसकी तुरन्त जानकारी करें कि किसानों को क्या रिलीफ दिलवा रहे हैं, कोटपूतली और नीमकाथाना क्षेत्र में भयंकर ओलावृष्टि हुई है।

**श्री नरेन्द्र कुमार नागर** (खानपुर): माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे हाड़ौती क्षेत्र में लगभग डेढ़ इंच बरसात हुई है और फसल तबाह हो गयी है।

**श्री प्रहलाद गुंजल** (रामगंजमंडी): माननीय अध्यक्ष महोदय, हाड़ौती संभाग में पिछले दो दिनों से बारिश हो रही है, सैकड़ों गांवों में ओले गिरे। मेरे विधान सभा क्षेत्र में गांवों की शत-प्रतिशत फसल नष्ट हो गयी है। बारां जिले के छबड़ा, छीपाबड़ौद में पिछले दो दिन से बारिश हो रही है। कोटा जिले के अधिकांशत: गांवों में ओलों के साथ-साथ अंधड़ और बारिश ने इतनी भारी तबाही मचायी है। मैं आपके माध्यम से सरकार से उम्मीद करूंगा, इस विषय पर सरकार को बयान देना चाहिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से राजस्थान सरकार से यह भी मांग करता हूं कि पिछले दिनों हाड़ौती में ओले गिरने से फसल बर्बाद हुई, चार सौ रुपये बीघा का मुआवजा लेकर जब अधिकारी गये तो हाड़ौती के किसानों ने मुआवजा लेने से मना कर दिया कि लाखों रुपये की फसल की बर्बादी के बाद ऊंट के मुंह में जीरा जैसी कहावत प्रचलित करके उस किसान का भला नहीं कर सकते। मैं राजस्थान सरकार से यह मांग करता हूं कि सारे राजस्थान में जिस प्रकार से प्राकृतिक प्रकोप के कारण आपदा आयी है इसमें विशेष पैकेज का प्रावधान करें। वो किसान जिसके खेत पर फसल पकने की कगार पर खड़ी थी, मेड़ पर बैठ कर ...

**श्री अध्यक्ष:** आप दो अन्य सदस्य क्यों खड़े हैं? आप किस बात के लिए खड़े हैं मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

**श्री प्रहलाद गुंजल:** माननीय अध्यक्ष महोदय, कल तक मेड़ पर खड़ा होकर चार दिन बाद की उस फसल को काट कर अपनी बेटी के ब्याह की, अपने बेटे के ब्याह की योजना बना रहा था, आज वो मेड़ पर बैठ करके रो रहा है, आज हमको उस विषय में सोचना पड़ेगा।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, आप स्थान ग्रहण करें। अभी क्या स्टेटमेंट देंगे? आकाश पर बादल हैं, अभी तो और हो सकती है।

**श्री प्रहलाद गुंजल:** माननीय अध्यक्ष महोदय, आज उसके बारे में सोचना पड़ेगा। मैं उम्मीद करता हूं कि सरकार इस बारे में वक्तव्य दे, वक्तव्य केवल इतना-सा नहीं दे कि हम उसका सर्वे कराएंगे, उसकी गिरदावरी कराएंगे ...

**श्री अध्यक्ष:** अभी खतरा टला नहीं है, खतरा मौजूद है।

**श्री प्रहलाद गुंजल:** वाजिब मुआवजा देंगे, प्रावधान के बगैर हर किसान के उस घाव को भर नहीं सकते । आज वो किसान बैठा-बैठा रो रहा है।

**श्री अध्यक्ष:** अंकित नहीं हो।

**श्री बद्रीलाल जाट** (कपासन): ×××

**श्री दाताराम गुर्जर** (खेतड़ी): ×××

**श्री नरेन्द्र कुमार नागर:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि बात हो गयी, एक बार कह दी अब आप क्या कहना चाहते हैं, बाड़मेर से आने वाले माननीय सदस्य? अब आप अपने स्थान पर बैठे रहें। (व्यवधान)

**श्री कन्हैया लाल पाटीदार** (पिड़ावा): ×××

**श्री तगाराम चौधरी:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** श्री खुशवीर सिंह जोजावर। बाड़मेर से आने वाले माननीय सदस्य, मैं आपसे कह रही हूं स्थान ग्रहण कर लें। श्री खुशवीर सिंह जोजावर। नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य, कृपया शांत रहें। आप जोर से क्यों बोल रहे हैं, बोलें तो धीरे बोलिये न।

**डा. सी.पी.जोशी:** क्या करें-जोर से बोलें तो सुनते हो आप।

## स्थगन प्रस्तावों आदि पर चर्चा

### पाली में छपाई की फैक्ट्रियों से निकले दूषित जल का ट्रीटमेंट

**श्री खुशवीर सिंह जोजावर** (खारची): माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद आपने समय दिया। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि सरकार अपने बजट में कई बातें पर्यावरण के बारे में कह रही हैं, लेकिन हकीकत यह है कि आज पाली जिले में जो जिला मुख्यालय है पाली वहां पर लगभग एक हजार छपाई की फैक्ट्रियां लगी हुई हैं हमारे मंत्री महोदय भी पाली से ही हैं, मैं अनुरोध करना चाहूंगा आपके माध्यम से सरकार को कि उन फैक्ट्रियों का जो प्रदूषित जल निकल रहा है माननीय अध्यक्ष महोदय, वो पूरा का पूरा एसिड नदी में प्रवाहित हो रहा है हमारे यहां डैजर्ट है, पिछले दस वर्षों से बारिश नहीं हो रही है, पहाड़ सूखा पड़ा है, सभी नाले सूखे पड़े हैं लेकिन वो नदी जिसमें एसिड आ रहा है वो बारहमासी नदी हो गयी है पचास किलोमीटर तक बारहमासी नदी बह रही है, न जाने वो जल कहां से आ रहा है? ये फैक्ट्रियों वाले कहां से पानी लेकर आ रहे हैं? एक तरफ तो हाहाकार मचा हुआ है... पीने को पानी नहीं है और हकीकत है सभी ट्युब वैल सूख चुके हैं, हैंड पम्प सूख चुके हैं, फ्लोराइड की मात्रा बढ़ गई है लेकिन उन फैक्ट्रियों में पानी न

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

जाने कौनसी नहर से कहां से प्राप्त हो रहा है और वह दूषित पानी यूं की यूं नदी में पूरा का पूरा एसिड नदी में प्रवाहित हो रहा है । अध्यक्ष महोदय, सबसे दुर्भाग्य की बात यह है उसके आगे एक नेहडा बांध करोडों रुपये लगाकर सरकार, बनाया है उस नेहडा बांध में मैं जाकर आया हूं, उस बांध के ऊपर जो पानी भरा हुआ है के ऊपर से अगर कोई पक्षी उड़कर चला जाता है तो वह उस जहर की वजह से अंदर गिर जाता है । जिस प्रकार बरमूडा केनाल ट्रायगल में कोई भी जहाज ऊपर से नहीं निकल सकता है उसी प्रकार हमारे पाली जिले का इतना दूषित बांध बना दिया, जिसके ऊपर से कोई पक्षी उड़कर निकल जाये तो अंदर गिर कर मर जाता है । अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान इस और आकर्षित करना चाहूंगा करोडों रुपये लगाकर सरकार ने ट्रीटमेंट प्लांट बनाये लेकिन ट्रीटमेंट प्लांट नाम मात्र के हैं। आज वे बंद पडे हैं । ट्रीटमेंट प्लांट का एक भी कार्य सुचारू रूप से नहीं चल रहा है । अध्यक्ष महोदय, यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह राजस्थान प्रदूषण नियन्त्रण मंडल ने भी माना है कि पाली ट्रीटमेंट प्लांट राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप काम नहीं कर रहा है । बिना शुद्धीकरण के प्रभावी तेजाबी पानी नदी में बह रहा है ।

**श्री अध्यक्षः** अब आप बात समाप्त करें ।

**श्री खुशवीर सिंह जोजावरः** एक सैकण्ड में कर रहा हूं । 70 किलोमीटर नदी के दोनों तरफ दो-दो, तीन-तीन किलोमीटर कुओं में प्रदूषित हरे और लाल रंग का पानी निकल रहा है तेजाबी पानी बाहर आ रहा है । लोगों को मजबूर होकर वह पानी पीना पड़ रहा है और उससे बीमारियां फैल रही हैं । आज आप अगर उस जल में हाथ डालकर बाहर निकल दें, आपके एक घंटे में स्क्रिन डिजीज हो जायेगी ।

अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार का और माननीय मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि आप उस दूषित जल को तुरन्त रुकवाइये। जो ट्रीटमेंट प्लांट लगे हुए हैं जो सरकार दावा कर रही है कि ट्रीटमेंट प्लांट चल रहे हैं, वे ट्रीटमेंट प्लांट सुचारु रूप से चल रहे हैं तो नदी में पानी प्रवाहित क्यों किया जा रहा है? आप उसको रीयूज क्यों नहीं करते हैं? फैक्ट्रियों में दोबारा आप उसी जल को उपयोग करें तो जो पानी की कमी है उसमें भी फर्क पड़ेगा और यह प्रदूषण भी कम होगा, धन्यवाद ।

**श्री रणवीर सिंह गुढा :** अध्यक्ष महोदय, मैं बिगड़ती कानून व्यवस्था के संदर्भ में आपसे दो मिनट का समय चाहूंगा ।

**श्री अध्यक्षः** श्री भरत सिंह 295 पढ़ेंगे ।

**श्री रणवीर सिंह गुढाः** अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा ...

**श्री अध्यक्षः** अभी नहीं, 295 पढ़ेंगे ।

**श्री रणवीर सिंह गुढाः** अध्यक्ष महोदय, दो मिनट का समय ले रहा हूं।

**श्री अध्यक्षः** अभी नहीं प्लीज, आप मेहरबानी करके स्थान ग्रहण कर लें । 295 चल रहा है ।

**श्री रणवीर सिंह गुढाः** अध्यक्ष महोदय, सुरजगढ़ में बारात के साथ मारपीट हुई है ।

**श्री अध्यक्षः** श्री भरत सिंहजी ।

# नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख

## जैविक खाद का अवांछित वितरण

**श्री भरत सिंह (दीगोद):** अध्यक्ष महोदय, मैं कार्य संचालन संबंधी नियम 295 के तहत आपका ध्यान  कोटा संभाग में सहकारी विभाग के माध्यम से निजी जैविक खाद विक्रेताओं को लाभ प्रदान करने हेतु मांग नहीं होने के उपरान्त भी रुपये 52,04,765/- राशि का जैविक खाद ग्राम सेवा सहकारी समितियों को वितरण करने हेतु बाध्य करने की ओर आकर्षित करना चाहूंगा ।

अध्यक्ष महोदय, कोटा संभाग में सहकारी विभाग की उच्च स्तर पर की गई धांधली व कमीशन प्राप्त करने की नीयत से सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को बी कम्पोनेन्ट के तहत अन्य रासायनिक खाद के साथ जैविक खाद लेने के लिये बाध्य किया गया है । कृषि के बाजार में अनेक निजी कम्पनियां विभिन्न नाम व ब्राण्ड से बाजार में उतरी हैं । सहकारी विभाग में उच्चतम स्तर पर कमीशन प्राप्त करने की नीयत से किसी प्रभावशाली व्यक्ति ने राजफैड के महाप्रबन्धक (कृषि आदान) के माध्यम से जून, 2006 में पत्र लिख क्षेत्रीय  कार्यालय राजफैड, कोटा व क्रय विक्रय समितियों का उपयोग करके कोटा संभाग में 52,04,785/- रुपये का जैविक खाद का वितरण वर्ष 2005-06 में किया है । जहां इस खाद का भुगतान

(श्री भरत सिंह)

राजफैड द्वारा निजी कम्पनियों को कर दिया गया है, वहीं बिना किसानों की मांग के मंगाया गया यह खाद आज भी कोटा संभाग की कई ग्राम सेवा सहकारी समितियों व क्रय-विक्रय समितियों के गोदामों में पडा हुआ है । जिन ग्राम सेवा सहकारी समितियों में खाद किसानों को बेचा गया है वहां भी किसानों की इच्छा के विपरीत बी कम्पोनेंट के साथ इस खाद को लेने पर बाध्य किया गया है । इस प्रकार सहकारी विभाग में उच्च पदासीन लोगों ने अपने लाभ हेतु प्रदेश के किसानों को व सहकारी समितियों की आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित किया है। कोटा संभाग में क्रय विक्रय समिति सांगोद, अन्ता, इटावा, सुल्तानपुर, बारां, रामगंमण्डी, छबडा, केशोरायपाटन व कोटा के माध्यम से 52,04,765 रुपये का खाद वितरण किया गया है । इस प्रकरण की शिकायत संभागीय आयुक्त कोटा को 'काडा' की बैठक में भी की गई थी व संभागीय आयुक्त ने उपरोक्त विषय पर सहकारिता विभाग जयपुर को जांच हेतु लिखा गया है । जांच क्योंकि सहकारी विभाग से ही संबंधित है व उसी के उच्च अधिकारियों को जांच करने हेतु लिखा गया है तो जांच के क्या परिणाम निकलेंगे, यह विचारणीय है। प्रश्न जैविक खाद की उपयोगिता या गुणवत्ता का नहीं है, प्रश्न यह है कि क्या सहकारी विभाग किसी निजी व्यवसाय को बढ़ोतरी प्रदान करने हेतु इस प्रकार से किसानों को बाध्य कर सकता है ।

**श्री अध्यक्ष:** आपने शायद इसको वापस पढ़ा, नहीं क्योंकि आपके फीगर्स में फर्क है । आपने देने के बाद इसको पढ़ा नहीं है । ठीक है विराजिए। पढ़िये आप इसे जरा, एक जगह 85 है और एक जगह 65 है । श्री शिवजीराम मीणा ।

## देवली से माण्डल सड़क निर्माण

**श्री शिवजीराम मीणा** (जहाजपुर): अध्यक्ष महोदय, मैं विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख करना चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियम 295 के अंतर्गत विशेष उल्लेख द्वारा ऐसा विषय सदन में उठाना चाहता हूं जो अत्यन्त लोक महत्व का है । भीलवाडा जिले की मुख्य सड़क देवली (टोंक) से माण्डल तक वाया जहाजपुर, शाहपुरा, बनेड़ा होते

(श्री शिवजीराम मीणा)

हुए राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या-79 को मिलाती है । इस सड़क के देवली से जहाजपुर का भाग एमडीआर-7, जहाजपुर से शाहपुरा का भाग राज्य राजमार्ग-39 एवं शाहपुरा से मांडल तक का भाग राज्य राज मार्ग-12 के नाम से जाना जाता है । इस मार्ग पर जयपुर, टौंक एवं कोटा से अहमदाबाद, मुम्बई तथा सवाई माधोपुर से बड़ौदा के लिए गैस टैंकर तथा चित्तौडगढ, जहाजपुर, मांडलगढ़, बिजौलिया एवं सावर से खनिजों का परिवहन किया जाता है। जिससे बहुतायत में भारी वाहनों का आवागमन रहता है ।

इस सड़क पर वर्तमान समय में लगभग सात हजार छोटे बडे वाहन गुजरते हैं जिसके अनुसार वर्तमान सड़क की 7 मीटर की चौड़ाई बढाकर उसकी मोटाई भी बढाई जाना आवश्यक है ।

यहां पर मैं यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि राज्य सरकार के ओदश क्रमांक एफ.2 (68) पीडब्ल्यू/एएस/2000/डी-251 दिनांक 22.9.2005 के द्वारा इस सड़क के निर्माण एवं विकास हेतु राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम लिमिटेड को स्थानान्तरित की गई थी । परन्तु निगम द्वारा इस सड़क की वायबिलिटी एवं फिजिबिलिटी नहीं होने के आधार पर निर्माण एवं विकास कार्य प्रारम्भ नहीं किया गया है । जबकि सड़क के विकास के पश्चात् ही वाहनों का आवागमन बढ़ेगा और मार्ग की वायबिलिटी और फिजिबिलिटी हो सकेगी ।

अत: मेरा सरकार से आग्रह है कि राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम लिमिटेड, जयपुर के माध्यम से देवली से मांडल सड़क का निर्माण शीघ्र कराने की व्यवस्था करावें ।

**श्री अध्यक्ष:** श्री वीरेन्द्र बेनीवाल ।

## सिंचित क्षेत्र के काश्तकारों से किस्म परिवर्तन के नाम से अन्तर राशि की वसूली

**श्री वीरेन्द्र बेनीवाल** (लूणकरणसर): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रक्रिया के नियम 295 के तहत सिंचित क्षेत्र के काश्तकारों को आवंटित भूमि की किस्म परिवर्तन के नाम पर अन्तर राशि लिए जाने के संबंध में विशेष उल्लेख करना चाहूंगा ।

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

अध्यक्ष महोदय, बीकानेर जिले में कंवरसेन लिफ्ट एवं अन्य नहरी क्षेत्र के काश्तकारों को उपनिवेशन विभाग द्वारा भूमि का सर्वे कर कमांड या अनकमांड भूमि का आवंटन किया गया था । आवंटन के बाद से काश्तकारों द्वारा आवंटित भूमि के सिंचित रकबे के अलावा ऊबड़-खाबड़ व असिंचित भूमि को अपने अनेक वर्षों के कठोर परिश्रम एवं अपार धन व्यय करके समतल कर अनकमांड से कमांड योग्य बनाया गया । जब उक्त काश्तकारों द्वारा अपनी आवंटित भूमि के खातेदारी अधिकार पत्र लेने हेतु राजस्व विभाग के कार्यालय में सम्पर्क किया जाता है तो ऐसे में विभाग द्वारा अनकमांड से कमांड हुई भूमि की किस्म परिवर्तन के नाम पर प्रति बीघा अंतर राशि की मांग की जाती है ।

इसी क्रम में मेरा आपसे निवेदन है कि जिस अनकमांड रकबे को काश्तकार द्वारा अपनी मेहनत से तथा स्वयं का धन व्यय करके सिंचाई योग्य बनाया गया है, ऐसे रकबे की किस्म परिवर्तन (सिंचित से असिंचित) के नाम पर अंतर राशि की मांग करना न सिर्फ अव्यावहारिक है बल्कि गरीब काश्तकारों पर अन्याय है ।

अतः इस हेतु मेरा आपसे निवेदन है कि काश्तकारों को आवंटन के समय जिस मूल्य पर भूमि आवंटित की गई थी, उसी आधार पर उन्हें खातेदारी अधिकार प्रदान किए जाएं ।

**श्री अध्यक्षः** श्री नवरतन राजोरिया ।

## फुलेरा के कालख बांध की पाल पर भीखावास की सिवाय चक भूमि का नियम विरुद्ध आबंटन

**श्री नवरतन राजोरिया** (फुलेरा): अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया के नियम 295 के तहत विधान सभा क्षेत्र फुलेरा के कालख बांध की पाल पर भीखावास की सिवाय चक भूमि के नियम विरुद्ध किये गये आवंटन की ओर माननीय राजस्व मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

कालख बांध सिंचाई विभाग के अधीन है, निर्माण सन् 1883 में हुआ था, इस बांध की भराव क्षमता 730 एम.सी.एफ.टी. है। इस बांध से लगभग 19510 एकड़ भूमि में सिंचाई की जाती है। बांध की पाल ग्राम भीखावास के खसरा नं. 141 से 146 व 153 के अंतर्गत आती है।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, 1883 में निर्माण हुआ इसका ?

**श्री नवरतन राजोरिया:** जी, साहब। 1883 में, बहुत पुराना बांध है।

**श्री अध्यक्ष:** 1883 की बात कहां से आई?

**श्री नवरतन राजोरिया:** अंग्रेजों के समय में निर्माण हुआ और काफी पुराना बांध है। जयपुर जिले का सबसे बड़ा बांध था।

**श्री अध्यक्ष:** जंच नहीं रही बात, समझ में नहीं आई बात मेरे तो।

**श्री नवरतन राजोरिया:** खसरा नं. 143 सिंचाई विभाग के नाम दर्ज है जिस पर विभाग की चौकी बनी हुई है, खसरा नं. 142 बांध की ऊपरी पाल है। खसरा नं. 141,144,145,146,153 जो कि सिवाय चक भूमि थी, का आवंटन किसी निजी व्यक्ति के नाम दर्ज कर दिया गया है जबकि उक्त खसरे बांध की पाल के अंतर्गत आता है। खसरा नं. 144, 145 पर निजी व्यक्ति द्वारा पेड़ों की कटाई कर पाल को जोत दिया गया, जिससे पाल की ऊंचाई कम हो गई है। इसके फलस्वरूप पूर्ण भराव क्षमता के पानी आ जाने पर बांध को खतरा उत्पन्न होने की स्थिति पैदा हो गई है।

अतः आपके माध्यम से मेरा माननीय राजस्व मंत्रीजी से निवेदन है कि भीखावास ग्राम के खसरा नं. 141,144,145,146,153 जो कि कालख बांध की पाल के हिस्से हैं, इन पर खेती अथवा किसी भी अन्य प्रकार का कार्य करने से बांध की सुरक्षा को खतरा पैदा हो सकता है, अतः इन सभी खसरा नं. का आवंटन जो अन्य व्यक्ति को कर दिया गया है को राज्य हित में रद्द करें। साथ ही इस तथ्य की भी जांच कराएं कि बिना सिंचाई विभाग की अनुमति के आवंटन में राजस्व विभाग के कौन-कौन अधिकारी लिप्त हैं। उनके खिलाफ भी जांच कराकर सख्त कार्यवाही कराने की कृपा करें, धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष:** श्री बद्रीलाल जाट।

## मेवाड़ शुगर मिल्स लि. भूपालगढ़ को बन्द किये जाने से उत्पन्न स्थिति

**श्री बद्रीलाल जाट** (कपासन): माननीय अध्यक्ष महोदय नियम 295 के तहत सदन का ध्यानाकर्षण करने के संबध में निवेदन है कि विधान सभा क्षेत्र कपासन में प्रमुख समस्या दी. मेवाड शुगर मिल्स लि. भुवालसागर को बन्द कर दिये जाने से उत्पन्न हुई। क्षेत्र की कीर्ति को बढ़ाने वाली ये धरती गन्ने की खेती व अपने सत्व बल से समृद्ध थी। लेकिन पूर्व के कुछ वर्षों में

(श्री बद्रीलाल जाट)

अल्पवृष्टि के कारण गन्ने में कमी आने लगी थी, ऐसी स्थिति में मिल मालिक अरूण कुमार ढाढनिया ने उसी समय से ही गन्ने की पिराई करना तो बन्द करा ही दिया था, साथ ही गन्ने की बुवाई को भी प्रोत्साहन देना बंद कर दिया, जिससे क्षेत्र के किसानों के हितों के साथ भारी अन्याय हुआ है। साथ ही मजदूरों एवम् मिल के कर्मचारियों के साथ भी भारी कुठाराघात हुआ है। उन्हें माह जून 2001 से बाद का वेतन आज तक नहीं दिया गया है। जिससे गरीब मजदूरों एवम् कर्मचारियों के परिवारजनों के भूखो मरने की नौबत आ गई है। उक्त मिल मालिक कर्मचारियों को 56 महीनों का वेतन नहीं देना चाहता है तथा वेतन नहीं देकर उनको स्वेच्छा से त्यागपत्र प्रस्तुत करने हेतु बाध्य कर रहा है। अतः मजदूरों एवम् कर्मचारियों की पुकार के रूप में सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि कर्मचारियों का अब तक का 56 माह का वेतन दिलाने की कृपा करें। साथ ही मिल की सम्पति को सरकार के कब्जे में लेने के आदेश प्रदान करावें ताकि गन्ने की बुवाई समय पर पुनः चालू करवा कर सहकारिता आधार पर मिल को चालू करने की सम्भावना को जीवन्त किया जा सके।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूंगा सरकार को, आदरणीय उद्योग मंत्रीजी हमारे चित्तौड़ से ही हैं, हमें गर्व है कि उनके माध्यम से यह समस्या अतिशीघ्र सुलझने का प्रयास होगा। मेवाड़ शुगर मिल का जो कारखाना है उसमें मोलासिस लगभग....

**श्री अध्यक्षः** आपने 295 पढ़ दिया, अब आप और क्या कह रहे हैं ?

**श्री बद्रीलाल जाटः** नहीं, उसका हल बता रहा हूं।

**श्री अध्यक्षः** हल का नहीं होता है, 295 में केवल पढ़ना होता है।

**श्री बद्रीलाल जाटः** अध्यक्ष महोदय, लगभग दो से तीन करोड़ के बीच मूल्य का मोलासिस वहां पड़ा हुआ है। अंतः 56 महीने हो गए हैं और उनकी मूलभूत आवश्यकताएं, बिजली, पानी मिल मालिक ने बंद कर रखी हैं।

**श्री अध्यक्षः** ठीक है। उद्योग मंत्रीजी आप ध्यान दे लेना थोड़ा । श्री हरिसिंह रावत।

## भीम में राजकीय महाविद्यालय व तकनीकी शिक्षण केन्द्र

**श्री हरिसिंह रावत** (भीम): माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान विधान

(श्री हरिसिंह रावत)

सभा के प्रकिया एवं कार्य संचालन नियम 295 के माध्यम से निवेदन है कि मेरा विधान सभा क्षेत्र आज भौगोलिक, सामाजिक एवम आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र है। एवम् पूर्व में देश आजाद हुआ तब से केवल कांग्रेस ने ही राज्य किया था, जिसकी वजह से शैक्षणिक, आर्थिक एवम सामाजिक दृष्टि से विकास कार्यों की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया गया।

महोदय, मेरा विधान सभा क्षेत्र जहां रावत बाहुल समाज रहता है जो भौगोलिक, आर्थिक दृष्टि से अन्य पिछड़ा वर्ग में आता है एवम् क्षेत्र में कृषि भूमि केवल नाम मात्र 1 या 2 बीघा जमीन भी एक परिवार के हिस्से नहीं आती है। मगरा क्षेत्र होने से क्षेत्र की आर्थिक स्थिति भी बहुत कमजोर है। वहां की जनता अपने परिवार के भरण पोषण के लिए केवल मजदूरी या सरकारी या गैर सरकारी नौकरियों पर निर्भर है जिसके लिए वहां की जनता या तो दिल्ली या गुजरात में मजदूरी कर अपना जीवन यापन करती है।

महोदय, आज हमारी सरकार शिक्षा के प्रति काफी जागरूक होते हुए निजी संस्थाओं को आमंत्रित कर रही है, जिसके तहत कई निजी संस्थाएं आगे आई हैं, एवम कई जगहों पर निजी विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं। महोदय, लेकिन मेरा रावत बहुल क्षेत्र ओ.बी.सी. वर्ग में आता है जो आर्थिक, सामाजिक एवम शैक्षणिक दृष्टि से अत्यन्त ही पिछड़ा है, जहां की जनता निजी क्षेत्र में कालेज या तकनीकी शिक्षण संस्था के बारे में सोचे यह आसमान से तारे तोडने वाली बात होगी अंतः न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी, अर्थात् यह योजना मात्र कल्पना रह जाएगी।

महोदय, मेरा विधान सभा क्षेत्र जिला मुख्यालय से 110 किलोमीटर दूर अंतिम छोर पर स्थित है एवम् 70-80 किलोमीटर की परिधि में कोई महाविद्यालय, तकनीकी संस्थान नहीं है जिसके कारण मेरा क्षेत्र शैक्षणिक, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, लेकिन आज हमारी सरकार से आस बंधी है कि इस बजट में राजकीय महाविद्यालय एवम तकनीकी संस्थान खोलकर वसुन्धरा विकास महाकुंभ में सम्मिलित कर भीम विधान सभा क्षेत्र की जनता को तोहफा दिया जाएगा। राज्य सरकार द्वारा राजकीय महाविद्यालय एवम राजकीय तकनीकी शैक्षणिक संस्थान खोलकर अनुग्रहित करावें, धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष:** श्री मोहन मेघवाल।

## जोधपुर के प्रताप नगर क्षेत्र के बालिका विद्यालय में विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय

**श्री मोहन मेघवाल** (सूरसागर): अध्यक्ष महोदय, नियम 295 के द्वारा मैं आपके मार्फत राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री का धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं कि इन्होंने अपने दो वर्ष के अल्पकाल में राजस्थान प्रदेश में ऐसे कार्य किये हैं जो आजादी के बाद कभी नहीं हुए। निश्चित ही माननीया मुख्य मंत्री महोदया की यह सोच सर्वथा सराहनीय है कि जिस प्रदेश में शिक्षा विशेषत: महिला शिक्षा एवं रोजगार नहीं होगा, उस प्रदेश के समग्र विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इसी सोच को केन्द्र में रखते हुए इन्होंने राज्य में हजारों बेरोजगारों को रोजगार प्रदान किया है एवं राज्य के दूरस्थ गांव व ढाणियों, शहरी क्षेत्रों एवं अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के क्षेत्रों में निवास करने वाले लाखों परिवारों को अच्छी शिक्षा देने के लिहाज से कई महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक निर्णय लिये हैं। कुशल वितीय प्रबंधन, जल संचयन अभियान, समग्र ग्रामीण विकास के लिए सड़कों का जाल तथा स्वस्थ हरित विकसित राजस्थान का सपना संजोते हुए जो शिक्षा संबल महा-अभियान चलाया गया, वह सराहनीय है। इन्हीं दूरगामी निर्णयों का परिणाम आज हमारे सामने आया है कि पिछली सरकार जो कार्य अपने पूरे 5 वर्ष के कार्यकाल में नहीं कर सकी वही कार्य इनके नेतृत्व में दो वर्षों में ही पुरे हो गये हैं एवम सरकार अपने कल्याणकारी व विकासोन्मुखी कार्यक्रमों को आगे बढ़ाती ही जा रही है।

माननीया मुख्य मंत्रीजी की प्रमुख प्राथमिकताओं में राज्य में शिक्षा का विकास है। सबको शिक्षा के उद्देश्य से की गई पहल के तहत ही विगत दो वर्षों में लगभग एक करोड़ 15 लाख विद्यार्थियों को 126 करोड़ रुपये कीमत की पाठ्य पुस्तकें वितरित की गयीं। लगभग साढे अड़तीस हजार शिक्षकों की नियुक्तियां पारदर्शिता को प्राथमिकता देते हुए की गयी है जो वास्तव में काबिले तारीफ है। माननीया मुख्य मंत्री महोदया ने राज्य कर्मचारियों के आश्रितों, बाहरी सहायता से संचालित परियोजनाओं, माध्यमिक शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा, कालेज शिक्षा, महिला शिक्षा, विशेषत: अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की शिक्षा, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक में अध्ययन करने वाली ग्रामीण छात्राओं के लिए आने-जाने हेतु नि:शुल्क बस पास की सुविधा दी, घुघरी के अतिरिक्त अन्य स्वाद भी विद्यालयों में प्रारम्भ किये। इसके अतिरिक्त राज्य के विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विकास, नव

(श्री मोहन मेघवाल)

विद्यालयों का सृजन व क्रमोनयन आदि कई ऐसे कार्य किए हैं जिनकी आज राज्य ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर सराहना हो रही है। इस हेतु अध्यक्ष महोदया, मैं आपके मार्फत माननीय शिक्षा मंत्री महोदय को भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं जिन्होंने माननीय मुख्य मंत्री महोदया की नीतियों का पालन करने में उनका कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग किया।

मैं माननीय मुख्य मंत्री महोदया एवं शिक्षा मंत्रीजी से यह निवेदन करना चाहता हूं कि जोधपुर शहर का जो निरन्तर विस्तार हो रहा है उसमें अधिकतर मेरा विधान सभा क्षेत्र ही प्रभावित हो रहा है। इसके अतिरिक्त मेरे विधान सभा क्षेत्र के शहरी भाग में बहुत बड़ी संख्या में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के परिवारों का निवास है। आपके ही प्रयासों से प्रतापनगर क्षेत्र में कार्यरत बालिका विद्यालय को अभी हाल ही में क्रमोन्नत किया गया है जिसमें अध्ययन करने वाली बालिकाओं में लगभग 80-85 प्रतिशत छात्राएं अनुसूचित जाति/जनजाति की हैं। इस विद्यालय के अतिरिक्त हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र में चल रहे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिवांची गेट में भी मध्यम वर्ग के छात्र-छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं। इन विद्यालयों में आज भी वाणिज्य व विज्ञान विषय नहीं होने से या तो इन गरीब व मध्यम वर्गीय परिवार के छात्र/छात्राओं को अन्यत्र दूरस्थ विद्यालयों में जाना पड़ता है अथवा इन्हीं विद्यालयों में मजबूरन कला वर्ग में प्रवेश लेना पड़ रहा है। यदि इन विद्यालयों में वाणिज्य व विज्ञान विषयों की सुविधाएं स्वीकृत कर दी जाती हैं तो यहां गरीब, मध्यमवर्गीय व अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्र व छात्राओं को काफी फायदा होगा । मैं उम्मीद करता हूं कि माननीया मुख्य मंत्री महोदया व शिक्षा मंत्री महोदय इस सम्बन्ध में उचित निर्णय आगामी शिक्षा सत्र से पूर्व लेकर यह सुविधा नव शिक्षा सत्र में प्रारम्भ कर देंगे। धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, 295 के लिए केवल ढाई सौ शब्द ही लिखे जाते हैं, आपने बहुत बड़ा लिख दिया था। खैर, आज पढ़ लिया लेकिन भविष्य में ध्यान रखियेगा। यह केवल ढाई सौ शब्दों में ही लिखा जाना चाहिए। (व्यवधान) बात जो आपको यहां बतानी है, वह तो 250 शब्दों में भी बतायी जा सकती है। Brevity is the soul of wit, यह है। (व्यवधान) हर आदमी ब्रीफ नहीं हो सकता है। मैंने कहा न, brevity is the soul of wit.

**श्री रामनारायण चौधरी:** आपका आदेश पालनीय है लेकिन, मान्यवर, आपके दफ्तर में इसकी एडिटिंग हो जानी चाहिए, काट देना चाहिए बड़ा हो तो।

**श्री अध्यक्ष:** नहीं, ऐसा नहीं किया जा सकता है। बिलकुल नहीं काटा जाता। प्रतिपक्ष के माननीय नेता, जैसा आप देते हैं, यथावत रखा जाता है और वैसे ही पढ़ा जाता है। यह आपको गलतफहमी नहीं होनी चाहिए।

**श्री रामनारायण चौधरी:** उनको रिटर्न कर दो जिनके 250 से ज्यादा शब्द हों। परफिर बाद में वे पढ़ जाएं तो यहां आसन से टोकाटोकी मत करें।

**श्री अध्यक्ष:** फिर आपके जैसे माननीय सदस्य कहने लग जाएंगे कि हमारा लिखा हुआ काट दिया। वह स्वयं ही करें अपना ब्रीफ। श्री पुष्पेन्द्रसिंह राणावत।

जो लम्बा लिखें, उनको कहा करें कि थोड़ा शार्ट करें। कहा करें उन्हें।

**श्री हेमाराम चौधरी:** यह 295 समस्या समाधान के लिये है या प्रशंसा करने के लिये? (व्यवधान) दोनों के लिये।

**श्री अध्यक्ष:** यह दोनों के लिये है। यह सदन में अपनी अभिव्यक्ति के लिये है, जैसा आप चाहें। प्रतिपक्ष किसी चीज का समर्थन करता है तो आप उसका विरोध करते हैं, यह तो मर्जी की बात है।

श्री पुष्पेन्द्र सिंह राणावत, नहीं हैं ? ठीक है।

**(अनुपस्थित)**

श्री बाबूसिंह राठौड़।

## शेरगढ़ में कृषि उपज मण्डी यार्ड की स्वीकृति

**श्री बाबूसिंह राठौड़** (शेरगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रक्रिया के नियम 295 के तहत लेख है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र के किसानों द्वारा ट्यूबवैल अत्यधिक मात्रा में खुदवाये गये हैं, अत: खरीफ फसल के बाद रबी की फसल का उत्पादन अच्छी मात्रा में किसानों द्वारा किया जा रहा है, वैसे तो सभी प्रकार की जिन्सों का उत्पादन होता है जिसमें मुख्यत: बाजरा, मोठ, ग्वार, अरण्डी, गेहूं, सरसों, रायड़ा, जीरा मिर्च एवं मूंगफली है। किन्तु किसानों द्वारा उत्पादित फसलों को बेचने हेतु स्थानीय मण्डी नहीं होने के कारण उनका उचित मूल्य किसानों को स्थानीय व्यापारियों से नहीं मिलता है। इस कारण किसानों को अपनी फसल बेचने हेतु अन्यत्र कृषि मण्डी अर्थात जोधपुर, ओसियां, फलौदी जाना पड़ता है। इस प्रकार फसल परिवहन पर व्यय होने के

(श्री बाबूसिंह राठौड़)

कारण किसानों की फसलों की लागत बढ़ जाती है एवं उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

उपरोक्त परिस्थितियों के कारण शेरगढ़ विधान सभा क्षेत्र में एक मण्डी सब यार्ड की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसकी मांग भी किसानों द्वारा बार-बार की जा रही है। इस विधान सभा क्षेत्र में बालेसर एवं देचु हैं जो कि शेरगढ़ कृषि उत्पादन के केन्द्र हैं। अत: जोधपुर-जैसलमेर के मुख्य मार्ग पर बालेसर अथवा देचु के आस-पास कृषि मण्डी यार्ड बनाने की अनुमति जारी करवाने का श्रम करें। धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष:** श्री नन्दलाल पूनिया।

## राजगढ़ के ग्राम डिंगली के बालिका विद्यालय में बालकों को भी प्रवेश

**श्री नन्दलाल पूनिया** (सादुलपुर): माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान विधान सभा के कार्य संचालन के नियम 295 के तहत निवेदन है कि ग्राम डिंगली में बालिका उच्च प्राथमिक शाला है जहां पर आठवीं तक की लड़कियां शिक्षा ग्रहण करती हैं। आठवीं तक की शाला में छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाता । इस गांव में एक प्राथमिक शाला है जिसमें लड़के एवं लड़कियां पढ़ते हैं। पांचवीं परीक्षा पास करने के बाद कक्षा 6 से 8 तक पढ़ने के लिये लड़कों को 5-6 किलोमीटर दूर जाने पर काफी समस्या होती है, जबकि गांव में ही मिडिल स्कूल है। (व्यवधान) अत: मेरा आपके माध्यम से शिक्षा मंत्रीजी से निवेदन है कि या तो ग्राम डिंगली राजगढ़ (चूरू) में एक मिडिल स्कूल लड़कों के लिये खोला जाए या आठवीं तक के लड़कों को कन्या मिडिल स्कूल में ही प्रवेश देने की इजाजत दी जावे। ग्राम डिंगली काफी बड़ा गांव है जिसमें 400-450 घरों की आबादी है। अत: आबादी को देखते हुए एक मिडिल स्कूल लड़कों के लिए खोला जाना चाहिए या कन्या शाला में प्रवेश की इजाजत दी जाए। धन्यवाद।

**श्री अध्यक्ष:** श्री बीरूसिंह राठौड़।

## जयपुर की आवासीय बस्ती का आम रास्ता सैनिक अधिकारियों द्वारा अवरुद्ध

**प्रो.बीरूसिंह राठौड़** (बनीपार्क): माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान

(प्रो. बीरूसिंह राठौड़)

विधान सभा की प्रक्रिया एवं संचालन के नियमों के नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख प्रस्ताव प्रस्तुत कर निवेदन है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र बनीपार्क की जयपुर विकास प्राधिकरण से मान्यता प्राप्त पूर्णतः विकसित कालोनीज क्रमशः कैलाश नगर, प्रेमनगर, कुमावत कॉलोनी व भारतेन्दु नगर के लगभग 50-60 हजार आम नागरिकों के लिए सैकड़ों वर्षों से एकमात्र आम रास्ता है जो आजादी से पूर्व के राजपूताना जयपुर स्टेट के नक्शों में भी सर्वेयर जनरल आफ इण्डिया द्वारा 1930-31 में प्रकाशित हुआ। तथा इस आम रास्ते बाबत अन्य पुख्ता राजस्व रिकार्ड, रेलवे रिकार्ड भी मौजूद हैं। 1930 से आज तक इस मार्ग पर आम जनता का आवागमन रहा है 1 आजादी के बाद इस आम रास्ते के इर्द-गिर्द भारतीय सेना को भूमि उपलब्ध हुई तब से सैनिकगण भी आम जनता के साथ इस आम रास्ते का उपयोग कर रहे हैं। सेना ने इस क्षेत्र से गुजरने वाले रास्तों पर कब्जा करके मात्र एक रास्ता छोड़ा जो एक तरफ जयपुर स्टेशन से खातीपुरा जाने वाली रोड को मिलाता है व दूसरी तरफ झोटवाड़ा से चांदपोल जाने वाली सड़क को मिलाता है। इस सदियों पुराने रास्ते को जहां पक्की डामर सड़क है, सेना ने अपने स्तर पर ही 'बेऊर मार्ग' नाम देकर पक्के गेट निर्माण कर दिये तथा सड़क के दोनों किनारों, छोर पर संगीनधारी सैनिक बैठाकर जबरन आम जनता, इस क्षेत्र में बसने वाले भूतपूर्व सैनिकों, मृत सैनिक आश्रितों के आवागमन में बाधा उत्पन्न कर दी है। सीमा लांघ कर कई बार सैनिक अपने वाहनों में सशस्त्र सवार होकर कालोनीवासियों, महिला, बच्चों, बुजुर्गों भूतपूर्व सैनिकों के साथ दुर्व्यवहार मारपीट गाली-गलौच करते रहते हैं जिसकी सूचना जरिये एफ.आई.आर. पुलिस एवं जिला कलक्टर प्रशासन को भी प्राप्त है। इनके द्वारा मौका मुआयना भी किया गया है।

भूतपूर्व सैनिकों, सैनिक विधवाओं के बाहुल्य वाली इन कालोनीज वासियों के आम रास्ते को रोका जाना इनके मौलिक अधिकारों का हनन है। माननीय न्यायालय ने भी इस प्रकार रास्ता अवरुद्ध किये जाने को गैर कानूनी माना है। दूसरी ओर आम नागरिकों के रक्षक माने जाने वाले सैनिकों, सेना अधिकारियों द्वारा हथियारों की नोक पर मार्ग अवरुद्ध करना, कॉलोनीज में जाकर बेरहमी से मारपीट, जान लेवा हमला करना किसी बड़ी दुर्घटना की प्रबल सम्भावना को दर्शाता है। अतः विशेष उल्लेख प्रस्ताव के जरिए पुनः निवेदन है कि सेना को रास्ता अवरुद्ध नहीं किये करने व शांतिपूर्ण माहौल कायम रखने के लिए पाबंद करवाया जाए। धन्यवाद।

**श्री अध्यक्षः** प्रतापसिंहजी, महत्वपूर्ण मामला है, आप इस मामले में कुछ कहना चाहेंगे ?

**श्री रणवीर सिंह गुढा** : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से दो मिनट का समय लेना चाहता हूं। आज बहुत गम्भीर विषय है। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्षः** पहले, आसन कोई व्यवस्था दे रहा है। गम्भीर ठीक है स्थान ग्रहण कर लीजिए, माननीय सदस्य। बीरूसिंहजी ने अभी पढ़कर सुनाया कि रास्ते को ताला लगाकर बंद कर दिया। आम रास्ता है सदियों का रास्ता है, उसको बंद कर दिया तो उसके बारे में आप कुछ कह दें तो ठीक रहेगा क्योंकि इससे तो बहुत लोग प्रभावित हो रहे हैं। ... (व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी** (नगरीय विकास राज्य मंत्री) : यह मेरी जानकारी में अभी-अभी प्रश्न आया है। इसमें क्या हो सकता है, मैं दिखवा लूंगा । ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्षः** जी ?

**श्री प्रताप सिंह सिंघवीः** इसमें क्या हो सकता हैं, मैं दिखवा लूंगा, यह जानकारी में मेरे अभी-अभी आया है। किस प्रकार की क्या व्यवस्था हो सकती है, उसको दिखवा लूंगा।

**श्री अध्यक्षः** ठीक है। पर्ची पर श्री जोगाराम पटेल बोलेंगे।... (व्यवधान)

**श्री रणवीर सिंह गुढाः** माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कितनी देर पहले से निवेदन कर रहा हूं, पर्ची दे चुका हूं। पहले से आपने...(व्यवधान) बाद में बुला लेंगे ?

**श्री अध्यक्षः** आपकी कोई पर्ची नहीं है। चार पर्चियां जो आयी हैं, मैं पहले पर्ची पर बुलवाऊंगी। प्लीज स्थान ग्रहण कर लीजिए। ... (व्यवधान)

**श्री रणवीर सिंह गुढाः** अध्यक्ष महोदय, मेरा गम्भीर विषय है। मैंने आपसे पहले भी दिया और अभी भी पर्ची दी है। ... (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा नहीं हो सकता। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्षः** कैसे नहीं हो सकता? यहां पर यही होगा जो आसन चाहेगा। ... (व्यवधान)

**श्री रणवीर सिंह गुढाः** माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं।

**श्री अध्यक्ष:** ऐसा कैसे नहीं हो सकता? क्या बात करते हो आप? ...(व्यवधान)

**श्री रणवीर सिंह गुढा:** अध्यक्ष महोदय, परबतसर से बारात गयी सूरतगढ़ के गांव में, अध्यक्ष महोदय, दुल्हन के साथ छेड़खानी हुई। पूरी बारात को थाने में बैठाया। पूरे थाने को सस्पैण्ड करो। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** यह कोई बात होती है ? ऐसा नहीं हो सकता, यह कोई बात हुई आपकी? आप मुझे ... (व्यवधान) रहे हो, मुझे मालूम है । ...(व्यवधान)

# पर्ची के माध्यम से उठाये गये मुद्दे

## जोधपुर सम्भाग में क्षतिग्रस्त व मिसिंग लिंक सड़कों का निर्माण

**श्री जोगाराम पटेल** (लूणी): माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम राजस्थान सरकार ने, ... (व्यवधान) मैं सर्वप्रथम भारत के पूर्व प्रधान मंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी साहब को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** कल आप बोले थे, माननीय सदस्य, सारी बातें सड़कों की कह दी थीं। पर्ची पर मैंने आपसे निवेदन किया कि पर्ची पर वही मामले आने चाहिए जो वास्तव में रीसेंट आकरेंस हो। ... (व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** मैं विषय पर आ रहा हूं, सड़कों की कहूंगा बस। वहीं उठाऊंगा जो मुझे उठाना है। एक आधा सैकण्ड की भूमिका के बाद विषय पर आ जाऊंगा। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** खैर, अब आप बोलिये। जब आपको मौका दिया है तो बोलिये, लेकिन कल काफी लम्बे समय तक आप अपनी बात कह चुके थे। ...(व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** नहीं, कल तो मेरा समय काट दिया गया था 15 मिनट का। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** खैर। अच्छा, कहिये-कहिये।

**श्री जोगाराम पटेल:** उनकी एक अनूठी भारत के विकास की इस योजना में सड़कों का जो जाल बिछाया गया, उस योजना का लाभ उठाते हुए राजस्थान सरकार ने अपनी योग्यता के अनुसार उसका प्रदर्शन किया और

(श्री जोगाराम पटेल)

भारत में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत प्रथम स्थान प्राप्त किया, इसके लिए मैं राजस्थान सरकार को बहुत धन्यवाद दूंगा।

दूसरा धन्यवाद और दूंगा कि राजस्थान राज्य में जोधपुर सम्भाग ने इस योजना का अनूठा लाभ उठाते हुए ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** एक तरफ तो आप धन्यवाद दे रहे हैं और दूसरी तरफ कह रहे हैं कि हालत बहुत खराब है, भारी रोष है, जनता में भारी रोष है। ... (व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** मैं आ रहा हूं उस पर भी आ रहा हूं। जो धन्यवाद है वह धन्यवाद है और जो खराब है वह खराब है। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** यह तीन-चार मिनट का समय है आपके पास, सीधा आ जाइये।

**श्री जोगाराम पटेल:** मैं तीन-चार मिनट में पूरी कर दूंगा, मेरा एक मिनट तो यूं ही चला गया।

जोधपुर सम्भाग में जो प्रथम स्थान प्राप्त किया और प्रधान मंत्री सड़क योजना के तहत जो सड़कें बनीं उसके लिए धन्यवाद। तीसरा धन्यवाद और कि राजस्थान सरकार ने कुल 18 स्टेट हाई-वे डिक्लेयर किये जिसमें से तीन ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** आप तो सीधा रोष पर आइये। आपने लिखा है कि रोष, तो रोष पर आ जाइये आप। ... (व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** मैं रोष पर आ रहा हूं। नैक्स्ट रोष पर आ रहा हूं। सीधा रोष पर नहीं आऊं ... (व्यवधान)

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** काम इतने ज्यादा हुए हैं कि माननीय सदस्य को बोलना ही पड़ता है कुछ न कुछ तो। ... (व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** हां, असली बात तो यही है। तीन स्टेट हाई-वे मेरे विधान सभा क्षेत्र में डिक्लेयर किये । ... (व्यवधान)

**श्री रामनारायण चौधरी:** पार्लियामेंट्री अफेयर मिनिस्टर साहब, पर्ची के ऊपर कोई धन्यवाद या प्रशंसा गाये जाते हैं क्या ? पर्ची पर तो कोई घटना होती है, बात होती है। आप गाथा गा रहे हो । ... (व्यवधान)

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** वह कर रहे हैं, क्या करें?

**श्री जोगाराम पटेल:** मैं घटना ही बता रहा हूं।

**श्री रामनारायण चौधरी:** आप गाथा गा रहे हो। ... (व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** डिक्लेयर किया परन्तु उसके बाद जो मेरी ... (व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** बोलना पड़ा, प्रशंसा तो सुनना मनुष्य की आदत है। ... (व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** परन्तु मेरी गम्भीर समस्या है, उस समस्या की ओर ध्यान दिलाना चाहूंगा। वह समस्या है डब्ल्यू.बी.एम. से बी.टी. रोड वाली। बहुत पुरानी मेरी ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** तीन-चार मिनट तो आप धन्यवाद में खो दोगे।

**श्री जोगाराम पटेल:** नहीं-नहीं, मैं नहीं खोऊंगा। मैं तो पाइंट पर आऊंगा।

**श्री अध्यक्ष:** और रोष बताएंगे नहीं।

**श्री जोगाराम पटेल:** डब्ल्यू.बी.एम. से बी.टी. की प्रथम चरण की जो योजना थी, उस योजना के तहत मुझे कोई राशि आबंटित नहीं हुई। डब्ल्यू.बी.एम. से बी.टी. की जो सैकिण्ड स्टेज थी, उस सैकिण्ड स्टेज में भी जोधपुर जिले को बहुत ही कम धन आबंटित हुआ है। मात्र 47 लाख, जबकि अन्य जिलों को 3 करोड़, 35 करोड़ के आस-पास धन आबंटित हुआ है। इसलिए सबसे पहला मेरा निवेदन यह रहेगा कि डब्ल्यू.बी.एम. से बी.टी. की जो मेरी चार-पांच अति महत्वपूर्ण सड़कें हैं जो पिछले करीब 15-20 वर्षों से ऐसी पड़ी हैं, जहां किसी भी हालत में चला नहीं जा सकता है। डब्ल्यू.बी.एम. की वजह से बड़े-बड़े खड्डे और बड़े-बड़े पत्थर हो गये हैं, वहां सड़क पर यातायात के साधन तो क्या पैदल आदमी भी नहीं चल सकता है इसलिए पहला मेरा निवेदन यह रहेगा कि डब्ल्यू.बी.एम. से बी.टी. सड़कों का जो कार्य है वह यथाशीघ्र स्पेशल स्वीकृति के तहत कराया जाए।

दूसरा, इंठारा से उतेसर की जो सड़क है वह सड़क इतिहास से लगाकर आज दिन तक ऐसे ही पड़ी है। पूर्व की सरकार के माननीय विधायक और पूर्व के माननीय मंत्री की उपेक्षा के कारण उसको जान-बूझकर ऐसे ही रखा गया है। वह सड़क हमारे चार जिलों को मिलाने वाली है - पाली, जालौर, बाड़मेर और जोधपुर। इन चार जिलों को मिलाने वाली अति महत्वपूर्ण सड़क राजनैतिक उपेक्षा की वजह से ऐसी पड़ी है। मैं दूसरा निवेदन यह करूंगा

(श्री जोगाराम पटेल)

माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी से कि उस सड़क को भी मेरी विशेष अनुमति के तहत स्वीकृत करायें और लास्ट में मिसिंग लिंक और रिन्यूअल के कार्य भी अधूरे पड़े हैं, एक किलोमीटर, आधे किलोमीटर, दो किलोमीटर की जो सड़कें रह गयी हैं, मिसिंग लिंक या रिन्यूअल की वजह से, उससे जनता में रोष है। इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि जो इतने ऐतिहासिक काम हुए हैं, साथ के साथ मिसिंग लिंक या रिन्यूअल के काम भी हो जाए तो एक इतिहास के रूप में अमर रहेगा। साथ ही साथ मैं ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्षः** ऐतिहासिक काम हुए तो फिर रोष किस बात का है?

**श्री जोगाराम पटेलः** मैं आदरणीय कृषि मंत्रीजी से निवेदन करूंगा कि ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्षः** ऐतिहासिक काम हुए हैं तो फिर रोष किस बात का है ?

**श्री जोगाराम पटेलः** रोष इस बात का है कि इतने काम होने के बावजूद भी थोड़ा-सा रह गया। एक किलोमीटर चलने में बहुत तकलीफ आती है। एक किलोमीटर रह गया, आधा किलोमीटर रह गया, मिसिंग लिंक रह गयी, रिन्यूअल रह गयी, उसका रोष है।

साथ ही साथ, मैं कृषि मंत्रीजी से भी निवेदन करूंगा कि उनकी सड़कें भी रिन्युवल के अभाव में, उपेक्षा के कारण ऐसी ही पड़ी हैं। उनके संबंध में भी मैंने बार-बार निवेदन किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी रिन्यूबल की सड़कें और चार सड़कें जिनका नवीनीकरण करना है और जो चार नई सड़कें बनानी हैं, उसके संबंध में यथाशीघ्र निर्णय लेंगे।

**श्री अध्यक्षः** हो गया, धन्यवाद।

**श्री जोगाराम पटेलः** मैं इतना निवेदन करते हुए पुनः दोनों का धन्यवाद, जय हिन्द, जय भारत।

**श्री अध्यक्षः** श्री कालीचरण सराफ ।

## केन्द्रीय सरकार द्वारा आबंटित केरोसीन में कटौती

**श्री कालीचरण सर्राफ** (जौहरी बाजार): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के माध्यम से केन्द्रीय सरकार द्वारा जो केरोसीन का आबंटन किया जाता है उसमें निरन्तर कमी की जा रही है, पिछले तीन-चार सालों में, उसके बारे में ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

(श्री कालीचरण सर्राफ)

**(समय: 12.00 बजे)**

माननीय अध्यक्ष महोदय, हर प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से केरोसीन वितरित किया जाता है। हमारे प्रदेश में डबल गैस सिलिण्डर होल्डर्स को छोड़कर सिंगल गैस सिलिण्डर होल्डर्स को दो लीटर और शेष उपभोक्ताओं को पाँच लीटर केरोसीन दिये जाने की व्यवस्था पहले थी। प्रदेश में कुल 1,29,41,125 राशन कार्ड होल्डर्स हैं, इसमें से 21,38,414 डबल गैस सिलिण्डर होल्डर्स हैं। इस प्रकार 1,08,02,711 इस प्रकार के राशन कार्ड होल्डर्स हैं, जिनको कि केरोसीन दिया जाता है। इसमें से 11,84,591 सिंगल गैस सिलिण्डर होल्डर्स हैं और 96,18,120 अन्य उपभोक्ता है। इस हिसाब से लगभग 50,459.78 के.एल. प्रति माह हमें केरोसीन की आवश्यकता होती है परन्तु मुझे यह कहते हुए दुःख है कि 2002-03 में जहां 44674 के.एल. केरोसीन आबंटित किया जाता था, केन्द्र में यू.पी.ए. की सरकार आने के बाद उसमें निरन्तर कमी राजनैतिक भेदभाव करते हुए की जा रही है। 2003-04 में, जहां 2002-03 में 44676 के.एल. केरोसीन हमें मिलता था....

वह 2003-04 में 43,492 कर दिया गया और 2004-05 में 42,459 कर दिया गया और 2005-06 में 42,417 के.एल.किया गया। निरन्तर इस प्रकार की कमी यह दर्शाती है कि केन्द्रीय सरकार राजनैतिक आधार पर हमारे राज्य के साथ भेदभाव करना चाहती है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमारे मुख्य मंत्रीजी ने, खाद्य मंत्रीजी ने और खाद्य सचिवजी ने केन्द्रीय सरकार को बार-बार पत्र लिखा है और उनको यह बताया है कि हमारे राजस्थान की भौगोलिक स्थिति अन्य प्रान्तों से भिन्न है । यहां 19 जिले तो इस प्रकार के हैं जहां वन क्षेत्र 10 प्रतिशत से कम है और रेगिस्तानी इलाकों बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर इनमें तो 5 प्रतिशत वन क्षेत्र भी नहीं हैं। पूरे राजस्थान में हजारों की तादाद में ग्रामीण छात्र शहरों में पढ़ने के लिये आते हैं, उनको भी केरोसीन की आवश्यकता रहती है जिस प्रकार राशन कार्डों की संख्या बढ़ रही है, होना तो यह चाहिये कि केन्द्रीय सरकार बिना किसी राजनैतिक भेदभाव के केरोसीन का कोटा ज्यादा करे, परन्तु दुर्भाग्य है और मुझे खेद है यह कहते हुए कि केन्द्रीय सरकार कोटे में निरन्तर कमी करती जा रही है। मैं चाहूंगा कि जो हमारे कांग्रेस के मित्र बैठे हैं, यहां पर गरीबों के बारे में बड़ी-बड़ी बातें करते

(श्री कालीचरण सर्राफ)

हैं, उनकी केन्द्रीय सरकार है, उनको कम से कम यह कहना चाहिये कि केन्द्रीय सरकार राजनैतिक भेदभाव के आधार पर गरीबों के साथ अन्याय नहीं करे और जो केरोसीन का कोटा निरन्तर कम किया जा रहा है ज्यादा किया जाये। मैं खाद्य मंत्रीजी से भी अनुरोध करूंगा कि राज्य सरकार इस बारे में किस प्रकार के प्रयास कर रही हैं और केन्द्रीय सरकार किस प्रकार से यह आवंटन निरन्तर कम करती जा रही है, इसके बारे में आप क्या कर रहे हैं, इसके बारे में भी जानकारी दें तो उचित रहेगा ।

**श्री अध्यक्ष:** धन्यवाद । मोहम्मद माहिर आजाद।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** खाद्य मंत्रीजी से जवाब दिलाओ साहब, यह लाखों लोगों का सवाल है। आठ हजार के.एल. केरोसीन प्रति माह कम दिया जा रहा है, उसके बारे में राज्य सरकार को बताना चाहिये कि इस बारे में क्या व्यवस्था की जा रही है।

**मोहम्मद माहिर आजाद:** माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ...(व्यवधान) ...

**श्री मोहन लाल गुप्ता** (किशनपोल): माननीय अध्यक्ष महोदय, केरोसीन के मामले में जवाब देना चाहते हैं माननीय मंत्री महोदय को आदेश दें। ...(व्यवधान)...

**मोहम्मद माहिर आजाद:** माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मेरा नाम पुकारा है। ...(व्यवधान)...

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** केरोसीन का जो मामला माननीय सदस्य ने उठाया है, माननीय मंत्रीजी जवाब देना चाहते हैं। ...(व्यवधान)...

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, पर्ची पर केवल वही बोलता है जो पर्ची देता है। मंत्रीजी कुछ बताना चाहते हैं ...(व्यवधान)...

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत महत्वपूर्ण सवाल है। उनको केरोसीन नहीं मिल पा रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, केरोसीन नहीं मिल पा रहा है, जयपुर के लोगों को बहुत बड़ी समस्या है। ...(व्यवधान) .. आप कृपया जवाब दिलवाइये।..(व्यवधान) ..

**श्री संयम लोढ़ा:** पहले तो आप दोनों यह तय कर लो कि जयपुर से मंत्री कौन बनेगा? दोनों बैठकर तय कर लो। ...(व्यवधान) ..

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन है...(व्यवधान) ..

**श्री अध्यक्ष:** मैं मंत्रीजी को बाध्य नहीं कर सकती। ...(व्यवधान) ..

**श्री कालीचरण सर्राफ:** कम से कम मंत्रीजी को यह तो कहिये कि क्या व्यवस्था की है...(व्यवधान) ..

**मोहम्मद माहिर आजाद:** यहां फिक्सिंग मत करो। ...(व्यवधान) ..

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** मंत्रीजी स्थिति स्पष्ट करेंगे कि वह केरोसीन की क्या व्यवस्था कर रहे हैं? ...(व्यवधान) ..

**श्री अध्यक्ष:** यह आसन किसी भी मंत्री को बाध्य नहीं कर सकता। वह चाहे तो दें, वह चाहे तो नहीं बोलें। ...(व्यवधान) ..

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** अगर मंत्री महोदय जवाब देना चाहते हैं तो दे दें। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** प्लीज स्थान ग्रहण करें। बहनजी, स्थान ग्रहण करें। ...(व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** यह फिक्सिंग है। ...(व्यवधान) ..

**डा.किरोड़ी लाल मीणा :** (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो ध्यान आकर्षित किया है, उसमें अभी राजस्थान को केरोसीन कम दिया जा रहा है। आंकड़े आपने सुने हैं माननीय सदस्य ने जो रखे हैं, उस हिसाब से 7742 के.एल. केरोसीन कम मिल रहा है पर मंथ और ...(व्यवधान) ..

**श्री अध्यक्ष:** ...(व्यवधान) ... काम नहीं चलेगा। ...(व्यवधान) ..

**श्री संयम लोढ़ा:** यह आपके रिकार्ड से जाहिर है कि फरवरी के पहले हफ्ते में अकाल में जितने मजदूर आपने लगाये, दूसरे में उससे कम लगाये राजस्थान में, तीसरे में उससे भी कम लगाये गये। केन्द्रीय सरकार का जवाब आप दे रहे हो, खुद का तो जवाब दे दो। ...(व्यवधान)

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** विषय क्या हो रहा है? चल क्या रहा है, यह केन्द्रीय सरकार की बात है।...(व्यवधान) ..

**श्री संयम लोढ़ा:** यह रिकार्ड पर है ...(व्यवधान) .. केन्द्रीय सरकार की बात कर रहे हो, पहले खुद की व्यवस्था तो देख लो ।...(व्यवधान) ..

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** यह खड़े हो गये, कोई विषय ही नहीं है अभी। ...(व्यवधान) ..

**श्री कालीचरण सर्राफ:** केन्द्रीय सरकार राजनीतिक भेदभाव के आधार

(श्री कालीचरण सर्राफ)

पर राजस्थान के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है, इसको राजस्थान की जनता कभी माफ नहीं करेगी। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्यगण, स्थान ग्रहण कर लें। (व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** केरोसीन की बात करो । ...(व्यवधान) ..

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण कर लें। माननीय मंत्रीजी, आप केवल इतना बता दें कि आपने इस कोटा को बढ़ाने के लिये कब-कब, क्या प्रयत्न किये हैं, क्या चिट्ठी लिखी। बस इतना बता दें और कुछ नहीं। ...(व्यवधान) ..

**श्री रामनारायण चौधरी** : वह इनसे तकसीम नहीं हो रहा है, सारा ब्लैक में बिक रहा है। ...(व्यवधान) ..

**श्री अध्यक्ष:** कहां बिक रहा है?

**श्री अमराराम** (धोद): जितना तेल है उसमें से आधा ब्लैक में बिक रहा है। ट्रेक्टर में काम आ रहा है, बसों में काम आ रहा है, आप चैक करा लें। ...(व्यवधान) ..

**श्री रामनारायण चौधरी:** गांवों में बंट रहा है। ...(व्यवधान) ..

**श्री महावीर प्रसाद जैन** (मुख्य सचेतक): आप बहुत जिम्मेदार हैं प्रतिपक्ष के नेता। ...(व्यवधान) ..

**श्री रामनारायण चौधरी:** हां, मैं जिम्मेदारी से बोल रहा हूं। ...(व्यवधान) ..

**श्री अध्यक्ष:** पर्ची के माध्यम से उन्होंने यह प्रश्न उठाया है कि लगातार केरोसीन का कोटा भारत सरकार कम करती जा रही है तो मैं केवल इतना जानना चाहती हूं कि भारत सरकार जो कोटा कम करती जा रही है, आपने उसे बढ़ाने के बारे में क्या क्या कब-कब चिट्ठी लिखी, क्या प्रयत्न किये, यह बता दीजिये, खत्म बात। अब आप कह रहे हो आधे से ज्यादा बिक रहा है, वह एक अलग प्रश्न है। वह अलग प्रश्न आप उठाओ। आप उठाइये उसे।

**श्री संयम लोढ़ा:** जो घोटाले माननीय खाद्य आपूर्ति मंत्रीजी ने खुद पकड़े थे उदयपुर जाकर वह तो बताओ आप। ...(व्यवधान) ..

(श्री संयम लोढ़ा)

**(व्यवस्था सूचक घण्टी)**

जो घोटाले माननीय मंत्रीजी ने खुद पकड़े, उसका क्या हुआ?

**श्री कालीचरण सर्राफ:** केन्द्रीय सरकार का कोई भी मामला होता है ये खड़े हो जाते हैं बिना किसी बात के खड़े हो जाते हैं।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, आसन की गरिमा का ध्यान रखना आपका कर्तव्य है । जब मैंने पूछी है कोई बात और आसन ने व्यवस्था दी है आप बीच में क्यों खड़े हो जाते हैं ? मंत्रीजी, आप अपने प्रयत्न बता दीजिये, खत्म बात।...(व्यवधान) .. बता देंगे, आप क्यों बीच में बोल रहे हैं?

**डा.सी.पी.जोशी:** जवाब दे रहे हैं तो इनके पास रिकार्ड है या तो आठ बजे देते, छह बजे देते। जब यह तैयार ...(व्यवधान) .. अब आप मैच फिक्सिंग की जैसे करना चाहते हैं क्या हाउस को?

**श्री संयम लोढ़ा:** उनका हिसाब लेकर कि कितना केरोसीन कहां-कहां जा रहा है और हम पूछते हैं ... ...(व्यवधान) ..

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** अगर गरीबों के हित में यह जवाब भी लेकर आये हैं तो अच्छी बात हैं। ...(व्यवधान) ..

**श्री कालीचरण सर्राफ:** हमारी सरकार की प्राथमिकता है आपकी कारगुजारियों को यहां पर लाकर बताएं सदन में। ... ...(व्यवधान) ..

**डा.सी.पी.जोशी:** कोई ध्यानाकर्षण प्रस्ताव होता तो समझ में आता, मंत्रीजी जानकारी लेकर आते, कि ध्यानाकर्षण प्रस्ताव है । यह तो पर्ची का मामला था कैसे मालूम आपको? ...(व्यवधान) ..

**श्री संयम लोढ़ा:** फिक्सिंग के जरिये यहां स्टेटमेंट हो रहा है। ...(व्यवधान) ..

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** माननीय मंत्री महोदय अगर जानकारी लेकर आये हैं तो वह सजग हैं, जनता के प्रति जागरूक हैं । ...(व्यवधान) ..

**श्री कालीचरण सर्राफ:** दो घंटे वाली पर्ची निकाली ही इसलिए जाती हे कि राज्य सरकार उसका जवाब दे। ...(व्यवधान) ..

**डा. सी.पी. जोशी:** कोई जवाब नहीं होता। ...(व्यवधान) .. माननीय मंत्रीजी ने कहा हम पता लगाएंगे। ...(व्यवधान) ..

**श्री कालीचरण सर्राफ:** माननीय अध्यक्ष महोदय, पर्ची इसलिए निकाली जाती है कि दो घण्टे में सरकार उसका जवाब लेकर आए। क्या बात कर रहे हैं आप?...(व्यवधान) .. शिरोधार्य है यह नियम। ...(व्यवधान) ..

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** अध्यक्ष महोदय, मंत्रीजी यह भी बता दें कि इन्होंने अजमेर का कोटा कम क्यों किया? अजमेर का कोटा कम करके भीलवाड़ा को दिया और अजमेर में जो ब्लैक हो रहा है राशन का, उसकी क्या व्यवस्था कर रहे हैं?

**श्री कालीचरण सर्राफ:** अजमेर की यहां कहां से बात आ गयी? ...(व्यवधान)..

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** माननीय मंत्री महोदय बताएं, बहुत सजग मंत्री हैं।...(व्यवधान) ..

**श्री जोगाराम पटेल:** केन्द्र सरकार की जो सारी नीतियां हैं, भेदभाव की नीतियां हैं, राजस्थान सरकार के साथ वह भेदभाव किया जा रहा है, उसके अगर तथ्य सामने आ रहे हैं तो मेरे प्रतिपक्ष के भाइयों को एतराज हो रहा है। कल यह कह रहे थे, आज यह सुनने को तैयार नहीं। मंत्रीजी जवाब दे रहे हैं। ...(व्यवधान) ..

**डा.सी.पी.जोशी:** भारत सरकार के खिलाफ प्रस्ताव लाइये आप ...(व्यवधान)..

**एक माननीय सदस्य:** आप लोग हर बात यूं ही करते हैं ...(व्यवधान) ..

**डा.सी.पी.जोशी:** यह कोई पार्टी मीटिंग नहीं हैं, ...(व्यवधान) .. यह कोई बीजेपी की पार्टी मीटिंग नहीं है ...(व्यवधान) ..

**एक माननीय सदस्य:** पैसा केन्द्रीय सरकार खा गयी। ...(व्यवधान) ..

**श्री जोगाराम पटेल:** जनता का सबसे अंतिम व्यक्ति का जो अधिकार है, वह अधिकार यह केन्द्रीय सरकार ...(व्यवधान) ..

**श्री रामप्रताप कासनिया:** अध्यक्ष महोदय, इनके वाद-विवाद में हम भी फंसे जा रहे हैं। हमारा समय नष्ट हो रहा है। ...(व्यवधान) ..

**श्री राकेश मेघवाल** (नागौर): कोटा नागौर जिले का भी कम किया है, इसका कारण क्या है? माननीय मंत्रीजी ने कहा है कि इसमें भारत सरकार ने कोटा कम किया है इसलिये इसमें नागौर जिले का कोटा भी कम किया है। नागौर जिले के सभी विधायकों ने लिखकर दिया है माननीय मंत्रीजी को । ...(व्यवधान) ..

**श्री अध्यक्ष:** नेता प्रतिपक्ष खड़े हैं । ...(व्यवधान) ..

**श्री रामनारायण चौधरी** (नेता, प्रतिपक्ष): मोहनलालजी, आप तो ख्याति प्राप्त सी.ए. हैं, ईमानदार आदमी हैं...(व्यवधान) आपके एरिया में

(श्री रामनारायण चौधरी)

केरोसीन तेल बिक रहा है, ठीक बिक रहा है कि नहीं, यह आप सर्टिफाई कर दीजिए। आपके एरिया में जो आ रहा है वह बिक रहा है क्या? ...(व्यवधान)

**श्री कालीचरण सर्राफ:** केन्द्र सरकार केरोसीन नहीं दे रही है... (व्यवधान) उसके बारे में स्पष्ट करिये, माननीय विपक्षी दल के नेता।

**श्री रामनारायण चौधरी:** वह डिस्ट्रिब्यूट हो रहा है क्या वहां? आप खड़े होकर कर कह दीजिए, मान लेंगे, पूरे राजस्थान का मान लेंगे।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा :** इसलिए आप सारा कोटा काट लोगे?

**श्री रामनारायण चौधरी:** आप सर्टिफाई कर दो कि आपके क्षेत्र में केरोसीन तेल मिल रहा है क्या।

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** मेरे क्षेत्र में तेल बिलकुल...(भारी व्यवधान) ...

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** आप झूठ बोल रहे हैं। आपने एक भी शिकायत मेरे को नहीं दी। ...(व्यवधान)

**श्री रामनारायण चौधरी:** जानकारी नहीं है आपके पास कहां क्या हो रहा है। केरोसीन सारा बिक रहा है ब्लैक में। ब्लैक में जा रहा है।..(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा: अपने तो गेहूं बिका है...(व्यवधान) आज ए.पी.एल. के गेहूं के लिए लोग मारे-मारे फिर रहे हैं।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** मनमानी नीतियों के कारण...(व्यवधान)... राजस्थान की आम जनता का, गरीब जनता का...(व्यवधान)...गरीबों के साथ भेदभाव कर रही है।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** अध्यक्ष महोदय, यह कालाबाजारी तो वर्षों से होती आ रही है...(व्यवधान)

**श्री कालीचरण सर्राफ:** मनमानी नहीं चलेगी। जब सरकार बताना चाहती है तो आप सुनना नहीं चाहते।..(व्यवधान)

**श्री रामनारायण चौधरी:** केरोसीन तेल सरेआम ब्लैक में बिक रहा है, यह मेरा आरोप है। ...(भारी व्यवधान)...

**श्री कालीचरण सर्राफ:** यह मेरा आरोप है और केन्द्रीय सरकार राजनीतिक आधार पर राजस्थान को कम केरोसीन का आबंटन कर के राजस्थान की गरीब जनता के साथ भेदभाव कर रही है।...(व्यवधान)...

**श्री रामप्रताप कासनिया:** अध्यक्ष महोदय, यह कोई नयी व्यवस्था नहीं है, बहुत पुराने समय से ही कालाबाजारी होती आ रही है।

**श्री रामनारायण चौधरी:** एक्शन लेना चाहिए आपको। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** स्थान ग्रहण करें।

बात तय हो गयी है जब नेता प्रतिपक्ष खड़े हों और वह बोलें तो कम से कम माननीय सदस्यों को इतना धीरज रखना चाहिए कि उस समय तो खड़े नहीं हों, उस समय तो बीच में नहीं बोलें। यह तो ध्यान रखा करें आप।...(व्यवधान)

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** पर नेता प्रतिपक्ष यह तो ध्यान रखें, वह जवाब क्या दे रहे हैं और वह जा कहां पर रहे हैं। आरोप लगा रहे हैं जिनका कोई आधार नहीं है।

**श्री अध्यक्ष:** वह कुछ भी कह सकते हैं। ...(व्यवधान)

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** कुछ भी कैसे कह सकते हैं...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** वो कह सकते हैं, उनका अधिकार है।...(व्यवधान)

**श्री नन्दलाल बंशीवाल** (दौसा): अध्यक्ष महोदय, मिथ्या आरोप लगा रहे हैं। सी.पी.जोशीजी बोल रहे हैं। सी.पी.जोशीजी, आप इस तरफ विधान सभा में थे मैंने पर्ची के माध्यम से एक प्रश्न उठाया था।

**श्री रामनारायण चौधरी:** अध्यक्ष महोदय, मैं आरोप नहीं लगा रहा हूं, मैं आपसे यह जानना चाह रहा हूं और मैं मोहन लालजी पर छोड़ता हूं, यह इनकी पार्टी के प्रबुद्ध, विजिलेंट एम.एल.ए.हैं, यह सर्टिफाई कर दें कि राजस्थान के अन्दर केरोसीन तेल ठीक तरह से डिस्ट्रिब्यूट हो रहा है तो मैं मान जाऊंगा।

**श्री अध्यक्ष:** कालीचरणजी नहीं हैं क्या प्रबुद्ध, जिम्मेदार नहीं हैं क्या?

**श्री रामनारायण चौधरी:** कालीचरणजी, यह तो हल्ला ब्रिगेड का आदमी है।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** क्या है, साहब।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** अध्यक्ष महोदय, मेरे को एतराज है, यह गलत बात है। यह शब्द कार्यवाही से निकाला जाए।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** यह क्या है?

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** जौहरी बाजार से आने वाले माननीय सदस्य को हल्ला ब्रिगेड का आदमी कहा है।...(व्यवधान)

**श्री कालीचरण सर्राफ:** आप इधर-उधर की बातें कह कर केन्द्रीय सरकार द्वारा जो भेदभाव किया जा रहा है राजस्थान की जनता के साथ उसको छिपा नहीं सकते। यह बात सही है, आंकड़ों के आधार पर मैंने यह बात कही

(श्री कालीचरण सर्राफ)

है। केरोसीन का कोटा निरन्तर केन्द्र सरकार राजनीतिक भेदभाव के साथ कम कर रही है और गरीबों के साथ विश्वासघात कर रही है। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सत्ता पक्ष के मुख्य सचेतक महोदय, क्या आपने कोई हल्ला ब्रिगेड यहां बना रखी है?

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** कतई नहीं, अध्यक्ष महोदय। नहीं, अध्यक्ष महोदय, यह शब्द कार्यवाही से निकलवाओ।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** उधर जरूर है।

**श्री महावीर प्रसाद जैन** (मुख्य सचेतक) : न तो हल्ला ब्रिगेड, यहां तो सब माननीय सदस्य हैं और माननीय सदस्यों को उतना ही अधिकार है जितना प्रतिपक्ष के नेता महोदय को अधिकार है...(भारी व्यवधान)...

**एक माननीय सदस्य:** अध्यक्ष महोदय, जो केरोसीन मिल रहा है उसका समान वितरण तो हो रहा है...(व्यवधान)

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** मैं माननीय प्रतिपक्ष के नेता महोदय को, जिनका अनुभव है...(व्यवधान)

**डा. सी.पी.जोशी:** काहे को हटाया?

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** यह बात केरोसीन की चल रही थी...(व्यवधान)

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** उनसे यह अपेक्षा नहीं करते कि एक माननीय सदस्य को हल्ला ब्रिगेड कहा जाए...(व्यवधान) जिन माननीय सदस्यों को नियमों की जानकारी नहीं है वह कहते हैं तो बात समझ में आ सकती है पर...(व्यवधान) आपके विपक्ष को नेता बनने पर तालियां बजायी हैं, हम आपसे यह अपेक्षा करते थे कि आप कुछ मर्यादाओं का पालन करेंगे। मैं समझता हूं कि यह बहुत गलत काम किया है और इसके लिए आपको खेद प्रकट करना चाहिए। ...(व्यवधान)

**श्री जोगाराम पटेल:** अध्यक्ष महोदय, आज राजस्थान पत्रिका में एक खबर है कि प्रतिपक्ष के भाइयों की एक हल्ला बोल ब्रिगेड है। यह तो पत्रिका में खबर है कि हल्ला बोल ब्रिगेड है और प्रतिपक्ष के नेता नरम रवैया रखते हैं तो हल्ला बोल ब्रिगेड आगे बढ़ने का प्रयास करती है। राजस्थान पत्रिका में यह खबर है इसलिए इनसे पूछो...(व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** सुबह से यहां भी हल्ला बोल ब्रिगेड हो गयी।

**श्री अध्यक्ष:** आर्डर, आर्डर।

**श्री हेमाराम चौधरी:** आज पत्रिका में पढ़ा, उसमें आया है कि हल्ला ब्रिगेड वालों को राज्य सभा का टिकिट दिया गया है तो हल्ला ब्रिगेड तो आपके पार्टी में है जब ही यह पेपर में आया है...(व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** आपके लिए आया है, कांग्रेस पार्टी के लिए आया हल्ला बोल ब्रिगेड।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के नेता ने जो कहा है उसको एक्सपंज कराओ। एक माननीय सदस्य को जो चौथी बार राजस्थान विधान सभा में आये हैं...(व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** राजस्थान पत्रिका में लिखा है हल्ला ब्रिगेड का।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** पत्रिका में यह आया है कि कांग्रेस कहीं न कहीं आन्तरिक उसमें ग्रसित है। पत्रिका में यह भी आया है कि प्रतिपक्ष के नेता का सभी माननीय कांग्रेस के विधायकों ने अपमान किया। यह भी आया है उसमें...(व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** बिलकुल आया है।

**श्री संयम लोढ़ा:** पत्रिका में तो यह भी आया था कि मंत्रियों ने कहा कि फोन की टेपिंग हो रही है ...(व्यवधान)... ई टी.वी. पर इन्टरव्यू में कहा था कि मेरे फोन की टेपिंग हो रही है।

**श्री जोगाराम पटेल:** राजस्थान पत्रिका में यह भी आया था... (व्यवधान)... प्रतिपक्ष के नेता आपको हाथ जोड़ रहे थे और फिर भी आप नहीं मान रहे थे। पत्रिका में तो यह भी आया है आज।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** अध्यक्ष महोदय, सदन को आर्डर में लाओ। यह कोई बात हुई क्या? सभी लोग बहस में हिस्सा लेना चाहते हैं, अपनी बात को कहना चाहते हैं। माननीय सदस्य ने एक बहुत गम्भीर मुद्दा उठाया है और हल्ला ब्रिगेड कह दिया उनको। यह एक तरह से उनका अपमान किया है, अध्यक्ष महोदय। ...(व्यवधान)

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** माननीय मंत्री महोदय, जवाब दें।

**श्री रामनारायण चौधरी:** नहीं, मेरे को कहने का अधिकार नहीं है और आपको है? मेरे को कहने का अधिकार नहीं है और पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर को अधिकार है कि वह बीच में खड़े हो जाएं और बोल जाएं? यह अधिकार है?

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** नहीं, मैं कहां बोलता हूं? मैं कहां बोलता हूं? मैं तो बिलकुल ही नहीं बोलता। आपके उधर बैठे माननीय सदस्यों का जयादा आदर मैं ही करता हूं।

**श्री रामनारायण चौधरी:** व्याख्यान दे रहे हो अध्यक्ष महोदय को आप।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** यह पानी को पू कहने वाला आदमी, बोलने की हिम्मत कैसे पड़ गयी?

**श्री रामनारायण चौधरी:** अध्यक्ष महोदय को व्याख्यान दे रहे हो।

यह आप पूरी आस्तीन का कमीज पहनते हो, अब आपने आस्तीन चढ़ा रखी है न यह ऊपर।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** क्या इसको ऐसे कर लूं? आप कहो जैसे कर लूं।

**श्री रामनारायण चौधरी:** हां, और कालीचरणजी ने क्या कर रखा है?

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** यह कर लिया। साहब, मैं तो वैसे ही आपका आज्ञाकारी हूं।

**श्री अध्यक्ष:** यहां कौन क्या कहता है, इसकी चर्चा की जाएगी।

**श्री रामनारायण चौधरी:** यह हल्ला ब्रिगेड का साइन है...(व्यवधान) आस्तीन को ऊपर चढ़ाएगा...(व्यवधान) जो पूरी चढ़ाऐगा वह ब्रिगेडीयर है।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** क्या, साहब, यह कोई बात हुई। आपको पूछ कर पहनेंगे हम कपड़े?

**श्री रामनारायण चौधरी:** आप अपने अतीत को देखो, आप क्या हो डा.किरोड़ी लालजी।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** मैं क्या हूं, यह जयपुर की जनता जानती है।

**श्री रामनारायण चौधरी:** डा.किरोड़ी लालजी, जब सी.एम. भैरोंसिंहजी थे, सवाईमाधोपुर की सीमेंट फैक्ट्री के मामले में आप क्या-क्या करते थे।, याद है कि नहीं आपको?

**श्री कालीचरण सर्राफ:** अब यह भैरोंसिंहजी कहां से आ गये? ...(व्यवधान)

**श्री रामनारायण चौधरी:** याद है कि नहीं? आज तो खुद मालिक हो और क्या रहा उस सीमेंट फैक्ट्री का?

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** सीमेंट फैक्ट्री का आन्दोलन किया था, आपने लाठी मारने में कोई कसर नहीं छोड़ी चोटी से एड़ी तक। यह किया था। आप लोगों ने अत्याचार किये थे, लाठियां मारी थीं, जेलों में भेजा था।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** हम तो आप पर फूल बरसाते हैं आपने लाठियां बरसायीं। आन्दोलन करना मनाही है क्या सवाईमाधोपुर फैक्ट्री के लिए? ...(व्यवधान)

**श्री रामप्रताप कासनिया:** अध्यक्ष महोदय, इस वाद-विवाद में समय नष्ट हो रहा है, हमारे जैसे लोगों बोलने से वंचित रह जाते हैं...।(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, कोई न कोई व्यवस्था करो, इस तरह से शोर-शराबे में दिनभर सदन का समय जाया होता है।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** दो मिनट में जवाब दे दूं, अध्यक्ष महोदय।

**श्री अध्यक्ष:** हां।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** जौहरी बाजार से आने वाले माननीय सदस्य ने पूछा, इसको लम्बा नहीं देना है। अध्यक्ष महोदय, जितना कहा है आपने वही जवाब दूंगा दो शब्दों में।

**श्री अध्यक्ष:** आप तो केवल आसन ने जो पूछा उतना ही जवाब दें, बस।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** हां, आपकी व्यवस्था के अनुसार। माननीय मुख्य मंत्रीजी ने 07.01.04 एवं 31.01.04 को पत्र लिखा है और मैंने पत्र लिखा है 17.12.04 को। पत्र लिखा ही नहीं, मैं मणिशंकरजी से व्यक्तिगत रूप से मिला था और यह मांग की थी कि हम को इतना केरोसीन दे दिया जाए लेकिन भारत सरकार ने केरोसीन बढ़ाने के बजाय उल्टा घटा दिया। यह खेद जनक बात है।

**श्री अध्यक्ष:** ठीक है।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** 2005 में आपने कुछ नहीं किया।

**डा.सी.पी.जोशी:** 2004 से लगाकर 2006 तक इस सरकार ने केरोसीन की कटौती के लिए एक भी लैटर नहीं लिखा। आप स्वयं ने कहा है मुख्य मंत्रीजी ने 2004 में लैटर लिखा, आज 2006 चल रहा है, दो साल तक राजस्थान सरकार ने एक भी पत्र भारत सरकार को नहीं लिखा।...(व्यवधान) नहीं लिखा। 2004 का है।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** भारत सरकार बराबर काट रही ही केरोसीन को।...(व्यवधान)

**डा. सी.पी. जोशी:** अध्यक्ष महोदय, 2004 का है...(व्यवधान) एक

(डा. सी. पी. जोशी)

साल से राजस्थान सरकार ने एक भी पत्र नहीं लिखा...(व्यवधान) सिंगल लैटर नहीं लिखा आपने और बातें कर रहे हैं केरोसीन कम किया।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** कांग्रेस पार्टी ने क्या किया, जरा यह भी बताइये।

**डा.सी.पी.जोशी:** अध्यक्ष महोदय, दो साल में राजस्थान सरकार के मुख्य मंत्री महोदय ने और खाद्य मंत्रीजी ने भारत सरकार को एक पत्र नहीं लिखा और कह रहे हैं कि हम भारत सरकार को लिख रहे हैं। 2004 का पत्र है यह, 2006 आ गया आज, एक भी पत्र दो साल में नहीं लिखा खाली वाहवाही लेने के लिए बात करना चाहते हैं।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** प्रिंसिपल सैक्रेटरी, फूड एण्ड सप्लाई ने लिखा है। रखो एक कॉपी।

**डा. सी.पी. जोशी:** बताइये, रखिये।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** 05 में लिखा।...(व्यवधान) ...

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** मेरे मंत्री बनने के बाद में।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** 2004 में, 2004 का है। ...(व्यवधान)...

**डा.सी.पी.जोशी:** आपने यहां तीन लैटर बोले हैं,दो लैटर मुख्य मंत्रीजी के, एक आपका, रखिये। ...(व्यवधान)...

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** यह डाक्टर किरोड़ी लाल।

**डा.सी.पी.जोशी:** रखिये, रखिये। रख दीजिए।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** 2004 का है, 2005 का नहीं है। आप रखो, 2005 का है तो रखो आप।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** रख दीजिए यहां पर।

**(डा.किरोड़ी लाल मीणा, खाद्य मंत्री ने पत्र सदन के पटल पर रखा)**

**श्री हरिमोहन शर्मा:** 2004 का है, 2005-06 में आप कहां सोते रहे? 2004 का है, देखो आप। मैं कह रहा हूं, 2004 का है।

**डा.सी.पी.जोशी:** आप लैटर देखिये, अध्यक्ष महोदय। कोई पत्र नहीं लिखा है 2006 में, बातें कर रहे हैं।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** मैं कह रहा हूं न नहीं लिखा...(व्यवधान)...

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस के सदस्य यह आब्जेक्शन उठा रहे हैं कि 2005 में पत्र क्यों नहीं लिखा, 2006 में पत्र क्यों नहीं लिखा अगर एक संवेदनशील सरकार हो तो निश्चित रूप से इस पत्र के आधार पर भी कार्यवाही करेगी। ...(व्यवधान)...कांग्रेस की संवेदनशील सरकार नहीं है।

**श्री राकेश मेघवाल:** अध्यक्ष महोदय, जब माननीय मंत्री महोदय ने यह कह दिया कि व्यक्तिश: मणिशंकर अय्यरजी से मिले हैं तो यह रिकार्ड पर है, वह कह रहे हैं कि मैं मिला हूं।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, आसन पांवों पर है जो पत्र खाद्य और आपूर्ति मंत्री जी ने लिखा है उसकी कापी तो मेरे पास है और जो मुख्यमंत्री जी ने पत्र लिखे हैं वह कापी उनके आफिस में है।

**डा.सी.पी.जोशी:** वह रखें यहां पर।

**श्री अध्यक्ष:** वह अभी कहां से ...

**डा.सी.पी.जोशी:** अध्यक्ष महोदय, 2004 के बाद एक पत्र नहीं लिखा, मुख्य मंत्री ने एक पत्र नहीं लिखा है...(व्यवधान) 2004 के बाद एक भी पत्र नहीं लिखा है। आप रखिये यहां पर, आप यहां पर हाउस में रखवाइये लैटर को, 2004 के बाद एक पत्र नहीं लिखा है ...

**श्री अमराराम** (धोद): यह कौनसी तारीख का है? ...(व्यवधान)

**डा. सी.पी. जोशी:** आप बताइये यह कोई तरीका थोड़े ही है ।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** यह किस तारीख का है आप बताओ?..(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** स्थान ग्रहण करें, स्थान ग्रहण करें। मुख्य मंत्री के दफ्तर में होगी उसकी कापी इनके पास नहीं है।

**डा. सी.पी. जोशी:** अभी कोट किया है, मंत्रीजी ने कोट किया है। अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी ने कोट किया है...(व्यवधान) मंत्री जी ने लैटर कोट किया है, मंत्री जी ने दो लैटर कोट किये हैं। मुख्य मंत्री के 2004 के दो लैटर कोट किये हैं । रखवाइये आप, दो लैटर रखवाइये ..(व्यवधान) आप प्रोसीडिंग उठाकर देख लें, दो लैटर कोट किये हैं मंत्री महोदय ने दो लैटर मुख्य मंत्री के कोट किए हैं 2004 के, 2004 के बाद एक भी लैटर नहीं लिखा मुख्य मंत्री ने ...(व्यवधान)

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** अध्यक्ष महोदय, उनका यह कहना ही पर्याप्त है कि...(व्यवधान)

**डा. सी.पी. जोशी:** आप प्रोसीडिंग उठाकर देखिए, माननीय मंत्री महोदय ने मुख्य मंत्री जी के दो पत्र कोट किऐ हैं और दोनों पत्र 2004 के... (व्यवधान)

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** मंत्री के वक्तव्य देने में मंत्री का यहां पर कहना ही पर्याप्त है...(व्यवधान)

**डा.सी.पी.जोशी:** बातें कर रहे हैं खाम ख्वाह..(व्यवधान)

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** अध्यक्ष महोदय, यह कोई बहस का विषय नहीं है। मंत्री का कहना ही पर्याप्त है।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** 2004 का है 2005 में कोई पत्र नहीं लिखा, 2004 का (व्यवधान)

**डा.सी.पी.जोशी.:** आप क्या बात कर रहे हैं ? ..(व्यवधान)

**श्री अशोक बैरवा** (खण्डार): अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश में केरोसिन की कालाबाजारी हो रही है।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** यह 2004 का है ..(व्यवधान) 2005 में जो कह रहे हैं, 2006 में जो कह रहे हैं ....(व्यवधान)

**श्री अशोक बैरवा** (खण्डार): पूरे प्रदेश में बहुत जोरों से केरोसिन की कालाबाजारी हो रही है..(व्यवधान) यह जो वाद विवाद चल रहा है उस गरीब गांव के किसान को केरोसिन नहीं मिल रहा है, 150 रुपए में पाँच लीटर तेल मिल रहा है।

**श्री हरिमोहन शर्मा:** यह 2004 का है। ..(व्यवधान)

**श्री अमराराम** (धोद): राजस्थान के गरीब केरोसिन नहीं ले पा रहे हैं.. (व्यवधान)

**श्री अशोक बैरवा**(खण्डार): पूरे प्रदेश में केरोसिन की कालाबाजारी बहुत जोरों से हो रही है। सरकार केरोसिन की कालाबाजारी में लिप्त है, माननीय अध्यक्ष महोदय...।

**श्री अमरा राम** (धोद): आपकी सरकार सक्षम सरकार है राजस्थान की जनता के हिस्से का केरोसिन नहीं ले पाऐ।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य स्थान ग्रहण करें। ..(व्यवधान) आप

(श्री अध्यक्ष)

कोई सदस्यों से अलग हैं क्या, खास हैं? क्या जो आप स्थान ग्रहण नहीं करते हैं, खास हैं ?

**डा.सी.पी.जोशी:** जो पत्र कोट किये हैं वे रखें। मंत्री जी ने दो पत्र कोट किये हैं मुख्य मंत्रीजी के उनको ले करवाइये। प्रोसीडिंग्स के अन्दर हैं मुख्य मंत्रीजी के दो पत्र कोट किये हैं। 2004 के बाद मुख्य मंत्री का एक भी पत्र नहीं है, ले करवाइये आप।..(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** मैं आपको पढ़कर आखिरी पैरा सुना रही हूं।

**डा.सी.पी.जोशी:** किसका? आप पत्र की डेट बताइये ।

**श्री अध्यक्ष:** आप सुनिए तो सही ।

**डा.सी.पी.जोशी:** क्यों सुनेंगे हम?..(व्यवधान)

**श्री राजेन्द्र राठौड:** यह कैसे चलेगा, आप आसन के साथ इस तरह का व्यवहार कर रहे हैं।..(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** अंकित नहीं हो । आप सुनना नहीं चाहते हैं तो। .....

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री अमराराम:** ×××

**श्री राजेन्द्र राठौड़ :** ×××

**श्री कालीचरण सर्राफ:** ×××

**श्री जुबेर खान:** ×××

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** ×××

**श्री लक्ष्मीनारयण दवे:** ×××

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** ×××

**श्री प्रमोद जैन:** ×××

**श्री वासुदेव देवनानी:** ×××

**श्री अशोक बैरवा (खण्डार):** ×××

**डा.दिगम्बर सिंह:** ×××

**श्री भवानी सिंह राजावत:** ×××

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, कृपया स्थान ग्रहण करें, कृपया स्थान ग्रहण करें।

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** पहले आप सुनिए, स्थान ग्रहण करें। नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य यह आपका जो रवैया है बिलकुल गलत है, आसन की बात को सुनना नहीं चाहते।

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री हेमाराम चौधरी:** ×××

**श्री जुबेर खान:** ×××

**श्री बंशीलाल खटीक:** ×××

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य सी.पी.जोशी ने जिस प्रकार लगातार आसन की उपेक्षा करते हुए....

**श्री अशोक बैरवा :** ×××

**श्री अध्यक्ष:** स्थान ग्रहण करें।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** अध्यक्ष को, आसन को बार बार धमका कर लगातार आसन के आदेशों की अवहेलना करते हुए यह केवल आज की बात नहीं है, अध्यक्ष महोदय, जब से यह सदन प्रारम्भ हुआ है तब से आज तक पिछली बार भी जो इन्होंने पहले किया उसके लिए माफी मांगी थी। मैं यह चाहता हूं कि यहां पर सदन की कार्यवाही ठीक प्रकार से चले। वह जो चैलेंज करते हैं कि बाहर निकालने की बात है अभी आंध्र प्रदेश में पूरे विपक्ष को बाहर निकाला गया। ऐसी कोई बात नहीं है लेकिन आप हमको मजबूर नहीं करें ...(व्यवधान) ..कि नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य को सदन से बाहर निकाला जाए।

**श्री अमराराम** (धोद): ×××

**श्री जुबेर खान:** ×××

**श्री कैलाश त्रिवेदी:** ×××

**श्री अशोक बैरवा** (खण्डार): ×××

**श्री बद्रीलाल जाट:** ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** कल ही लोक सभा के आपके जो स्पीकर हैं सोमनाथजी चटर्जी उन्होंने बड़ा खेद व्यक्त किया है। उन्होंने यह कहा है कि मेरी पार्टी के जो लोग हैं यदि वे ऐसा करते हैं तो सबसे ज्यादा निकम्मे हैं ।

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

यह सोमनाथ चटर्जी ने कहा है कल ही कहा है उन्होंने कहा है कि मुझे मजबूर होना पड़ेगा..(व्यवधान)

**श्री अमराराम**(धोद): ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** जैसे आंध्र प्रदेश में मध्य प्रदेश में सदन से बाहर निकाला गया है वैसे ही लोक सभा में करना पड़ेगा, अब इसके अलावा कोई चारा नहीं रहा। अब लोक सभा स्पीकर की वह आपने मिटा दी है, उनका उल्लेख करना चाहता हूं। सोमनाथ चटर्जी ने कहा है कि बिना अध्यक्ष की अनुमति के कोई खड़ा नहीं हो सकता यह कौल एण्ड शकधर में मेंशन है, बिना अध्यक्ष की अनुमति के इस सदन में कोई खड़ा होकर बोल नहीं सकता। माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन लगातार आपकी उदारता का नाजायज फायदा उठाकर, सरकार तत्काल जवाब देती है, आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ। इस सरकार ने छोटे छोटे मामले में भी वक्तव्य दिया है लेकिन कांग्रेस का यह रवैया न केवल आपके प्रति है, प्रतिपक्ष के नेता जब समझाने गये, कल भी गये, आज भी गये हैं तो इनका भी अपमान किया गया है। इनको तो प्रतिपक्ष का नेता रहना है, मजबूरी हो सकती है प्रतिपक्ष के नेता महोदय की। हालांकि इन्होंने कहा था कि प्रतिपक्ष के नेता के रूप में चाहे रहूं, या नहीं रहूं लेकिन मैं इस सदन की परम्परा और नियम का पालन करने दूंगा। लेकिन आज मुझे यह एहसास झलक रहा है मैं इनको....(व्यवधान)

**श्री अमराराम** (धोद): ×××

**श्री कैलाश त्रिवेदी:** ×××

**श्री अमराराम** (धोद): ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** काहे की कुश्ती है? राजस्थान के इतिहास में पहली बार है कि यह सरकार तुरन्त जवाब देती है...(व्यवधान)

**श्री बंशीलाल खटीक:** ×××

**श्री कैलाश त्रिवेदी:** ×××

**डा. सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** यह तो पहले निकाले गये हैं।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** कांग्रेस के माननीय सदस्य ने कभी उठायी वहां..(व्यवधान)

**श्री जुबेर खान:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** स्थान ग्रहण करें। कृपया स्थान ग्रहण कर लें। मुझे बड़ा अफसोस है कि आसन जब कुछ कहना चाहे, खड़े होकर सुनाना चाहे और वरिष्ठ सदस्य भी उस पर आपत्ति करके खड़े हो जाएं, अपनी बात बोलने लग जाएं तो फिर आसन क्या करे, मेरे यह बात समझ में नहीं आती। आसन की प्रतिष्ठा, सदन की गरिमा रखने की सबकी, चाहे पक्ष हो, चाहे प्रतिपक्ष हो, सबकी जिम्मेदारी है।..(व्यवधान)

**श्री बंशीलाल खटीक:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** बीच में नहीं बोलें। मैं केवल एक पैरा पढ़कर सुनाना चाह रही थी जिसमें तीन पत्रों का हवाला था कि तीन बार भारत सरकार को इस हेतु निवेदन किया गया। तारीख बता रही थी इस चिट्ठी के अन्दर जो डा. किरोड़ी लाल ने लिखी है अपनी। खाद्य मंत्रीजी ने 17, मणिशंकरजी अय्यर.... (व्यवधान)

**डा. सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री कालीचरण सर्राफ:** ×××

**श्री बंशीलाल खटीक:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** मैं बर्दाश्त नहीं करूंगी। मिस्टर सी.पी. जोशी, मैं बर्दाश्त नहीं करूंगी। बहुत देरहो गयी है। बहुत देर हो गयी है। यह कोई तरीका नहीं है कि बात कहने से..(व्यवधान) आप आसन की बात न सुनें..(व्यवधान)

**श्री ओ.पी.महेन्द्रा:** ×××

**डा. सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** आपकी बात मैंने सुन ली है स्थान ग्रहण कर लें आप। आप स्थान ग्रहण करें। मैं आपको पार्लियामेंटरी प्रैक्टिस एण्ड प्रोसीजर आफ पार्लियामैंट है, उसको और किसी को नहीं, खास तौर से नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य को याद दिला रही हूं-

"Maintenance of order in the House is a fundamental duty of the Speaker. He derives his disciplinary powers from the rules and his decisions in the matters of disciplines are not to be challenged except of a substantive motion."

(श्री अध्यक्ष)

पहली बात तो यह सुन लीजिये। दूसरी बात मैं आपको यह निवेदन करना चाहती हूं कि बार-बार खड़े होकर, जो माननीय सदस्य आसन की उपेक्षा करते हैं, आसन के आदेश को नहीं मानते हैं उनको मैं याद दिलाना चाहूंगी जबकि मैं पहले भी पढ़कर सुना चुकी हूं, मैं फिर याद दिलाना चाहूंगी कि लिनियेंसी का आप लोग कई बार अनुचित फायदा उठाते हैं। मैं एक महिला होने के नाते समझती हूं और एक अध्यक्ष होने के नाते भी समझती हूं कि प्रतिपक्ष को अपनी बात कहने का अवसर मिलना चाहिये, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है। इसलिये मेरी इस उदारता का आप लोग जो अनुचित फायदा उठा रहे हैं, मैं क्षमा चाहूंगी आपसे, भविष्य में मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। यदि आपका यही रवैया रहा तो भविष्य में ऐसा नहीं होगा।

मैं पढ़कर सभी माननीय सदस्यों को सुनाना चाहती हूं, पहले हमारे जो स्पीकर थे, सबसे पहले मावलंकर साहब जो कांस्टीट्युएंट असेम्बली के अध्यक्ष थे, उन्होंने यह लिखा है,

"I have already noted before that none of his decisions in the House can be challenged even though he may be wrong. But apart from this he exercises a very effective power of control because of the rules that only that Member can put questions or can speak who is called upon by the Speaker to do so. The result is that Speaker have refused to call upon Members to put questions or to speak….."

जो और लोग बात करते हैं, मैं उनको खास तौर से कह रही हूं।

"....unless the Members behave properly and make amend in case they have done something which has offended the dignity of the Chair of the House. I know of one case when late Shri Bithalbhai Patel refused to call upon one particular Member for any question or speech for a period of about one month, the result was as desired. The Member had to capitulate and apologize and then things went on normally with him. He should know that no Hon'ble Member has a right to protest against the ruling of the Speaker. A Member's first and only duty is to submit to it and if he is dissatisfied he has other remedies under the rules. He can move a motion for the removal of the Speaker or some such things but that is a different matter."

मतलब साफ है कि किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि चेयर ने, इस आसन ने जो व्यवस्था दे दी उसे कोई भी चैलेंज करे। यदि इस तरह से डिसओबिडिएंस कोई सदस्य लगातार करता है तो अध्यक्ष को इस बात का अधिकार है कि अध्यक्ष उसे कभी बोलने भी नहीं दे, उसकी तरफ देखे भी नहीं, जब तक कि वह माफी नहीं मांगे, क्षमा नहीं मांगे। यह भी इसमें साफ लिखा हुआ है।

**डा. सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री गोविन्द राम चौहान:** ×××

**श्री कालीचरण सर्राफ:** ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** आपके बिना आदेश के कैसे बोल रहे हैं।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्यों को मैं सुना रही थी..(व्यवधान) बात यहीं समाप्त हुई..(व्यवधान) आप से मैं यह अपेक्षा नहीं करती हूं। आप से मैं यह अपेक्षा नहीं करती हूं कि आप इस बात को न समझें। मैं जब बताना चाह रही थी तो आपने सुना नहीं और आप खड़े होकर भाषण देने लग जाते हैं। आपके साथ भी वही करना पड़ेगा जो विट्ठल भाई पटेल ने किया था...

**डा. सी.पी. जोशी:** ×××

**श्री रामनारायण चौधरी** (नेता, प्रतिपक्ष): आपकी व्यवस्था शिरोधार्य है लेकिन यह भी व्यवस्था है, यह भी प्रैक्टिस है कि the Speaker is the most humble servant of the House.

यह भी व्यवस्था है और यह भी व्यवस्था है कि the Speaker is the voice of the House.

यह भी व्यवस्था है। अब आप हमारी बात नहीं सुनें, ...

**श्री अध्यक्ष:** कौनसी बात नहीं सुनी ?

**श्री रामनारायण चौधरी:** गुढा से आने वाले माननीय सदस्य को कितनी बार आपने फटकार दिया..(व्यवधान)

**डा. सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री रामनारायण चौधरी:** हमारे सरकारी मुख्य सचेतक, यह क्या स्पेशल प्रिविलेज्ड हैं? जो मर्जी आए उस पर खड़े हो जाते हैं। यह तो कोई बात नहीं होती।

**श्री अध्यक्ष:** प्रिविलेज्ड तो यहां पर केवल दो ही पर्सन हैं, या तो लीडर आफ दी हाउस, या प्रतिपक्ष के नेता। और कोई प्रिविलेज्ड है ही नहीं। दो ही को प्रिविलेज है।

**श्री रामनारायण चौधरी:** व्यवस्था है कि इस हाउस में...(व्यवधान)

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** यदि मैं अध्यक्षजी की आज्ञा की अवहेलना करता हूं तो अध्यक्षजी कह दें, मैं अपनी ईमानदारी से कहता हूं दुबारा लौटकर के नहीं आऊंगा। (व्यवधान) मैं विधान सभा में लौटकर नहीं आऊंगा अभी चला जाता हूं ।

**श्री अमराराम (धोद):** ईमानदारी क्या होती है(व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** बाहर निकल जाओ ।

**श्री महावीर प्रसाद जैन :** यदि स्पीकर साहब यह फील करें कि मैं इनकी बिना इजाजत के खड़ा हुआ हूं और मैंने इसका दुरूपयोग किया है तो मैं आपको सत्य कहता हूं कि अभी विधान सभा से जाने के लिए तैयार हूं ।

**श्री रामनारायण चौधरी:** वह बात नहीं है । इतना आगे जाने की जरूरत नहीं है । हाउस की यह व्यवस्था है, माननीय स्पीकर की यह व्यवस्था है कि हमेशा privilege, at any moment, is of the Speaker. Then the Leader of the House and then the Leader of the Opposition. If the Speaker is on his/her legs, everybody will sit down, including the Leader of the House, the Leader of the Opposition and all other members. And when the Leader of the House stands up, the whole House … (interruptions) …

**श्री अध्यक्ष:** बीच में नहीं बोलें ।

**श्री रामनारायण चौधरी:** यह डिग्निटी ऑफ दी हाउस है, इसको मेनटेन करने की जिम्मेदारी आपकी है । हम आपको फालो करेंगे । लेकिन आप ही डिग्निटी मेनटेन नहीं करें तो हम भी वही करने लग जाएंगे । आप हमारी इज्जत ही नहीं करते हैं ।

**श्री अध्यक्ष:** सब की है जिम्मेदारी ।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** माननीय प्रतिपक्ष के नेता महोदय जब खड़े होते हैं, हमारा कोई भी माननीय सदस्य खड़ा होता है, जब आसन खड़ा होता है या प्रतिपक्ष के नेता होने के नाते आप खड़े होते हैं तो मैं सबको टोकता हूं बल्कि डांटता भी हूं। रोकता हूं, टोकता हूं, और जरूरत हो तो डांटता भी हूं । मैं इस बारे में बहुत कड़ा हूं । आप स्वयं देख रहे होंगे कि मैंने अभी हमारे कई वरिष्ठ सदस्यों को कहा कि बैठ जाएं आपने सुना भी होगा। (व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य को टोकना, डांटना यह कौनसी भाषा है? (व्यवधान)

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** ऐसा नहीं हो सकता है कि केवल हम आपसे ही अपेक्षा करें और हम जो बोलते हैं उसकी पालना हम नहीं करें । ऐसा कभी संभव नहीं है कि हमारे रहते हुए आसन का अपमान कोई करेगा उसको हम बर्दाश्त नहीं करेंगे, चाहे इधर से हो और चाहे उधर से हो ।

**श्री रामनारायण चौधरी:** वह हम भी नहीं करेंगे। हम न तो करेंगे और ना बर्दाश्त करेंगे ।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, यदि हम इसमें असफल रहे तो मैं इस पद पर नहीं रहूंगा । मैं यह भी आपसे कहना चाहूंगा ।

**डा.श्रीगोपाल बाहेती:** अध्यक्ष महोदय, किसी भी मैम्बर का यह लक्ष्य नहीं है कि आसन का अपमान करे । व्यवस्था इस बात की है कि पक्ष गंभीरता रखे, शालीनता रखे। एक सामान्य बात थी कि माननीय खाद्य मंत्री महोदय ने जो कोट किया है मुख्य मंत्रीजी के पत्र का वह सदन में रख दें और उसकी डेट बता दें । लंबी बात नहीं है। इसमें किसी का उद्देश्य यह नहीं है कि आपका अपमान करें ।

**श्री नरपत सिंह राजवी:** अध्यक्ष महोदय, आज प्रतिपक्ष के नेता और आसन की तरफ से अंग्रेजी भाषा में वाद-विवाद काफी हुआ, काफी लोगों को शायद समझ में नहीं आया । हां, सुंदर काका समझ गये होंगे ।

**श्री अध्यक्ष:** छोड़ें, छोड़ें, जो पत्र खाद्य मंत्रीजी ने लिखा पेट्रोलियम मंत्री मणिशंकरजी अय्यर को उसका लास्ट पैराग्राफ रिप्रोड्यूस कर रही हूं । उपरोक्त संबंध में निवेदन है कि केरोसीन के आबंटन वृद्धि हेतु राज्य सरकार द्वारा विभागीय पत्र क्रमांक एफ 30(1) खावि/केरोसीन-3 दिनांक 17.12.(3) उसके बाद...(व्यवधान) नहीं, उस वक्त गवर्नमैंट आ गयी थी वसुन्धरा राजेजी की ।

**श्री संयम लोढ़ा:** अध्यक्ष महोदय, 17.12.2003 को अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे और उनकी सरकार के वक्त में यह...(व्यवधान)

**(माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा इशारे से अंकित नहीं करने के निर्देश)**

**डा. सी.पी. जोशी:** ×××

**श्री अमराराम**(धोद): ×××

**श्री अध्यक्ष:** चुनाव नवम्बर में हुए हैं ।

**श्री अमराराम** (धोद): ×××

**श्री जुबेर खान:** ×××

**श्री संयम लोढ़ा:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** 2004 में है, अब आप सुनिये तो सही ।

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** क्या सुनें बात? पहले मुझे सुनिये आप । 17.12;2004 की चिट्ठी है और उसमें 17.12.2003 का प्रेषित पत्र लिखा है । उसके बाद

(श्री अध्यक्ष)

दूसरी चिट्ठी लिखी है 7.1.2004 को ठीक है। फिर 31.1.2004 को और है, मैं आशा करता हूं कि आप उपरोक्त परिस्थितियों को मद्दे नजर रखते हुए राज्य को पांच हजार के.एल. केरोसीन के अतिरिक्त आवंटन में वृद्धि करके राज्य के उपभोक्ताओं को अनुदान के रूप में राहत प्रदान करें । यह चिट्ठी लिखी है ।

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** विपक्ष गवर्नमेंट...(व्यवधान) पहले की लिखी हुई चिट्ठी थी । उसका भी हवाला दे दिया उसमें क्या दिक्कत है? और खुद ने भी लिख दी, इसमें क्या दिक्कत है?

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** ×××

**श्री अमराराम(धोद):** ×××

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** ×××

**श्री संयम लोढ़ा:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** मंत्री जी कुछ कह रहे हैं ।

**श्री जुबेर खान:** ×××

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** आपको क्या पता, लिखी होगी, दो साल में भी लिखी होगी ।

**डा. सी.पी. जोशी:** ×××

**श्री अमराराम:** ×××

**डा. किरोड़ी लाल मीणा** (खाद्य मंत्री): विराजें तो सही आप (व्यवधान)

**(श्री अध्यक्ष द्वारा हाथ के इशारे से अंकित नहीं करने के निर्देश)**

**श्री अध्यक्ष:** मंत्रीजी खड़ें हैं, स्थान ग्रहण कर लें ।

**श्री जुबेर खान:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** आप उन्हें सुन लें, एक मिनट सुन लें ।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** ×××

**श्री अध्यक्ष:** वह खड़े हैं, अब आप विराजें ।

**डा. किरोड़ी लाल मीणा:** मैंने खुद ने मणिशंकरजी को जाकर के पत्र दिया था । दिल्ली में मणिशंकरजी मंत्री थे, मैं स्टेट में मंत्री था फूड एंड सप्लाई का उसके बाद पत्र लिखा है हमारे प्रिंसिपल सैक्रेटरी ने दिसम्बर 28,2005 को भी मैं टेबल पर रखता हूं ।

**डा.सी.पी.जोशी:** ×××

**श्री जुबेर खान:** ×××

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** ×××

**श्री रामप्रताप कासनिया** (पीलीबंगा): ×××

**श्री मदन राठौड़** (सुमेरपुर): ×××

**श्री अमराराम** (धोद): ×××

**श्री अशोक बैरवा** (खण्डार):×××

**श्री मदन राठौड़** (सुमेरपुर):×××

**श्री राजेन्द्र राठौड़** (सार्वजनिक निर्माण मंत्री):×××

**श्री हीरालाल** (निवाई):×××

**श्री संयम लोढ़ा** (सिरोही): ×××

**(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)**

...(व्यवधान)...

**श्री अध्यक्ष:** माननीय मंत्रीजी कुछ कहना चाह रहे हैं, आप लोग उन्हें सुनना नहीं चाहते हैं, नहीं सुनना चाहते हैं तो बाहर चले जाएं आप। या तो आप मंत्रीजी को सुनिए, नहीं सुनना चाहते हैं तो कृपा करके बाहर चले जाइए। ...(व्यवधान)...

**श्री अमराराम** (धोद): ×××

**श्री रणवीर सिंह गुढा** (गुढा): ×××

**श्री राजेन्द्र राठौड़** (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

**श्री संयम लोढ़ा** (सिरोही): ×××

**(माननीय सदस्य श्री रणवीर सिंह गुढा द्वारा सदन के वैल में चूड़ियां फैंकी गई और काला कपड़ा लहराया गया)**

**श्री राजेन्द्र राठौड़** (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

**श्री अमराराम** (धोद): ×××

**श्री रणवीर सिंह गुढा:** ×××

डा. दिगम्बर सिंह (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री): ×××

**श्री मदन राठौड़** (सुमेरपुर): ×××

**(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)**

# सदस्य का निलम्बन

## रणवीर सिंह गुढा श्री, सदस्य का दिन भर के लिए निलम्बन

**श्री महावीर प्रसाद जैन** (मुख्य सचेतक): माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य श्री रणवीर सिंह गुढा ने काला कपड़ा और चूडियां फेंकी हैं, इस सदन का अपमान हुआ है, आसन का। और वह जिस प्रकार आसन पर झपटे हैं, मैं प्रस्ताव करता हूं कि उनको आज के लिए सदन से बाहर निकाला जाए, आज पूरे दिन के लिए।

**श्री अध्यक्ष:** क्या सदन की अनुमति है कि श्री रणवीर सिंह गुढा को आज दिन भर के लिए सदन से निलम्बित कर दिया जाए?

**(स्वीकृत)**

मार्शल ! रणवीर सिंह गुढा को आज दिन भर के लिए सदन से निलम्बित किया जाता है। ...(व्यवधान)...

**श्री संयम लोढ़ा** (सिरोही): ×××

**श्री महीपाल यादव** (बानसूर): ×××

**डा. सी. पी. जोशी** (नाथद्वारा): ×××

**श्री राजेन्द्र राठौड़** (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

**श्री अध्यक्ष:** मैंने रणवीर सिंह गुढा को आज इनके प्रस्ताव पर सारे दिन के लिए इस सदन से निलम्बित किया है।...(व्यवधान)... क्या समझ लिया सदन को? ...(व्यवधान)...जाइए, पधारिए। ...(व्यवधान)...

**(माननीय सदस्य श्री रणवीर सिंह गुढा को मार्शल द्वारा सदन से बाहर निकाला गया)**

**(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा बहिर्गमन)**

**(समय: 13.00 बजे)**

**श्री अध्यक्ष:** मुझे बड़ा अफसोस है कि सन् 52 से लेकर आज दिन तक इस विधान सभा के अंदर किसी भी माननीय सदस्य ने इस प्रकार काला झण्डा या काला कोट किसी को दिखाया नहीं है, काला कपड़ा किसी को दिखाया नहीं है।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** चूड़ियां फेंकी हैं।

**श्री अध्यक्ष:** इस प्रकार से चूड़ियां फेंकी हो। ...(व्यवधान)... आसन पांवों पर। आसन जब पांवों पर होता है तो न शोर मचाया जाना चाहिए, न अपने स्थान से उठना चाहिए, न बहिर्गमन करना चाहिए, न बाहर जाना चाहिए। आप लोगों को पता नहीं क्या हो जाता है? क्या आपको इतनी जल्दबाजी होती है?

मुझे बड़ा अफसोस है कि 54 साल के राजस्थान विधान सभा के इतिहास में पहली बार इस प्रकार की दु:खद घटना हुई है उसका मुझे बड़ा खेद है। आखिर हम सदन की गरिमा को कहां ले जाकर छोड़ेंगे? इस गरिमा को रहने भी देंगे या नहीं रहने देंगे? आज पूरे हिन्दुस्तान में राजस्थान विधान सभा के बारे में लोग चर्चा करते हैं, बात करते हैं कि राजस्थान विधान सभा फिर भी बहुत ठीक गरिमा से और फिर भी बहुत अच्छी है कंपेरेटिवली और स्टेट्स के। हम आखिर यह सब काम करके इस विधान सभा को कहां पहुंचाना चाहते हैं? इस विधान सभा को कहां ले जाना चाहते हैं? मुझे बड़ा अफसोस है इस बात का।

मुझे इस बात का भी बड़ा अफसोस है कि प्रतिपक्ष कैसा भी हो, कितना भी विचार वैभिन्न्य हो, लेकिन कम से कम इस तरह का कभी व्यवहार नहीं करता कि अध्यक्ष को सुने नहीं, मंत्री का वक्तव्य सुने नहीं, मंत्री को बात पूरी कहने दे नहीं। मुझे इस बात का अफसोस है कि प्रतिपक्ष जिस तरह का गैर जिम्मेदाराना व्यवहार कर रहा है। कैसे चैक किया जाए, मुझे तो खुद यह बात समझ में नहीं आ रही है।

**एक माननीय सदस्य:** बाहर निकाल दो।

**श्री अध्यक्ष:** खैर, बाहर निकालना भी कोई इसका हल नहीं है। लेकिन एकाध को तो निकालना पड़ेगा, तभी जाकर ठीक काम होगा। मंत्रीजी, आप कुछ कहना चाहते हैं तो कह दें ताकि रिकार्ड में आ जाए।

## पर्ची के माध्यम से उठाये गये मुद्दे

**डा. किरोड़ी लाल मीणा:** इसमें एक स्थिति मैं स्पष्ट करना चाहता हूं। एक पत्र तो मैंने दे दिया जो मेरे प्रिंसिपल सैक्रेटरी ने दिसम्बर, 2005 में लिखा था। यह पत्र जो मैंने दिसम्बर, 2004 में लिखा है, अध्यक्ष महोदय, मैं फूड एण्ड सिविल सप्लाई मिनिस्टर स्टेट का था और वहां मणिशंकरजी भारत सरकार में मंत्री थे और यूपीए की सरकार थी। वह चार्ज यह लगा रहे हैं मणिशंकर अय्यर मंत्री नहीं थे और यूपीए की सरकार नहीं थी। यूपीए की सरकार के समय में लिखा हुआ पत्र है और मेरे हाथ के द्वारा मणिशंकरजी अय्यर को दिया हुआ पत्र है। उसके बाद भी किसी प्रकार का कोटा

(श्री किरोड़ी लाल मीणा)

भारत सरकार ने नहीं बढ़ाया और निरन्तर कोटा हमको कम किया जा रहा है बार बार कहने के बावजूद भी। ये कह रहे हैं चुनाव मई में हुए थे। लोकसभा के चुनाव मई, 2004 में हुए थे जैसा आप सबको ध्यान है।

अध्यक्षजी, आपका मैं ध्यान दिला दूं, मई, 2004 में लोकसभा के चुनाव हुए थे और दिसम्बर में जब मैंने दिया था, जब मैं मंत्री बन गया था, दिसम्बर, 2004 में यूपीए की सरकार में मणिशंकरजी अय्यर केन्द्रीय मंत्री थे। मैंने मंत्री बनते ही यह पत्र उनके हाथ में थमाया था।

**श्री अध्यक्ष:** मई में बने हैं वे मंत्री।

**डा. किरोड़ी लाल मीणा:** हां। केन्द्र में वे मंत्री थे। स्टेट में मैं था, मंत्री की हैसियत से मैंने उनको पत्र दिया था और जितने भी पत्र माननीय मुख्य मंत्रीजी ने केन्द्र सरकार को लिखे थे मैंने उनका हवाला डाला था, मेरे पास उपलब्ध नहीं है, चाहे राम नाइक जी मंत्री थे। हम इसको पोलिटिकल रूप नहीं देना चाहते। तत्समय भी मुख्य मंत्रीजी ने पत्र लिखे थे, उन पत्रों को आप जब उचित समझोगे तब मैं सदन के पटल पर रख दूंगा। प्रतिपक्ष के सदस्य इसको राजनैतिक रूप देना चाहते हैं। हमारे यहां वास्तव में केरोसिन की किल्लत है, ढ़ाई या तीन लीटर से ज्यादा केरोसिन दे नहीं पा रहे हैं। हम चाहते हैं राजस्थान की जनता को कम से कम पर राशनकार्ड पांच लीटर केरोसिन तो मिले, लेकिन पाँच लीटर केरोसिन हमें नहीं मिल रहा है। और पांच लीटर हम केरोसिन देना चाहते हैं तो हमें 50774 के.एल. की जरूरत है उतना केरोसिन हमें नहीं मिल रहा है। इसको राजनैतिक रूप नहीं दिया जाए। मैं प्रतिपक्ष के सदस्यों को कहना चाहता हूं जो बाहर हैं, यहां नहीं हैं, पर कहीं न कहीं टीवी पर मेरा बयान सुन रहे होंगे। वे मेरे इस्तीफे की मांग कर रहे हैं, इस पर अगर जाना चाहते हैं कि इन्होंने यूपीए की सरकार के रहते हुए कोई पत्र नहीं लिखा, यूपीए की सरकार के रहते हुए मैंने पत्र लिखा है। मैंने पत्र ही नहीं लिखा इसलिए इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। जो इस्तीफे की मांग करें वे खुद ही इस्तीफा देकर इस सदन से चले जाएं।

**श्री अध्यक्ष:** मोहम्मद माहिर आजाद। (अनुपस्थित) श्री तगाराम चौधरी।

## बाड़मेर जिला मुख्यालय चिकित्सालय में रिक्त पदों की भर्ती

**श्री तगाराम चौधरी** (बाड़मेर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से पर्ची के माध्यम से बाड़मेर जिला मुख्यालय पर जो मुख्य चिकित्सालय है, पूर्व के उपेक्षापूर्ण कृत्य से कई दिनों से उनमें पद रिक्त पड़े थे, मैं माननीय चिकित्सा मंत्री महोदय, मुख्य मंत्री महोदय को बधाई दूं कि कई पद भरे भी गये, परन्तु इतने पद रिक्त थे जिसका कोई हिसाब नहीं था। वहां गरीबों का इलाज करने वाला डाक्टर नहीं मिलता था। ऐसी स्थिति वर्षों रही। मुझे बड़ा अफसोस हुआ जब मैं चुनकर आया तो मैं चिकित्सालय में गया और उनकी हालत देखी वह बड़ी दयनीय थी। अब हालत सुधरी है, परन्तु मैं आपके माध्यम से यह निवेदन जरूर करना चाहूंगा कि जो भी पद अभी रिक्त हैं उन पदों को तत्काल भरा जाए। पदों की सूची मैं पढ़ दूं वरिष्ठ विशेषज्ञ के स्वीकृत पद 5 और रिक्त पद एक। स्त्री रोग कनिष्ठ विशेषज्ञ स्वीकृत पद 10, रिक्त पद 4 । ये भी इसी तरह खाली थे उनमें से भरे गये इसलिए कम रिक्त है, परन्तु ये पद भी भरने के लिए मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा।

वरिष्ठ चिकित्सक चिकित्साधिकारी स्वीकृत पद हैं 4, रिक्त पद हैं 3। चिकित्सा अधिकारी-स्वीकृत पद हैं 18, उनमें 11 पद रिक्त हैं। मुख्य बात तो यह है कि प्रयत्न किया गया डाक्टरों के आदेश भी करवाये गये, लेकिन वे जाइन नहीं कर रहे हैं। आप यह तो मानते हैं कि बाड़मेर जिला सीमावर्ती जिला है, बाड़मेर जिले में सुविधाओं का अभाव है इसलिए कोई डाक्टर जाने में भी असमर्थ है और जाता नहीं है। मैं पुनः आपके माध्यम से चिकित्सा मंत्री महोदय से करबद्ध प्रार्थना करूंगा कि किसी न किसी तरह से इन पदों को भरकर वहां की जनता की सुध लें, जैसे आपने ली है। आपने एएनएम के पद बहुत भारी मात्रा में हमको दिये, आपने चिकित्सालय भी क्रमोन्न्त किये, सब कुछ किया, चिकित्सालय में आपने भरपूर बजट दिया, सारी व्यवस्थाएं हुई हैं, लेकिन जो कमी रह गई है उसको आप किसी तरह से आगे पूर्ण कराएं, मेरा पर्ची के माध्यम से इतना ही निवेदन है। आपने समय दिया, आपका बहुत-बहुत आभारी हूं।

**डा. दिगम्बर सिंह** (चिकित्सा मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, बाड़मेर जिला मुख्यालय और बाड़मेर जिले में यह बात सही है माननीय सदस्य की जो पीड़ा कि है वेकेन्सीज है। बाड़मेर डिस्ट्रिक्ट होस्पिटल में सीनियर स्पेशलिस्ट के 5

(डा. दिगम्बर सिंह)

पद हैं। पांचों भरे हुए हैं, उसमें तो वेकेंसी नहीं है। जूनियर स्पेशलिस्ट की वेकेंसीज हैं और मेडिकल आफिसर्स की वैकेंसीज हैं। अभी राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन से 369 डाक्टर्स का रिक्रूटमेंट किया है, अभी उनका रिजल्ट आया है, उनके पुलिस वैरीफिकेशन के बाद मैं माननीय सदस्य को आश्वासन देना चाहता हूं कि प्रायोरिटी से बाड़मेर के जो रिक्त पद हैं उनको भरने का पूरा-पूरा प्रयास करेंगे।

## सदन पटल पर रखे गये पत्र

### प्रतिवेदन

### राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम का 41वां वार्षिक प्रतिवेदन, 2004-2005

**श्री अध्यक्ष:** सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्रादि।

श्री युनूस खान।

**श्री युनूस खान** (परिवहन मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से सड़क परिवहन निगम अधिनियम, 1950 की धारा 35(2) के अन्तर्गत राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम का 41वां वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2004 -05 सदन की मेज पर रखता हूं।

## याचिकाओं का उपस्थापन

### बायतू (बाड़मेर) के संस्कृत विद्यालय को महाविद्यालय में क्रमोन्नत करने एवं तहसील व पंचायत मुख्यालय बायतू में उपखण्ड अधिकारी कार्यालय खोलने बाबत

**श्री अध्यक्ष:** याचिकाओं का उपस्थापन। श्री तगाराम चौधरी।

**श्री तगाराम चौधरी** (बाड़मेर): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से निम्नांकित दो याचिकाओं का उपस्थापन करता हूं :-

1. राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय बायतू जिला बाड़मेर को संस्कृत महाविद्यालय में क्रमोन्नत करने बाबत् सात व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित एवं बायतू में उपखण्ड अधिकारी कार्यालय खोले जाने बाबत
2. विधान सभा क्षेत्र बाड़मेर के तहसील एवं पंचायत समिति मुख्यालय बायतु जिला बाड़मेर में उपखण्ड अधिकारी कार्यालय

(श्री तगाराम चौधरी)

खुलवाने बाबत सात व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित दोनों याचिकाएं उपस्थापित करता हूं।

**श्री अध्यक्ष:** श्री वीरेन्द्र बेनीवाल। (अनुपस्थित) श्री बंशीलाल खटीक।

## राजकीय आर. के. चिकित्सालय, राजसमन्द को क्रमोन्नत करने बाबत

**श्री बंशीलाल खटीक** (राजसमंद): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से राजकीय आर.के. चिकित्सालय जिला राजसमंद को 100 शैयाओं (बैड) से 200 शैयाओं (बैड) से 200 शैयाओं (बैड) में क्रमोन्नत करने बाबत पांच व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित याचिका का उपस्थापन करता हूं।

## आय-व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

**श्री अध्यक्ष:** श्री एन.एस. गुर्जर।

**डा. एन.एस. गुर्जर** (टोडारायसिंह): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया इसके लिए आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं। अध्यक्ष महोदय, इस बजट में ...

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** आज विपक्ष नहीं है।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** कोई बात नहीं है।

**श्री अध्यक्ष:** न होगा तो विपक्ष। ...(व्यवधान)...

**डा. एन.एस. गुर्जर:** इस बजट में माननीय मुख्य मंत्रीजी ने सामाजिक सेवाओं पर विशेष जोर दिया है वहीं इकोनोमिक सर्विसेज पर विशेष ध्यान देकर राजस्थान को विकसित प्रदेशों की श्रेणी में लाने का प्रयत्न किया गया है। अध्यक्ष महोदय, जब वह परिवर्तन यात्रा पर थी तो उन्होंने गरीब का चेहरा देखा लोग बेसहारा देखे, महिलाओं, विधवाओं, वृद्धों, असहाय लोगों की विवशता देखी, किसानों की सिसकिया देखी इसलिए उन्होंने यह बजट बनाते समय बच्चों के वात्सल्य को, युवाओं की बेरोजगारी से जूझने के दर्द ध्यान में रखा। हर वर्ग का ध्यान रखते हुए उन्होंने हर वर्ग को कुछ न कुछ देने का प्रयास किया है इसमें इस बात की स्पष्ट झलक मिलती है इस बजट में। इसलिए शिक्षा, स्वास्थ्य, जल प्रबंधन, बेरोजगारी, आधारभूत ढांचे को मजबूत बनाने का प्रयत्न, बाहरी निवेश अधिक हो, इसका वातावरण बनाने का प्रयास, यह सब इस बजट में किया है।

(डा. एन. एस. गुर्जर)

अध्यक्ष महोदय, कल जब माननीय प्रतिपक्ष के नेता इस बजट पर बोल रहे थे। तो उन्होंने कई मुद्दे उठाये थे लेकिन उनका जवाब देने से पहले मैं कहना चाहूंगा कि जब शासन हमने संभाला था, अध्यक्ष महोदय, तो टैंथ फाइनेंस कमीशन ने कुछ स्टेट्स को कैटेगराइज किया था और कैटेगराइज करते समय उन्होंने कहा कि जो जो को राजस्व खर्च का 17 परसेंट से ज्यादा इंटरेस्ट पेमेंट करते हैं वह हाई फिस्कल डेफिसिट के अन्तर्गत आते हैं तो हमारा राजस्थान हाई फिस्कल डेफिसिट स्टेट्स में उस समय फंसा हुआ था। मैं आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा 1998-99 में जिस समय हमने सरकार छोड़ी interest payment of revenue expenditure was only 19.24 per cent. 17 प्रतिशत से 19 प्रतिशत ज्यादा था लेकिन उसके बाद लगातार यह बढ़ता गया 1998-99 के बाद यह लगातार 21, 22, 23, 24, 25 थोड़ा ज्यादा हुआ यह लगातार बढ़ता गया। यह सरकार प्रयत्न कर रही है कि उसको कम करें, ताकि हाई फिस्कल डेफिसिट स्टेट्स से हमारा प्रदेश बाहर आए। इसके लिए कुछ प्रयत्न भी किये हैं। अध्यक्ष महोदय, रेवेन्यू रिसीट्स को बढ़ाया। प्रयत्न करते समय 2004-05 और 2005-06 में जो इंक्रीज हुए हैं, केवल परसेंटेज ही मैं बताऊंगा क्योंकि समय की पाबंदी है, 16.78 परसेट रेवेन्यू एक्सपेंडीचर बढ़ा, 2006-07 में 15.6 परसेंट बढ़ा। यदि 2002-03 जब ये सत्ता में थे। उस वर्ष की 2006 07 से तुलना करें तो करीब 83.39 परसेंट, 83 रेवेन्यू रिसीट्स/ एक्सपेंडीचर बढ़ा है। एकदम ज्यादा रेवेन्यू असेट्स बढ़ना यह साफ झलकता है कि प्रदेश आर्थिक वित्तीय प्रबंधन की तरफ, विकास की तरफ मजबूती से बढ़ रहा है। क्योंकि सामाजिक सेवाओं में सब कुछ व्यवस्था की, राजस्थान में विकास की व्यवस्था की, पैसा कहां से आएगा? इसलिए वित्तीय प्रबंधन पर जोर दिया गया और उसका परिणाम यह रहा, वित्तीय प्रबंधन कैसे होता उसके लिए रेवेन्यू रिसीट्स को बढ़ाया गया जो मैंने आपको आंकड़े दिये।

उसी तरह रेवेन्यू एक्सपेंडीचर को विकास के लिए बढ़ाया गया। रेवेन्यू एक्सपेंडीचर प्लान का तो बढ़ा लेकिन दूसरी चीजों का रेवेन्यू एक्सपेंडीचर घटाया गया। 2002-03, 2003-2004 में रेवेन्यू एक्सपेंडीचर 16.98 परसेंट था, वहीं 2004-05, 2005-06 में यह 8.56 परसेंट बढ़ा। यह कम क्यों हुआ? क्योंकि ज्यादातर हिस्सा प्लान में बढ़ाकर नॉन प्लान एक्सपेंडीचर थोड़ा कम हुआ। इसी तरह 2005-06, 2006-07 में 11.21 परसेंट बढ़ा, यह क्यों बढ़ा ? यह थोड़ा सा फिर 2004-05, 2005-06 से बढ़ा लेकिन इसका हिस्सा भी

(डा. एन. एस. गुर्जर)

प्लान एक्सपेंडीचर में बढ़ा उसमें कम बढ़ा गई कि क्या क्या इंडीकेटर्स हैं अच्छे वित्तीय प्रबंधन के, यह उन्होंने कोशिश की।

इसी तरह से रेवेन्यू डेफिसिट, को कम किया। रेवेन्यू डेफिसिट के लिए 11वें वित्त आयोग ने कहा था कि जो स्टेट्स 8-9 तक इसको कम कर देंगे, उनको विशेष सहायता दी जाएगी। मुझे खुशी है कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने रेवेन्यू डेफिसिट को जो 2008-09 तक जीरो पर आना था, 2007-08 में ही जीरो पर लाने की घोषणा की है और मुझे इस बात की भी खुशी है कि इस वर्ष के बजट में यह डेफिसिट घटकर केवल। 0.18 रह गया। इसका तात्पर्य यह है, जो मुख्य मंत्रीजी ने कहा है कि यह अगले वर्ष तक जीरो पर आ जाएगा। मैं उदाहरण देना चाहूंगा कि 1989-90 में बी.जे.पी. की सरकार थी, 30 करोड़ रुपया था रेवेन्यू डेफिसिट। 1990-91 में प्रेसीडेंट रूल था लेकिन बी.जे.पी. का कार्यकाल भी उसमें शामिल था तब यह प्लस 167.9 करोड़ आ गया। लेकिन, अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस का राज जब 2002-03 में था तो मैं आपको कहना चाहता हूं, रेवेन्यू डेफिसिट बढ़कर, आपको ताज्जुब होगा, 3933.9 करोड़ हो गया।

यानि राजस्थान विकास की दृष्टि से एकदम पीछे चला गया । ये इनके पैरामीटर्स हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं, 12वें वित्त आयोग की जो सिफारिशें हैं। 12वें वित्त आयोग के अनुसार जो फाइनेंशियल मैनेजमेंट अच्छा होता है उसके क्या पैरामीटर्स होने चाहिए, उन्होंने जो कहा, मैं उनके आंकड़े बता रहा हूं। उसके बाद लगातार रेवेन्यू डेफिसिट बढ़ता गया लेकिन सबसे ज्यादा 2002-03 में बढ़ा जो मैंने अभी दिया। अगर बीच के फीगर्स आप देखना चाहें तो हमने 03-04, 04-05 में 37 प्रतिशत घटाया, 04-05, 05-06 में 60 प्रतिशत कम किया, 06-07 में 97 प्रतिशत कम किया। 97 प्रतिशत कम किया उसका परिणाम यह रहा कि यह घटकर आज 0.18 प्रतिशत रह गया। समय बचाने के लिए मैं आंकड़े करोड़ों में नहीं बताना चाहता, परसंटेज में दे रहा हूं कि किस तरह से रेवेन्यू डेफिसिट को इस सरकार ने कम करके वित्तीय प्रबन्धन को मजबूत किया।

अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से कैपिटल एक्सपेंडिचर में भी हमने लगातार बढ़ोतरी की। मैं आंकड़ों में ज्यादा नहीं जाना चाहूंगा, लेकिन केपिटल एक्सपेंडिचर 04-05 में हमारी सरकार आ गई थी उस समय मैक्सिमम 72.04

(डा. एन.एस. गुर्जर)

बढ़ा जबकि इनके समय इतना कभी नहीं बढ़ा। इसी तरह से 04-05, 05-06 में 34 प्रतिशत के आस-पास बढ़ा तो बढ़ता गया। अब कैपिटल एक्सपेंडिचर के बढ़ने से फिस्कल डेफिसिट भी बढ़ता है क्योंकि ऋण लिया जाता है, इसलिए कैपिटल एक्सपेंडिचर को बढ़ाते हुए फिस्कल डेफिसिट कंट्रोल किया। कंट्रोल ही नहीं किया, उसको कम किया क्योंकि यह एक जनरल धारणा है, एक जनरल नियम है कि जब-जब कैपिटल एक्सपेंडिचर बढ़ेगा, फिस्कल डेफिसिट अपने आप बढ़ेगा।

**(समय: 13.22 बजे)**

**(श्री रामनारायण विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदासीन)**

इसलिए फिस्कल डेफिसिट को उलटा किया। कैपिटल एक्सपेंडिचर को हमने बढ़ाया और फिस्कल डेफिसिट को कम किया और कम करके उस स्थिति पर ले आये जो 12वें वित्त आयोग ने सिफारिशें की थीं उस 12वें वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर मैं निवेदन करना चाहूंगा कि अब कितना कम लाये। कैपिटल एक्सपेंडिचर के कुछ मैंने अभी उदाहरण दिये थे लेकिन अगर मैं करोड़ों की बात करूं तो इसमें भी फिस्कल डेफिसिट में लगातार सुधार हो रहा है। 1990-91 में 544.8 करोड़ था, 1997-98 में 2552 करोड़ हो गया, 1998-99 में जब ये सरकार में आये, इन्होंने 5150.9 करोड़ कर दिया, जस्ट डबल कर दिया और जब इन्होंने 2003-04 में छोड़ा, ये 7367.1 करोड़ फिस्कल डेफिसिट छोड़कर गये थे। मैं इसलिए कहना चाहता हूं कि इन्होंने फाइनेंशियल मैनेजमेंट यानि स्टेट को हाई फिस्कल स्ट्रैस में डाल दिया, वित्तीय प्रबन्धन को तहस-नहस कर दिया। इसलिए इनको बार-बार कहना पड़ा कि हमारा खजाना खाली है, खजाना खाली है। लेकिन इस सरकार ने एक दिन भी यह नहीं कहा कि हमारा खजाना खाली है क्योंकि बेहतर वित्तीय प्रबन्धन किया। इसमें जो सुधार किया उसके आंकड़े मैंने बताये। फिस्कल डेफिसिट, यह मैं बता रहा हूं, 2003-04 मैंने रेवेन्यू डेफिसिट बताया, मैंने फिस्कल डेफिसिट बताया कि कैपिटल एक्सपेंडिचर बढ़ाने के साथ-साथ हमने फिस्कल डेफिसिट को कम किया। यह कितना कम किया, इसके आंकड़े मैंने आपको बताये। इसके अनुसार अगर देखें तो 2003-04 और 2004-05 में माइनस 17 प्रतिशत यानि हमने 17 प्रतिशत फिस्कल डेफिसिट को कम किया। 2004-05 की बी.ई. और ए.ई. में 10 प्रतिशत हमने रिड्यूस किया, और अगर आप 2005-06 और

(डा. एन.एस. गुर्जर)

2006-07, इस साल का बजट देखें तो इसमें फिस्कल डेफिसिट में 26 प्रतिशत हमने रिड्यूस किया है, रेवेन्यू डेफिसिट को कम किया, फिस्कल डेफिसिट कम किया। ये इंडिकेटर्स हैं बेहतर वित्तीय प्रबन्धन के। हमारी सरकार ने हर तरह से इसको कम किया है। कम करने का नतीजा क्या हुआ ? उपाध्यक्ष महोदय, नतीजा यह हुआ कि 12वें वित्त आयोग ने कुछ रिकमंडेशंस कीं। इन्होंने कहा कि कर्जा बहुत ले लिया। अब कर्जे का भी मैं निवेदन करना चाहूंगा, अभी जी. डी. पी. का राजकोषीय घाटा, 2004-05 में यह साढ़े छह प्रतिशत था। एफ आर बी एम एक्ट आया और फिस्कल डेफिसिट और जी डी पी के रेशों को 12वें वित्त आयोग ने कहा कि तीन प्रतिशत कीजिये और तीन प्रतिशत नहीं कर सकते तो इसको 4-5 के बराबर लाइये। ये दो बातें उन्होंने कही और इन दोनों बातों में ही हम फिस्कल डेफिसिट को नीचे लाये। 2004 05 में जो 6.5 प्रतिशत था, 2005-06 के अन्दर जो आर. ई. आई है उसमें यह घटकर पांच प्रतिशत रह गया, यानि हम तीन प्रतिशत की तरफ बढ़ रहे हैं। हमने इसको डेढ़ प्रतिशत कम किया है। यदि उस तरह से देखा जाए फिस्कल डेफिसिट को तो जहां यह 2004-05 में 2142.60 करोड़ था, हमने 2005-06 की बी. ई. में घटाकर 1523 करोड़ किया, 2005-06 की जो आर. ई. आई उसमें 865.37 करोड़ ही कर रहा और इस बार 2006-07 में तो यह केवल, 43 करोड़ उपाध्यक्ष महोदय, मैं इतना निवेदन करना चाहता हूं कि इसका परिणाम क्या हुआ। हमारी ग्रोथ रेट बढ़ी। ग्रोथ रेट कितनी बढ़ी इसका परिणाम यह हुआ कि 2001 में जहां इनकी ग्रोथ रेट 0.54 प्रतिशत थी जी डी पी की और 2002-03 में यह माइन्स में चली गई, माइन्स 2.97 प्रतिशत, उसके बाद हम आये, 2003-04 में हमने 22.25 प्रतिशत ग्रोथ रेट बढ़ाई और 2005-06 में यह 10.36 प्रतिशत के आस-पास बढ़ी। उसके बाद अब भी हम इस ग्रोथ रेट को इतनी ही कंटीन्यू करना चाहते हैं। अगली बार का भी हमारा टार्गेट है कि यह 10 प्रतिशत से अधिक ही रहे। आज केन्द्र सरकार की ग्रोथ रेट 8.1 प्रतिशत है, केन्द्र सरकार ने इस बार घोषणा की है कि वह ग्रोथ रेट बढ़ाकर के 10 प्रतिशत पर ले जाएगी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए। लेकिन हमने पहले ही, यानि हम लोग आगे चले गये। अब ये आगे चले गये तो रेट आफ इंफ्लेशन केन्द्र सरकार में 5.6 प्रतिशत रही। यह ग्रोथ रेट बढ़ी तो हमारी प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ गई। प्रति व्यक्ति आय बढ़ी तो उसका परिणाम यह हुआ कि नेशनल एवरेज के काफी नजदीक हम लोग पहुंचे। मैं

(डा. एन. एस. गुर्जर)

इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि अगर हम देखें, हमारी प्रति व्यक्ति आय 2005-06 में 17695 रुपये हो गई। 2000-01 में केवल 12514 रुपये प्रति व्यक्ति आय थी जो एकदम जम्प कर गयी इनके शासनकाल तक 2001-02 में 13621, 2002-03 में 12651 और हमारा शासन आते ही 15 हजार पर पहुंची, फिर 16 हजार से ज्यादा पर पहुंची और अब 17695 पर पहुंच गई। तो ग्रोथ रेट के साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय बढ़ती गई। ये इंडिकेटर्स हैं एक मजबूत आर्थिक स्थिति किसी भी प्रदेश की होने के। उसका असर आम जनता के ऊपर भी हुआ। आम जनता के ऊपर यह असर हुआ कि भारत का मृत्यु दर का रेश्यो 8.0 प्रति हजार है और राजस्थान का 7.6 प्रति हजार है यानि मृत्यु दर कम हो गई। 2001 में जब ये थे तो यह 8.5 प्रति हजार थी। यह मृत्यु दर घटकर आ गई जबकि जनसंख्या हमारी लगातार बढ़ रही है। तो ये पैरामीटर्स हैं मजबूत इकोनोमी के और इस मजबूत इकोनोमी के पैरामीटर्स को हमने पूरी तरह से ठीक किया है। .....

इसी तरह से उपाध्यक्ष महोदय, डी.एस.पी. का राजकोषीय घाटा इनके समय में, 2001-2002 में 6.53 प्रतिशत था और 2002-2003 में 7.15 प्रतिशत था हम इसको 7.15 प्रतिशत से घटाकर 2004-2005 में 5.6 प्रतिशत पर ले आये और 2005-2006 में, बी.ई. में 5.09 प्रतिशत पर ले आये। इसलिए जो मैंने अभी बताया यह पांच प्रतिशत के आसपास आ गया है। तो यह सब Revenue deficit as percentage of revenue receipts, 1999-2000 में 37.18 प्रतिशत था, इसको कम करके हम 2004-2005 में 12 प्रतिशत पर लाये और 2005-2006 में यह सात प्रतिशत के आसपास सम्भावित है मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ये ही परिणाम थे जिसके कारण एक दिन ओवरड्राफ्ट में फरवरी 2004 के बाद राज्य सरकार नहीं रही, लगातार हम रिजर्व बैंक में सरप्लस में रहे और राज्य के कर राजस्व में भी हमने वृद्धि की। यह नहीं, हमने मैनेजमेंट को ठीक किया, टैक्स रेवेन्यू को भी हम बढ़ाते गये। और यदि हम देखें तो 2001-2002 में केवल सात प्रतिशत टैक्स रेवेन्यू थी, यह 2002-2003 में बढ़कर 10.26 प्रतिशत हुई लेकिन 2003-2004 में ज्योंही हम आये, इसको एकदम 16.09 प्रतिशत पर ले गये और 2004-2005 के अन्दर यह 15.91 प्रतिशत था, करीब 16 प्रतिशत के आसपास पहुंच गया और 2005-2006 के अन्दर यह करीब 17 प्रतिशत के आसपास पहुंच गया। उपाध्यक्ष महोदय, यह टैक्स रेवेन्यू हमने बढ़ाई, टैक्स रेवेन्यू किससे बढ़ाई?

(डा. एन.एस. गुर्जर)

यह सरलीकरण करके बढ़ाई। लाफर्स कर्व थ्योरी है टैक्स की कि टैक्स का जितना सरलीकरण करेंगे, टैक्स को जितना कम किया, इसको फोलो करके मुख्य मंत्रीजी ने टैक्सेज का सरलीकरण किया, टैक्सेज में राहत दी। उसका परिणाम यह हुआ कि हम ज्यादा कलेक्शन कर पाये।

आज सी.ए.जी. की रिपोर्ट मैंने पढ़ी है, उसमें एक लेकूना बताया है, कुछ लैप्सेज बताये गये हैं। उन्होंने कहा कि लगभग 3000 करोड़ रुपये टैक्सेज में लैप्स हुए हैं। मैं सरकार का ध्यान इस ओर भी दिलाना चाहूंगा कि जो इस तरह के लैप्सेज हैं, इन लैप्सेज को देखना चाहिए कि इस तरह के लैप्सेज नहीं हो। हालांकि हमारी टैक्स रेवेन्यू बढ़ रही है, लेकिन यह और बढ़ सकती है अगर इस तरह के लैप्सेज को हम रोकेंगे। प्रशासन के स्तर पर कहां-कहां लैप्सेज हैं, सरकार की जिम्मेदारी है कि उनको रोके। जो लोग अधिकारीगण लैप्सेज में शामिल हैं, उनके खिलाफ भी आप कड़ी से कड़ी कार्यवाही करें ताकि राजस्थान की रेवेन्यू बढ़े। यह छोटे-छोटे लैप्सेज से हमारी इकोनोमी खराब हो रही है इसलिए हमको इसकी सावधानी, इसकी चिंता अवश्य करनी पड़ेगी। इसलिए हमको यह चिंता जरूर करनी चाहिए कि टैक्सेज में लैप्सेज नहीं हों।

उपाध्यक्ष महोदय, इसका परिणाम क्या हुआ? 12वें वित्त आयोग ने एक रिपोर्ट दी उस रिपोर्ट में दो-तीन बातें उन्होंने कही कि यदि आप रेवेन्यू डेफिसिट को जीरो पर ले आओगे, कम करोगे तो हम कितनी सहायता देंगे कि। अगर आपके फिस्कल डेफिसिट को कम करोगे तो कितनी सहायता देंगे, यह सब उन्होंने बताया। लेकिन उनके अनुकूल जिस पात्रता के लिए हम खरे उतरे हैं, उस पात्रता के अनुकूल उन्होंने हमको कुछ नहीं दिया। इसका जिक्र मैं बाद में करूंगा, उसके पहले मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि एक तरह से हमने राजस्थान की इकोनोमी को मजबूत किया है।

मैं एक और निवेदन करना चाहूंगा कि 12वें वित्त आयोग ने कहा है कि कर्ज और जी.डी.पी. के अनुपात को जो वर्ष 2004-2005 में लगभग 60 प्रतिशत हो गया, उसको अधिकतम 28 प्रतिशत पर लाना होगा। हमारी सरकार इस तरफ प्रयत्न कर रही है और हमारा यह नीचे आया है। इसी तरह से राजकोषीय घाटा जी.डी.पी. का अनुपात 6.5 प्रतिशत है, तीन प्रतिशत पर लाना होगा या 4-5 प्रतिशत के स्तर पर लाना होगा। मैंने अभी बताया कि 4-

(डा. एन. एस. गुर्जर)

5 प्रतिशत के स्तर पर तो हम लायें, उससे भी कम ले लाये हम पांच प्रतिशत पर भी इसको ले आये इसलिए यह हम पात्र हो गये इसी तरह से उन्होंने डैट-स्वैप की बात कही, यह 11वें वित्त आयोग ने भी कही, 12वें वित्त आयोग ने भी कही कि हम डैट-स्वैप 31.3.1999 में ब्याज दर वाले कर्ज पर डैट-स्वैप लागू होगा। उस पर 13 प्रतिशत या उससे अधिक अगर इंट्रेस्ट होगा तो सात प्रतिशत के ऊपर लाएंगे और लघु बचत का डेट-स्वेप करके 90.5 प्रतिशत पर लायेंगे तो इससे हमको करीब छह प्रतिशत की ऊपर वाले में मिलेगी और 4.5 प्रतिशत की छूट नीचे वाले में मिलेगी। कुल मिलाकर राज्य को इसमें बहुत बड़ा लाभ होगा। हमारी सरकार ने यह काम और किया है।

अभी यह ब्याज की बात करें, अब ये कहेंगे कि कर्जा बहुत ज्यादा ले लिया। उपाध्यक्ष महोदय, हमने कर्जा 23000-24000 करोड़ के आसपास छोड़ा था लेकिन हमने परिसम्पत्तियां बहुत बनाईं। मैं परिसम्पत्तियां बता रहा हूं कि कितनी-कितनी बनी हैं। यहां परिसम्पत्तियां बनी और इन परिसम्पत्तियों के अन्दर हमने इंट्रेस्ट कम लिया। पिछली बार जो इंट्रेस्ट लेना चाहिए था 2004-2005 में हमें करीब 1849 करोड़ रुपये लेने चाहिए थे। अगर आर्थिक विशेषज्ञ देखेंगे तो कर्ज कितना लेना चाहिए, इकोनोमी में उसका एक हिसाब है, एक फार्मूला है। उस फार्मूले के हिसाब से हमने पिछले साल 2004-2005 में 1849.07 करोड़ का कर्जा कम लिया तो ये कह रहे हैं कि कर्ज बहुत ले लिया। उपाध्यक्ष महोदय, कर्ज को हमने लेकर आलतू-फालतू चीजों में खर्च नहीं किया। हमने कर्ज लिया, पहली बार कम लिया, लेकिन कर्जा जितना भी लिया है, इसकी तुलना में हमने उसकी असेट्स बहुत ज्यादा बनाई है। पहले 26 प्रतिशत असेट्स बनाई, इस बार 37 प्रतिशत पर ले गये। वर्ष 2005-2006 में हमने 65 प्रतिशत असेट्स बनाई हैं। इनकी असेट्स बहुत कम रही उसका कारण यह रहा है कि असेट्स जब ली गई तो यह जो वार्षिक योजना का आकार था, वह हमारा बढ़ता गया। मैं उसमें नहीं जाना चाहूंगा, कई माननीय सदस्यों ने उसकी चर्चा कर दी पर हमने किस तरह से 2003-2004 में ही, चार महीनों में ही 4200 करोड़ से 5500 करोड़ रुपये कर दिखाया, 6000 करोड़ पर जाकर उसको कम्प्लीट किया। उसके बाद 8000 से ज्यादा 8500 के आसपास ले गये। लेकिन उसका असर क्या हुआ? उसका असर यह हुआ कि नवीं पंचवर्षीय योजना जब ये थे, 27650 करोड़ रुपये की थी। इसको लाकर के इन्होंने जो लक्ष्य हासिल किया वह 70.77 प्रतिशत का लक्ष्य हासिल किया यानी

(डा. एन.एस. गुर्जर)

19566.82 करोड़ रुपये पर लाकर इन्होंने टिका दिया। 10वीं पंचवर्षीय योजना जो वर्ष 2007 तक है, हमारे शासनकाल में आते ही 31831.75 करोड़ की थी। इसका असर क्या हुआ, मैं जो बता रहा हूं वित्तीय प्रबन्धन? जो कर्जा बता रहे हैं, इंट्रेस्ट बता रहे हैं या जो भी चीजें बता रहे हैं, हमारा जो वित्तीय प्रबन्धन था, इसके कारण हमारी पंचवर्षीय योजना जब खतम होगी 2007 में उपाध्यक्ष महोदय, 31000 करोड़ रुपये से बढ़कर, उससे ज्यादा 33742.42 करोड़ रुपये की यह सम्भावित है, जो 106 प्रतिशत के आसपास बढ़ेगी। यह इस सरकार के अच्छे वित्तीय प्रबन्धन का सवाल है। अच्छे वित्तीय प्रबन्धन के लिए इस सरकार ने कदम उठाये हैं और इसमें सफल रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक निवेदन और करना चाहूंगा, उन सब परिस्थितियों के होते हुए भी यहां पर कभी कैपिटल फोर्मेशन हमारा ज्यादा हुआ है मैं आंकड़े अगर आपको दूं, जैसा मैंने बताया, करीब-करीब 65 प्रतिशत के आसपास हमारा केपिटल फोर्मेशन हुआ है। उपाध्यक्ष महोदय, इस वित्तीय प्रबन्धन के अलावा भी आगे जो केन्द्र सरकार के टैक्सेज हमको मिल रहे हैं,

हमारे टैक्सेज बहुत ज्यादा हैं। हमने जितना भी कर्जा लिया उन बोरोइंग्स का हमने सदुपयोग किया और उसको कैपिटल फोर्मेशन में लगाया। इसलिए ये जो बार'-बार कर्जे की बात करते हैं कि इतना कर्जा ले लिया, इतना ले लिया, वो चले गये मैं उनको बताता कि कितना-कितना क्या कर्जा लिया और क्या नहीं लिया एक बात और कही उन्होंने कल रामगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य बोल रहे थे कि ये योजनाएं बनायी, ये वित्तीय प्रबंधन का असर क्या हुआ है कि हमने हर सैक्टर में चाहे सोशल सेक्टर हो चाहे इकोनोमिक सैक्टर है, सोशल सैक्टर में बहुत ज्यादा ध्यान दिया। पन्नाधाय योजना, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय योजना, गुरु गोलवलकर योजना हमने कई योजनाएं चलायीं। इन योजनाओं को चलाने से उनको परेशानी हो गयी और उन्होंने कह दिया कि इन योजनाओं के ऊपर थोड़ा सा पैसा खर्च किया, बहुत कम प्रोविजन रखा कहीं डेढ़ करोड़, कहीं दो करोड़, कहीं तीन करोड़, कहीं एक करोड़। तो मैं उनको यह कहना चाहता हूं कि जब शुरूआत होती है तो छोटे सी चीज से होती है। हमारी सरकार ने सोचा तो सही कि इन वर्गों का भी ध्यान रखा जाए विधवा, असहाय महिलाएं, बीपीएल में रहने वाले लोग, आदिवासी, बच्चियां। ये वह कह रहे थे कि आप योजनाएं चलाकर झूठी वाहवाही लेने की कोशिश कर रहे हो तो मैं चार पंक्तियों के माध्यम से उनको

(डा. एन. एस. गुर्जर)

कहना चाहता हूं 'हवाओं का रुख बदलने तो लगा है। मौसम का मिज़ाज बदलने तो लगा है। व्यर्थ में ही शक करने वालों जरा गौर से तो देखो विकास का आखिर अब चलने तो लगा है।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** आपकी है कि दूसरे की है?

**डा.एन.एस. गुर्जर:** यह मेरी है। मैं खुद की बोलता हूं, दूसरे की नहीं बोलता खुद ही लिखता हूं। इसलिए, उपाध्यक्ष महोदय...

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** यह कहीं सुनी है।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** कहीं नहीं सुनी आपने। मुझे बताएं, किसी की लिखी हुई होगी तो मैं जो कहेंगे वो ही कर दूंगा, आपसे क्षमा मांग लूंगा कान पकड़ कर ।

इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, इनको दिख रहा है गरीब तबके को पहली बार राहत दी गई है और उनको राहत पहुंचायी जा रही है। उसकी शुरूआत हो चुकी है, उसकी शुरूआत हमने की है। उसका अगर आप देखेंगे, मैं ज्यादा आंकड़ेबाजी में नहीं जा रहा हूं। पर जैसा मैंने कहा, गरीब वर्ग के उत्थान के साथ-साथ हम असेटस क्रियेट कर रहे हैं । असेट्स टोटल डेब्ट की इन्होंने 01-02 में तीस प्रतिशत असेट्स क्रियेट की थी और 04-05 में आते-आते हमने 57 प्रतिशत और 05-06 में 65 प्रतिशत से एबव चली गये। 01-02 और 04-05 में यह करीब साढ़े चार गुना ज्यादा था इसी तरह इंट्रेस्ट रेट पेमेंट की बात कर रहे थे कि इंट्रेस्ट ज्यादा पे कर रहे हो। 01-02 में हमने 32 प्रतिशत इंट्रेस्ट पे किया गया था 05-06 में हमने केवल 26 प्रतिशत इंट्रेस्ट पे किया लोन पर। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि किसी भी तरह से वो सरकार कहीं नहीं टिकती वित्तीय प्रबंधन में नहीं टिकती, और चीजों में नहीं टिकती राजस्व प्राप्तियों का ब्याज भुगतान देखें, उसमें भी हम कम पर आ गये। ये करीब 31-32 पर थे, हम 25 प्रतिशत के आस पास आ गये 05-06 में उपाध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार को किसी भी तरह के आप आंकड़े देख लें, हम आगे हैं। इंट्रेस्ट पेमेंट और रेवेन्यू एक्सपेंडीचर का मैंने आपको बता दिया है, इसलिए वित्तीय प्रबंधन में हम कहीं भी इनसे कम नहीं हैं। उपाध्यक्ष महोदय, कल यह बात बोल रहे थे कि सोशल सैक्टर में और इकोनोमिक सैक्टर में राशि घटा दी गयी। सोशल सैक्टर में हमने इन्क्रीज किया, और कितना इन्क्रीज किया। इसी तरह से इकोनोमिक सैक्टर में भी हमने इन्क्रीज

(डा. एन. एस. गुर्जर)

किया है। अगर हम देखें कि रेवेन्यु एक्सपंडीचर इन सोशल एंड इकोनोमिक सर्विसेज और कैपिटल एक्सपेंडीचर बढ़ने से राज्य की आर्थिक स्थिति अच्छी स्थिति में पहुंच गयी और इसके लिए जो इंडीकेटर है जीडीपी की ग्रोथ रेट, मैंने अभी आपको बताया, सबसे कम ग्रोथ रेट कांग्रेस के पीरियड में हुई और सबसे अधिक हमारे पीरियड में हुई।

इसी प्रकार ये जो बार-बार चर्चा करते हैं कि वित्तीय प्रबंधन ठीक नहीं है, कर्जा बहुत ज्यादा ले लिया, यह काम किया, वो किया, उसकी तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा कि किस तरह से हमने स्थिति सुधारी है। उपाध्यक्ष महोदय, गास रेवेन्यु एक्सपंडीचर इन सोशल सर्विसेज एंड इकोनोमिक सर्विसेज, मैं आंकड़े देना चाहूंगा 05-06 में सोशल सर्विसेज में 13.3 प्रतिशत और इनका कभी भी जो मैक्जिमम था 99-2000 में वो केवल 11 प्रतिशत था। उसके बाद इनका कभी 2.8 प्रतिशत रहा, कभी 4.5 प्रतिशत रहा। हमारा सोशल सर्विसेज में मैक्जिमम 05-06 में 13.3 प्रतिशत पर पहुंच गया इसलिए जो ये सोशल सर्विसेज में कह रहे थे कि कम कर दिया, कम कर दिया कहां कम कर दिया? इनसे ज्यादा रहा। इसी तरह इकोनोमिक सर्विसेज में इनके 99-2000 में 8.6 प्रतिशत और 2001 में तो आते-आते एक प्रतिशत, 01-02 में 3.7 प्रतिशत। और जब हम 03-04 में आये, उस में हम 17 प्रतिशत पर आये। 04-05 में आते-आते हम 26 प्रतिशत पर पहुंच गये इकोनोमिक सर्विसेज और उसके बाद में 05-06 और 06-07 में 11 प्रतिशत से ऊपर हैं उपाध्यक्ष महोदय, सोशल सर्विसेज में हमने राशि बढ़ाई, इकोनोमिक सर्विसेज जो विकास का इंडीकेटर है उसमें राशि बढ़ाई, इसलिए आम आदमी को राहत देने के साथ-साथ हमने प्रदेश को विकास की तरफ तेजी से ले जाने के प्रयास भी इसमें किये हैं ये जो कहते हैं कि सोशल सर्विसेज में कम हो गया, सोशल सर्विसेज में कम हो गया सोशल सर्विसेज में किसी भी तरह हमारा कोई कम नहीं हुआ है।

मैं एक निवेदन और करना चाहूंगा, उपाध्यक्ष महोदय, अभी वैट लग गया वैट के लिए ये कई बार कह रहे थे कि जो हमारी बीजेपी की डिमाण्ड थी, हमारी गवर्नमेंट की, वो बीजेपी की डिमाण्ड मान ली गयी उसका परिणाम क्या हुआ? कि एक एम्पावर्ड कमेटी बनी, जिसमें कई सारी स्टेट्स के फाइनेंस मिनिस्टर थे, वैस्ट बंगाल के फाइनेंस मिनिस्टर कि अध्यक्षता में। 132 कंट्रीज में वैट लागू है और हमारे देश में भी करीब 28 स्टेट्स ने इसको असेप्ट कर

(डा. एन. एस. गुर्जर)

लिया, केवल यू.पी. और तमिलनाडु ने नहीं किया। तमिलनाडु ने कहा कि हमारे इलेक्शन आने वाले हैं, अगली गवर्नमेंट देखेगी और यू.पी. में मुलायम सिंहजी ने मना कर दिया। शुरू-शुरू में तो वैट लगने से स्थिति थोड़ी-सी कमजोर होती है, दो तीन महीने। पंजाब में एक-दो प्रतिशत जैसे आया, उनको मिला। लेकिन धीरे-धीरे ग्रोथ रेट बढ़ती है। आज दिल्ली में 36 या 37 प्रतिशत तक ग्रोथ रेट बढ़ गई वैट लगने के बाद। यह संभव है कि वैट लगने के बाद हमारे भी इस साल थोड़ा झटका लगे कुछ महीनों के लिए, लेकिन आगे के लिए यह वैट क्योंकि सबने लगा रखा है, 132 कंट्रीज ने इसको लगा रखा है बीजेपी की मांग थी कि सीएसटी में चार प्रतिशत से दो प्रतिशत इसको किया जाए। दो प्रतिशत जो घटेगा, और जो नुकसान होगा उसकी भरपाई केन्द्र सरकार करे, इसका कम्पनजेशन दें इस बात को हाई एम्पावर्ड कमेटी ने प्रिंसीपली स्वीकार कर लिया स्वीकार करने के बाद कंडीशंस में है कि एम्पावर्ड कमेटी और केन्द्र सरकार मिल कर तय करेंगी। इसलिए शायद, कल मीटिंग थी, हो सकता है इसका डिसीजन हो गया। मुझे मालूम नहीं है, लेकिन यह भी एक स्थिति है जो हमारे लिये एक अच्छी स्थिति होगी ।

उपाध्यक्ष महोदय, एजुकेशन के लिये कह रहे थे कि केन्द्र का पैसा है। एजुकेशन में हमने जितनी भर्तियां की हैं, पिछली बार कितनी भर्ती कीं, वह सबको पता है 51 हजार से ज्यादा । इस बार भी यह घोषणा की गई है, 50 हजार से ज्यादा भर्तियां इस बार भी होंगी । दूसरे रोजगार के अवसर पैदा किये जाएंग । पिछली बार हमने दो लाख लोगों को विभिन्न योजनाओं में चाहे रूरल डवलपमेंट की योजना हो, चाहे स्माल स्केल इंडस्ट्रीज हो चाहे बडी इंडस्ट्रीज हो उनमें रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये । इस बार भी नौकरियों के साथ जो गरीब लोग हैं उनको विभिन्न योजनाओं के तहत डेढ से दो लाख लोगों को रोजगार प्रदान करने की घोषणा की गई है । हम युवाओं के लिये रोजगार की व्यवस्था कर रहे हैं और इसके लिये हमने टैक्स रेवेन्यू बढाया, वित्तीय प्रबन्धन ठीक किया । वैट के कारण लाभ होगा । कंडिशन यह भी है कि वैट से किसी स्टेट को नुकसान हो रहा है तो उसके लिये केन्द्र सरकार जिम्मेदार होगी । इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, हमारी इकोनोमी दिनोंदिन बहुत मजबूती की ओर जा रही है । ये एजुकेशन के लिये कह रहे थे आज राजस्थान में लिटरेजी रेट बढकर, शिक्षा मंत्रीजी बैठे थे चले गये मैं धन्यवाद देना चाहता हूं आज 65 परसेंट से ऊपर हमारी लिट्रेसी रेट हो गइ । पुरूष लिट्रेसी रेट तो

(डा. एन. एस. गुर्जर)

जो नेशनल एवरेज है 75 परसेंट उससे भी बढ़कर 76 परसेंट के आस पास पहुंच गयी। आज राजस्थान शिक्षित हो रहा है, राजस्थान विकसित हो रहा है लेकिन फिर भी ये समझते ही नहीं। कभी-कभी तो तारीफ कर दिया करो, अच्छा काम हो रहा है तो। जहां गलत हो रहा है वहां क्रिटिसाइज भी करो। सर्व शिक्षा अभियान में इन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार दे रही है, डीपीईपी में केन्द्र सरकार दे रही है 1 मैं इनसे पूछना चाहता हूं, केन्द्र सरकार किससे ले रही है? सर्व शिक्षा अभियान में Central Government is funded by World Bank, DFIB of U.K. and the European Commission. इनसे मिलकर 02-04 और 06-07 तक 4700 करोड़ रुपये का इन्होंने सर्व शिक्षा अभियान में पैसा लिया है । इतना ही नहीं, बाहर से भी वह पैसा ले रहे हैं । स्टेट को दे रहे हैं। स्टेट को भी एक फार्मूले के तहत पैसा दे रहे हैं । लेकिन स्टेट का भी उसमें शेयर तय कर दिया इन्होंने । 25 परसेंट स्टेट को देना पडेगा । इसके तहत राजस्थान को 03-04 में 80 करोड रुपये देना पड़ा। 04-05 में डेढ सौ करोड हमने दिये, 05-06 में 200 करोड़ रुपये दिये और 06-07 में साढे तीन सौ करोड़ रुपये हम देने जा रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, किस आधार पर ये कह रहे हैं कि केवल यह केन्द्र का पैसा है और केन्द्र के पैसे से राजस्थान सरकार वाह वाही लूट रही है, यह सरासर गलत है। इसी तरह डीपीईपी 9 स्टेट की करीब 129 डिस्ट्रिक्ट में लागू है । इसमें 80.15 परसेंट का रेशों है । यह भी केन्द्र सरकार फंडेड बाई वर्ल्ड बैंक, डीएफआईडी ऑफ यूके और युनिसेफ। ये संस्थाएं हैं जो इसको फंडिग कर रही है । केन्द्र सरकार यह पैसा कहां से ला रही है। केन्द्र सरकार का इस पर कोई हक हो। कांस्टीट्युशनली जितना केन्द्र सरकार का हक बाहर से लोन लेने पर है उतना ही स्टेट का हक है। और ये एक स्टेट को नहीं दे रहे हैं कई स्टेट को यह पैसा जा रहा है । उपाध्यक्ष महोदय, इसमें साफ लिखा है, कितना कितना पैसा लिया। मेरे पास आंकडे हैं वर्ल्ड बैंक ने कितना दिया, युनिसेफ ने कितना दिया, डीपीआईपी में कितना किया और किस-किस से फंडेड है । मैं थोड़ा-सा आपको निवेदन करना चाहूंगा- "The SSA is partly funded by external funding agencies like World Bank, DFID of U.K. and the European Commission up to Rs. ..." करोडो में ले रहे हैं, ये मेरे पास डाक्यूमेंट है । समय समय पर उनकी टीम आकर उनको चैक करती है कि कौनसी स्टेट ठीक काम कर रही है और कौनसी स्टेट ठीक काम नहीं कर रही है। जो स्टेट काम नहीं

(डा. एन. एस. गुर्जर)

करती है, वे केन्द्र सरकार को कहते हैं कि इस स्टेट को माइन्स करो । हमारी स्टेट को उन्होंने कंटीन्यू आगे के लिये बढाया कि राजस्थान में यह अभियान आगे भी बढाया जाऐ, दो साल के लिये उन्होंने और एक्सटेंड किया । उपाध्यक्ष महोदय, एजुकेशन में हम पीछे नहीं है, हैल्थ में हम पीछे नहीं हैं।

कल ये एक बात और कह रहे थे एग्रीकल्चर में कम प्रोविजन किया । एग्रीकल्चर में किस तरह से कम प्रोविजन किया? एग्रीकल्चर में 1998-99 और 1999-2000 की मैंने तुलना की तो 1998-99 में जितना पैसा था। उससे 1999-2000 में 16.16 करोड रुपये कम किये इनकी सरकार ने। 01-02 और 02-03 में 6 करोड रुपये कम किये । 02-03 और 03-04 में जब हम दिसम्बर,03 में आ गये, उसके बाद हमने एग्रीकल्चर में 22 करोड़ रुपये प्लस किये, उसके बाद 04-05 में 03-04 की तुलना में 3 करोड बढ़ाये अगर हम 04-05 और 05-06 की तुलना करें तो 216 करोड़ की बढोत्तरी की । अब ये कहेंगे 06-07 में घट गया । 06-07 में 280 करोड़ का प्रोविजन है, उपाध्यक्ष महोदय, यह घटा नहीं है, माहिरजी अभी चले गये, वह कल बोल रहे थे, वह होते तो मैं उनको बताता कि पिछले साल 21 जिलों में ओलावृष्टि हुई और ओलावृष्टि के कारण राज्य को पैसा देना पड़ा। उस पैसे में 30 करोड़ का प्रावधान हमने 05-06 में किया, एक अलग हैड बनाया । आरई में 132 करोड़ रुपया हमको देना पडा और 06-07 में 1800 करोड़ का प्रोविजन किया । इस तरह से 180 करोड़ रुपया अलग से फसल क्षतिपूर्ति का हैड बनाकर उसमें डाल दिया । इसलिए यह इनको कम नजर आ रहा है इन आंकडों में । कृषि में पैसा बढ़ा है, यह पैसा कम नहीं हुआ है । अगर यह होते तो मैं इनसे पूछता। 04-05 में और 06-07 में 117 करोड़ हमने बढाये हैं । इस तरह से हमने एग्रीकल्चर में पैसा बढ़ाया है ।

आज इर्रिगेशन में अगर इनका देखें 01-02 और 02-03 इसकी तुलना करें तो 1-2 से 2-3 में इन्होंने 13.67 करोड़ रुपये कम किये हैं इर्रिगेशन में । 02-03 और 05-06 का हम आंकडा देखें कि 02-03 में इन्होनें कितना प्रोविजन किया था और 5-6 में हमने कितना किया। उपाध्यक्ष महोदय, हमने एकदम छलांग लगाकर 229.67 करोड़ रुपये बढ़ाये हैं। इस तरह से अगर 05-06 की आरई और 06-07 की बीई को हम देखें तो करीब 44.26 करोड हमने बढाये हैं ।

(डा. एन. एस. गुर्जर)

उपाध्यक्ष इतना ही नहीं, नर्मदा का पानी लाने के लिये 74 किलोमीटर नहर बन रही है, वह अगर बनकर पूरी तैयार हो जायेगी तो राजस्थान में पानी आ जाऐगा । इसके लिये 647 करोड़ के आस पास हमने गुजरात गवर्नमेंट को पूरा पैसा दे दिया है। उसके बाद गुजरात गवर्नमेंट मना नहीं कर रही है वह कह रहे हैं कि आप इसका सिस्टम तैयार करो, हम पानी देने के लिये तैयार हैं । राजस्थान के लिये एक बांध बढा है। पिछले साल जहां 2 लाख हैक्टेयर से ज्यादा सिंचित क्षेत्र बढा है इस साल भी हम एक लाख से ज्यादा सिंचित क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं । 3-4 लाख का सिंचित क्षेत्र बढेगा तो राजस्थान में कृषि उत्पादन ज्यादा होगा जो हमारी जीडीपी को और ऊंचाई पर ले जायेगा जो एक विकास का इंडिकेटर है । उपाध्यक्ष महोदय, इसमें एक सुझाव भी देना चाहूंगा, आज 1.6 परसेंट हमारे यहां सतही वाटर है और इसका 60 परसेंट वाटर वेस्ट जाता है, सरकार को इसकी व्यवस्था करनी चाहिये क्योंकि हमारे पास जल की और कोई व्यवस्था नहीं है। हालांकि सरकार ने जल संसाधन मंत्रालय बना दिया है और यह भी कहा है कि हम जल प्रबन्धन की व्यवस्था कर रहे हैं । सरकार प्रयत्नशील है लेकिन मैं फिर भी कहना चाहूंगा कि इसमें तेजी लाएं । हमारा अकाल का जो सर्कल है कि हर चौथी पांचवीं साल में राजस्थान में अकाल आता है, इसलिए इस सर्कल को तोड़ने के लिये हमें विशेष प्रयत्न करने पडेंगे । जल प्रबन्धन की व्यवस्था हो ताकि सतही जल हमारे काम आ सके ।

**(समय: 14.00 बजे)**

उपाध्यक्ष महोदय, कल उन्होंने एक आरोप लगया कि इंटर स्टेट डिस्प्यूट में सरकार सुस्त है, 151 एनीकट गांधी सागर पर मध्य प्रदेश ने बना लिये। मैं उनको पूछना चाहता हूं क्या एक साल में 151 एनीकट बन गये? ये इनके शासनकाल में भी बने हैं ।

ज्यादातर एनीकट इनके शासन काल में बने और मध्य प्रदेश के साथ कुछ नहीं कर पाई इनकी सरकार। हमारी सरकार ने उस पर पहल की, मध्यप्रदेश के साथ बैठे और हमने मध्यप्रदेश को कहा कि यदि आप एनीकट बनाओगे तो चम्बल का पानी हम भी रोक लेंगे। उसके आधार पर वह टेबल पर आया और आज वह समझौते की स्थिति में आ गया।

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय भैरोंसिंहजी शेखावत मुख्य मंत्री थे, यमुना

(डा. एन. एस. गुर्जर)

के पानी का समझौता हरियाणा के साथ किया, हरियाणा तैयार हो गया यमुना का पानी देने के लिए। उसके बाद यह सरकार आ गई, आज यमुना का पानी कहां है? हम वापस प्रयत्न कर रहे हैं। इन्होंने हमारा यमुना का पानी भेज दिया 0.6 एम ए एफ पानी, पंजाब के साथ जो समझौता किया आज तक हमको नहीं मिल रहा। जबकि वहां पर हमारी सरकार ने, हरिके का सिस्टम था उसको सुदृढ़ किया हेरीके बैराज की, गेटों की मरम्मत करके जिसके कारण हमको ज्यादा पानी मिलने लग गया। हर तरह से पानी आऐं, चारों तरफ से इंटर स्टेट डिस्प्यूट में राजस्थान का पक्ष मजबूती से रखा जाए और राजस्थान को लाभ हो, इस बात के लिए हमारी सरकार लगातार प्रयत्न कर रही है।

अब इन्होंने पानी के मामले में कहा कि जलापूर्ति का मामला है, आपका बजट घट रहा है, आप ऐसा कर रहे हैं। मैं आंकड़ों के आधार पर कहना चाहता हूं कि इसमें भी हम आगे हैं। 1998-99 और 1999-2000 का कम्पेरीजन मैं कहना चाहता हूं।

**(समय-समाप्ति सूचक घंटी)**

थोड़ी देर में करूंगा, पांच मिनट लूंगा।

**श्री उपाध्यक्षः** कनक्लूडं कीजिए, काफी सदस्य हैं।

**डा. एन.एस.गुर्जरः** हां, मैं कनक्लूडं कर रहा हूं। मैं आपको इररिलेवेंट बोलू तो आप मुझे बता देना क्योंकि इन्होंने बोला है इसलिए मेरा जवाब देना आवश्यक है।

1998-99 और 1999-2000 में इन्होंने 149.15 करोड़ रुपये पानी में कम किये और 2003-04 के अंदर इन्होंने 17.77 करोड़ रुपये की कमी की है। जब 2003-04 में हम आ गये तो 03-04 और 04-05 का हमारा बजट आप देखें। 2004-05 में आते ही 1489.69 करोड़ रुपये ज्यादा पानी के ऊपर प्रावधान हमने किया, खर्च किया। इस तरीके से 2004-5 और 2005-06 के आंकड़े देखे तो हमने 527.4 करोड़ रुपये ज्यादा किये पानी के अंदर। 2005-06 और 2006-07 की तुलना करें तो हमने 737.95 यानि 738 करोड़ रुपये ज्यादा प्रोविजन इस किया है ये किस आधार पर कह रहे हैं ? आंकड़े देखते नहीं है, पढ़ते नहीं हैं और यहां आकर कह देते हैं। इस पर आलोचना, केवल आलोचना कर रहे हैं, कि इस पर कम किया इस पर कम किया। उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हर हैड में हर स्थिति में सारी चीजों की हमने व्यवस्था की है।

(डा. एन. एस. गुर्जर)

हमने एग्रीकल्चर हो या पीएचईडी या दूसरी चीजें हों या शिक्षा हो या स्वास्थ्य सेवाएं, सब में बढ़ोतरी की है। मैं सरकार को कुछ सुझाव भी देना चाहूंगा। ये बिजली टैरिफ की बात कर रहे हैं। बिजली की टैरिफ बढ़ा दी यह बिजली की टैरिफ किन शर्तों पर बढ़ायी? फोर पावर सैक्टर, यह सेंट्रल गवर्नमेंट ने नोर्म्स बना रखे हैं, हर स्टेट के नोर्म्स। जब बिजली पर बहस होगी उस समय डिटेल में बताऊंगा। नोर्म्स के आधार पर हर स्टेट को बिजली की टैरिफ बढ़ानी पड़ेगी, अगर बिजली की स्थिति सुधारनी है हमें। बिजली की टैरिफ राजस्थान सरकार नहीं बढ़ा रही है, केन्द्र सरकार के नोर्म्स हैं उसके आधार पर राजस्थान को बिजली का टैरिफ बढ़ाना पड़ता है। ये जो वाहवाही लेना चाहते हैं, राजस्थान का विकास करना है तो इन्हें और हमको मिलकर साथ चलना होगा। यह दोनों की जिम्मेदारी है कि हम राजस्थान का विकास करें और राजस्थान का विकास करने के लिए, उपाध्यक्ष महोदय, हमको कुछ विशेष प्रयत्न करने होंगे।

ऐसी सम्भावनाएं तलाशनी पड़ेंगी कि कौन -कोन से एरिया है जहां से रेवेन्यू ज्यादा क्रियेट कर सकते हैं, कहां लैप्स हैं जिनको दूर कर सकते हैं। रेवेन्यू ज्यादा जनरेट करके, स्वंय के संसाधन ज्यादा क्रियेट करके हमारी वार्षिक योजना का आकार बढ़ा सकते हैं। पंचवर्षीय योजना का आकार बढ़ा सकते हैं। राजस्थान को विकास की दृष्टि से विकसित प्रदेशों की श्रेणी में जल्दी से जल्दी ला सकते हैं। इसके लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ेगे। इसके लिए पर्यटन बहुत बड़ा क्षेत्र है। पर्यटन पर यदि हम जोर दें तो हमारे राजस्थान में पर्यटन की बहुत सम्भावनायें हैं इसलिए हमको इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

इसी तरह से खनिज है, यहां खनिज और वन मंत्रीजी बैठे हुए हैं, एक हजार खानें बंद पड़ी है। सुप्रीम कोर्ट का आदेश आया उसके बाद केन्द्र सरकार ने राज्यों को पावर दे दिया कि आप चाहें तो फोरेस्ट लेंण्ड को उस पर परिवर्तित कर सकते हैं। मंत्रीजी यहां बैठे हैं मैं इनको कहना चाहूंगा आपने आते ही सदन में घोषणा की थी कि हम बहुत जल्दी फोरेस्ट लैण्ड में और दूसरी लैण्ड में डिमारकेशन कराने वाले हैं। मंत्रीजी, सवा दो साल हो गऐ आज तक डिमार्केशन पूरा नहीं हुआ। मुझे पता नहीं आप कब तक इस डिमार्केशन को पूरा कराएंगे। अकेले अलवर डिस्ट्रिक में 400 खानें बंद है। राजस्थान में एक हजार खानें बंद है और फोरेस्ट एरिया में....

**श्री लक्ष्मी नारायण दवे** (वन एवं पर्यावरण मंत्री): 9000

**डा.एन.एस.गुर्जर:** मैं करैक्ट कर लेता हूं। लिखने में कहीं गलती हो गई। सब्जैक्ट टू करैक्शन, उपाध्यक्ष महोदय, टाइपिंग मिस्टेक है। 9000 खानें राजस्थान में बंद हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि डिमार्केशन का काम पूरा कर देंगे तो ये खानें चालू हो जाएगी और सरकार का राजस्व बढ़ेगा। डिमार्केशन नहीं करने का परिणाम क्या हो रहा है? माइनिंग लीज दे रखी है एक स्थान पर और मैं आपको केवल मेरे जिले की बताता हूं जहां से मैं चुनकर आता हूं टोंक, उसमें आज की डेट में जाकर देख लें, फोरेस्ट एरिया में माइनिंग हो रही है, या इल्लीगल माइनिंग हो रही है कि नहीं दूसरी जो लैण्ड हैं वहां भी। आप देखे कि अगर हमने इल्लीगल माइनिंग को रोका, फोरेस्ट एरिया में माइनिंग हो रही है उसको रोका और डिमार्केशन कराकर लीज देना शुरू कर दिया तो करोड़ों रुपये का राजस्व बढ़ जाएगा।

उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही जैसा मैंने कहा, इंटर स्टेट डिस्प्यूट को भी, हमारी सरकार हांलाकि प्रयत्नशील है लेकिन इसको और प्रायोरिटी में हमको लेना चाहिये ताकि इंटर स्टेट डिस्प्यूट में जो पानी का हिस्सा हमारा है अलग-अलग प्रदेशों के साथ, वह हमको मिल सके।

इसी तरह से रिफाइनरी, खुशी की बात है कि रिफाइनरी आप लगा रहे हैं। बहुत प्रयत्न किया राज्य सरकार ने, वह बधाई की पात्र है लेकिन इसके साथ-साथ आप अगर रायल्टी इस पर लगाएं रिफाइनरी के तहत, रायल्टी लगाने से आपको....

**श्री लक्ष्मी नारायण दवे:** नहीं, वो है। इनकी भी अंडर कन्जिडरेशन है, प्रोजेक्ट बना रहे हैं।

**डा. एन.एस.गुर्जर:** नहीं, नहीं, वो रायल्टी तो है, लेकिन अपना हिस्सा कितना है उसमें?

**श्री लक्ष्मी नारायण दवे:** 20 प्रतिशत रायल्टी।

**डा.एन.एस.गुर्जर:** 20 प्रतिशत, धन्यवाद। इसके लिए भी बधाई देता हूं क्योंकि डिस्प्यूट चल रहा था आपने सैटल कर लिया। सरकार को एक सावधानी और रखनी पड़ेगी, 58 से 60, दो साल हमने कर्मचारियों की आयु बढ़ाई, अब वह समय आ गया कि दो साल होते ही रिटायरमेंट होगा और रिटायरमेंट होने के कारण सरकार के ऊपर करीब 1600 करोड़ रुपये का भार आएगा। सरकार को अभी से उसकी व्यवस्था करनी चाहिये कि 1600 करोड़ रुपये का घाटा हम कहां से पूरा करेंगे।

**श्री वीरेन्द्र मीणा** (वित्त एवं करारोपण राज्य मंत्री): बजट में प्रावधान कर दिया है।

**डा.एन.एस. गुर्जर:** किया है, किया है, लेकिन पांच सौ समथिंग का ही किया है।

**श्री वीरेन्द्र मीणा:** 750 करोड़ रुपये का पूरा प्रावधान।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** 750 करोड़ रुपये का किया है लेकिन भार आएगा 1600 करोड़ के आस-पास, मोर दैन सिक्सटीन हंडरेड करोड़। अच्छी बात है किया है, मैं सरकार को सचेत कर रहा हूं।

इसी तरह से हमारे यहां राजस्थान की जो परिस्थिति है, हमारी इकोनोमी कृषि आधारित है, पशुपालन आधारित है। चौधरी चरणसिंहजी कहा करते थे कि जब तक कृषि, पशुपालन और लघु उद्योगों को बढ़ावा नहीं देंगे तब तक गांवों का विकास नहीं हो सकता। इसलिए गांवों की इकोनोमी को मजबूत करना है। हमारे गांवों की इकोनोमी जब तक मजबूत नहीं होगी 70 प्रतिशत लोग हैं, महात्मा गांधी ने भी कहा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी कहा, डा.लोहिया ने भी कहा, चरण सिंहजी ने भी कहा और सरदार पटेल ने भी कहा कि गांवों की इकोनोमी मजबूत नहीं होगी तब तक किसी भी राष्ट्र या राज्य की इकोनोमी मजबूत नहीं हो सकती। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह काम भी हमको करना चाहिये पशुपालन आधारित, कृषि आधारित लघु उद्योग, इनमें हम डवलपमेंट करें तो राज्य की इकोनोमी में एक बूम आऐगा, यह हमें चाहिये।

ऊर्जा सुधार कार्यक्रम, इसमें हम छीजत को कम करें, लिग्नाइट का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे तो उसकी लागत कम आएगी। गुजरात सरकार से हमें सबक लेना चाहिये।

इसी तरह बाहरी निवेश को बढ़ावा देने  के लिए हमको पूरी ताकत लगानी चाहिये। बाहर से ज्यादा से ज्यादा पैसा आकर राजस्थान में इन्वेस्टमेंट हो। आज चाइना मजबूत क्यों है? बाहरी निवेश सबसे ज्यादा  वर्ल्ड में अगर है तो वह चाइना में है। चाइना ने प्रयत्न करके निवेश बढ़ाया जिसके कारण चाइना की इकोनोमी मजबूत हो गई। भारत सरकार भी प्रयत्न करे। ग्लोबलाइजेशन के बाद भारत के अंदर ज्यादा से ज्यादा निवेश हो, हमारी भारत सरकार को भी प्रयत्न करना चाहिये, राजस्थान सरकार को भी राजस्थान इसमें प्रयत्नशील है, मैं बधाई देना चाहता हूं सरकार को। लेकिन और प्रयत्न बढ़ाने की आवश्यकता है।

(डा. एन. एस. गुर्जर)

इसी तरह से जनसंख्या नियंत्रण- आज, उपाध्यक्ष महोदय, जो पूरे भारत की जनसंख्या है उसकी तुलना में हमारी जनसंख्या बहुत बढ़ी हुई है। यह जनसंख्या, जब तक नहीं रुकेगी, इसको रोकेंगे नहीं, तब तक चाहे हम कितने ही प्रयत्न करें, इकोनोमी को बढ़ाएं, वह प्रयत्न कम पड़ते जाएंगे। 1951 के अन्दर दशकीय वृद्धि, जनसंख्या लाखों में प्रतिशत, भारत 13.31 प्रतिशत और राजस्थान 15.20 प्रतिशत पर। आज 1991 आते-आते कुल भारत की तो 13 से 23 पर पहुंची और हम 15 से 28 पर पहुंचे हैं। 2001 आते-आते तो हम उस पर कांस्टेंट रहे, भारत की  नीचे आ गयी। भारत में तो 23.86 से 21.34 प्रतिशत पर आ गयी और हम 28 प्रतिशत पर, जहां थे हम वहीं के वहीं पर पड़े हैं। इसलिये इस जनंसख्या वृद्धि को जब तक हम नहीं रोकेंगे तो...

**श्री रामप्रताप कासनिया:** एक साथ 5-5 बच्चे पैदा होने लगे तो जनसंख्या बढ़नी ही है।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** हमारे कुछ डाक्टर हैं, यह आप उन डाक्टरों से राय लीजिए, कि इसका क्या इलाज हो सकता है। कई लोगों की उर्वरा शक्ति...

**डा. सुरेश चौधरी:** एक साथ 5 पैदा हो गये, उनको नहीं रोका जा सकता है। 5 बार हो तो उसके लिये तो कोई कानून बन सकता है।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** वह ठीक है, लेकिन exceptions are not rules. ये एक्सेप्शंस ही हैं । कई लोगों की उर्वरा शक्ति ज्यादा होती है तो ये एक्सेप्शंस ही हैं, और ये एक्सेप्शंस हमेशा नहीं होते हैं। ये वण्डर हैं। दुनिया में कई तरह के वण्डर होते रहते हैं तो यह भी एक वण्डर है। (व्यवधान)

**डा. सुरेश चौधरी:** यह अपवाद है, उर्वरा शक्ति से सम्बन्धित नहीं है। यह जेनेटिक इफैक्ट है।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनका सहयोग मांगना चाहूंगा। कल आपने एक बात कही थी, माननीय जुबेरजी बोल रहे थे, कि इस सरकार की गाड़ी के आगे के टायर हवाई जहाज के हैं और पीछे के टायर बैल गाड़ी के हैं। मैं उनको ध्यान दिलाना चाहता हूं कि कोई भी देश या प्रदेश जब तक अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ नहीं रहता है, जड़ों से जुड़कर विकास नहीं करेगा वह लम्बे समय तक अपने अस्तित्व में नहीं रह सकता है। आज भारत क्यों खड़ा है? विश्व में वापस आर्थिक शक्ति के रूप में, सैन्य शक्ति के रूप में, राजनीतिक शक्ति के रूप में क्यों खड़ा हो गया? हमारे ऊपर हमले हुए लेकिन

(डा. एन. एस. गुर्जर)

हम जड़ों से जुड़े रहे वह कहते हैं कि पिछले पहिये बैलगाड़ी के हैं और यह कहा कि आर.एस.एस. को खुश करने के लिये किया। तो मैं उनसे कहना चाहता हूं इसी पर, हमारी सरकार और संगठनों के लिये जो इन्होंने कहा है उसके लिये मैं कहना चाहता हूं हमें सूखा वृक्ष समझकर हमारी टहनियां काटने वालों, जरा समझ लो हम जड़ों से जुड़े हैं वक्त आने दो फिर हरे हो जाएंगे। हम जड़ों से जुड़े हैं, वक्त आने दो, फिर हरे हो जाएंगे। यह कह रहे हैं बैलगाड़ी, हम जड़ों से जुड़कर रहना चाहते हैं, लेकिन आधुनिक राजस्थान भी बनाना चाहते हैं, माडर्न राजस्थान, विकसित राजस्थान, इनका सहयोग क्यों चाहिए? (व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्षः** अब इसके बाद...(व्यवधान) अब इसके बाद तो अच्छा नहीं लगेगा।

**डा. एन.एस. गुर्जरः** बस दो मिनट, दो मिनट। (व्यवधान) मैं दो मिनट के अन्दर समाप्त कर रहा हूं, बस दो मिनट में ही समाप्त कर रहा हूं। मैं दो मिनट में ही समाप्त कर रहा हूं।

**श्री सुभाष चन्द्र शर्माः** हरा है अपने पास में तो, आप तो हरे-भरे हो, सूखे वाले तो वे थे, उनको देना चाहिए था यह शेर। तो। आप तो हरे-भरे हो।

**डा.एन.एस.गुर्जरः** नहीं, नहीं, उन्होंने बैलगाड़ी की बात कही उस पर कहा है मैंने।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं दो मिनट में समाप्त कर रहा हूं। यह एक हमारी मेहन्दी है सोजत के अन्दर, मैं चाहूंगा कि वैट से उसको बाहर कर दिया जाए। उपाध्यक्ष महोदय, करोड़ों रुपये का एक्सपोर्ट हो रहा है। (व्यवधान) वहां की इकोनोमी, अगर सुहागिन...(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, मैं चाहूंगा कि सरकार इस पर विचार करे और मेहन्दी को वैट से अगर बाहर निकाले तो अच्छा रहेगा।

विपक्ष के माननीय सदस्य, कहीं सुन रहे होंगे, उनसे निवेदन करना चाहूंगा। अभी केन्द्र सरकार को लेकर बहुत बवाल मचा। हमारे 24 करोड़ रुपये सरिस्का टाइगर प्रोजेक्ट का प्लान बनाकर भेज रखा है उनको भी चिन्ता है कि जो जंगली जानवर हैं उनका बचाव हो, अभायरण्य सुरक्षित रहें। सरिस्का टाइगर प्राजेक्ट का 24 करोड़ रुपये का प्लान बनाकर भेज रखा है, केन्द्र सरकार के पास पैडिंग है, वह स्वीकृत नहीं कर रहे हैं। 109 करोड़ रुपये

(डा. एन. एस. गुर्जर)

केवलादेवी में चम्बल से पानी लाने के लिये प्रस्ताव बनाकर भेज रखा है। एक साल हो गया, वह भी स्वीकृत नहीं कर रहे हैं। 190 करोड़, रुरल डवलपमेंट मिनिस्टर बैठे हैं, रुपये रुरल डवलपमेंट के रोक रखे हैं। वे भी हमको नहीं दे रहे हैं। 11वें वित्त आयोग के 307.55 करोड़ रुपये भी नहीं दे रहे हैं। 26 करोड़ रुपये जो यू.सी. ग्राण्ट हुई थी, 31 मार्च में उसके बकाया हैं, वे भी नहीं दे रहे हैं । 332 करोड़ रुपये 12वें वित्त आयोग के, कण्डीशन है उसके आधार पर हैं, वे भी नहीं दे रहे हैं। आज मुख्य मंत्रीजी का बयान आया है, उसके आधार पर 155.86 करोड़ रुपये सी.आर.एफ. के बाकी है, वे नहीं दे रहे हैं। इस तरह से सर्विस टैक्स का नहीं दे रहे हैं, आज मुख्य मंत्रीजी का बयान आया कि 866 करोड़ रुपये इन चीजों के बकाया हैं । इसके अलावा बी.पी.एल. और ए.पी.एल. का पूरा गेहूं नहीं दे रहे हैं। अन्नपूर्णा योजना के गेहूं को कम कर दिया गया। सरसों की खरीद के लिये 900 करोड़ रुपये का ज्ञापन दिया हुआ है, वह भी हमको नहीं दिया है। इसी तरह 33 करोड़ रुपये इरिगेशन में नर्मदा, माही की नार्मल ग्राण्ट है उसके रोक रखे हैं, 298.13 करोड़ रुपये गंगनगर के माडर्नाइजेशन के लिये और आई.जी.एन.पी. के सैकिण्ड फेज के लिये 63 करोड़ रुपये नहीं दे रखे हैं। इसके उपरान्त सर्विस टैक्स को जोड़कर 10-12 प्रतिशत कर दिया, यह 81 आइटम्स में था 15 आइटम और जोड़ दिये, 96 आइटम पर कर दिया इस तरह से हमारे राजस्थान के ऊपर भार लाद दिया लेकिन जो सरकार मांग रही है वह दे नहीं रहे हैं। उसके बाद यह कह रहे हैं कि राजस्थान सरकार केन्द्र के पैसे से चल रही है। सरासर गलत तथ्य प्रस्तुत कर रहे हैं। मैंने आपको आंकड़े दिये कि कितने करोड़ रुपये राजस्थान के रोक रखे हैं। एक अपील करता हूं, जहां कहीं भी हों, सुनें, राजस्थान के हित के लिये, कभी सत्ता में वे आएंगे, कभी हम आएंगे, यह नहीं सोचें कि वे प्रतिपक्ष में हैं, हम पक्ष में हैं। हम दोनों मिलकर दो पहिये साथ-साथ चलेंगे तो राजस्थान का विकास होगा। राजस्थान सरकार से चाहूंगा कि जो सुझाव दिये उन पर चर्चा करे केन्द्र से। जो हमारा बकाया है, दबाव डालकर सहयोग लेकर, उसको प्राप्त करे। और अन्त में विपक्ष से अपील करना चाहूंगा कि आओ, साथ-साथ, जैसे मुख्य मंत्रीजी ने कहा है, साथ-साथ हम मिलकर अगर चलेंगे तो राजस्थान का विकास होगा। इस पर केवल दो पंक्तियां रखकर समाप्त करना चाहता हूं। (व्यवधान)

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** स्वरचित होनी चाहिए ।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** स्वरचित ही हैं सारी की सारी।

शक्ति और भक्ति का अद्भुत स्थान है, आओ मिलकर विकसित कर दें,। प्यारा राजस्थान है, आओ मिलकर विकसित कर दें। प्यारा राजस्थान है। उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे मौका दिया, इसके लिये धन्यवाद।

**श्री उपाध्यक्ष:** धन्यवाद, धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद। श्री प्रद्युम्न सिंह। (अनुपस्थित) श्री रामप्रताप कासनिया।

**श्री रामप्रताप कासनिया** (पीलीबंगा) : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने विधान सभा में जो बजट पेश किया है, उस में हर वर्ग, हर क्षेत्र का ध्यान रखा गया है। महिलाओं पर तो इस बजट के अन्दर विशेष ध्यान रखा गया है। एक तरह से यह बजट महिलाओं को समर्पित है यह कह दिया जाए तो कोई बुरी बात नहीं होगी। उपाध्यक्ष महोदय, महिलाओं के दस्तावेज पंजीकरण कराने के मामले में जो छूट दी गयी है, उससे महिलाएं अपने आप में बहुत ही शक्तिशाली बन गयी हैं, इसका उदाहरण इस बजट में है।

सन् 2004 में तीन महीने के अन्दर दस्तावेजों की संख्या जो आठ हजार थी, वह अगले तीन माह में बढ़कर 34 हजार हो गयी, 2004-05 तक बढ़कर 67 हजार हो गयी और अप्रैल 2005 से दिसम्बर तक एक लाख के लगभग पहुंच गयी।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पहले महिलाओं के नाम पर कोई भूमि नहीं खरीदता था। जब से यह कर में छूट हुई है तब से ज्यादातर पंजीयन महिलाओं के नाम से ही हो रहा है।

इसी तरह से बी.पी.एल. परिवार के अन्दर पन्नाधाय जीवन अमृत योजना के तहत बीमा का लाभ देकर राज्य सरकार ने बीमा राशि जमा कराने का जो निर्णय लिया है कि दुर्घटना पर मृत्यु होने में बीमित परिवार को पचास हजार रुपये, प्राकृतिक मृत्यु होने पर बीस हजार रुपये और गम्भीर क्षति होने पर पचास हजार रुपये, यह भी बहुत बड़ी उपलब्धि है। बी.पी.एल. परिवार के 11वीं और 12वीं कक्षा तक के बच्चों को बीमा कम्पनी में 100 रुपये प्रति माह, यानि प्रति वर्ष 1200 रुपये प्रति विद्यार्थी देने का जो निर्णय किया है, यह भी बहुत सराहनीय कदम है।

(श्री रामप्रताप कासिनया)

वृद्धावस्था पेंशन, यह एक बहुत बड़ी बात करके राजस्थान करके सरकार ने वृद्धों का जो सम्मान किया है, इससे वृद्धों का मान और सम्मान बढ़ेगा। 200 रुपये से बढ़ाकर 400 रुपये जो पेंशन की है इससे वृद्धों का मान-सम्मान बढ़ेगा। वृद्धों की सेवा लोग करेंगे। नहीं तो वृद्धों की हालत बहुत ही खराब थी। तो इसके लिए राजस्थान सरकार को मैं धन्यवाद देना चाहूंगा कि वृद्धों का जो मान-सम्मान किया है, यह बहुत ही बड़ी उपलब्धि है वृद्धों के लिए।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, स्वयं सहायता समूह के अन्दर भी लाखों की संख्या में महिलाओं ने समूह एकत्रित किये हैं और राजस्थान में 25-30 प्रतिशत महिलाएं इन समूहों से आगामी वर्षों में जुड़ जाएंगी, ऐसा मेरा मानना है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आंगनबाड़ी केन्द्रों के लिए अन्दर आज तक फूटी कौड़ी का भी कोई प्रोविजन नहीं था। न तो राज्य सरकार की तरफ से था और न केन्द्र की तरफ से था। वर्तमान सरकार ने पहली बार यह प्रोविजन कर गांवों में आंगनबाड़ी केन्द्र के भवनों का निर्माण करने का जो निर्णय लिया है, यह बहुत ही सराहनीय कदम है। समाज कल्याण विभाग में भी पूर्व सरकार के पांच वर्ष के कार्यकाल में योजना मद में लिये गये कुल प्रावाधन की तुलना में वर्तमान सरकार ने तीन वर्षों में ही 20 परसेंट की वृद्धि करते हुए 262 करोड़ रुपये का जो प्रावधान किया है, यह अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मिड डे मील के लिए गर्म भोजन विद्यालयों में उपलब्ध कराना, साधन सम्पन्न के लिए तो कोई बहुत बड़ी बात नहीं है परन्तु गरीब के बच्चे को मुफ्त में पुस्तक मिल जाए और खाने के लिए रोटी मिल जाए तो वह शिक्षित हो सकता है, नहीं तो गरीब का बच्चा पुस्तक के अभाव में, खाने के अभाव में विद्यालय में पढ़ने ही नहीं जाता। पांच -छह वर्ष का होते ही माता-पिता उसको कहते हैं कि तू तेरा खुद ही कमा कर खा। तो यह सरकार ने एक बहुत ही बड़ा पुण्य का कार्य किया है, इसके लिए मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, समाज कल्याण विभाग द्वारा 697 छात्रावासों में निवास करने वाले विद्यार्थियों को मैस भत्ता 675 रुपये से बढ़ाकर 725 रुपये किया गया है, यह भी एक गरीब विद्यार्थी के लिए बहुत अच्छा कार्य है।

(श्री रामप्रताप कासिनया)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार जब से सत्ता में आयी है, चाहे पहले हो, चाहे बाद में आयी हो, समाज कल्याण विभाग की तरफ से गरीबों के बच्चे को प्रोत्साहित राशि देकर चाहे मैस के रूप में हो, चाहे पुस्तक के रूप में हो, चाहे किस न किसी रूप में हो, गरीब को ऊपर बढ़ाने का काम इस सरकार ने किया है, इसमें कोई संदेह नहीं है। द्वितीय विश्व युद्ध के सैनिकों की विधवाओं के लिए इस सरकार ने सोचा कि विधवाओं की जो पेंशन है उसमें बढ़ोतरी की जाए, यह भी बहुत बड़ा कदम है। नारे तो हम हमेशा जवान और किसान के लगाते रहते हैं परन्तु इसकी तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया। वर्तमान सरकार ने इस पर ध्यान देकर और द्वितीय विश्व युद्ध की विधवाओं को द्वितीय विश्व युद्ध के सैनिकों को 300 रुपये से बढ़ाकर 800 रुपये जो पेंशन की है, यह बहुत ही बड़ी उपलब्धि का कार्य है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, परमवीर चक्र, अशोक चक्र, महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, वीर चक्र प्राप्त करने वाले सैनिकों को वर्तमान में जो तय राशि है उससे पांच-छह गुणा बढ़ोतरी करके इनका मान-सम्मान किया गया है।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** दस गुणा ।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** दस गुणा भी कह दी जाए तो कोई खास बात नहीं है। एग्जैक्ट आकड़े किताब वाले ही दूंगा तो आप कहेंगे कि रिपीट करते हैं। यह रोळा है । सही बात यह है। यहां तो पोथी पढ़-पढ़कर छोड़ दी। छोड़ा ही नहीं, आंकड़े नहीं हैं यह ... (व्यवधान)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 5000 मिडल स्कूल खोलने का जो निर्णय किया है, यह ग्रामीण क्षेत्र के लिए और विशेषकर गरीब और किसान के लिए वरदान साबित होगा। देश आजाद होने के बाद पहली बार इतनी बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों के अन्दर मिडल स्कूल खुलेंगे, जो एक ऐतिहासिक निर्णय है। इसी तरह से आगामी वर्ष में 31 हजार अध्यापकों की नियुक्ति करने का जो निर्णय लिया है, यह भी बहुत बड़ी बात है। 10वीं और 12वीं के विद्यालयों में शौचालय और पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने 27 करोड़ रुपये का जो प्रोविजन रखा है, यह भी बहुत सराहनीय कदम है। 1387 विद्यालयों में कक्षा-कक्ष और शौचालय बनाने का जो निर्णय है, यह भी बहुत बड़ी उपलब्धि है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान सरकार ने वर्ष 2001, 02 और

(श्री रामप्रताप कासनिया)

03 की फसलों का आबियाना माफ किया था। कुछ काश्तकारों ने आबियाना पहले जमा करा दिया, जिनका बार-बार यही रोना-धोना था और सरकार से मांग थी कि हमने क्या गुनाह कर दिया ? हमने पैसा जमा करवाया है, हमारा भी आबियाना माफ होना चाहिए। तो मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन लोगों ने जो पैसे जमा करा दिये, उनके आगे आबियाना जो आएगा उसमें समायोजन करने का निर्णय सरकार ने लिया है। मैं किन शब्दों में तारीफ करूं, वे शब्द मेरे पास नहीं हैं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह बहुत बड़ा कदम है। इतना ही नहीं, ब्याज माफ करके सिंचित एरिया के काश्तकारों को बहुत ही बड़ा लाभ प्रदान किया है, इसके लिए भी मैं सरकार का आभार प्रकट करना चाहूंगा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा आकड़ेबाजी में नहीं पड़ूंगा, कुल मिलाकर चाहे पानी हो, चाहे बिजली हो, चाहे सड़क हो, चाहे गुणवता की बात हो, चाहे शिक्षा की बात हो, चाहे समाज कल्याण की बात हो, मेरा तो यही कहना है कि इस बजट में जो धरातल पर हो रहा है, उसकी प्रशंसा कर रहा हूं। विपक्ष के साथी बार-बार यह बात दोहराते हैं कि इस सरकार ने ऐसे कर दिया, वैसे कर दिया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो तीसरी बार आया हूं, मैं इतना ही जानता हूं कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार राजस्थान में जब-जब सता में आयी है, तब-तब ही गांव, गरीब और किसान का भला किया है। हर रूप में छूट दी है। कोई नया टैक्स नहीं लगाया है। कोई कर में वृद्धि नहीं की। किसी न किसी रूप में छूट ही दी गयी है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, तेल पर बिक्री कर कम करने का जो निर्णय लिया है, यह भी बहुत बड़ी उपलब्धि है। काश्तकारों को इससे राहत मिलेगी, डीलरों को, मिलों को इससे राहत मिलेगी।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पशु चिकित्सालय, चिकित्सालय, पशु उप केन्द्र और उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने का जो निर्णय लिया है, उसके लिए भी मैं सरकार का धन्यवाद करना चाहूंगा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अब मैं कुछ बातें मांग के तौर पर, सुझाव के तौर पर आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहूंगा। बजट पर तो बहस हो चुकी, बहुत-से लोगों ने तर्क-वितर्क के साथ, आंकड़ों के साथ समझाने में कोई कमी नहीं रखी। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन

करना चाहूंगा कि तहसील हैड-क्वार्टर पर एक वृद्धाश्रम खोल दिया जाए और उसमें मुफ्त खाने की सुविधा उपलब्ध करवा दी जाये तो यह भी गरीब वृद्ध के लिये बहुत बड़ा कार्य होगा। सरकार को इसमें पीछे नहीं हटना चाहिये। मेरा यह निवेदन है। ...(व्यवधान) अपने भी बूढ़े होंगे, कोई हमेशा ही जवान थोड़े ही रहेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, टीसी से पुख्ता गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में टीसी के जो काश्तकार हैं, उनके ऊपर वर्तमान में मुरब्बाबंदी के नाम से पाबन्दी लगा रखी है अलाटमेंट पर। पानी वहां पूरा पीने के लिये ही नहीं मिल रहा है, परन्तु मुरब्बाबंदी के नाम से अलाटमेंट रोक रखा है। मैं आपके माध्यम से रेवेन्यू मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि रोक आप तुरन्त हटाएं। जिस क्षेत्र के अंदर पानी की कोई योजना नहीं है, पानी पहुंच नहीं सकता, उस क्षेत्र को आपने उपनिवेशन क्षेत्र में सम्मिलित कर रखा है। उसके अंदर कानून-कायदे नहीं हैं। जो सिंचित एरिया है और पानी वहां पहुंच नहीं सकता तो यह मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उस एरिये का डिकोलोनाइजेशन किया जाये। इसके अलावा 1955 से पूर्व के जो काश्तकार हैं, आज दिन तक उनको खातेदारी नहीं मिली है। सन् 1955 के बाद के जो काश्तकार हैं, एक मुरब्बा आवंटन वाले काश्तकार हैं, उनको भी खातेदारी नहीं मिल रही है। आपने वैसे तो आन्दोलन के अंदर यह निर्णय किया, सरकार ने कोई कमी नहीं छोड़ी है निर्देश देने में, पर मौके पर यह आन्दोलन के अंदर लागू नहीं हुआ है, यह मैं निवेदन करना चाहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में सरदारगढ़ एक पुरानी पंचायत है जिसमें राजसिको का प्रकरण था, माननीय मंत्री महोदय इस पर ध्यान दें। पूर्व में जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी तो एक लाख पच्चीस हजार रुपये प्रति मुरब्बा आवंटन करने का निर्णय लिया था और तीन माह का समय दिया था प्रार्थना पत्र देने का। उस तीन माह के अंदर काश्तकारों ने प्रार्थना पत्र दिया। इतने में दुबारा कांग्रेस की सरकार आई। कुछ एप्रोच वाले जो काश्तकार थे, उन्होंने तो एक लाख पच्चीस हजार रुपये में भूमि आंवटन करवा ली और बाद में कांग्रेस की सरकार आने के बाद उसी मुरब्बे की कीमत पांच लाख और सवा चार लाख रुपये कर दी। उपाध्यक्ष महोदय, एक श्रेणी के काश्तकार, एक ही गांव के, एक ही पंचायत के और इतना भेदभाव। आपने कीमत तो कम की है, किश्तें भी कम की हैं परन्तु

(श्री रामप्रताप कासनिया)

जिला कलक्टर महोदय इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। सरकार ने जो कीमत कम की है, राजसिको का भी सामान्य आवंटन है, भूमिहीन मानते हुए उसमें आवंटन किया है तो जो राशि आपने किश्तों की कम की है, उसके लिये तो आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, पर इस प्रकरण में वही राशि लागू करवाएं।

एक और निवेदन करना चाहूंगा कि खातेदारी देने पर भी पाबन्दी लगा रखी है। आई.जी. (स्टाम्प) इस मामले में राजसिको के प्रकरण में बीच में आ गये। रेवेन्यू बोर्ड तक तो फैसला हो चुका, सरकार के स्तर पर ही यह पैडिंग पड़ा है। खातेदारी देने पर भी आपने रोक लगा रखी है कि इनसे कम कीमत वसूल की गयी है, इनसे ज्यादा कीमत वसूल की जाए। इस प्रकरण से आन्दोलन के अंदर भी यह कार्य नहीं हो पाया।

उपाध्यक्ष महोदय, सिंचित क्षेत्र में थर्मल और घग्घर डिप्रेशन में जिन काश्तकारों की भूमि आ गयी, एक ही श्रेणी के काश्तकार हैं, एक को तो टीसी से पुख्ता हो गयी, खातेदारी मिल गयी। उसको तो मुआवजा मिल गया और दूसरा व्यक्ति, वंचित रह गया। उसने भी प्रार्थना पत्र दिया खातेदारी लेने के लिये, पर उसकी एप्रोच नहीं थी, उसके पास कोई व्यवस्था नहीं थी, इस कारण से उसको खातेदारी नहीं मिली। 30-40 वर्षों पुराने काश्तकार हैं, उनको मुआवजा नहीं मिला और उनको बेदखल कर दिया, चाहे थर्मल की भूमि हो, चाहे डिप्रेशनों में भूमि आई हुई है। मेरा आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से निवेदन है कि उन काश्तकारों की भी वही पात्रता है जिनको आपने मुआवजा दिया है, तो ऐसे काश्तकार जो वंचित रह गये हैं, उनको खातेदारी अधिकार देकर उनको मुआवजा देने की व्यवस्था करें। अन्यथा दूसरी जगह सरकारी जमीन पड़ी है खसरों में, डैजर्ट वाले एरिये में भूमि है, कोई सिंचित भूमि नहीं है, बदले में भी भूमि दी जा सकती है। यह मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, एक मैंने पहले भी निवेदन किया है, हनुमानगढ़ और गंगानगर जिले के काफी बालिग पुत्र और टीसी के पुख्ता वाले या कोई और विवाद के मामले हैं, वह भूमि पटवारियों ने गजट में जान-बूझकर पकड़ ली। वह गजट में साया हो गयी जिसके कारण आंवटन होने में बाधा आ रही है। प्रतिबन्ध है, कोई आंवटन नहीं हो सकता। जिला कलक्टर गंगानगर ने तो बहुत ही बड़ा पुण्य का काम किया, उन्होंने तो 500 फाइलें निकलवा लीं परन्तु हनुमानगढ़ कलक्टर साहब ने सिर्फ 150-200 फाइलें ही निकलवाई हैं । हजारों

केस आपके पास विचाराधीन हैं, क्यों न आप इसको एक ही कलम के साथ कर दें? जो पात्र हैं, जिनका वाजिब हैं, आबंटन का हक है उन पत्रावलियों को क्यों आप पैंडिंग कर रहे हो? कृपा करके आप वे पत्रावलियां निकलवाकर काश्तकारों को राहत प्रदान करें।

**(समय-समाप्ति-सचूक-घण्टी)**

उपाध्यक्ष महोदय, थोड़ा है, पांच मिनट में खतम कर रहा हूं।

**श्री उपाध्यक्ष:** काफी हो गया, समाप्त करें।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** बहुत ही महत्वपूर्ण सुझाव है, सरकार की आय होगी, काश्तकारों का भी भला होगा और यह कार्य करना पड़ेगा।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** यह बिना बोले ही कर देंगे।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** बिना बोले तो नहीं होगा। मैं कई बार बोल चुका हूं, मुझे कोई शौक नहीं है भाषण देने का।

**श्री उपाध्यक्ष:** इनके ध्यान में है यह बात।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अकाल के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। देश आजाद होने के बाद अकाल पर जितना पैसा खर्च हुआ है अगर इस पैसे का सही तरीके से यूटिलाइजेशन हो जाता तो आज अकाल की समस्या का पचास प्रतिशत से ज्यादा समाधान हो सकता था। अब इस डिटेल में मैं नहीं जाना चाहता कि किस तरह से हो सकता था। पर यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अकाल राहत के अंदर जितना पैसा सरकार ने खर्च किया है, इतने पैसे से स्थाई समाधान हो सकता था। भविष्य में सरकार इस तरफ सोच रही है इसके लिये तो मैं धन्यवाद देना चाहूंगा। परन्तु इसमें और सोचने की आवश्यकता है, गंभीरता से इस कार्यक्रम को लागू करना चाहिये। वैसे ही करोड़ों रुपये कच्चे काम के अंदर पानी की तरह बहा दिये जाते हैं। आज मैं कहना चाहूंगा, मुझे कोई संकोच नहीं है, चाहे मुझे कितना ही बड़ा नुकसान क्यों न हो जाए, कि आज आम आदमी की यह सोच हो गयी है कि मिट्टी का काम होना चाहिये। मिट्टी का काम करना नहीं, दिन भर वहां बैठे रहना, पांच किलो कच्ची मिट्टी इधर से उधर डाल दी और पूरे दिन की मजदूरी पक्की, इस तरह के कार्य से मैं सहमत नहीं हूं। उपाध्यक्ष महोदय, मेरा सरकार को यह सुझाव है कि चाहे पाच रुपये ही खर्च करो,

मजदूर को मजदूरी कम उपलब्ध करवाओ, पर कार्य ऐसा होना चाहिये कि सरकार की वह स्थाई सम्पत्ति होनी चाहिये, चाहे किसी रूप का कार्य हो।

उपाध्यक्ष महोदय, गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले में धानका जाति के लिये मैं निवेदन करना चाहता हूं कि धानका जाति सन् 1976 में अनुसूचित जनजाति में केन्द्र सरकार ने सम्मिलित की थी और उसके बाद राजस्थान सरकार ने भी 1977 में, शायद 27 जुलाई है, तारीख मुझे एग्जेक्ट याद नहीं, गजट में संशोधन करके उनको अनुसूचित जनजाति में सम्मिलित कर लिया। लेकिन हनुमानगढ़ जिले में और गंगानगर जिले में धानका जाति के लोगों को अनुसूचित जनजाति का प्रमाण पत्र नहीं दिया जा रहा है, मौखिक रोक लगा रखी है। जबकि पूर्व मुख्यमंत्री माननीय भैरोंसिंहजी शेखावत के कार्यकाल में समाज कल्याण विभाग के निदेशक से एक पत्र उन्होंने लिखवाया था, आदेश भिजवाया था। उसी आदेश को फिर रिपीट करते हुए कलक्टर हनुमानगढ़ और गंगानगर को निर्देश दिया गया। परन्तु आज भी धानका जाति के लोगों को अनुसूचित जनजाति का प्रमाण-पत्र नहीं बन रहा है। मैं नाम नहीं लेना चाहूंगा। इसके पीछे कोई पूर्व माननीय सदस्य हैं, अगर धानका जाति को अनुसूचित जनजाति में सम्मिलित कर लिया जाए तो उन्हें भी दिक्कत आती है। एस.सी.,एस.टी. की सीट के कारण से। इस तरह से उन लोगों के साथ अन्याय हो रहा है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि हनुमानगढ़ और गंगानगर जिले के कलक्टरों को यह सख्त निर्देश दिया जाए कि धानका जाति अनुसूचित जनजाति में सम्मिलित होते हुए भी उनको प्रमाण पत्र क्यों नहीं दिया जा रहा है? मौखिक आदेश हैं, यह मैं मेरी जानकारी के अनुसार कह रहा हूं। वैसे कोई प्रतिबन्ध नहीं है। उपाध्यक्ष महोदय ...(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** कासनिया जी, समाप्त कीजिये।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** थोड़ा-सा और है। उपाध्यक्ष महोदय, खेती के बारे में एक बात कहना चाहता हूं, किसान और गांव के लिए बोलते तो सभी हैं, यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है, केन्द्र हो चाहे राज्य सरकार हो, पक्ष हो चाहे प्रतिपक्ष हो, खेती के बारे में सोचना पड़ेगा, आने वाले समय में मजबूर होना पड़ेगा। यह सोचना पड़ेगा तो, उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से पक्ष और विपक्ष से निवेदन करना चाहता हूं कि खेती के लिए कोई पुख्ता

इंतजाम करना चाहिए। आये दिन प्राकृतिक प्रकोप से, अकाल से फसलें नष्ट हो जाती हैं। पकी हुई फसल ओलावृष्टि से नष्ट हो गयी बीमा के मामले में अभी जो पंचायत को इकाई मानने की बात तो मान ली है, इसके लिए तो मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा ऊपरला न, यह तो बहुत अच्छा निर्णय है। लेकिन जब तक खेत को इकाई मान कर बीमा नहीं किया जायेगा तब तक काश्तकार का भला होने वाला नहीं है। लाभकारी मूल्य जब तक काश्तकार को नहीं दिया जाएगा, उसकी उपज का सही मूल्य उसको नहीं मिलेगा, जो आदमी कमजोर है, पैदावार नहीं करता उसको चाहे सरकार सस्ते रेट में अनाज उपलब्ध कराए हमें कोई एतराज नहीं है, परन्तु जो काश्तकार पैदावार करता है उसको लाभकारी मूल्य दिलवाने के लिए केन्द्र सरकार पर पक्ष और विपक्ष मिल करके दबाव डालना चाहिए।

**श्री उपाध्यक्ष:** धन्यवाद, धन्यवाद। आ गया। किसान के बाद अब क्या बात रह गयी?

**श्री रामप्रताप कासनिया:** उपाध्यक्ष महोदय, गाय, और भैंस और ऊंट के लिए मैं और निवेदन करना चाहता हूं कि आने वाले समय में ऊंट बहुत ही महत्वपूर्ण चीज होगी।

**श्री युनूस खान:** ऊंट के लिए बोलो, गाय-भैंस तो छोड़ दो।

**श्री उपाध्यक्ष:** बोल रहे हैं, बोल रहे हैं।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** चलो, ऊंट के लिए हमें कोई न कोई काश्तकार को प्रोत्साहित करना चाहिए। अच्छी नस्ल के ऊंट, भंडाण के ऊंट मैं बता दूं आपको, सबसे अच्छी नस्ल के ऊंट भंडाण हैं, जो लूणकरणसर के हैं बीकानेर का एरिया। इस नस्ल को विकसित करने के लिए सरकार को कोई न कोई सहायता काश्तकार को उपलब्ध करवानी चाहिए, चाहे कोई अपनी योजना बना कर करें। ऊंट दिन-प्रतिदिन, उपाध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं खतम होते जा रहे हैं। यह राजस्थान का बहुत ही बड़ा जहाज है, पहले यह साबित हो चुका है और आने वाले समय में इस ऊंट की आवश्यकता पड़ेगी जिस तरह से दिन-प्रति दिन पैट्रोल और डीजल महंगा होता जा रहा है। ऊंट और बैल के बिना हम खेती नहीं कर सकते। तो मेरा सरकार से आग्रह है, इसकी डिटेल में मैं नहीं जाना चाहता कि कैसे करना है, क्या करना है, अगर जरूरत पड़े तो सुझाव देने के लिए तैयार हूं, उपाध्यक्ष महोदय।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** माननीय सदस्य, कृषि मंत्रीजी को सुझाव दें, आजादी के बाद ऊंटों की उपेक्षा हुई है, वह अब वापस लाइन में लाएंगे उनको।

**श्री उपाध्यक्ष:** लाना पड़ेगा जी।

**श्री अमराराम चौधरी** (पचपदरा): बीकानेर में कैमल सफारी का है न?

**श्री रामप्रताप कासनिया:** हां।

**श्री अमराराम चौधरी:** तो वह देखा आपने कैम्प?

**श्री रामप्रताप कासनिया:** हां, कैम्प तो देख लिया।

**श्री उपाध्यक्ष:** कैमल सफारी से काम नहीं चलेगा जी।

**श्री रामप्रताप कासनिया:** बहुत जरूरत है, यों तो सब कुछ ही है। कालेज भी है, वेटरिनरी सब कुछ है परन्तु जितनी आवश्यकता है उतना कुछ नहीं है वहां। अब मैं आलोचना नहीं करना चाहूंगा, जो कुछ है वह सब ठीक है परन्तु मैं भी कुछ...

उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

**श्री उपाध्यक्ष:** श्री प्रहलाद गुंजल।

**श्री प्रहलाद गुंजल** (रामगंजमण्डी): उपाध्यक्ष महोदय, आठ तारीख को माननीय मुख्य मंत्रीजी ने वित्त मंत्री के रूप में वर्ष 2006-07 के बजट अनुमान इस पवित्र सदन में पेश किये, दो दिन से चर्चा हो रही है, अगले दिन समाचार पत्रों में सभी वर्गों की प्रतिक्रिया पढ़ने को मिली, समाज के हर वर्ग ने बजट की प्रशंसा की।

उपाध्यक्ष महोदय, बजट केवल आय-व्यय का सामान्य दस्तावेज नहीं होता, बजट हमारे प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने का उपक्रम है और साथ ही समाज के प्रत्येक वर्ग के हित संरक्षण के अनुबंध का कार्यक्रम है। उपाध्यक्ष महोदय, जब इस दृष्टि से हम बजट का विवेचन करते हैं तो इस बार का प्रदेश का बजट प्रदेश के उन वर्गों के लिए जीवन संदायनी कार्यक्रम है जिनके बारे में आज तक किसी ने सोचा नहीं, उनकी तरफ आज तक किसी ने चिंताजनक तरीके से देखा नहीं, लगातार तीसरे साल सरल बजट राजस्थान की जनता को देने के लिए मैं राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, दो दिन से वाद-विवाद चल रहा है, दोनों तरफ से

(श्री प्रहलाद गुंजल)

पक्ष-विपक्ष के तर्क इस सदन में रखे जा रहे हैं। अभी हमारे टोडारायसिंह से आने वाले माननीय सदस्य ने अपने ज्ञान का खजाना खोल कर आंकड़ों का इतिहास पढ़ा, मैं उन आंकड़ों में नहीं जाना चाहता आंकड़े कितने महत्वपूर्ण हैं, आंकड़े क्या हैं, यह गम्भीर बात नहीं है गम्भीर बात है, उपाध्यक्ष महोदय, आंकड़ों के पीछे की इच्छा-शक्ति। आंकड़े किस प्रकार की इच्छा शक्ति की गवाही देते हैं, वह महत्वपूर्ण बात है और यह बात हम को इस बजट में देखने को मिली। समाज का वह तबका जिसको हम बी.पी.एल. कह कर संबोधित करते हैं, इस बार उस वर्ग के लिए जीने का नया विश्वास बजट के प्रावधानों में किया गया है। मैं उसकी ज्यादा चर्चा नहीं करना चाहता। बजट में सभी माननीय सदस्यों ने पढ़ा, बी.पी.एल. परिवार के लिए बीमा योजना का प्रावधान किया और न-केवल बीमा योजना का प्रावधान किया, आपदा में, संकट में बीमित राशि अब बी.पी.एल.को मिलेगी और उस बीमे का प्रीमियम राजस्थान की सरकार भरेगी। उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ प्रावधान किया कि बी.पी.एल.परिवार का बच्चा जो ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षा में पढ़ता है, बीमा कम्पनी के माध्यम से उसकी सालाना छात्रवृत्ति का बंदोबस्त किया जाए। अपने आप में सराहनीय कदम है। इससे न-केवल बी.पी.एल. परिवार के बच्चों का हायर एजुकेशन के प्रति रुझान बढ़ेगा, उनका शैक्षणिक उन्नयन होगा, बल्कि उनके सामने रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

बजट में इस बार राजस्थान की महिला मुख्य मंत्री ने मानो सारे बजट को महिलाओं के प्रति समर्पित किया है। यह माननीय मुख्य मंत्रीजी की समाज के इस आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने की इच्छा-शक्ति का प्रकटीकरण है। कितनी महिलाओं को रोजगार मिलेगा, कितनी साथिनों की भर्ती होगी, कितनी साथिनों की भर्ती कर ली गयी, महिला विकास के अन्य क्या-क्या कार्यक्रम चलेंगे, मैं समझता हूं कि माननीय तमाम सदस्यों ने इस सन्दर्भ में बजट भाषण को पढ़ा होगा। मैं स्वागत करना चाहता हूं माननीय मुख्य मंत्रीजी का कि उन्होंने वृद्धावस्था पेंशन की राशि बढ़ाई। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इसके लिए धन्यवाद तो देना चाहता हूं लेकिन आपके माध्यम से यह भी उम्मीद करना चाहता हूं राजस्थान की सरकार से कि जिस प्रकार की कृपा आपने बजट में वृद्धावस्था पेंशन बढ़ाकर राजस्थान के वृद्धों पर की है, राजस्थान का विकलांग जन, राजस्थान की विधवा, राजस्थान की परित्यक्ता

(श्री प्रहलाद गुंजल)

उसी उम्मीद और विश्वास की किरण से आपकी तरफ देख रहे हैं इनकी भी पेंशन बढ़ाये जाने के सन्दर्भ में विचार करने की आवश्यकता है।

एक महत्वपूर्ण बात, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज आपके सामने रखना चाहता हूं । हमने आठ दिन के अन्तराल में दो बजट देखे हैं, 28 फरवरी को देश का बजट आया, 8 अगस्त को राजस्थान का बजट आया। जहां पर हमारे राजस्थान के बजट में समाज के ताने-बाने को सुदृढ़ करने की इच्छा शक्ति नजर आती है, उपाध्यक्ष महोदय, यह मेरे पास केन्द्र का बजट है, आप उठाकर देख लें इस बजट के पीछे की भावना, इस बजट के पीछे के उद्देश्य। पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए बारह हजार इकतालीस करोड़ रुपए का आबंटन ऐसा लगता है कि यह केन्द्र की प्रगतिशील गठबंधन सरकार की राजनीतिक मजबूरी का प्रदर्शन है। उपाध्यक्ष महोदय, केन्द्र के बजट ने राजस्थान की जनता को निराश किया है। राजस्थान को उम्मीद थी कि कठिन भौगोलिक परिस्थिति वाले इस मरू प्रदेश की भौगोलिक सम्पदा को, इसकी प्राकृतिक सम्पदा को विकास के लिए केन्द्र से कुछ मिलेगा। राजस्थान उम्मीद कर रहा था कि इसके गंभीर पेयजल के संकट पर केन्द्र के बजट में कुछ विशेष प्रावधान होंगे, कुछ उल्लेख होंगे, लेकिन सारे के सारे बजट का केन्द्रीकरण आगामी पांच राज्यों के चुनावों की ओर हो गया। मुझे लगता है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कि न केवल पांच राज्यों के चुनावों के केन्द्र की प्रगतिशील गठबंधन सरकार ने इस बजट में लक्ष्य रखा है, लोक लुभावने संकेत इस बात के मिल रहे हैं प्रगतिशील गठबंधन की सरकार का पिटारा फूटने वाला है । वह बजट के माध्यम से मध्यावधि चुनाव की तैयारी करना चाहती है और यह स्थिति लोकतंत्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है । इस विषय में हम सबको मिलकर सोचना पड़ेगा कि हम पवित्र सदन में चाहे लोक सभा हो चाहे असेम्बली हो, बजट पेश करते समय हमारी आंखों के सामने अगले पांच साल के चुनाव का नक्शा रखें और इस राजस्थान की, इस भारत की भावी पीढ़ी के भविष्य की अनदेखी हो जाए। आज इस विचार से निकलकर हमको नव निर्माण के रास्ते पर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। मैं समझता हूं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस दिशा में पिछले दो सालों में राजस्थान की सरकार का काम-काज एक क्रांतिकारी परिवर्तन के संकेत दे रहा है।

देश में आजादी के बाद से लगातार प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की बात चलती आ रही है । हम कल्पना करते हैं विकसित राष्ट्र की चर्चा

(श्री प्रहलाद गुंजल)

करते हैं । तब तक विकसित राष्ट्र का सपना पूरा नहीं हो सकता जब तक सारा समाज शिक्षित नहीं हो जाता। इसके लिए प्रारम्भिक शिक्षा का सार्वजनीकरण किया जाए। परसों तो देश की पार्लियामेंट में कांग्रेस के सांसद श्रीमान राहुलजी गांधी ने कहा कि वक्त आ गया है जब माध्यमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण किया जाना चाहिए।

मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूं हमारे यशस्वी लोकप्रिय शिक्षा मंत्री जी का कि उनके गंभीर प्रयासों के बाद आजादी के छठे दशक में आकर यह लगने लगा है कि राजस्थान की प्रारम्भिक शिक्षा अब पूर्णाहुति की ओर जा रही है। लेकिन मैं आपके माध्यम से राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी और शिक्षा मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं, मैंने शिक्षा के बजट के प्रावधानों को पढ़ा है, प्रारम्भिक शिक्षा की ओर बड़ा ध्यान राजस्थान की सरकार ने उसमें दिया है लेकिन माध्यमिक शिक्षा के उन्नयन के बारे में बजट में प्रावधानों में उल्लेख नहीं है । मैं उम्मीद करूंगा, और माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के साथ-साथ अब वक्त आ गया है कि हम माध्यमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण करें । हम गरीब की, गांव की बेटी को आठवीं की शिक्षा के बाद पंचायत के मुख्यालय पर माध्यमिक की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करें । इस दिशा में हमको आगे बढ़ना चाहिए। जब बजट पर राजस्थान की माननीय मुख्यमंत्री अपना जवाब देंगी तो यह सदन विश्वास करता है, सारे राजस्थान के विधायक, जन प्रतिनिधि विश्वास करते हैं कि माध्यमिक शिक्षा के प्रावधानों के बारे में निश्चित रूप से चर्चा की जाएगी, कोई न कोई उल्लेख उसमें किया जाएगा।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गत दिवस सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य बजट पर भाषण कर रहे थे और बड़ें जोर से भाषण कर रहे थे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम जानते हैं कि उनका प्रस्तुतीकरण प्रभावी है। हम उनकी बात रखने के प्रभावी प्रस्तुतीकरण के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं लेकिन यह उम्मीद करते हैं कि आंकड़ों के भ्रम जाल में इस सदन की दिशा को भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। अपने भाषण की चर्चा करते हुए सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे, तुलना कर रहे थे सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय में, भारत और राजस्थान की तुलना कर रहे थे और आंकड़े दे रहे थे । सकल घरेलू उत्पाद भारत का 3200.6, राजस्थान का 1102.3 प्रति व्यक्ति आय भारत की 25,788, राजस्थान की 17,685 । अच्छा

(श्री प्रहलाद गुंजल)

होता, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य इस बात का वर्णन करते कि सकल घरेलू उत्पाद जहां 2001-2002 में 45,664 करोड़ रुपया था, 2005-06 में बढ़कर 63,354 करोड़ रुपया हो गया। इसका भी जिक्र करते तो अच्छा होता । सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य इसकी भी चर्चा करते, प्रति व्यक्ति आय के बारे में चर्चा करते...

**(समय: 14.58 बजे)**

**(श्री राव राजेन्द्र सिंह, सभापति, पदासीन)**

जहां प्रति व्यक्ति आय 2001-02 में, कांग्रेस के शासन में ...

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** माननीय सभापति महोदय, बधाई हो ।

**श्री प्रहलाद गुंजल:** मैं स्वागत करता हूं, माननीय सभापति महोदय का अभिनंदन करता हूं।

2001-02 में 12,514 रुपए थी वह बढ़कर 2005-06 में 17,695 रुपए हो गयी। अच्छा होता, माननीय सभापति महोदय, कि चर्चा करते समय माननीय प्रतिपक्ष के सदस्य इस बात की चिन्ता व्यक्त करते कि पिछले दो साल के राजस्थान सरकार के वित्तीय प्रबंधन के बाद सी.आर.एफ; का

**(समय: 15.00 बजे)**

ओपनिंग बैलेंस 2004-05 में, 2005-06 में योजना के वित्त पोषण के लिये समायोजित किया जाना चाहिये था, जो लगातार पिछले सालों में होता रहा है, 1994-95 में हुआ, 1999-2000 में हुआ। उस मद की 430 करोड़ रुपये की राशि केन्द्र से लेकर राजस्थान के कल्याण के लिये लगाने की बात करते। इस सदन को आश्वस्त करते कि केन्द्र में हमारी सरकार है, राजस्थान के हितों की अनदेखी नहीं होने देंगे। अच्छा होता, माननीय सभापति महोदय, वह चर्चा करते समय इस बात का भी जिक्र करते। ऋणों के पुनर्भरण की योजना बनी और उस योजना के तहत राजस्थान को उसके हक का जितना पैसा मिलना चाहिये था 307.55 करोड़ रुपये, उसकी जगह मात्र 11.87 करोड़ रुपया दिया गया। प्रतिपक्ष के सदस्य इस विषय में चिन्ता करते। राजस्थान की सरकार ने वित्तीय प्रबंधन को सुधारने का प्रयास किया, ट्वेलथ फाइनेंस कमीशन की गाइडेंस के हिसाब से अपने वित्तीय प्रबंधन को सुधारा। उसकी प्रोत्साहन राशि, उस स्कीम की राशि राजस्थान की जनता के कल्याण के लिये मिलनी चाहिये

(श्री प्रहलाद गुंजल)

थी, केन्द्र की सरकार से उस विषय में मांग करते तो निश्चित रूप से उनका कदम स्वागत योग्य था। उन्हें इसकी भी चर्चा करनी चाहिये।

माननीय सभापति महोदय, हम बहुत भाषण करते हैं, बजट के बहुत सारे आंकड़े पेश करते हैं और जब बजट पेश होता है तो प्रत्येक माननीय सदस्य को इतने सारे दस्तावेज बजट की क्रिटिकल, टिपिकल भाषा में लिखकर दे दिये जाते हैं कि वह 85 प्रतिशत सदस्यों के लिये पढ़कर समझना असंभव है लेकिन कोई उसमें घुसकर देखे तो इस बात का सहज अनुमान लगा लेते हैं कि अगर हम विकास की रोशनी राजस्थान के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना चाहते हैं, हम विकास का फायदा राजस्थान के प्रत्येक व्यक्ति को देना चाहते हैं तो वह वृहत् योजना के आकार के बिना संभव नहीं हो सकता। आपकी योजना का आकार कैसा है, आपका वार्षिक पलान कैसा है, अच्छा होता इस बारे में विचार करते। धन्यवाद देते राजस्थान की मुख्यमंत्री को कि योजना का आकार 2002-03 में जितना था 2006-07 में बढ़ाकर उससे लगभग दुगुना हो गया। लेकिन इस सदन को माननीय सदस्य आंकड़ों के भ्रमजाल में उलझाकर गुमराह करना चाहते हैं। ये आंकड़े हैं, आंकड़ों का मायाजाल है लेकिन मैं इसमें नहीं जाना चाहता हूं। स्वयं प्रतिपक्षी पार्टी के प्रगतिशील गठबंधन की सरकार ने हमारे वित्तीय प्रबंधन को सराहा है और इसका प्रमाण है कि प्रोत्साहन राशि भारत सरकार ने राजस्थान सरकार को दी। लेकिन ये आंकड़े महत्वपूर्ण नहीं हैं।

मैं आज दूसरी चर्चा भी करना चाहता हूं। अब केवल आंकड़ों के आधार पर तर्क-वितर्क और विपक्ष की भूमिका से काम नहीं चलने वाला है। वर्तमान में हम एक ऐसी अर्थव्यवस्था में जी रहे हैं जहां पर एक ओर स्थानीय सरकार है, दूसरी तरफ ग्लोबल गवर्नमेंट है, वैश्विक सरकार है। ग्लोबल गवर्नमेंट के कानून-कायदे अपना विश्वव्यापी प्रभाव छोड़ रहे हैं। जिस वैट के बारे में हमने पिछली बार भी चर्चा की और इस बार इसे सदन ने लागू किया, उसी व्यवस्था के प्रभाव का हिस्सा है और अब दुनिया का कोई भाग इस व्यवस्था के प्रभाव से बच नहीं सकता। मैं यह बात इसलिये कर रहा हूं कि जहां एक ओर हम ग्लोबलाइजेशन की ओर बढ़ रहे हैं, सारी दुनिया का भूगोल समान बनता जा रहा है, नहीं ऐसा न हो कि हम लगातार ग्लोबलाइजेशन की चिन्ता करते रहें और हमारी चर्चा और चिन्ता में उस व्यक्ति की अनदेखी हो जाए जिसके वोट के आधार पर हम चुनकर आते हैं। इस पवित्र सदन में

(श्री प्रहलाद गुंजल)

लगातार 55 बजट, मैं समझता हूं पेश हो चुके हैं। 55 बजट पेश होने के बाद आज हमें यह विचार करने की आवश्यकता है कि वैश्वीकरण का युग आ गया, ई-गर्वनेंस का युग आ गया लेकिन लोकतन्त्र का आधार बिन्दु गांव का ग्रामीण गणदेवता किस हाल में जी रहा है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से अनुरोध करना चाहता हूं कि आजादी के छह दशक बाद गांव के उस व्यक्ति को लोकतन्त्र का एहसास तो है लेकिन यह बहुत महत्वपूर्ण विचार का विषय है कि क्या उसके साथ लोकतांत्रिक व्यवहार हो रहा है ? रोजमर्रा के कामों में जो उसके साथ व्यवहार प्रशासन का थानेदार का, तहसीलदार का, पटवारी का है, उस व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। लोकतन्त्र की साठ साल की यात्रा के बावजूद भी एक दु:खद पहलू के रूप में हमारे सामने जिंदा नहीं है ? क्या यह विषय कभी हमारे सामने विचार के लिये नहीं लाया जाना चाहिये ? उस गांव के व्यक्ति के लिये कौन मुख्य मंत्री बना, कौन मुख्य मंत्री नहीं बना, किसकी सरकार है, किसकी सरकार नहीं है, यह बड़ा पहलू नहीं है। बल्कि यह है कि किस राज में उसके साथ बर्ताव ठीक हो रहा है, किस राज में उसके साथ कर्मचारी का व्यवहार ठीक है, किस राज में उसके साथ भ्रष्टाचार कम हो रहा है। तब उसको लोकतन्त्र की अनुभूति होती है। लेकिन हम देखते हैं, राज तो बदल जाता है, व्यवस्था नहीं बदलती। व्यवस्था में बैठे हुए लोगों का व्यवहार नहीं बदलता। और आज इस सदन में इस बात पर भी चर्चा की आवश्यकता है। इस दिशा में हमको सामूहिक सोच बनाकर आगे कदम बढ़ाने की आवश्यकता है और इसके लिये आवश्यक है कि राजनैतिक और सामाजिक अनुशासन कायम किया जाए। एक उदाहरण देना चाहता हूं। माननीय सभापति महोदय, समाज के हर वर्ग में सामाजिक अनुशासन की कमी आयी है। पिछले दिनों एक अख़बार पढ़ रहा था, राजस्थान के डायरेक्टर जनरल, पुलिस ने एक आदेश जारी किया कि राजस्थान के तमाम थानेदारों की ए.सी.आर., तमाम सी.आई. की ए.सी.आर. राजस्थान के डिप्टी भरेंगे, इलाके का एडिशनल एस.पी./डिप्टी भरेगा। मैं गलत नहीं मानता। लेकिन बहुत देर बाद, जब अनुशासनहीनता की पराकाष्ठा सामाजिक अनुशासन के मापदंडों के उल्लंघन के बारे में विचार बना। मैं जानना चाहता हूं, क्या यह व्यवस्था कार्यपालिका और व्यवस्थापिका के व्यवहार, बर्ताव में नहीं लायी जानी चाहिये ? क्या इस प्रकार के प्रावधान विधायिका और कार्यपालिका के परस्पर व्यवहार के बारे में तय नहीं किये जाने चाहिये? लेकिन आज इसकी कोई चिन्ता नहीं करता। हमको

(श्री प्रहलाद गुंजल)

लगता है हम बजट की प्रशंसा कर रहे हैं, हमको लगता है हम बजट का प्रतिरोध कर रहे हैं। हमारी भूमिकाएं स्पष्ट पक्ष, विपक्ष की बनी हुई हैं। इससे बाहर निकलकर हमको समाज के व्यक्ति की भूमिका के बारे में, इस समाज के नव-निर्माण की दिशा के बारे में सोचना पड़ेगा। हमें सोचना पड़ेगा उस व्यक्ति के हितों के बारे में। और जब तक इस पर सार्थक चिंतन नहीं होगा, माननीय सभापति महोदय, डी.जी.पी. को आवश्यकता पड़ी कि डिसिप्लिन की व्यवस्था के बिना नीचे के अधिकारी अनुशासन से बाहर जा रहे हैं। डेमोक्रेसी की स्थिति क्या है ? राज चाहे कांग्रेस पार्टी का हो, चाहे भारतीय जनता पार्टी का, कितने मंत्रियों की बात शासन सचिवालय में मानी जाती है? मंत्रियों की पर्सनेलिटी, उनके व्यवहार को लेकर शासन सचिवालय में सचिव उपेक्षा का व्यवहार करते है, उनकी मजाक बनाया करते हैं। क्यों नहीं इस दिशा में अनुशासन की व्यवस्था का मापदंड तय किया जाए? माननीय सभापति महोदय, खाली विधान सभा में तर्क-वितर्क करने से आम आदमी के साथ कार्यपालिका के व्यवहार में...

**श्री सभापति:** आप दो मिनट में कनक्लूड करें ।

**श्री प्रहलाद गुंजल:** सभापति महोदय कर रहा हूं । यह बहुत जरूरी बात कर रहा हूं।

मैं कुछ आंकड़ों की बात करता हूं और मैं कहना चाहता हूं कि अगर आंकड़ों को समझना है तो इतना बड़ा पुलिंदा है जिसको पढ़ते भी नहीं हैं, इस विषय में भी हमको चर्चा करनी पड़ेगी । इनके व्यवहार में परिवर्तन होना है या तो फिर जिन आंकड़ों की हम चर्चा करते हैं वे आंकड़े भी उन्हीं के द्वारा उपलब्ध किये जाते हैं । उन्हीं के द्वारा उपलब्ध किये हुए आंकड़ों पर हम यहां सदन में पक्ष और विपक्ष के आधार पर चर्चा करते हैं । यह बहुत गंभीर परिस्थिति है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है । हम प्रसन्न होते हैं कि हम बजट के पक्ष में तर्क दे रहे हैं । हम बजट के विपक्ष में तर्क दे रहे हैं। हमें व्यवस्था की सच्चाई को समझना पड़ेगा । जब तक गांव के व्यक्ति के साथ न्याय नहीं होगा, लोकतंत्र के आधार स्तंभ के देवता के साथ हम न्याय नहीं कर सकते । हम प्रश्न पूछते हैं, कौन देता है प्रश्नों का जवाब? वहां से प्रश्न का जवाब बनकर आता है, मंत्रीजी पढ़कर सुना देते हैं। हम हंगामा थोड़ा-बहुत उस पर कर लेते हैं । व्यवस्था का परिवर्तन इससे होने वाला नहीं है ।

(श्री प्रहलाद गुंजल)

हमको इस दिशा में बहुत क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के बारे में सोचना होगा। बजट हम पास करते हैं, पूरे समाज में इस प्रकार की धारणा व्याप्त हो गयी है और वे अर्थव्यवस्था के संचालन में ज्यादा रूचि नहीं रखते हैं । कार्यपालिका की रूचि अर्थ के बंटवारे को लेकर बनने लगी है । उनका ध्येय अर्थ को बांटने का बन गया है । क्या हम शासन में नहीं हैं? हम चुनकर आये हैं, जीतकर आये हैं, इस दिशा में कोई प्रयास नहीं करने चाहिए? अगर हम इस दिशा में प्रयास नहीं करेंगे, सोचेंगे नहीं तो मैं समझता हूं कि लोकतंत्र की इस व्यवस्था में हमारा चुनकर आने का काई फायदा नहीं है ।

आज चर्चा करना चाहता हूं, खूब चर्चा हो रही है दो दिन से, लेकिन अपनी बात समाप्त करने से पहले कि बजट तो बहुत अच्छा था, बजट में कोई कर नहीं है। बजट बीपीएल को समर्पित है, बजट महिलाओं को समर्पित है बजट में राजस्थान की मुख्य मंत्री ने उन सारी बातों को समझने की कोशिश की है जिनको हम कभी समझने की कोशिश नहीं करते । आर्थिक उदारीकरण के इस युग में ट्रेंड से हटकर, कुछ लीक से हटकर फैसले हमको करने पड़ेंगे । तब तक हम प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुधार नहीं सकते। इस दिशा में बढ़ी राजस्थान की मुख्य मंत्री ने राजस्थान में पब्लिक प्राइवेट पार्टिसिपेशन के कई कार्यक्रम लिये हैं । जब तक विकास के कार्यक्रमों में हम निजी भागीदारी नहीं बनाएंगे मैं तो आज चर्चा करना चाहता हूं कि जब भी पब्लिक प्राइवेट पार्टिसिपेशन की बात राजस्थान में आती है तो लोग शंकित होते हैं, आरोप लगाते हैं, आज की आवश्यकता को महसूस करते हुए मुख्य मंत्री जी के इस कदम पर क्यों नहीं राजस्थान की विधान सभा में पब्लिक-प्राइवेट पार्टिसिपेशन का कानून बनाया जाए? यह आज की जरूरत है, इसको महसूस करने की आवश्यकता है। इस दिशा में जो सरकार ने पहल की है। इस दिशा में जो परिवर्तन की शुरूआत की है मैं उसके लिए राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहता हूं ।

सभापति महोदय, लेकिन एक बात और आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इन दो-तीन सालों में मेरे विधान सभा क्षेत्र में विकास तो बहुत हुआ है लेकिन कल एक दुर्घटना हुई, मैं दुर्घटना कहूंगा, पूरे राजस्थान में चल रहा प्राकृतिक वज्रपात। पिछले एक सप्ताह से राजस्थान का किसान खेत की मेड़ पर खड़ा होकर अपने सपनों का ताना-बाना, साल भर का बुन रहा था, फसल आ जाएगी तो मन की योजना पूरी होगी, कार्यक्रम होंगे। न जाने क्या-क्या सपना देख रहा था। आज उसके सपने टूट गये हैं। खड़े

(श्री प्रहलाद गुंजल)

होकर ताना-बाना बुनने के बजाय खेत की मेड़ पर बैठा-बैठा रो रहा है । हमारी जिम्मेदारी बनती है। लोकतंत्र में समाज का जो ऐसा तबका है, हम केन्द्र सरकार से मुआवजे की ऊंट के मुंह में जीरे के बराबर राशि के प्रावधान के आधार पर फैसला नहीं ले सकते हैं, उसके जख्म पर मरहम नहीं लगा सकते हैं। पूरे राजस्थान को लेकर पिछले दो दिनों से इस सदन में लगातार चर्चा हो रही है, हल्ला हो रहा है, सब लोग जानते हैं, मैं उम्मीद करूंगा कि राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी इस बजट में विशेष पैकेज राजस्थान के हाड़ौती के किसानों को जो बर्बाद हो गये हैं, निश्चित रूप से देगी ।

**श्री सभापतिः** माननीय सदस्य, अगर आप इसको कनक्लूड कर दें तो बेहतर रहेगा।

**श्री प्रहलाद गुंजलः** सभापति महोदय, बिलकुल कर रहा हूं ।

एक मांग और आपके माध्यम से करना चाहूंगा। बीमा के प्रावधान हैं, अनावृष्टि पर बीमा मिलता है, अतिवृष्टि पर बीमा मिलता है । अतिवृष्टि हुई है, अंधड़-तूफान से बर्बादी हुई है । राजस्थान सरकार को आज इस दिशा में गाइडलाइन तय करनी चाहिए कि जहां पर तहसील की तहसील बर्बाद हो गयी, जहां पर तहसील के 50 प्रतिशत से ज्यादा गांव बर्बाद हो गये हैं । वहां कलक्टर को दिशा-निर्देश दें, आकलन की रिपोर्ट और उसके आधार पर सूचना जारी करें और उस राशि को 15 दिन के अंदर-अंदर राजस्थान के किसान को देकर उसके जख्मों पर मरहम लगाने का काम किया जाए। राजस्थान का किसान प्रकृति के वज्रपात पर रो रहा है ।

सभापति महोदय, बहुत सारे उल्लेखनीय काम चिकित्सा के क्षेत्र में, पेयजल के क्षेत्र में हुए हैं लगातार इन दो सालों में, पिछले पांच साल में जितने उल्लेखनीय काम पेयजल, चिकित्सा के क्षेत्र में नहीं हुए। हम यह भी चिंता लगातार करते हैं कि भू-जल स्तर गिरता चला जा रहा है । भू-जल स्तर गिर रहा है लेकिन इसके समाधान की दिशा में हम क्या आगे बढ़ रहे हैं? इस दृष्टि से महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में जो उल्लेख किया गया है पिछले दो साल से राजस्थान की सरकार के कदम सरानीणीय कदम हैं, मैं प्रशंसा करना चाहता हूं। मेरे विधान सभा क्षेत्र में खास तौर से पेयजल के मामले में शत-प्रतिशत गांवों को चम्बल की योजनाओं से जोड़ने और सिंचाई के क्षेत्र में ताखली बांध जैसी बड़ी योजनाओं की मंजूरी के लिए मैं सरकार का आभार व्यक्त करना चाहता हूं । लेकिन यह अनुरोध करना चाहता हूं कि

(श्री प्रहलाद गुंजल)

हाड़ौती में बहुत आवश्यकता है, चम्बल के बेसिन में कई नदियां बहती हैं, मैंने अभिभाषण के दौरान भी कहा था, वे नदियां बहकर व्यर्थ चली जाती हैं, उस पानी को उपयोग में लाकर हाड़ौती में किसान का जीवन सुधारने का कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए। माइनर इर्रिगेशन प्रोग्राम बनाया जाना चाहिए जो हमने प्रस्तावित किया है। आज मैं इस मौके पर मुख्य मंत्रीजी का और सिंचाई मंत्रीजी का आभार व्यक्त करना चाहता हूं, मैंने बजट के दौरान कहा था कि कोटा चम्बल नहर जो हाड़ौती की जीवनदायिनी रेखा है, उसकी उम्र पुरानी हो गयी है, नया जीवन मांग रही हैं । कई बार उम्र के पड़ाव के कारण टूट जाने के अप्राकृतिक अकाल भी हमको झेलना पडा है। उसकी मरम्मत का एक ऐतिहासिक काम हुआ है । उसको पक्का करने के लिए बजट में 30 करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया है, मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूं। धन्यवाद देना चाहता हूं कि कोटा के बारे में 10 करोड़ रुपये की राशि का प्रावधान किया । कोटा में विकास के अवसर बढ़ेंगे, वहां के लोगों को लाभ मिलेगा ।

सभापति महोदय, राजस्थान के माननीय चिकित्सा मंत्रीजी ने पिछली बार उप स्वास्थ्य केन्द्र से लेकर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से लेकर आयुर्वेद की डिस्पेंसरी कोटा में और खास तौर से मेरे विधान सभा क्षेत्र में देने में कोई कमी नहीं रखी । चिकित्सा के क्षेत्र में उन्होंने क्षेत्र के मतदाताओं का, आम आदमी का खयाल रखा है । लेकिन मैं इस अवसर पर आपके माध्यम से मांग करना चाहता हूं कि रामगंजमंडी के हास्पिटल का, डिमांड पर जब बात आएगी तो और रखूंगा, उसकी शैयाओं की क्षमता बढ़ाई जानी चाहिए।

आज तो यही बात अंतिम रूप से कहते हुए वर्तमान में जो वज्रपात किसान के साथ हुआ है, उसमें सरकार को सहानुभूति का बर्ताव करना चाहिए और कल्याणकारी बजट पेश किया है इस बजट का कुछ अनुभव राहत के रूप में तुरंत महसूस होना चाहिए, इसी के साथ मैं इस बजट का समर्थन करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत आभार ।

**श्री सभापति:** श्री धर्मपाल चौधरी।

**श्री धर्मपाल चौधरी** (मुण्डावर): सभापति महोदय, अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर राजस्थान की कुशल मुख्य मंत्री ने अपने जन्म दिन पर

(श्री धर्मपाल चौधरी)

राजस्थान की जनता के लिए जो शानदार बजट पेश किया है, उसके लिए सबसे पहले मैं मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहता हूं । पिछले तीन दिन से बजट पर बहस चल रही है, इसमें सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों तरफ के माननीय सदस्यों ने भाग लिया है। मैंने उनके विचारों को गम्भीरता से सुना, जहां सत्ता पक्ष के लोगों ने इस बजट को सराहा, वहीं प्रतिपक्ष के हमारे साथियों ने इसकी कमियों-खामियों को बताया। लेकिन बाहर जब हम उनसे चर्चा करते हैं और मिलते हैं तो वे भी बजट की सराहना करते हैं कि राज्य की मुख्य मंत्री ने बहुत अच्छा बजट पेश किया। लेकिन सदन में उनकी मजबूरी है, चूंकि वे प्रतिपक्ष के हैं इसलिए चाहे कितना ही अच्छा बजट हो, चाहे सरकार कितना ही अच्छा कार्य करे, इसकी खिलाफत करने का दायित्व वे निभा रहे हैं। राजस्थान में जब प्रतिपक्ष पिछली बार सत्ता में था और प्रतिपक्ष में बैठे हुए राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य वित्त मंत्री, थे तब उन्होंने भी दो तीन बार बजट पेश किये थे। उन्होंने बजट बनाते समय अपनी बुद्धि पर इतना जोर नहीं डाला, उन्होंने अपनी बुद्धि को फ्रैश ही रखा जिसके कारण उन्होंने राजस्थान की जनता का फायदा नहीं किया। अपने बजट से राजस्थान की जनता के लिए अगर वह अच्छा करते, लोगों का फायदा करते तो आज उनको विपक्ष में बैठने का मौका नहीं मिलता। राजस्थान की जिस जनता ने उनको 156 सीटें देकर सत्ता में बैठाया, आज 56 सीटें लेकर बैठे हैं विपक्ष में।

प्रतिपक्ष के मुख्य सचेतकजी जो रामगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य हैं, वार्षिक योजना के बारे में कह रहे थे कि इसमें ज्यादातर राशि केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं की है, अनुदानों में हिस्से की है। मैं उनसे आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि जब उनकी सरकार थी तब क्या केन्द्र सरकार ने पैसा नहीं मिलता था? मिलता था लेकिन इसमें उन्होंने अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं किया और राजस्थान की जनता के प्रति वे उत्तरदायी नहीं रहे। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि पैसा जो भी आता है वह केन्द्र से आता है, पहले भी केन्द्र से आता था और आज भी केन्द्र से आता है, सभापति महोदय, सबसे बड़ी बात तो कुशल वित्तीय प्रबन्धन की है। आज राजस्थान में कुशल वित्तीय प्रबन्धन के कारण हमारी सरकार ने बजट का आकार 8551 करोड़ 44 लाख रुपए करने की घोषणा की है, जो अब तक का सबसे बड़ा आकार है। राजस्व घाटा 2002-03 में 31 हजार 18 करोड़ था। सरकार के कुशल वित्तीय प्रबन्धन के कारण बाद में जब 2006-07 में मुख्य मंत्रीजी ने बजट पेश किया उसमें यह 43 करोड़ रह

(श्री धर्मपाल चौधरी)

गया। वह 5140.59 करोड़ मात्र रह जाएगा। राज्य पर प्रति वर्ष कर्जे में वृद्धि की दर गिरती जा रही है। 5974.47 करोड़ के स्थान पर 5201.44 करोड़ रह गया है। ब्याज का भार बढ़ा है लेकिन वह कांग्रेसी शासन ने अंधाधुंध जो कर्ज लिये उनका नतीजा है। योजना व्यय 5504 करोड़ से 8562.53 करोड़ रुपए हो गया। कैपिटल आउट-ले 2027.53 करोड़ से 5024.3 करोड़ हो गया । कर आमदनी जो 6451.51 करोड़ थी, वह बढ़कर 10 हजार 932.12 करोड़ हो गई। राजस्व आय एवं खर्च को संतुलित करने के प्रयास किए गए हैं। राजस्व घाटा भी धीरे-धीरे जो 2001-02 में 2697 करोड़ रुपए था वह 2006-07 में मात्र 43 करोड़ रह गया। इसी तरह राजकोषीय घाटा 2003-04 में 7367.13 करोड़ था, वह 2006-07 में 5140.59 करोड़ रह गया। इसी तरह से राज्य पर कर्ज का जो भार था वह भी 2003-04 में 7312.5 करोड़ था वह घटकर 2006-07 में 5201 करोड़ रह गया।

इसी तरह आर्थिक समीक्षा जो राज्य की राजस्व व्यवस्था का चित्रण है, इस पर जब हम नजर डालते हैं तो राज्य का सकल घरेलू उत्पाद जो 2003 में 84 हजार 405 करोड़ था, वह 2005-06 में 1 लाख 22308 करोड़ हो गया है। इसमें वृद्धि जो माइनस 4.17 थी 2002-03 में वह 2005-06 में, 10.74 है। शुद्ध घरेलू उत्पाद जो 2002-03 में 73864 था, वह बढ़कर 1 लाख 9632 हो गया। इसी तरह से प्रति व्यक्ति आय 2002-03 में 12641 थी जो बढ़कर 17695 हो गई।

बिजली में इसी तरह राजस्थान में उत्पादन बढ़ा है, चाहे बिजली राजस्थान की सरकार ने बाहर से खरीदी हो। 2003-04 में 2640 करोड़ यूनिट थी जो 2005-06 में बढ़कर राजस्थान के किसान और आम आदमी को देने के लिए 3165 करोड़ यूनिट हो गई। यह बजट राजस्थान के विकास का, गरीब आदमी के आंसू पोंछने वाला, सड़क एवं शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बजट है। बजट में माननीय मुख्य मंत्रीजी ने सभी वर्गों का ध्यान रखा है, चाहे वह गरीब किसान हो, मजदूर हो, आम आदमी हो, उद्योग हो, शिक्षा हो।

महिला दिवस पर इस बजट में मुख्य मंत्रीजी ने राज्य की महिलाओं को कृषि भूमि क्रय करने पर पहले जो 11.11 प्रतिशत मुद्रांक शुल्क लगता था, उसको घटाकर 5 प्रतिशत किया। इसका नतीजा यह निकला कि राज्य में 2 लाख महिलाओं को भूमि पर स्वामित्व का अधिकार मिला।

(श्री धर्मपाल चौधरी)

शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्रों का एनरोलमेंट बढ़ा है। स्कूलों के मामले में पहले बहुत बात हो चुकी है, पहले भी कहा जा चुका है, कि इस सरकार के बनने के बाद नई स्कूलें खुलीं हैं। इस बजट में 16 हजार राजीव गांधी पाठशालाओं को प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत करना और 5 हजार प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालय में क्रमोन्नत करना, यह भी सरकार का अपने आप में रिकार्ड है। पिछली सरकार ने मास्टरों की एक भर्ती नहीं की, हमारी सरकार ने 37 हजार मास्टरों की पहले भर्ती की, 7200 मास्टरों की भर्ती की प्रक्रिया चल रही है और इस बजट में 26 हजार तृतीय श्रेणी के और 5 हजार द्वितीय श्रेणी अध्यापकों की भर्ती की जाएगी। इस तरह से 31 हजार अध्यापकों की भर्ती सरकार इस बार करेगी।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विकास के लिए भी इस सरकार ने अपने बजट में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। पूर्व की सरकार ने जनजातीय विभाग के लिए कभी भी चिन्ता नहीं की। पूरे राजस्थान में पांच साल में 262 करोड़ बजट का प्रावधान था। हमारी सरकार ने, हमारी मुख्य मंत्रीजी ने गरीबों के प्रति चिन्ता करते हुए तीन वर्षों में 364 करोड़ का प्रावधान किया। उदयपुर संभाग में अनुसूचित जाति व जनजाति के 500 विद्यार्थियों हेतु 5 बालक और 6 बालिकाओं, कुल 10 नवीन आश्रम छात्रावासों का संचालन प्रारंभ किया और 9 आश्रमों में कम्प्यूटर स्थापित किये।

समाज कल्याण हेतु पूर्व सरकार के पांच वर्षों के कार्यकाल में योजना मद से कुल मिलाकर जो पैसा था उसे तीन वर्षों में 20 परसेंट अधिक किया 262 करोड़ का प्रावधान इस बजट में किया। समाज कल्याण विभाग द्वारा चलाये जा रहे छात्रावासों में जो छात्र रहते हैं उनके लिए जो 675 रुपये मिलते थे उसको 725 किया।

स्वास्थ्य के अंदर गांवों में रहने वाले गरीब आदमी को चिकित्सा का अच्छा इलाज मिले, उसके लिए इस बार बजट में 10 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 22 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 100 उप स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की घोषणा की। 3 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, 21 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, 227 उप स्वास्थ्य केन्द्रों के भवन निर्माण की घोषणा की। 14 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में शैयाओं की क्षमता बढ़ाने की घोषणा की।

(श्री धर्मपाल चौधरी)

राज्य में अंधता, कैटरेक्ट की बीमारी के कारण से हमारे बहुत भाई अंधे हो जाते हैं। राजस्थान में 2008 तक 9 लाख लोगों का ऑपरेशन करके उनको इससे छुटकारा दिलाने के लिए 0.34 प्रतिशत के स्तर तक करने के राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

गुर्दे की बीमारी और अन्य बड़ी बीमारियां हैं, उनका गरीब आदमी इलाज नहीं करा सकता। इसलिए 6 बड़े हास्पिटलों में मेडिकल रिलीफ सोसाइटी द्वारा डे केयर सेंटर खोलने की घोषणा की।

पशुधन के लिए राजस्थान में पशुओं की संख्या देखते हुए 50 नये पशु चिकित्सालय, 100 नये उप स्वास्थ्य केन्द्र, 200 पशु चिकित्सकों की भर्ती की घोषणा की।

सार्वजनिक निर्माण विभाग में पिछले बजट के समय रिडकोर के माध्यम से करीबन 1100 किलोमीटर सड़कों की घोषणा की गयी थी। वे जो चारों सड़कें हैं, एक हजार करोड़ का अनुबंध होकर उन सड़कों का काम चल रहा है।

प्रधान मंत्री सड़क योजना की शुरूआत देश के प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयीजी ने की थी, कांग्रेस की सरकार उसको आने के बाद बंद करना चाहती थी, लेकिन सभी सांसदों द्वारा उसका विरोध करने के बाद उस योजना को चालू रखना पड़ा। आज इसी की वजह से गांव-गांव में पेवर रोड बन रही है गांवों के अंदर सी.सी. रोड बन रही है। यह सब उसी बात की मेहरबानी है। ...(व्यवधान)

सड़क क्षेत्र में यातायात को सुगम बनाने के लिए आरओबी और उप मार्गों के निर्माण हेतु एक अभूतपूर्व पहल करते हुए 17 आरओबी और 25 उप मार्गों का निर्माण माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्री ने चालू किया है। मुख्य मंत्री सड़क योजना के लिए प्रत्येक वर्ष में गांवों में सड़कें, धार्मिक स्थानों पर सड़कें, जहां-जहां भी आवश्यकता हो उन सड़कों के लिए लिंक रोड बनाने के लिए सरकार ने चिन्ता करते हुए हर वर्ष 200 करोड़ रुपया खर्च करने की घोषणा की है।

ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में आज जिन गांवों में बिल्डिंग नहीं है उन स्कूलों के लिए 27 करोड़ रुपये से सरकार ने 1387 विद्यालयों में अतिरिक्त कक्ष और शौचालय खोलने की कोशिश की। आसींद और टोडाभीम में निजी सहयोग से महाविद्यालय खोलने की घोषणा की। महिला पोलीटैक्निक महाविद्यालय और महाविद्यालय जिन तहसीलों और जिलों में नहीं हैं, उनमें

(श्री धर्मपाल चौधरी)

अगर कोई भी निजी सहभागिता से कालेज खोलना चाहता है तो सरकार मुफ्त में जमीन देगी। महिला पोलीटैक्निक कालेज खोलने के लिए 15 करोड़ का प्रावधान किया, उसमें 50 परसेंट बिल्डिंग का भी पैसा देगी। इसलिए कि हमारी जो बहन-बेटियां हैं वे तकनीकी शिक्षा का ज्ञान ले लें और उनको नौकरी मिले व गांवों में जो गरीबी है उससे उन्हें निजात मिले। महिलाओं के बारे में इस बात का ध्यान दिया है।

सरकार की सोच है कि आज गांव में रहने वाले आदमी को पीने का पानी भी अच्छा मिले। इसके लिए पूर्ववर्ती सरकार ने कभी ध्यान नहीं दिया। हम भी जब प्रतिपक्ष में बैठते थे तो कितनी बार इनको कहते थे गांवों में हैण्डपम्प में लगाने के लिए या और पानी की स्कीम के लिए, लेकिन कभी मंजूर नहीं हुई। लेकिन हमारी सरकार बनते ही इस राजस्थान में 40 हजार हैण्ड पम्प दो साल में लगे हैं। 2003 से दिसम्बर, 2005 तक लाभान्वित आंशिक रूप से 24443 गांव और ढाणियों में तथा 1962 बस्तियों में पेयजल आपूर्ति उपलब्ध करायी। ...(व्यवधान) स्वजलधारा योजना में लगभग 6118 लाख रुपये की लागत से 1866 योजनाओं की प्रशासनिक व वित्तीय स्वीकृति हुई। 5392.10 लाख की लागत से 1803 योजनाओं की तकनीकी स्वीकृति जारी की गयी। पानी की व्यवस्था में भी जहां गांवों में फ्लोराइड पानी हो या पीने के पानी की दिक्कत हो और कोई भी विधायक मंत्रीजी के पास गया तो कभी भी मंत्रीजी ने उसके लिए मना नहीं किया चाहे वह सत्ता पक्ष का हो और चाहे विपक्ष का हो। सिंचाई के मामले में भी राजस्थान की सरकार ने गिरते हुए जल स्तर को रोकने के लिए गांव-गांव में एनीकट और बांध बनाने की योजनाएं मंजूर कीं। 25 लाख सिंचाई योजनाओं को पूर्ण करके 1 लाख हैक्टेयर में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने का लक्ष्य है।

**(समय: 15.38 बजे)**

**(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)**

**श्री अध्यक्ष:** मैं आपसे एक सैकण्ड के लिए क्षमा चाहूंगी, थोड़ा स्थान ग्रहण करें। मैं प्रतिपक्ष से अपील करना चाहूंगी कि उनके बिना सदन में कुछ नीरस लग रहा है इसलिए वे भी आएं और अपने बहुमूल्य सुझावों से सदन को लाभान्वित करें। मैं चाहती हूं कि प्रतिपक्ष के सदस्य भी आकर सदन में अपनी-अपनी सीटों पर बैठें।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** एक अशोभनीय घटना हुई काला झण्डा दिखाया और पूरा विपक्ष बहिर्गमन कर गया, इससे ज्यादा अफसोसजनक बात क्या हो सकती है? इसके लिए हम भी रिक्वैस्ट करते हैं। ...(व्यवधान)

**श्री धर्मपाल चौधरी:** माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सिंचाई के बारे में बता रहा था कि राजस्थान में सिंचाई के लिए 17150 हैक्टेयर में खालों का निर्माण इंदिरा गांधी नहर परियोजना में ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** मुख्य सचेतक महोदय, आप मेरी अपील के बारे में प्रतिपक्ष की लॉबी में चले जाएं और कहें कि मैंने यह अपील की है प्रतिपक्ष से। आप जाएं एक बार। आप जाएं और कहें।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** हम तो आसन का आदेश मानते हैं।

**श्री धर्मपाल चौधरी:** इंदिरा गांधी नहर परियोजना के आधुनीकरण एवं पुनरुद्धार हेतु आगामी चार वर्षों में 300 करोड़ रुपये व्यय करके 20 हजार हैक्टेयर में पक्के खालों के निर्माण हेतु 28 करोड़ और रुपये, सिद्धमुख नहर में खालों के निर्माण के लिए 22 हजार हैक्टेयर में और अमरसिंह जागराणा योजना में 10 हजार हैक्टेयर में खालों के निर्माण हेतु 18 करोड़, और 8 करोड़, रुपये चम्बल परियोजना की नहरों का जीर्णोद्धार और सुदृढ़ीकरण करने के लिए 7 करोड़ रुपये, दायीं मुख्य नहर सड़क हेतु 20 करोड़, और मुख्य नहर के लिए 10 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। गंगानगर जिले में बहुत लम्बे समय से आबियाना को माफ करने की बात थी, हमारी सरकार आने के बाद ही माफ किया।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य बोलने वाले बहुत हैं, आप 21 मिनट ले चुके हैं, 3.19 पर शुरू किया था, इसलिए दो मिनट में अपनी बात समाप्त कर दें।

**श्री धर्मपाल चौधरी:** मैं दो मिनट में समाप्त कर दूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस बजट में सैनिकों के कल्याण के लिए दूसरे विश्वयुद्ध के सैनिकों की विधवाओं को पेंशन तीन सौ से बढ़ाकर हमने ही छह सौ की थी, उसको आठ सौ किया। दूसरे विश्व युद्ध के भी पेंशन प्राप्त करने वाले सैनिकों को भी आठ सौ रुपये किया। चाहे खाद्य में हो, चाहे उद्योग में हो, पावर जनरेशन पर उद्योगों के अन्दर कर लगा रखा था, उसको समाप्त किया। इस तरह से प्रत्येक क्षेत्र में माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने इस बजट से राजस्थान के आम-अवाम का खयाल रखा है।

(श्री धर्मपाल चौधरी)

अब मैं कुछ बातें अपने अलवर ज़िले के लिए भी कहना चाहता हूं। ... (व्यवधान) हमारे अलवर जिले में मत्स्य यूनिवर्सिटी की मांग रही, मत्स्य प्रदेश था तब ही से रही। इसकी हम बार-बार यहां पर मांग भी करते रहे। अलवर जिले को पिछले 2-3 साल के बजट में एक थानागाजी महाविद्यालय और बहरोड़ में पोलीटैक्निक कालेज के अलावा कोई ऐसा बड़ा पैकेज नहीं मिला, तो हम माननीय मुख्य मंत्रीजी से आग्रह करते हैं कि राजर्षि महाविद्यालय में छात्रों की संख्या भी बहुत ज्यादा है, इस राजर्षि महाविद्यालय को ही क्रमोन्नत करके अगर यूनिवर्सिटी बन जाए, राजर्षि यूनिवर्सिटी, तो वहां की जनता की मांग पूरी हो जाएगी। यह हमारा माननीय मुख्य मंत्रीजी से निवेदन है। मैं अपने विधान सभा क्षेत्र में पहले भी कह चुका हूं मुख्य मंत्रीजी से भी रिक्वैस्ट की कृषि महाविद्यालय खोलने की क्योंकि मण्डावर क्षेत्र किसानों का क्षेत्र है। वहां पर दो सौ बीघा में तिनकीरूडी में फार्म हाउस है, सरकार का कृषि फार्म हाउस है, अगर उसमें कृषि महाविद्यालय खोला जाता है तो मण्डावर क्षेत्र की जनता का फायदा होगा।

**श्री अध्यक्षः** कृपया कनक्लूड करें आप।

**श्री धर्मपाल चौधरीः** एक मिनट, मैं आखिरी बात कह रहा हूं। हमारे वहां स्कूलों में साइंस सब्जैक्ट नहीं है, माननीय शिक्षा मंत्रीजी यहां विराजमान हैं, हमारे चाहे सब डिवीजनल हैड-क्वार्टर हो, चाहे गांव हो, साइंस और कामर्स का सब्जैक्ट नहीं है, तो उन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विषय खोलने की कृपा करें। मैं अन्त में मुख्य मंत्रीजी को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इतना शानदार बजट पेश किया राजस्थान के आम अवाम के लिए इस माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो समय दिया उसके लिए भी बहुत-बहुत धन्यवाद। जयहिन्द जय भारत।

**श्री अध्यक्षः** श्री प्रद्युम्न सिंह।

**श्री प्रद्युम्न सिंह** (राजाखेड़ा): माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम मैं अपनी बात शुरू करता हूं, हमारे मुख्य मंत्रीजी वित्त विभाग भी देख रही हैं, हर वित्त मंत्री का यह प्रयास रहता है कि राज्य की राजस्व आमदनी बढ़ाई जाए, राज्य की आर्थिक स्थिति सुधरे, इस दिशा में उन्होंने पहल की है, काम किया है लेकिन यहां पर यह बात भी बताना चाहूंगा कि उनके प्रयत्नों के अलावा अन्य कई ऐसे कारण रहे हैं जिनसे कि राज्य की आर्थिक स्थिति के अन्दर

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

सुधार हुआ है। भारत सरकार और 12वें फाइनेंस कमीशन का योगदान भी इसके अन्दर कम नहीं है। भारत सरकार की डिफरेंट मिनिस्ट्रीज से जो ग्रांट मिली है राज्य सरकार को विभिन्न विभागों के पेटे, उसका भी योगदान रहा है। लेकिन इन सब के बावजूद भी राज्य के ऊपर कर्जा बढ़ा है, राज्य के ऊपर ब्याज का भार बढ़ा है, यह अपने आप में एक चिन्ता की बात है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा, माननीय मुख्य मंत्री जी ने अपने बजट भाषण में शुरू में एक साल का जिक्र किया है कि जिस साल राज्य की राजस्व आय के अन्दर ...

**डा. किरोड़ी लाल मीणा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने सदन में आसन से पानी पीने की परमिशन ले ली है ?

**श्री अध्यक्ष:** ले ली है।

**डा. किरोड़ी लाल मीणा:** मैं जानकारी लेना चाहता था।

**श्री अध्यक्ष:** बीच में डिस्टर्ब न करें। बिना आसन की अनुमति के सदन में पानी नहीं आ सकता।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** मैं ऐसा कोई काम नहीं करूंगा कि आपको कोई अंगुलि उठाने का मौका मिले।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** नहीं, आप पानी पी.पी. कर हमारे को ...

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** मैं आपको कोसूंगा नहीं, आपकी तारीफ भी करूंगा।

**श्री अध्यक्ष:** वह आपको पानी पी.पी. कर कोसेंगे, क्या करेंगे आप?

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** आपकी तारीफ नहीं करूंगा, मैं आपको कोसूंगा।

**श्री जुबेर खान:** पानी में नमक मिलाकर भेजा है न इसलिए।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** महारानी साहिबा का नमक है इसमें।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां तक राजस्व वृद्धि का प्रश्न है क्योंकि यहां बार-बार यह बात कही है...

**मोहम्मद माहिर आजाद:** सांभर साल्ट का है जो केन्द्रीय सरकार के अण्डर में आता है।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** अब आप डिस्टर्ब न करें।

**श्री अध्यक्ष:** आप डिस्टर्ब न करें उन्हें, बोलने दें। ...(व्यवधान)

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** यहां पर बार-बार राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के अन्दर, बजट भाषण के अन्दर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की बात बार-बार कही गई है और यह बड़ी खुशी की बात है कि राज्य की वित्तीय स्थिति के अन्दर सुधार धीरे-धीरे हो रहा है, क्योंकि इसका लाभ सभी को है, राजस्थान की जनता को लाभ है। अब आपके सामने कुछ आंकड़े पेश करूंगा बहुत शॉर्ट के अन्दर।

**श्री अध्यक्ष:** नहीं, आप विस्तृत बोलिए।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** यहां पर आप भैरोंसिंहजी के वक्त के फीगर मंगा कर देख लें, हरिशंकर भाभड़ाजी वित्त मंत्री थे, भैरोंसिंहजी के पास भी विभाग रहा है और उसके बाद हमारे पास भी यह विभाग रहा है, कि कर संग्रहण के अन्दर हर साल वृद्धि हुई है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि 1998 आखिर में भैरोंसिंहजी की सरकार गई, कांग्रेस की सरकार ने पद भार ग्रहण किया, और आप उसके पहले भी देखेंगे तो हर साल इजाफा रहा, अकाल के बावजूद भी। आज यहां पर लोग बात कर रहे थे। कि राज्य के ग्रोस डोमेस्टिक प्रोडक्ट के अन्दर गिरावट आई, तो यह बात भी आपको ध्यान में रखनी पड़ेगी कि यह राज्य कृषि प्रधान राज्य है और यहां जब-तब अकाल पड़ता है। वह तो गनीमत थी, अकाल की वजह से ही कृषि का उत्पादन कम हुआ। कृषि का उत्पादन कम होने से आपकी ग्रोस डोमेस्टिक प्रोडक्ट कम होगा। एग्रीकल्चर का मेन कम्पोनेंट एग्रीकल्चर सर्विस सैक्टर, मिनरल सैक्टर एग सैक्टर और शायद पशुपालन डेयरी का है उसके अन्दर जब एग्रीकल्चर प्रोडक्शन गिरेगा, पशुपालन से जो रिलेटेड उद्योग है उसका उत्पादन गिरेगा तो निश्चित रूप से उस साल के अन्दर आपका ग्रोस डोमेस्टिक प्रोडक्ट कम होगा और जब ग्रोस डोमेस्टिक प्रोडक्ट कम होग तो पर कैपिटा इनकम निश्चित रूप से कम होगी क्योंकि उसी से रिलेटेड है पर कैपिटा इनकम हर राज्य की आप पुराना फीगर उठाकर देख लीजिए। जब वित्त मंत्रीजी जवाब दें तब यह बात कहेंगे। उन्हीं की पुस्तक मैं आपसे निवेदन करूंगा कि राज्य का कर संग्रहण 2001-2002 में 5671 करोड़ था जो 2002-03 में 6253 करोड़ हुआ। 2003-04 में क्योंकि आपकी सरकार 2003 के आखिर में आई दिसम्बर के अन्दर, आपको सिर्फ 4 महीने मिले, 8 महीने तो पुरानी सरकार ही रही थी, अब अपने मुंह से कहें कि हमने आकर के कोई जादू कर दिया। क्योंकि हमेशा कर संग्रहण के अन्दर यह होता आया है, आप फीगर मंगा कर देख लीजिए, कि कर विभागों के अन्दर फरवरी, मार्च में रिसीट्स हमेशा ज्यादा होती हैं। उसके बाद यह 7246 हुआ और

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

2004-05 में 8414 हुआ। अब प्रश्न यह पैदा होता है, यहां यह कह देना कि पूर्ववर्ती सरकार के समय में कर संग्रहण में कोई गति नहीं थी, एक साल तो 15 परसेंट बढ़ा। सिर्फ एक साल 7 परसेंट रहा था, उस साल राजस्थान में 30 जिले अकालग्रस्त थे हजारों गांव अकालग्रस्त थे।, जब परचेजिंग पावर नहीं होगी, लोगों के हाथ में क्रय शक्ति नहीं होगी तो कर संग्रहण के ऊपर प्रभाव निश्चित रूप से पड़ना है।

यह कहीं का हो, आज देश के अन्दर आप देखें, देश की इकोनॉमी बूम कर रही है चारों तरफ। भारत सरकार की रेवेन्यू रिसीट्स ऑल टाइम रिकार्ड हाई 20 प्रतिशत को टच कर रही हैं, जो आज दिन तक कभी नहीं हुई थी। निश्चित रूप से राज्यों को उसका लाभ, मिलेगा क्योंकि होता क्या है? अध्यक्ष महोदय, 12वें वित्त आयोग ने जो रिकमंडेशन की है जिसमें कि राज्य का डिवोल्यूशन तय होता है कि कितना प्रतिशत राज्य को मिलेगा, पूर्व में 29.5 था, मुझे करैक्ट कर दीजियेगा, शायद वो 30.5 किया है उन्होंने टोटल डिवीजिबल पूल के अन्दर से।

अब आप देखें, मैं आपके सामने निवेदन करूंगा कि टी एफ सी की रिपोर्ट के मुताबिक राज्य को, कितना फर्क पड़ा है। इलैवन्थ फाइनेंस कमीशन के अन्दर राज्य को 23588 करोड़ रुपया तो दूसरे मदों में मिला आपकी स्कीम्स के तहत और बारहवें वित्त आयोग ने कितना दिया है ? 39062 करोड़ रुपया। 16 हजार करोड़ का इजाफा, जो 2005-06 में शुरू हो चुका है।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** टैंथ फाइनेंस कमीशन से भी तुलना कर दो आप।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** आप जिससे कहें उससे कर दूं।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** दोनों की तुलना कर दो।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** हां, मैं कर रहा हूं। यह सतत् प्रक्रिया है। जब देश की इकोनोमी बढ़ती है, देश की अर्थव्यवस्था के अन्दर कर संग्रहण होता है। फाइनेंस कमीशन के अपाइंटमेंट्स होते हैं वो इसलिए किये जाते हैं कि केन्द्र सरकार की जो आमदनी है, यह निश्चित है, केन्द्र सरकार के पास आमदनी के जरिये ज्यादा हैं, राज्य सरकारों के पास आमदनी के जरिये कम हैं और राज्य सरकारों के खर्चे ज्यादा हैं, केन्द्र सरकार के खर्चे कम हैं। इसीलिए इस फैडरल स्ट्रक्चर को कायम रखने के लिए फाइनेंस कमीशन की परिकल्पना संविधान के अंदर की गई और उसके तहत यह डिवोल्यूशन आपको मिलता है। 39

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

हजार करोड़ रुपया तो अदर स्कीम्स का है, टैक्स डिवोल्यूशन की बात कर रहा हूं, इलेवंथ ने दिया था 20596 और अब आपको मिलेगा 34431, 14 हजार करोड़ रुपया राज्य को एक्स्ट्रा करों के रूप में भारत सरकार से डिवोल्यूशन होगा, 14 हजार करोड़ का आप पांच साल में हिसाब लगा लीजिये। यह इन्क्रीमेंटल बेसिस होता है, पहले साल में बराबर नहीं मिलेगा। यह फाइनेंस कमीशन की रिकमंडेशन है और आम तौर से फाइनेंस कमीशन की रिकमंडेशन के आधार पर ही केन्द्र सरकार तय करती है अपने बजट एस्टिमेट्स के अन्दर कि राज्यों को कितना दिया जाएगा। वही की वही रिकमंडेशन मानी जाती है, कभी-कभार बहुत मार्जिनल उसके अन्दर फर्क होता है। लेकिन आज जिस प्रकार से देश की अर्थव्यवस्था में सुधार आया है, आज संसार के सारे देश मान रहे हैं कि भारतवर्ष संसार के अन्दर चौथी इकोनोमिक पावर बन गया है। आपने भी पढ़ा होगा सबने अखबार में। किसी और ने तो पढ़ा नहीं, सब ने पढ़ा है। जब चौथी इकोनोमिक पावर उन्होंने माना है कि जब देश की आर्थिक उन्नति कि सारी दुनिया रिकग्नाइज कर रही है तो उसका निश्चित रूप से राज्यों को भी लाभ मिलना ही है। आपको जब 14 हजार करोड़ रुपया एक्स्ट्रा मिलेगा तो निश्चित रूप से आपकी माली हालत सुधरनी है। फिर साथ-साथ जब इस अर्थव्यवस्था के अन्दर बूम आया है तो आपका खुद का कर संग्रहण निश्चित रूप से बढ़ेगा। आप उठाकर देख लीजिये, चाहे सेल्स टैक्स है, मोटर व्हीकल टैक्स है, आपको मालूम है कि किस गति से मोटर व्हीकल देश के अन्दर बढ़ रहे हैं। राजस्थान भी उससे अछूता नहीं है, वह ट्रैफिक देखकर ही मालूम पड़ रहा है। तो आपका उस क्षेत्र के अन्दर भी कर संग्रहण बढ़ेगा। तो आज ओवरआल जो देश की कंडीशन है उससे राजस्थान भी अछूता नहीं रहेगा, यही मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं। आपके प्रयत्न, राज्य सरकार के प्रयत्न देश की अर्थव्यवस्था, टी एफ सी की रिकमंडेशन और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा डिव्रेल्यूशन मैं आपको 3-4 चीजें पढ़कर सुनाता हूं कि आपको भारत सरकार से किन-किन मदों में ज्यादा डिवोल्यूशन मिला है। आप देखेंगे, रोड ट्रांसपोर्ट एण्ड हाइवेज, 2003-04 में 47 करोड़ रुपया था, 2004-05 में 67 करोड़ रुपया था और 2005-06 में ये जनवरी तक के फीगर हैं मेरे पास, उससे पहले के फीगर नहीं हैं, 116 करोड़ 73 लाख रुपया आपको मिल चुका है। मैं गलत हो सकता हूं, मुझे करैक्ट कर दीजियेगा, मंत्री महोदय विराजमान हैं यहां पर। इसके अलावा रूरल डवलपमेंट में 2003-04 में 231

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

करोड़ रुपया, 2004-05 में 279 करोड़ रुपया और इस साल करंट ईयर में आपको 378 करोड़ रुपया मिला। लैण्ड रिसोर्सेज के अन्दर मैं 2003-04 से पढ़ रहा हूं, 132, 144 और इस करंट ईयर में आपको 164 करोड़ रुपया मिला। मिनिस्टरी ऑफ अरबन डवलपमेंट में आपको 2003-04 में मिला 11.59 करोड़ रुपया, 2004-05 में मिला 24.67 और इस साल में क्या इन्क्रीज है ? 510 करोड़ रुपया इस जनवरी तक मिला, जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते। मेरे पास और भी हैं, ट्राइबल डवलपमेंट का मेरे पास है। वूमेन एण्ड चाइल्ड डवलपमेंट, आपने कहा कि आपने सहयोगिनियां अपाइंट कर दीं, इसमें भी 50 प्रतिशत कंट्रीब्यूशन भारत सरकार का है। शिक्षा के अन्दर मैं अभी आगे आऊंगा। वूमेन एण्ड चाइल्ड डवलपमेंट, अब आप देखिये, 129 करोड़ रुपया मिल रहा है आपको। इसी प्रकार से आप आइये एलीमेंट्री एजुकेशन एण्ड लिटरजी में, 2003-04 में 9 करोड़ 94 लाख रुपया मिला, 2004-05 में 16 करोड़ 48 लाख रुपया मिला और करंट ईयर के अन्दर 141 करोड़ रुपया मिला। ट्राइबल अफेयर्स 25 करोड़ के अगेंस्ट 57 करोड़ रुपया, करंट ईयर का मैं बता रहा हूं, और अभी मार्च के अन्दर एक आखिरी किश्त और आनी है।

अध्यक्ष महोदया, मेरा आपसे निवेदन है, खाली अपने ऊपर श्रेय लेना कि हमारा फाइनेंशियल मैनेजमेंट है। अब सूचना का अधिकार आ गया, आप सूचना प्राप्त कर सकते हैं हालांकि आपने अभी तक कमिशनर अपाइंट नहीं किया है। मैं आपसे निवेदन कर रहा था, जिस हिसाब से भारत सरकार का डिवोल्यूशन है, मैं एक चीज और निवेदन कर रहा हूं, हमारे मिनिस्टर साहब बैठे हुए हैं, मुझे करैक्ट कर दीजियेगा मैं गलत हूं तो, रोड्स की मेंटियंज के लिए नैक्स्ट फाइनेंशियल ईयर से 2005-06 से इनको 4 वर्ष तक 633 करोड़ रुपया मिलेगा और रफली आता है 158 करोड़ रुपया प्रति वर्ष। आज शायद पहली दफे टी एफ सी ने दिया, आज दिन तक नहीं मिला था कभी यह पैसा। तो क्या जो आपने सैस लगाया है 50 पैसे का डीजल पर, वह समाप्त कर देंगे ? एक वक्त वह था कि स्टेट अपनी रोड्स के लिए अपने फण्ड से पैसा देने की स्थिति में नहीं था और हमने नाबार्ड से लोन लिया था अपनी पुरानी रोड्स के मेंटिनेंज के लिए। आज तो पैसा बरस रहा है।

इसी तरह से बिल्डिंग्स के पेटे 213 करोड़ रुपया, आप करैक्ट कर दीजियेगा मुझे। आपकी जो बिल्डिंग्स की खस्ता हालत थी। कहने का मेरा अभिप्राय है कि आज सारी अर्थव्यवस्था के अन्दर सुधार दिख रहा है उसके

अन्दर मूल में कारण है भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा सुधार, टी एफ सी की रिपोर्ट और केन्द्र सरकार की उदार नीतियां हैं। आपने पढ़ा होगा, इस साल डेढ़ लाख मास्टर लगाएंगे, आपका पहले लाभ हो गया, आपको मास्टरों की 75 प्रतिशत तनख्वाह मिल रही है। शुरू-शुरू में तो आप बात को दबा गये, किसी को कुछ कहना नहीं चाहते थे, सारा श्रेय, कि हमने बेरोजगारों को रोजगार दिया है। 25 प्रतिशत कंट्रीब्यूशन है इनका, उसमें सारा पैसा भारत सरकार का है। तो मैं आपसे निवेदन कर रहा था, इस साल डेढ़ लाख स्कूलें....

**डा. एन. एस. गुर्जर:** सॉरी फोर इन्टरप्शन। अध्यक्ष महोदया, ये भारत सरकार, भारत सरकार बोल रहे हैं, यह टीचर्स का पैसा मिल रहा है, यह एजुकेशन का पैसा मिल रहा है, आप कह रहे हैं कि स्टेट का 25 प्रतिशत है। एक मिनट सुन लीजिये। यह सारा एक फार्मूला है, ये जितनी भी योजनाएं हैं, आप चाहें तो मैं बता देता हूं, सर्व शिक्षा अभियान...

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** आप यह करेंगे तो... (व्यवधान) मैं खतम कर दूं एक बार।

**डा. एन. एस. गुर्जर:** एक मिनट सुनिये।

**श्री अध्यक्ष:** टोडारायसिंह से आने वाले माननीय सदस्य।

**डा. एन. एस. गुर्जर:** सर्व शिक्षा अभियान का पैसा, यह लिखा है- "SSA is partly funded by external funding agencies like World Bank, DFID of U.K. and the European Commission..." भारत सरकार का कहां से आ गया यह पैसा ?

**(समय: 16.00 बजे)**

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** यह ठीक है, आप बैठ जाएं।

**डा. एन.एस.गुर्जर:** और इसी तरह से डी.पी.ई.पी. का भी, वह भी वर्ल्ड बैंक और यूनिसेफ, उनका पैसा है, यह कोई एहसान कर रहे हो क्या आप?

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** आप मेरी बात सुन लें, आप जवाब सुन लें। मैं समझ रहा हूं, आप क्या कह रहे हैं? इसके ऊपर भी आप मेरा जवाब सुन लें।

**श्री अध्यक्ष:** टोडारायसिंह से आने वाले माननीय सदस्य, बीच में बोलने की आवश्यकता नहीं थी । वह कुल मिलाकर यही तो कह रहे हैं कि आपका बजट बहुत अच्छा है। यही तो कह रहे हैं, और क्या कह रहे हैं वह? यही तो कह रहे हैं कि पैसा आपको मिल गया, बजट बहुत अच्छा है।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** नहीं, नहीं, मैं इनका भी जवाब दे रहा हूं। सवाल यह है, अध्यक्ष महोदया,...

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** धौलपुर का पानी बोलता है तो बहुत अच्छा बोलता है, तब तो सही सही बोलते हैं और फिर इधर देखते हैं उसके बाद दूसरी बात बोलने लग जाते हैं।

**श्री अध्यक्ष:** नेता प्रतिपक्ष नहीं, कहां हैं यहां? हैं ही नहीं वह तो।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** माननीय अध्यक्ष महोदया, जो आपका लोन फैक्टर है, भारत सरकार से लोन लिया है, जो आपने इर्रिगेशन में सुधार के कार्यक्रम के लिए लोन लिया है वर्ल्ड बैंक का...

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** पूरे हिन्दुस्तान के अन्दर पैट्रोल और डीजल पर जो सैस लगता है उसके फार्मूले से पैसा मिल जाता है।

**श्री अध्यक्ष:** नहीं, आप बीच में डिस्टर्ब नहीं करें। कृपया स्थान ग्रहण करें। कृपया बीच में व्यवधान नहीं करें।

**मोहम्मद माहिर आजाद:** अध्यक्ष महोदय, ये एक-एक घंटे यहां पर चिल्लाते रहे, हम खामोशी से सुनते रहे। हमारे वरिष्ठ सदस्य बोल रहे हैं, फिर खड़े होकर यह इंटरप्शन करें...

**श्री अध्यक्ष:** नहीं, आप बीच में व्यवधान नहीं डालें। अब आप कोई भी व्यवधान नहीं डालेगा। गलत बात है।

**मोहम्मद माहिर आजाद:** फिर आप बुलवा लेना एक को भी देखेंगे, यह क्या तरीका है? खड़े होकर बोलने चले जाते हैं। (व्यवधान)

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** करैक्ट तो करेंगे।

**डा. एन.एस.गुर्जर:** हम आपको करैक्ट तो करेंगे। अगर आप यूं ही फेंकाफेंकी करेंगे तो करैक्ट करेंगे।

**श्रीमती ममता शर्मा:** आपके मुख्य मंत्री क्या करेंगे अगर आप ही करैक्ट कर देंगे तो?

**श्री महीपाल यादव:** मुख्य मंत्रीजी का काम आप करेंगे।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** मुख्य मंत्रीजी आपको करैक्ट करेंगी, आपको करैक्ट करना पड़ेगा।

**श्रीमती ममता शर्मा:** जब वह जवाब देंगी तब वह करैक्ट करेंगे।

**मोहम्मद माहिर आजाद:** वह मुख्य मंत्रीजी आपको करैक्ट करेंगी।

**श्री महीपाल यादव:** माननीय अध्यक्ष महोदय, यह गलत परम्परा है। टोडारायसिंह से आने वाले माननीय सदस्य बोले तो कोई नहीं बोला। (व्यवधान) यह व्यवधान डालते हैं। इनके नेता बोलेंगे तब हम भी व्यवधान डालेंगे।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** आप थे ही नहीं यहां पर।

**डा. एन.एस.गुर्जर:** मैं तो चाहता था कि आप इंटरफियर करो। मैं चाहता था कि मैं बोलूं तब आप यहां पर हो। देखिये, मैं तो चाहता था, जब मैं बोल रहा था, कि आप यहां मौजूद होते, मुझे इंटरफियर भी करते, मुझे टोकते, मैं तो चाहता था।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्यगण।

**श्री संयम लोढ़ा:** आप, राठौड़ साहब, यह कैसे कह रहे हैं कि जब ये बोल रहे थे तो कोई नहीं था। हमारी सबकी आत्मा यहां भटक रही थी। (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** यहां भटक रही थी आपकी आत्मा, यहां भटक रही थी? अब कोई बीच में व्यवधान नहीं डालेगा।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** अध्यक्ष महोदय, यह रुपया जो दिया गया है 141 करोड़ रुपये, this is a total grant. It's a total grant. अगर टोटल ग्रांट नहीं हो तो you can kindly correct me. It's a total grant. अगर लोन फैक्टर का होता, जो आपने आर.यू.आई.डी.पी. का लिया है, और योजनाओं का लिया है, उसमें राज्य सरकार की जिम्मेदारी है कि वह उस पैसे को लौटाएगी। यह टोटल ग्रांट है आपकी जो कि वापस नहीं दी जाएगी जो स्थिति बनी है, मैं आपके एफर्ट्स की नहीं कहता हूं, शायद सरकार के एफर्ट्स रहे हों कि रेवेन्यू रिसीट बढ़े।

अकाल के अन्दर ही आप देखें। मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं कि अकाल में जो रिलीफ मिलती थी पहले, इनीशियक, ईयर्स के अन्दर 150 करोड़ रुपये से शुरू होता। 25 प्रतिशत कंट्रीब्यूशन राज्य का उसके अन्दर। इसी तरह से बढ़ते-बढ़ते बढ़ रहा है। अब क्या स्थिति है टी.एफ.सी. की रिपोर्ट के बाद? टी.एफ.सी. की रिपोर्ट के बाद आपको 2005-2006 में, मिला है 311 करोड़ रुपये और उसके बाद आखिर का साल है 2009-2010 में, वह जाकर पहुंचेगा 373 करोड़ रुपये के ऊपर। इसमें 25 प्रतिशत कंट्रीब्यूशन आपका मिलाकर आपको अकाल राहत कार्यों को मीट करना है और पुराना ई.एफ.सी. का पैसा 540 करोड़ रुपये इनके पास पहले का बचा हुआ है। तो 540 और

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

311 का 25 प्रतिशत, यह 75-76 के करीब पड़ता है, करीब 820 करोड़ के आसपास इनकी सरकार के पास पडा हुआ है, उसके बाद भी अकाल राहत कार्यों को प्रारम्भ करने के अन्दर कोताही बरती जा रही है। जनवरी के महीने के अन्दर दो लाख लेबर से आपने शुरू किया और आपने सदन में ही देख लिया, पक्ष और विपक्ष के सभी सदस्य इस बात से चिंतित हैं कि अकाल राहत कार्य पूर्ण रूप से खोले जाएं एक वक्त वह था जब अगस्त-सितम्बर के अन्दर पूर्ववर्ती सरकार ने अकाल राहत के कार्य शुरू कर दिये थे और आखिर तक तो गर्मी के मौसम में जाकर 23-23 लाख लोग लगे हैं। आपको सोचना चाहिए। आम, गरीब आदमी की तकलीफ का आपको ध्यान नहीं है। आपको बढ़िया फाइनेंशल मैनेजमेंट दिखाने की इच्छा है कि यह फाइनेंशल मैनेजमेंट हमने अच्छा किया है, हमारी आमदनी बढ़ रही है।

इसमें मैं एक बात कहना भूल गया कि अगले साल भी आपने जो एनविसेज किया है, आपका एस्टिमेट है कि अगले साल भी सरकार 5000 करोड़ रुपये कर्ज का लेगी, यह आपका डाक्यूमेंट है। मेरे कहने का मतलब यह है, एक तरफ तो आप यह कह रहे हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था के अन्दर सुधार आ रहा है, हमारा फाइनेंशल मैनेजमेंट अच्छा है, प्लानिंग कमीशन ने हमको सर्टिफिकेट दे दिया कि यह बीमारू राज्य नहीं है। पर किस सन्दर्भ में कहा, हम भी पता लगाएंगे, अगर फाइनेंस से हो तो क्या प्लानिंग कमीशन भूल गया कि पूर्ववर्ती सरकार को तीन अकाल तो इतने जबरदस्त झेलने पड़े थे कि उसके अन्दर स्थिति खराब हो गई थी, राज्य की आमदनी घटी, परचेजिंग पावर लोगों की घटी? जब परचेजिंग पावर घटती है किसान की, किसान ही इस देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जब उसकी परचेजिंग पावर घटेगी तो निश्चित रूप से राज्य की अर्थव्यवस्था के ऊपर और कर संग्रहण के ऊपर विपरीत प्रभाव पड़ेगा, इस बात को मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं।

एक बात और यहां पर कही गई ओवरड्राफ्ट की कि ओवरड्राफ्ट हमने कभी नहीं लिया। मैं ओवरड्राफ्ट की चीज आपको निवेदन कर दूं, अध्यक्ष महोदय, इसका फार्मूला क्या है, कि एक राज्य में वेज एण्ड मीन्स की एक लिमिट फिक्स होती है। मार्गोपाय उपाय कहते हैं हिन्दी में, कि इस सीमा तक अगर आप जाते हैं, जो आज की तारीख में राज्य पर करीब 575 करोड़ रुपये है। हमारे वक्त में यह सीमा, मुझे करैक्ट कर दीजियेगा, लिखवा दीजियेगा, 450 करोड़ रुपये से ज्यादा नहीं थी। 125 करोड़ रुपये का इजाफा हो गया है

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

कि इस सीमा तक अगर आप रुपया लेते हैं तो आप ओवरड्राफ्ट की श्रेणी में नहीं माना जाएगा। इससे ओवर एण्ड एबव अगर आप रुपया लेते हैं तो आप ओवरड्राफ्ट की श्रेणी में आ जाता है। ओवरड्राफ्ट की शायद अब लिमिट फिक्स कर दी है एक हफ़्ता या पांच दिन में आपको क्लीयर करना पड़ता है यह बात सही है कि हम जो थे, हमारी सरकार ओवरड्राफ्ट में हमेशा फंसी रहती थी, लेकिन आज वह स्थिति नहीं है। मैं आपको एक अख़बार पढ़कर सुनाता हूं 18 मार्च का बिजनस स्टैण्डर्ड, जिसमें प्रधान मंत्रीजी ने अपने भाषण में कहा था कि राज्य सरकारों की अर्थव्यवस्था बहुत सुदृढ़ हो गई है देखिये – "States' cash surplus Rs. 31,000 crores." यह बिजनस स्टैण्डर्ड है। उसमें यह भी लिखा है, यह जो ओवरड्राफ्ट की बात कर रहे हैं, राज्य के 26 प्रांतों में जिनका खाता रिजर्व बैंक में है, उनमें से 22 ने तो वेज एण्ड मीन्स ही अवेल नहीं किया, आपने वेज एण्ड मीन्स ही अवेल नहीं किया। हर राज्य की वेज एण्ड मीन्स है और हर जगह आपने कहा कि हमने ओवरड्राफ्ट ड्रा नहीं किया, कि हम ओवरड्राफ्ट में नहीं गये। और स्टेट्स ने तो वेज एण्ड मीन्स का इस्तेमाल नहीं किया। तो मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि आज देश के अन्दर, मैं गलत हूं तो, मैं गलत नहीं हूं, यह कोई साधारण अख़बार नहीं है, यह देश के प्रमुख अखबारों में से एक है बिजनस स्टैण्डर्ड है, मैं आपको पढ़कर सुनाऊं। मैं सदन का समय नहीं खराब करना चाहता, आपको सिर्फ आपरेटिंग पैरा के दो-तीन बिन्दु पढ़कर सुना देता हूं।

**श्री अध्यक्षः** आपरेटिंग पैरा सुना दें आप तो केवल।

**श्री प्रद्युम्न सिंहः** "For the first time in several years, States are sitting on a large cash surplus estimated at around Rs. 31,000 crores on September, 10." That is 2005. अगर आप चाहेंगे तो मैं इसको सदन की टेबल पर रख दूंगा। अगर आपकी आज्ञा हो, प्रोवाइडेड कि यह मुझे मिल जाए। "According to the Finance Ministry, Bihar's surplus was 3,600 crores, Maharashtra had a surplus of Rs. 3,800 crores and Haryana Rs. 3,200 crores. Tamil Nadu, West Bengal and Uttar Pradesh had a cash surplus of Rs. 2,000 crores." कारण क्या हुआ इसका? कि यह जो डिवोल्यूशन आया, आपका उन्होंने फंडिंग पैटर्न बदल दिया। आज जो भारत सरकार राज्यों को लोन नहीं देती है, जो ऋण का जो कम्पोनेंट है प्लान के अन्दर, उसकी लिमिट फिक्स कर दी जाती है और राज्य सरकार स्वयं अपना कर्जा ले सकती है। कुछ कर्जा रिजर्व बैंक उगाहती है

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

राज्य सरकार के लिए, बाकी राज्य सरकार अपने कर्जे के लिए अपने पैसों का खुद इंतजाम कर सकती है। क्योंकि फाइनेंशल स्थिति तो महाराष्ट्र की, वैस्ट बंगाल की है, तमिलनाडु की है जो सबसे ज्यादा खराब है। मुझे अच्छी तरह याद है जब हम लोग दिल्ली जाते थे तो फाइनेंस मिनिस्ट्री में हम लोग बैठे रहते थे वित्त मंत्रीजी के पास, कई राज्यों के वित्त मंत्री लाइन लगाकर बैठे रहते थे एडवांस लेने के लिए कि इस महीने का खर्च नहीं चला तो इस महीने तक किश्त तो ले ली गई है, अगले महीने की किश्त हमें और दे दीजिये...

अब सारे प्रान्त जो हैं, खुद प्रधान मंत्रीजी ने अपने भाषण में कहा था कि राज्यों की माली हालत इस वक्त बहुत बढ़िया है। और वित्त मंत्रीजी ने भी अपने भाषण में कहा है। वित्त मंत्रीजी ने अपने भाषण में कहा, मेरे पास इकोनोमिक टाइम्स में उनकी पूरी स्पीच है। Kindly believe me, जो कह रहा हूं। उन्होंने खुद कहा है कि राज्यों की वित्तीय स्थिति बहुत अच्छी है। भारत निर्माण कार्यक्रम हाथ में लीजिए आप। आप सड़कों का लीजिए, पेयजल का लीजिए, चिकित्सा का लीजिए, जो आपके इलेक्ट्रिफाइड विलेजेज हैं उनके अन्दर सारा पैसा आपको मिल रहा है कि आप इलेकिट्रफाइड करिये विद् कंट्रीब्यूशन। आपके जो त्वरित सिंचाई कार्यक्रम हैं। कहने का मेरा मतलब है कि आपकी वित्तीय स्थिति में यह सुधार आया, आपने नाम बदल दिये। अब आदिवासी इलाकों में कोई स्कूल खोलेंगे, उसके लिये पैसा आपको दे रहे हैं, इतने स्कूल खोलेंगे इस साल। आप नाम बदल कर कुछ रख दीजिए, पैसा तो वहां से मिलने वाला है, उनकी बिल्डिंग वगैरह के लिये आपको। कोई बुराई नहीं है। कोई साधु-सन्यासियों की जमात थोड़े ही है यह सरकार। राजनीतिक सरकार है, राजनीतिक लाभ लेने की हर कोई चेष्टा करता है। हमारा दायित्व है कि आपको पैसा कहां कहां से मिला, आप अकेले वाह-वाही मत लूटो, दूसरों की भी थोड़ी सी तारीफ कर दो। अब आप देखो, मुख्य मंत्रीजी ने कितनी होश्यारी से अपने भाषण के अन्दर एक जगह कहा कि हमको...

**श्री अध्यक्षः** धौलपुर के लोग होशियार तो होते ही हैं।

**श्री प्रद्युम्न सिंहः** मुख्य मंत्रीजी ने बड़ी होशियारी से अपने भाषण में कहा। उनके अफसरों की समझदारी नहीं, खुद की समझदारी है। कहा यह मत बता देना, मेरे एम.ए.एल. मुझको तंग करेंगे सड़कों के मामले में। 5-5, 7-7 करोड़ हैरिटेज बिल्डिंग के लिये, आर्कियोलोजी के लिये मिले, उसका तो जिक्र

कर दिया, भवन और सड़कों में अभी मिले हैं उसका जिक्र नहीं किया जो कि सब्सटेंशियल अमाउण्ट था। इनको 850 करोड़ रुपये और मिलेंगे, स्पेशल नीड्स एण्ड एसिस्टेंस के अन्दर क्योंकि मेमोरण्डम हमने दिया था, 12वें वित्त आयोग को मेमोरण्डम पुरानी सरकार ने दिया था। इस सरकार के आने के बाद आपने एडिशनल मेमोरण्डम दिया, आपने आकर कुछ सप्लीमेंट्री मेमोरण्डम दिया। सप्लीमेंट्री मेमोरण्डम तब दिया जाता है जब वहां से इंडिकेशन (व्यवधान) अब आप मेरी बात सुन लें।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** एडिशनल मेमोरण्डम तब दियाजाता है जब मेमोरण्डम में कमियां और खामियां होती हैं। (व्यवधान) आपने अधकचरा मेमोरण्डम दिया था, बी.एफ.सी. में भी आप लोगों ने दिया था। अब आपको मिला कम पैसा, इसके लिये सच्चाई तो बोल दें।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** अब आप मेरी बात तो सुन लो, साहब। राजेन्द्रजी, सच्चाई थोड़ी कड़वी होती है, अब आप मुझे बोलने नहीं देंगे।

मैं आपसे कह रहा हूं, एडिशनल मेमोरण्डम हमारी सरकार क्या, हर सरकार देती है। दिखता है कि यह चीज और सामने आयी है। अगर आप पता लगा लें, मुझे आप करैक्ट कर दें कि फाइनेंस कमीशन को विभिन्न प्रदेशों की सरकारों से कितने एडिशनल मेमोरण्डम मिले थे। हर देता है, हर-एक आदमी देता है, फिर कभी-कभी वे इंगित कर देते हैं कि आप इसका और सप्लीमेंट्री मेमोरण्डम बनाकर दे दीजिए, हम इस हैड में आपको पैसा और देना चाहते हैं। उसी के तहत आप सप्लीमेंट्री मेमोरण्डम देते हैं। हमको दिया था उन्होंने। वाटर प्रिजर्वेशन के लिये मुझे भी कहा जब मैंने यह कहा। जब 11वें वित्त आयोग की रिपोर्ट आयी थी, मैं पेश हुआ था वहां पर तो मुझे भी कहा था। मैंने आपको बताया । स्टेट की स्थिति बतायी, राज्य की सारी सरकारें इस वक्त, एक-दो को छोड़कर, सारी सरकारों की आर्थिक स्थिति आज बहुत बेहतर स्थिति के अन्दर है, मैं आपसे निवेदन यह कह रहा हूं। फिर यहां प्लान की बात कही गयी।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** प्लान बताइये, आन्ध्रा का बताइये।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** प्लान बताता हूं न आपको, आप क्यों चिन्ता कर रहे हैं। आन्ध्रा की कोई दिक्कत नहीं है, आन्ध्रा के पास कैश सरप्लस है। अगर मैं गलत कहूं, इस अख़बार को पढ़ लीजिए आप, अगर मैं गलत हूं तो मुझे आप

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

कह दीजिएगा। क्योंकि मुझे जितने तथ्यों का मालूम था, ऐसे विद्वान मंत्री बैठे हैं तिवाड़ीजी जैसे, कटारियाजी जैसे और राजेन्द्रजी । आप तो 1998-2003 में नहीं थे, तिवाड़ीजी। सम्माननीय कटारियाजी और वोकल राजेन्द्रजी राठौड़, एवर अलर्ट, आपका क्या है, आप तो भारत सरकार के मजे कर रहे हो। वह भी खर्च नहीं कर रहे हो आप। रोज कटारियाजी यहां से बैठकर भाषण देते थे और मेरा गला सूख जाता था जवाब देते हुए, लेकिन मानते कहां थे कटारियाजी?

**श्री अध्यक्ष:** अब सूख गया हो तो पानी पी लें आप।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** आपके हलक को गीला रखिये।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** अब प्लान के बारे में आपसे निवेदन करना चाहूंगा, प्लान बढ़ गया, प्लान बढ़ गया। कोई ऐसा राज्य नहीं है, ये प्लानिंग कमीशन के पेपर हैं मेरे पास। यह सूचना का अधिकार बड़ा बढ़िया चल गया, प्राप्त कर लिये। 2004-05 के अन्दर, अध्यक्ष महोदय, यह है Approved Plan Out-lay Statewise. सारे हिन्दुस्तान के प्रान्तों के इनक्लूडिंग यूनियन टेरेटरीज।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** प्रतिशत बता दो आप तो।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** हां, मैं बता रहा हूं। एक लाख 24 हजार के आगे कुछ फिगर्स है दशमलव .22, ये आपके 4 प्लान के हुए। एक लाख 24 हजार करोड़ के सारे स्टेट्स के प्लान एप्रूव हुए थे और इस साल करण्ट ईयर के अन्दर 149915 करोड़ के थे । कहने का मेरा अभिप्राय यह है कि लास्ट ईअर के मुकाबले 25 हजार करोड़ रुपये के एक्से प्लान प्लानिंग कमीशन के द्वारा एप्रूव किये गये हैं। यहां पर भी कहो कि हम कर रहे हैं। क्योंकि आगे आपको ध्यान है कि पिछले साल के भाषण के अन्दर वित्त मंत्रीजी ने कहा था कि मैं 25 हजार करोड़ प्लान के लिये एक्से अलाट कर रहा हूं। उसका भी श्रेय आप लें, निश्चित रूप से, क्योंकि आपके 25 हजार करोड़ से इस साल का तो और भी ज्यादा है। ये फिगर आने वाले हैं, शायद एक लाख 72 हजार करोड़ रुपया पहुंचने वाला है नैक्स्ट फाइनेंशियल ईयर का। तो यह भी एक आपका है कि हमारा प्लान आउट-ले बढ़ा है।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** आप वाले प्लान के साथ तुलना कर लें।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** 10वें प्लान को लेकर यहां पर, 10वें प्लान की आउट -ले को लेकर माननीय कटारियाजी ने, क्योंकि और तो कोई है नहीं, माननीय राठौड़ साहब हैं यहां पर, सांवरलालजी हैं नहीं, किरोड़ीलालजी विराजमान हैं,

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

इतने लोगों ने हमेशा कहा था कि हमने 27500 करोड़ का प्लान डबल कर दिया है, जो आप पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। पुरानी सरकार की इसी बात के ऊपर कोई बजट सैशन नहीं आया होगा जिसके अन्दर इन्होंने आलोचना नहीं की होगी। उसका मैंने विगतवार जवाब दिया था कि जो-जो आपने परिकल्पनाएं की थीं कि हमको ये रिसोर्सेज तो फंडिंग होंगे, वे रिसोर्सेज थे ही नहीं कभी भी। उसकी मेरे पास डिटेल नहीं है, मैं लाया भी नहीं हूं, लेकिन आप जो कह रहे हैं, अगर आप चाहेंगे तो मैं एप्रोप्रिएशन बिल के ऊपर बोलकर आपको बता दूंगा, यहां रिकार्ड के अन्दर मौजूद है कि मैंने बताया था। आपने परिकल्पना की थी कि सेण्ट्रल स्पांसर्ड स्कीम्स हैं, राज्यों को ट्रांसफर कर दी जाएंगी, और भी कई कल्पनाएं की थीं, नहीं हुईं कि हमको आई.टी. के अन्दर जो वालिंटियर डिसक्लोजर स्कीम है, इतना पैसा मिलेगा, उससे कम मिला। कई चीजें हैं।

**डा. सी.पी. जोशी:** एक्सटर्नल एडेड प्रोजेक्ट।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** हां, थैंक्यू एक्सटर्नली एडेड प्रोजेक्ट का आपको पैसा मिलेगा, वह नहीं मिला। मेरे कहने का अभिप्राय है कि जो परिकल्पना की थी, देखिये हर आदमी एनपिसेज करता है, ऊंची उड़ान भरने की कोशिश हर आदमी करता है, हर वित्त मंत्री करता है, हर सरकार करती है, लेकिन कभी-कभी अपने एस्टिमेटस के अन्दर वह चीज फैल हो जाती है। अब कैसे फैल होते हैं, मैं आपको निवेदन करुं, आप कह रहे हैं, कहां फैल होते हैं। ई.एफ.सी. की रिकमंडेशन थी 2000-01 के अन्दर ई.एफ.सी. ने एस्टिमेट्स किया था कि राजस्थान को मिलेगा 2958 करोड़ रुपया। एक फिगर था, आप को बताया, क्यों नहीं हुआ उस वक्त भी पूरा। 2958 करोड़ रुपया राज्य को मिलेगा टैक्स के पेटे। भारत सरकार ने अपना एस्टिमेट्स बनाया कि 2958 तो नहीं, 2925 का हम एस्टिमेट्स बनाते हैं। अपने बजट एस्टिमेट्स में बनाया उन्होंने, इतना देंगे। उस आधार हमको इंडीकेशन आयी, हमने उस आधार के ऊपर अपने खर्चे बांधे। और मिला कितना? 2836 करोड़ रुपया। शार्टफाल रहा।, ई.एफ.सी. की रिकमण्डेशन थी, उसके मुकाबले में तो 122 करोड़ का शार्ट फाल रहा और भारत सरकार का जो एस्टीमेट्स था उसके मुकाबले 89 करोड़ का शाट फाल रहा। 2001-02 में जो वर्स्ट ईयर था हमारे अकाल का, अकाल की विभीषिका चरम सीमा पर थी, राज्य के अन्दर उस वक्त उन्होंने एनविजेन किया फाइनेंस कमीशन ने कि 3449 करोड़ रुपया राजस्थान को दिया जाएगा। भारत सरकार

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

के वित्त मंत्रीजी ने जो बजट पेश किया उसमें उन्होंने कहा कि 3380 करोड़ रुपये दिये जाएंगे। मिला कितना? 2882, शार्ट फाल, आप गवर्नमेंट आफ इण्डिया के एस्टिमेंट मानें तो लगभग 500 करोड़ का शार्ट फाल।

आप देखो 2002-03 में..

**डा. एन.एस. गुर्जर:** 11वें फाइनेंस कमीशन और 12 फाइनेंस कमीशन ने जो रिकमंडेशन दी थी..

**श्री अध्यक्ष:** टोडारायसिंह से आने वाले माननीय सदस्य।

**डा. एन.एस. गुर्जर:** अध्यक्ष महोदय, हम जानकारी चाह रहे हैं, 11वें और 12वें वित्त आयोग ने जो सिफारिश की उसका पैसा राजस्थान सरकार को मिल गया, आप यह भी जानकारी दे दीजिए। बोलिए, कितना शार्ट फाल रहा है?

**श्री प्रद्युम्न सिंह :** अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा हूं इनके पास सरकार है, सारा रिकार्ड इनके पास है तो जवाब दे देना, कहां दिक्कत आ रही है? मेरे पास तो रिकार्ड भी नहीं है ।

**श्री अध्यक्ष:** कृपया बीच में नहीं टोके ।

**डा.किरोड़ी लाल मीणा:** माननीय सदस्य सांवरजी आ गये आप कह रहे थे, आपने पुकारा और यह आ गये ।

**श्री प्रद्युम्न सिंह :** बड़ी कृपा की आप आ गये । आपको तो तकलीफ हो रही है इतने इम्पोर्टेंट महकमे आपके पास नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय, मैं खतम कर दूंगा ज्यादा लंबा नहीं ले जाऊंगा।

फाइनेंस कमीशन ने रिकमंडेशन की कि राजस्थान को 2002-03 में 33 सौ करोड रुपया मिलेगा और मिला हमको 3063 । एसएसएफसी के मुकाबले 959 करोड का शार्टफाल । पहले ही कम कर दिया था उन्होंने और भारत सरकार के एस्टिमेट से भी 278 करोड़ रुपये कम । टोटल हमको 1648 करोड़ रुपया कम मिला फाइनेंस कमीशन की सिफारिश के बाद। उसके बाद आप कहें कि आपने प्लान साइज को पूरा नहीं किया तो आप हमारी तकलीफ समझ सकती हैं, मुझे ज्यादा कुछ नहीं कहना है । अध्यक्ष महोदय, यह मैंने राज्य के प्लान के बारे में बता दिया ।

अध्यक्ष महोदय, अब कुछ दूसरे मुद्दे हैं जिनके ऊपर मैं आपसे निवेदन

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

करना चाहूंगा । रोजगार की बात है, रोजगार के पेटे आपको ध्यान है, रिकार्ड में है, मुख्य मंत्रीजी ने अपने भाषण में कहा, कि करीब 2 लाख 78 हजार लोगों को हमने रोजगार दे दिया । मैं अगर गलत हूं तो मुझे करैक्ट कर दें, रिकार्ड में है । जब राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर यहां भाषण दे रही थीं। मैं आपको पूछना चाहूंगा, सरकार बता दे कि 2 लाख 78 हजार आपकी सरकारी नौकरियां मय सहयोगिनियों के 60-65 हजार होगी । सहयोगिनियों को सात सौ या हजार रुपये का मानदेय मिलता है । अगर इसको आप पूर्णकालिक रोजगार मानते हैं, नो प्रोब्लम। क्योंकि जब हमने पैरा टीचर्स लगाये थे, शिक्षा मंत्रीजी यहां विराजमान हैं, यहां पर इस सदन में रोजाना कहते थे कि न्यूनतम मजदूरी भी इन मास्टरों को नहीं दी जा रही है । आप भी विपक्ष में थीं यहां पर, रोज पैरा टीचर्स को लेकर इस सदन में हंगामा हुआ करता था । वे भी यहां आकर प्रदर्शन करते थे । फिर बाद में उसको 1800 रुपये किया, 2000 किया, 200 रुपये साल का इन्क्रीमेंट दिया । सहयोगिनियों की नौकरी जो आपने हजारों की संख्या में लगाई है, अगर आप उसको रोजगार मानते हो तो बडी अच्छी बात है, कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन यहां डिफरेंट बात नहीं हो सकती है । जब हमने 26 हजार पैरा टीचर्स लगाये थे तब तो आपने कहा कि इनकी तो आपने बुरी हालत कर दी । चलिए, कोई बात नहीं, बात आई गई हो गई, पुरानी बात हो गई । आप सहयोगिनियों की नौकरियों को नौकरी मान रहे हैं, मुख्य मंत्रीजी जोश में कह गईं यहां पर कि नौकरी नहीं है तो क्या है यह । हां, नौकरी है 'समरथ को नहीं दोष गोसाई', जो कह गये वह ठीक है, मानना पडेगा । फिर आपका भी सरकार के प्रति थोडा नरम रुख है ।

**श्री अध्यक्ष:** यह गलत बात है, यह आक्षेप गलत है आपका ।

**श्री प्रद्युम्न सिंह :** आप मजाक को गंभीरता से क्यों ले रही हैं? स्पीकर का तो होता ही है । हर स्पीकर का सरकार के प्रति नरम रुख रहता है और होना भी चाहिये, बिजनेस आपको पास कराना है ।

**श्री अध्यक्ष:** आपको सदन के ऊपर किसी प्रकार का आक्षेप लगाने का अधिकार नहीं है। सुबह आपने बात नहीं सुनी थी, फिर आप आक्षेप लगा रहे हैं कि आपका नरम रुख है । मेरा तो आपकी तरफ नरम रुख है ।

**श्री प्रद्युम्न सिंह :** मैं माफी चाहता हूं किस्सा खतम, आप तो राज़ी हैं।

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

मैं अध्यक्ष महोदय से माफी मांग रहा हूं आपसे तो नहीं मांग रहा। अध्यक्ष महोदय से माफी मांगने में कोई दिक्कत नहीं है, अध्यक्ष महोदय, यह इन्होने कह दिया फिर भी दो लाख लोगों को रोजगार उद्योग क्षेत्र में, कौनसा क्षेत्र है जहां दो लाख लोगों को रोजगार दिया? आपने बजट भाषण में कहा कि हम एक लाख लोगों को रोजगार देंगे। राजस्थान का हर बेकार नौजवान इस उम्मीद में था कि वसुन्धराजी की सरकार को हमने इतना बहुमत दिया है , राज आएगा हमको नौकरी मिलेगी। लेकिन नहीं । आपने कहा, एक लाख, शिक्षा मंत्रीजी , वित्त राज्य मंत्रीजी, पार्लियामेंट अफेयर्स मिनिस्टर और अन्य वरिष्ठ मंत्री बैठे हुए हैं, आपने किस जिले में कौनसे उद्योग लगाये और किस उद्योग में कौनसी नौकरी मिली, यह फिगर दे दें जिससे मालूम तो पडे नौकरी कहां मिली है । आपका बजट भाषण गया, गवर्नर के भाषण का रिप्लाई गया, उसमें राजस्थान के बेरोजगार नौजवानों ने पढा कि इतने लोगों को रोजगार मिल गया, वह ठगा हुआ महसूस कर रहा है । मालूम ही नहीं, कहां मिला है । आपने कह दिया कि हमने इतने लोगों को रोजगार दे दिया । क्योंकि जो इम्प्रेशन था वह यह था। आपको सीधा कहना चाहिये था पहले बजट भाषण में कि हमने रोजगार की बात की थी, हमने कोई नौकरियों की बात नहीं की, यह सारा इम्प्रेशन था । आपने जिलों में चुनाव की मीटिंगों में जाकर कहा कि हम आपको नौकरी देंगे, कांग्रेस की सरकार ने नौकरियां बंद कर दी हैं । आपने मास्टरों की लगा दी शिक्षा सहयोगी जिसमें भारत सरकार से पैसा मिल रहा है । कितने क्लर्क लगाये, कितने चपरासी लगाये, कितने इंजीनियर्स लगाये? हां, एक बात और कहलवा दी अधिकारियों ने वित्त मंत्रीजी से, मुख्य मंत्रीजी से, चिकित्सा विभाग में जब नौकरियों की घोषणा कर रही थी, कि कांग्रेस सरकार के वक्त इस क्षेत्र में नौकरियां नहीं दी गईं । मैं बहुत अदब से निवेदन करना चाहूंगा मुख्य मंत्रीजी से आप फिगर निकलवा लीजिए, राज आपका है, मैंने देखा था वह कागज, जल्दी में मिसप्लेज हो रहा है, होना चाहिये मेरे पास है शायद ।

**श्री अध्यक्ष:** ढूंढ लें आप ।

**श्री प्रद्युम्न सिंह :** मैं आपको पढकर दे रहा हूं सारा । दिसम्बर, 1998 में हमारी सरकार आई थी, आते ही पहली दफा ही तो 5 हजार मास्टर लगाये थे। इसी चिकित्सा क्षेत्र में मुझे ध्यान है, भर्ती निकली थी कम्पाउंडर की, नर्सेज की, एएनएम की और डाक्टर्स की । कृपया इसको करैक्ट करा लीजिए जिन्होने कहलवाया है । आप यह कह सकते थे कि हम ज्यादा देंगे, पांच वर्ष

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

में आपके यहां कम दी गई। लेकिन मुख्य मंत्री सरीखे वरिष्ठ मंत्री या वित्त मंत्री से अगर विभाग इस प्रकार की चीजे कहलवाता है तो जिन्होंने ऐसा कहलवाया है उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही होनी चाहिये। यह आपके बजट भाषण में दिया हुआ है। मेरा आपसे निवेदन है, रोजगार के क्षेत्र में आपने बजट भाषण में पढ़ा कि हम एक लाख लोगों को....

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** कितनी दी है यह बता दें?

**श्री प्रद्युम्न सिंह :** हां मैं बता देता हूं। मैं अभी आपको कागज की फोटो कापी करा कर दे देता हूं । ये मेरे पास 2001 तक के आंकडे हैं । आप सुन लो मेरी बात, मैं गलत नहीं कहूंगा, तिवाड़ीजी । मैं सरकार में था, वित्त मंत्री था, कर कुछ कागज मैंने अपने पास सहेज करके रखे हुए हैं उन्हीं में से पढ़ रहा हूं जो आपके विभाग के द्वारा दिये गये थे ।

**श्री अध्यक्ष:** ये सब कांट्रेक्ट बेसिस पर थे ।

**श्री प्रद्युम्न सिंह :** मैडम, क्या सिपाही कांट्रेक्ट बेसिस पर आते हैं? सिपाहियों की नियुक्ति तो दो दफा हुई है । 2950 तो एक हुई है, यहां गृह मंत्री जी बैठे हुए हैं, मैं माफी मांग लूंगा, कहूंगा, हुजूर, मैंने बहुत बडी गलती की है जो आपको गलत सूचना दी। और 2200 की नियुक्ति एक दफा हुई है । ये क्या कांट्रेक्ट बेसिस पर आते हैं? 5000 रैगुलर टीचर्स थर्ड ग्रेड के अपाइंट किये गये थे, क्या वे कांट्रेक्ट बेसिस में आते हैं? रेगुलर बेसिस के किये गये थे । यह सही है कि बहुत सारे पद जो थे, हमने, डिले नहीं हो जाए डाक्टर्स के इसलिए कलक्टर को अधिकार दिया था, जो आप भी कर रहे है। आप नहीं कर रहे हो क्या ? आपने तो ग्रेड ही बदल दी । आपको दिक्कत थी। आपको कम दिक्कत थी, हमको ज्यादा दिक्कत है । हमने सैक्शंड पोस्ट दी।

पिछली दफा तो आपके वक्त में भी हुआ है। पिछली दफा तो स्थिति यह थी कि पद निकले, हाई कोर्ट का मुंह देखे बिना वह रहता नहीं था। आपके वक्त में नहीं हुआ, श्रीमान? शिक्षा मंत्रीजी, आपने रूल्स अमेंड किये, आपने पीएससी को भेजा।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** एक मिनट, प्रद्युम्न सिंहजी। आपने पिछला भाषण देते हुए यहां पर कहा था, मेरे पास प्रोसीडिंग है, जब मैंने आरपीएससी से कराया तो आपने कहा कि मैं दावे के साथ कह रहा हूं यह भर्ती नहीं होगी हाई कोर्ट में उलझ जाएगी, आपका भाषण है। अब आज 600 पिटीशन समाप्त करके और जीतकर वे सारे के सारे अपाइटमेंट हो गये।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** आप बिलकुल सही कह रहे हैं, मेरा इप्रेंशन तो सही था। हाई कोर्ट ने रोक लगाई थी कि नहीं लगाई थी, तिवाड़ीजी ? वह ठीक है हाई कोर्ट के अंदर आप जीत गये। आपके पीएससी के इम्तिहान तो हाइ कोर्ट का मुंह देखते हैं। पीएससी के इम्तिहान जो आरएएस, आईपीएस के होते हैं वे तो हाइ कोर्ट में जाते हैं आज की तारीख में, उसमें स्टे आर्डर मिलते हैं रिजल्ट्स के ऊपर तो कहीं किसी के ऊपर। मेरे कहने का अभिप्राय है कि हमने पोस्ट सैंक्शन करके, आप पुराने लैटर निकलवा लीजिए, पीएससी को कम्युनिकेट किया कि आप इन-इन की भर्ती कर दीजिए। आप तो शिक्षा मंत्री जी है, सारी फाइल, तत्कालीन शिक्षा सचिव थे थानवीजी, आप उनसे पूछ ले। सैंक्शन करके भेजी, वे सारे स्टे के चक्कर में पड़े रहे, तो ऐसा कुछ नहीं था कि पुरानी सरकार ने कोई नौकरी नहीं दी और सारा आप देने की स्थिति में है।

मेरा आपसे निवेदन है कि आप सारे कागज निकलवा लीजिए, सब कानूनी उलझनों में फंसकर रह गये, ऐसा नहीं था। आपने कहा। अब आपने कह दिया कि अब नई भर्तियों पर कोई रोक नहीं है। बड़ी उम्मीद बंधी लोगों को कि नई भर्ती पर कोई रोक नहीं है। ये भर्ती कितनी हुई हैं, साहब ? मास्टर, सहयोगिनियों को छोड़कर छोटी-मोटी भर्तियां हो गई है, कहां भर्ती हो रही है? आपके कर्मचारियों की संख्या में निरंतर गिरावट आ रही है फिर आप कह रही है कि आर्थिक स्थिति में सुधार आ रहा है। जब आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया है, भारत सरकार आपको दिल खोलकर पैसा दे रही है तो फिर आप भर्ती क्यों नहीं कर रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय, आपसे सेज के बारे में एक निवेदन करना चाहूंगा, सेज स्थापित हो, कही कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि देश के अंदर सेज स्थापित करने की बाढ़-सी आ रही है और आपको सुनकर आश्चर्य होगा देश के अंदर करीब-करीब 100 से 114 सेजों को मंजूरी मिल चुकी है। टेकओवर कितनों ने किया, फुल गति के अंदर कार्यरत कितने है, कुल सात, जो मेरे पास फिगर हैं। लाखों-लाखों बीघा जमीन क्योंकि अंधी दौड़ हो रही है सेज के अंदर और होनी चाहिये कि राजस्थान कहीं पिछड़ न जाए। लोगों की फोरकास्ट यह है विदिन ए ईयर भारत आर्थिक रूप से तीसरी महाशक्ति बनने वाला है, जापान को टेकओवर कर लेगा। this is a forecast. अर्थशास्त्रियों की फोरकास्ट है, यह होना चाहिये।

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

मैं आपको अब इतना निवेदन करना चाहूंगा कि देश की आबादी बढ़ रही है सब चीज पैदा हो जाएगी भविष्य के अंदर लेकिन जमीन नहीं मिलेगी। सब चीज मिलेगी लेकिन जमीन कहीं पैदा नहीं हो सकती, इसलिए जमीन का सदुपयोग होना चाहिये। आपका एमओयू पता नहीं साइन हुआ कि नहीं, एमओयू अगर आपका साइन होता है एक बार भगवान के लिए, मेहरबानी करके, आपने तीन साल का टाइम दिया है, तीन साल में भी टेकआफ नहीं होगी, यह आप मुझसे लिखकर ले लीजिए। तीन साल में टेकआफ नहीं होने वाला है, कृपया यह देख लेना। यह प्रोविजन मत कर देना। अगर सेज की स्थापना नहीं हुई तो उसको जमीन बेचने का अधिकार होगा, यह मत कर दीजिएगा भगवान के लिए। (व्यवधान) मुझे मालूम नहीं, मैंने पढ़ा नहीं, बिना पढ़े कुछ नहीं कह सकता। यह मत कर दीजिएगा कि राज्य के इंटरेस्ट को कोई दूसरा आदमी आये, उसको सेफगार्ड करने कि कौशिश कीजिएगा, यही मेरा आपसे अनुरोध है।

एक बात और निवेदन करना चाहूंगा, आपने यह कहा कि 25 प्रतिशत विकसित भूमि हम किसानों का देंगे, बहुत खुशी की बात है। किसान को ज्यादा कीमत मिलेगी, और मिलनी चाहिये। लेकिन अध्यक्ष महोदय, जमीन अब वह किसको बेचेगा सवाल तो यह आऐगा? सेज का काम xyz कोई करें जमीन किसको बेचेगा? वह कह देगा मेरी जमीन में दूसरा आदमी आ नहीं सकता, घुस नहीं सकता। किसी की 1 बीघा, किसी की 2 बीघा, किसी की 4 बीघा जमीन, किसी की 10बीघा जमीन 25 प्रतिशत मिलेगी, तीन बीघा, चार बीघा वालों को क्या मिल रहा है? क्या फेट होगा उस जमीन का ? यह सेफगार्ड भी आप करियेगा कि मार्केट प्राइस के ऊपर जो प्रिवेल करेगी उसके ऊपर बेचने का अधिकार या तो बाहर वाले को होगा, सैकण्ड चॉइस सेज को जो कम्पनी आपरेट करेगी उनका होगा। कल को कह दिया कि यहां कोई घुसेगा नहीं, तो कौड़ियों के भाव जमीन बिक जाएगी बेचारे की। आपको देना हो तो दो, दूसरा तो आ नहीं सकता है यहां पर। यह सेफगार्ड आपको रखना चाहिये,यह मेरा निवेदन है। मैं और विगत में नहीं जाना चाहता। आप मानें बहुत अच्छी बात है, नहीं माने बड़ी अच्छी बात है, यही मेरा आपसे निवेदन था।

अध्यक्ष महोदय, दो सुझाव और देना चाहूंगा, माननीय सांवरलालजी है, एक तो वाटर हारवेस्टिंग के बारे में आपने अभियान चलाया पानी कंजरवेशन का, पानी की सुरक्षा के लिए, पानी बचाने के लिए, बहुत खुशी की

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

बात है, होना चाहिये। हमारे मुख्य मंत्री ने भी कहा था कि सबको पढ़ाओ, बिजली बचाओ। पानी बचाओ, उन्होंने भी कहा था। तब खिल्ली उडाते थे। किताबों पर लिखा था।

**श्री अध्यक्ष:** पानी बचाओ, तो पानी बरसा ही नहीं।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** मैं वही कह रहा हूं। वह तो और भी जरूरी है जो मेरा सुझाव आ रहा है, नहीं बरसा पानी तो।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** अध्यक्ष महोदय, इसलिए नहीं बरसा कि बादल आसमान में पड़े हुए थे, नीचे आये, उन्होंने देखा पानी बचाओ, उन्होंने देखा सरकारी आदेश है अगर बारिश आ जाए तो जेल में डाल देंगे तो वापस भग गये वे। (व्यवधान)

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य, इनके राज में तो बारिश ने झड़ी लगा दी है तब भी 15 हजार गांवों में अकाल पडा हुआ है।

**मोहम्मद माहिर आजाद:** ओलावृष्टि करके फसल बर्बाद कर रहे हैं। (व्यवधान)

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** मैं सिंचाई मंत्रीजी से निवेदन करना चाहूंगा, मैंने कल भी इनसे निवेदन किया था वाटर हारवेस्टिंग के लिए, एनीकट्स के लिए, क्योंकि देखिये मीडियम मेजर इर्रिगेशन प्रोजेक्ट तो आने कठिन है। जमीन का एक्वीजिशन, डूब का इलाका, बहुत बड़ी प्राबलम आपको खड़ी होने वाली है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है छोटे-छोटे एनीकट्स, कुछ जिले ऐसे हैं आप आइडेंटीफाई कर लीजिए जहां पर आराम से एनीकट्स का निर्माण हो सकता है 5 लाख, 7 लाख, 10 लाख, 15 लाख एंड माइनर इर्रिगेशन डैम्स-न कोई सब्मर्जेस आऐगी, जमीन निकलेगी, पानी निकाल देते हैं फसल के अंदर, इससे कुओ के अंदर रिचार्जिग भी बढ़ेगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इसके अंदर आप एडिशनल प्रोवीजन अगर करा सके,बजट पेश हो चुका है, एडिशनल की डिमाण्ड हमेशा आती है, अगर आप कोई एडिशनल प्रोविजन कर सकें, करौली जिला, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, आपके और भी जिले हैं बांसवाड़ा, तमाम जिले जहां पर कि बारिश ठीक है या पथरीला इलाका है, वहां पर एनीकट का निर्माण करा सकते हैं और यह आपकी बहुत बड़ी, आगे आने वाले वक्त के अंदर प्रदेश की सेवा होगी। वाटर कंजरवेशन होगा,अंडरग्राउण्ड वाटर का रिचार्जिंग बढ़ेगा, इससे बहुत बड़ा लाभ आपको होने वाला है।

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

अंत में, मैंने आपको मीटिंग में निवेदन कर दिया था वैट के बारे में। फाइनेंस बिल पर चर्चा होगी, अगर मौका मिला तो दो मिनट अपनी बात कहूंगा। एक्साइज रेवेन्यू बढाने के लिए, आपकी जो पालिसी आई है, थोड़ी त्रुटिपूर्ण है। अच्छा प्रयत्न था आपका कि बड़े ठेकेदारों को समाप्त किया जाएं, दुकानें खोली जाए अलग अलग। यही भावना शायद मूल रूप से आपकी रही होगी लेकिन रज्य में गली गली में दुकाने खुल गईं, इसकी जनता में प्रतिक्रिया गलत है, जनता ने उसको सराहा नहीं है।

तो मेरा आपसे निवेदन है कि इसके ऊपर पुनर्विचार कर लें। वैसे भी आपकी जो नयी पालिसी है दुकानों के बारे में, इसके बारे में आपको करना है। सरकार का सोच है, हमारा सोच नहीं है, It will fail, क्योंकि हरियाणा के अन्दर शराब की कीमतें बहुत कम हैं स्मगलिंग शुरू होगी। जब स्मगलिंग शुरू होगी तो किस किस्म के लोग स्मगलिंग करते हैं, एंटी सोशल एंटीमेंट्स इस किस्म का काम करेंगे, ला एंड आर्डर की प्राब्लम खड़ी होगी। इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं । धन्यवाद।

**श्री संयम लोढ़ा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, गृह मंत्री जी को आपने वक्तव्य देने के लिए निर्देश दिये थे।

**चौ. विनोद कुमार:** अध्यक्ष जी, एक हनुमानगढ़ नगरपालिका के बारे में भी स्वायत्त शासन मंत्री जी को वक्तव्य देना था।

# समिति का प्रतिवेदन

## कार्य सलाहकार समिति का प्रतिवेदन (क्र. सं. 12)

**श्री अध्यक्ष:** हां, आपके वक्तव्य के पहले आप कार्य सलाहकार समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे।

**श्री महावीर प्रसाद जैन** (सरकारी मुख्य सचेतक): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कार्य सलाहकार समिति के 12वें प्रतिवेदन का उपस्थापन करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कार्य सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 11 मार्च, 2006 को मध्याह्न पश्चात् 3.00 बजे माननीय अध्यक्ष जी के वेश्म में हुई। समिति ने निर्णय लिया है कि दिनांक 16 मार्च, 2006 से 29 मार्च, 2006 तक सदन में लिये जाने वाले कार्य का बंटवारा निम्न प्रकार से किया जाए:-

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

| | |
|---|---|
| गुरुवार, दिनांक 16 मार्च, 2006 | 1. अनुपूरक अनुदान की मांगें वर्ष 2005-06 का मुखबंद का प्रयोग किया जा कर मतदान एवं पारण।<br>2. राजस्थान विनियोग (संख्या-1) विधेयक, 2006 का पुर:स्थापन, उस पर विचार एवं पारण।<br>3. आय-व्ययक अनुमान वर्ष 2006 07 पर अग्रेत्तर वाद विवाद एवं मध्याह्न पश्चात् 5.00 बजे राज्य सरकार की ओर से उत्तर। |
| शुक्रवार, दिनांक 17 मार्च, 2006 | 1. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय (नाम परिवर्तन) विधेयक, 2006 पर विचार एवं पारण।<br>2. अनुदान की मांगों पर विचार एवं मतदान। |
| शनिवार, दिनांक 18 मार्च, 2006 एवं रविवार दिनांक 19 मार्च, 2006 | बैठक नहीं होगी। |
| 1शनिवार, दिनांक 18 मार्च, 2006 एवं रविवार दिनांक 19 मार्च, 2006 | 2बैठक नहीं होगी। |
| 3सोमवार, दिनांक 20 मार्च, 2006 | 1. राजस्थान संपत्ति विवरण निवारण विधेयक, 2006 पर विचार एवं पारण।<br>2. अनुदान की मांगों पर विचार एवं मतदान। |

(श्री महावीर प्रसाद जैन)

| | |
|---|---|
| मंगलवार, दिनांक 21 मार्च, 2006, बुधवार, दिनांक 22 मार्च, 2006, गुरुवार, दिनांक 23 मार्च, 2006, शुक्रवार, दिनांक 24 मार्च, 2006 एवं शनिवार,दिनांक 25 मार्च, 2006 | अनुदान की मांगों पर विचार एवं मतदान |
| 1रविवार, दिनांक 26 मार्च, 2006 | 2बैठक नहीं होगी। |
| 3सोमवार, दिनांक 27 मार्च, 2006 | 1. अनुदान की मांगों पर विचार एवं मतदान।<br>2. आय व्ययक अनुमान वर्ष 2006-07 से संबंधित अनुदान की शेष मांगें मुखबंद का प्रयोग किया जाकर दिनांक 27 मार्च, 2006 को मतदान हेतु प्रस्तुत की जाएंगी। |
| मंगलवार, दिनांक 28 मार्च, 2006 | राजस्थान विनियोग (संख्या 2) विधेयक, 2006 पर विचार एवं पारण। |
| बुधवार, दिनांक 29 मार्च, 2006 | राजस्थान वित्त विधेयक, 2006 पर विचार एवं पारण। |

कार्य सलाहकार समिति ने आय-व्ययक अनुमान 2006-07 से संबंधित अनुमान की मांगों पर विचार हेतु अधिक से अधिक माननीय सदस्यों को अवसर मिले, इस हेतु सदन की बैठक रात्रि 10.00 बजे तक चले इसकी अनुशंसा की है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन कार्य सलाहकार समिति के 12वें प्रतिवेदन पर अपनी सहमति प्रकट करता है।

**श्री अध्यक्ष:** प्रश्न यह है कि यह सदन कार्य सलाहकार समिति के 12वें प्रतिवेदन पर अपनी सहमति प्रकट करता है?

**(स्वीकृत)**

दिनांक 11 मार्च, 2006 को सदन द्वारा प्रतिवेदन पर सहमति प्रदान की गई।

गृह मंत्री जी वक्तव दें।

# शासकीय वक्तव्य

## लिखित परीक्षा पास अभ्यर्थियों के शारीरिक परीक्षण से पुलिस (दूरसंचार) निदेशालय का इन्कार

**श्री गुलाब चन्द कटारिया** (गृह मंत्री): अध्यक्ष महोदय, राजस्थान पुलिस में 3564 कांस्टेबल (सामान्य), कांस्टेबल (आपरेटर), कांस्टेबल (बैंड), कांस्टेबल (घुड़सवार) की भर्ती राजस्थान पुलिस अधीनस्थ सेवा के नियम, 1989 के अन्तर्गत करने हेतु विज्ञप्ति दिनांक 14.6.05 को जारी कर आवेदन पत्र 15.7.05 तक मांगे गये। इसमें 25 कांस्टेबल (आपरेटर) पुलिस दूरसंचार के भर्ती हेतु सम्मिलित थे। पुलिस दूरसंचार में उक्त भर्ती हेतु शैक्षणिक योग्यता विज्ञप्ति के बिन्दु संख्या 12 – हायर सैकेण्डरी विज्ञान मय भौतिक शास्त्र एवं गणित अथवा समकक्ष लिखी गयी। समकक्ष का तात्पर्य है राजस्थान के अलावा अन्य प्रान्तों में समकक्ष शैक्षणिक योग्यता होने पर भी आवेदन पत्र को सही माना जाएगा। पुलिस दूरसंचार की उक्त भर्ती हेतु कुल 3940 आवेदन पत्र दूरसंचार के प्राप्त हुए। समीक्षा उपरांत 2426 आवेदन पत्र ही सही पाये गये जिनको लिखित परीक्षा हेतु बुलाया गया। विज्ञप्ति के बिन्दु संख्या 16(1) में लिखा गया है कि आवेदन पत्र के साथ कोई भी प्रमाण-पत्र संलग्न नहीं करना है। आवेदन पत्र का प्रारूप राजस्थान के मुख्य अखबारों में प्रकाशित किया गया था। आवेदन पत्र के कालम संख्या 10 में शैक्षणिक योग्यता हेतु संकाय कोड के लिए कालम में केवल संकाय कोड हेतु निर्धारित क्रमांक ही भरना था। 426 कांस्टेबलों की अतिरिक्त स्वीकृति राज्य सरकार से मिलने पर 15 कांस्टेबल (आपरेटर) के पद बढ़ाये जाकर कुल 40 कांस्टेबल (आपरेटर) के पद किये गये । उक्त पदों हेतु 16.10.05 को अन्य सभी कांस्टेबल परीक्षा के साथ ही कांस्टेबल (आपरेटर) की परीक्षा ली गई। सभी तरह के आवेदन के फार्म का प्रारूप एक ही छपा हुआ था। जिला बाड़मेर में इस भर्ती के आवेदन पत्रों की जांच के दौरान पाया गया कि 126 आवेदन पत्रों में एक से लेकर 4 तक आवेदन पत्र एक ही नाम, पद, शैक्षणिक योग्यता से पाये गये। इससे एक ही सही व्यक्ति की परीक्षा 2-3-4 आवेदक देने में समर्थ होंगे और उत्तीर्ण होने वाले आवेदक अग्रिम परीक्षा में सम्मिलित हो जाएंगे। इस प्रवृत्ति को रोकने के उद्देश्य से पुलिस मुख्यालय ने 17.9.05 को सभी जिला यूनिटों को आदेश जारी किये कि परीक्षार्थियों को प्रवेश पत्र के साथ जारी निर्देशों में भी आवेदन की सही पहचान करने के लिए सैकेण्डरी परीक्षा

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

उत्तीर्ण करने की मूल अंकतालिका मय जन्म दिनांक के मांगी गई। लिखित परीक्षा के उपरांत पुलिस दूरसंचार में कुल चालीस रिक्त पदों हेतु विज्ञप्ति अनुसार पांच गुना सफल आवेदकों (दौ सौ) को मैरिट के आधार पर दिनांक 9.3.06 को शारीरिक परीक्षा एवं साक्षात्कार हेतु पुलिस दूरसंचार कार्यालय में बुलाया गया। विज्ञप्ति में वर्णित किया गया कि साक्षात्कार के समय सभी मूल प्रमाण-पत्रों को उसी बोर्ड द्वारा अवश्य देखा जाएगा। बोर्ड द्वारा आवेदकों की शैक्षणिक योग्यता देखने पर कुल 19 आवेदक हायर सैकेण्डरी भौतिक शास्त्र और बायलोजी के थे एवं दो आवेदक कला संकाय वर्ग के पाये गये। क्योंकि उक्त आवेदक गणित विषय में हायर सैकेण्डरी उत्तीर्ण नहीं थे इसलिए उनके आवेदन पत्र निरस्त कर साक्षात्कार नहीं लिया गया।

**श्री अध्यक्षः** कहिये क्या कहना है?

**श्री संयम लोढ़ा** (सिरोही) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि आपने लिखित परीक्षा तो उनकी ले ली और फिर आपने शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए। उनको बुला लिया उनका दूसरी जगह भी एग्जाम था, आपकी नौकरी की आस में वो एग्जाम भी छोड़कर आ गये, तो गलती की कोई जिम्मेदारी है कि नहीं है?

**श्री गुलाब चन्द कटारियाः** माननीय सदस्य, जब हमने अपना विज्ञापन जारी किया तो हमने यह बात बहुत स्पष्ट रूप से लिखी थी कि इसकी जो योग्यता है वो भौतिक शास्त्र और गणित अनिवार्य है। एक सैकिंड, मेरी बात आप सुन लें, उसमें बाद में आपको कोई संदेह हो तो मैं कोशिश करूंगा कि आपकी हर बात को ठीक तरह से बता सकूं ।

विज्ञप्ति में यह स्पष्ट था कि दूरसंचार के लिए मिनिमम 10 प्लस 2 या कोई पुरानी हायर सैकेण्डरी जो थी वो हो या कोई पास के कोई ऐसे राज्य हैं समकक्ष इसकी योग्यता कि जो हमारे इसमें आती है, पर उसमें गणित अनिवार्य था। उनको हमने केवल कोड नं. भराया कि अगर उसका आर्ट्स विषय है तो कोड नं. 1 डालें, अगर उसका विज्ञान विषय है तो कोड नं. 2 डाले पर जिसके गणित है वो ही इसमें एलीजिबल है, बिना गणित के वो एलीजिबल ही नहीं है। हम लोगों ने कोई प्रमाण-पत्र फार्म के साथ नहीं लगवाये, क्योंकि 3 लाख 38 हजार फार्म आये थे और इतने फार्म के साथ इतने डाक्यूमेंट लगाना उस बच्चे के लिए भी और विभाग के लिए भी उसको छांटना बहुत असंभव था।

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

हमने परीक्षा के लिए जो निर्देश जारी किये थे उस समय ही हमने इसके पूरा का पूरा लिखित परीक्षा के लिए, उस समय ही हमने बता दिया था। जब फार्म भरे थे तो जैसे मैं गुलाब चन्द हुक्मी चन्द तो, केवल बाड़मेर में ही गुलाब चन्द हुक्मी चन्द, वही क्वालिफिकेशन, वही जन्म तिथि, उसने चार फार्म उसी में डाल दिये। ऐसे उस एक फार्म की जगह चार आदमियों की परीक्षा देने की सम्भावना थी। इसलिए हमने जब निर्देश जारी किया उस समय कहा कि नहीं, मिनिमम डाक्यूमेंट जो भी उसका एक्चुअल है, जिसमें कम से कम हायर सैकण्डरी, सैकण्डरी जो भी पास है, उसकी ओरिजिनल अंक तालिका ले आए, तो एक ही आदमी के पास रहेगा, दूसरी जगह तो वह ट्रांसफर हो नहीं सकता। वह अपनी टेबल पर रखकर जब परीक्षा देगा तो चैक करेंगे कि कोई दूसरा लड़का उसके नाम से परीक्षा देकर न चला जाए, कि रिजल्ट पास तो कोई दूसरा हो जाए और जब इण्टरव्यू का समय आए तो कोई दूसरा आ जाए इसलिए हमने बिलकुल आदेश जारी करके कर दिया था कि ही यानि हमने यह परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु परीक्षार्थी अपने साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड द्वारा जारी सैकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करने की मूल अंक तालिका मय जन्म दिनांक, फोटो साथ लेकर आएंगे। यह परीक्षा में बैठने के लिए था। लेकिन जिस दिन वह साक्षात्कार के लिए आएगा उस दिन के लिए हमने उसको कहा था कि जितने भी आपके डाक्यूमेंट्स हैं, जिस समय आपकी भर्ती होगी उस दिन इण्टरव्यू के पहले आपके सारे डाक्यूमेंट्स हम देखेंगे और वे डाक्यूमेंट अगर आपके सही होंगे तो ही आप परीक्षा दे सकेंगे। इसमें आपने 15.6 को साक्षात्कार के लिए लिखा, साक्षात्कार के समय सभी मूल प्रमाण-पत्रों को बोर्ड द्वारा अनिवार्यतः देखा जाएगा तथा चयनित विद्यार्थी के प्रमाण-पत्रों पर अवलोकन सूचक चिन्ह बोर्ड सचिव द्वारा सूक्ष्म हस्ताक्षर के रूप में किया जाएगा । उसके जो डाक्यूमेंट हमें चाहिए, उस एलिजिबिलिटी के लिए, अर्थात् उसमें गणित है, भौतिक शास्त्र है कि नहीं, वह उस क्वालिफिकेशन को फुल-फिल करता है या नहीं, ये जिस दिन साक्षात्कार होगा, उस दिन उसके देखे जाएंगे। हमने यह बहुत साफ डाल दिया। अब इन 19 बच्चों में से दो बच्चे तो ऐसे थे जिनका आर्टस विषय था, तो वह आर्ट्स विषय के इसके लिए एलीजिबल था ही नहीं। 17 बालक ऐसे थे जिनकी बायालोजी थी, गणित विषय उनका नहीं था, तो डक्यूमेंट चैक करने पर उनको बता दिया, कि इसके लिए जब फार्म भरा था, हमने स्पष्ट उसमें क्वालिफिकेशन लिख दी थी। आपने

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

डाक्यूमेंट नहीं लगाया, आपको कालम नम्बर टू डालने के लिए कहा तो आपने कालम नम्बर टू डाल दिया और हमने आपको परीक्षा में सम्मिलित कर लिया। परीक्षा में रोकने के लिए हमने सोचा कि एक जगह कोई दूसरा लड़का आकर परीक्षा नहीं दे दे इसलिए उसके डाक्यूमेंट्स और उसका फोटो मंगवाया था ताकि यह पहचान हो सके कि जो लड़का परीक्षा दे रहा है यही वास्तव में है, ओरिजिनल सर्टिफिकेट नहीं हो, और इन परीक्षाओं में जब 3 लाख 80 हजार लोग बैठे तो परीक्षा कोई और दूसरा दे जाएगा, रिटिन में कोई दूसरा पास हो जाएगा, फिजिकल में कोई मुस्टंडा आकर पास होकर पुलिस में भर्ती हो जाएगा तो एक तरह से हमारे साथ न्याय नहीं हो पाएगा। इसलिए हमने हर जगह कोशिश की कि कहीं पर हमारी भर्ती में कोई कहीं कमी खामी नहीं रहे हर कदम पर। यह उस बालक को अच्छी तरह, से यह जब विज्ञापन हमने जारी किया इसमें ये सारी चीजें हैं, हमने प्रत्येक बिन्दु में बिलकुल स्पष्ट कर दिया, मैं सोचता हूं कि इतना बड़ा विज्ञापन जारी किया कांस्टेबल की भर्ती और यह सब एक ही दिन थी। एक ही परीक्षा का जो पेपर था, उसी के आधार पर थी। लेकिन केवल बैंड और बाकी में आठवीं पास का सर्टिफिकेट मांगा था और बाकी कांस्टेबल की भर्ती के लिए दसवीं का मांगा। विशेषकर दूरसंचार गणित के लिए क्योंकि सारा कम्प्यूटराइज काम है, टैक्निकल काम है, इसको करने के लिए गणित विषय उसके लिए अनिवार्य होता है, तभी जाकर वह ठीक प्रकार से काम कर पाएगा। यह क्वालिफिकेशन नहीं थी। यह उसको पता था, फिर भी उसने अपने कालम 2 में भरा, जबकि वह भरने के लिए एलिजिबल ही नहीं था। जो वह हमने सूचना दी उसके बाद भी अगर रहा तो मैं सोचता हूं कि विभाग की मंशा ऐसी कहीं कोई नहीं थी। भरने वाले ने ही यह सोचकर कि इतने लाखों लोगों में कैसे भी निकल जाएगी गाड़ी। वह निकली नहीं, इसके लिए तो विभाग के अपने सारे कर्मचारियों और अधिकारियों को धन्यवाद देता हूं कि 3 लाख 38 हजार लोग इस परीक्षा में बैठने के बाद भी एक भी गलती की कहीं से भी कोई शिकायत नहीं आयी। इतनी व्यवस्था करने का प्रयास किया। किसी बच्चे के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का कोई प्रश्न ही नहीं हो सकता। परीक्षा और सारा इण्टरव्यू होने के बाद आप जानते हैं एक चपरासी की भर्ती होती है उसमें आप और मैं कितने परेशान हो जाते हैं सिफारिशों से। लेकिन सिफारिश की इसमें कोई गुंजाइश ही नहीं, केवल 10 नम्बर का इण्टरव्यू है, बाकी तो सारा का सारा बिलकुल सिस्टमेटिक है, पचास नम्बर की

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

जो परीक्षा हुई, उसकी बिलकुल सीज कर दिया, उसके नम्बर ही हमने इण्टरव्यू के स्थान पर नहीं भेजे। फिजिकल परीक्षा जैसे ही क्लीयर की 20 में से 20 नम्बर उसे मिले बाकी उसके सर्टिफिकेट के 20 में से नम्बर थे, केवल 10 नम्बर जो भी इण्टरव्यू लेने वाला है वह कम और ज्यादा अगर दे तो इन 10 नम्बर में से चार भी दे सकता है और सात भी दे सकता है, इससे ज्यादा कोई गुंजाइश नहीं थी। इसके कारण से बिलकुल परफैक्ट जिसको हम कहते हैं भर्ती, वह वास्तव में करने की कोशिश की है। किसी के साथ कोई अनजस्टिस करने का कोई विचार करने का सवाल ही नहीं है।

**श्री अध्यक्षः** ठीक है।

**श्री संयम लोढ़ाः** माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से दो बात निवेदन करना चाहता हूं। एक तो आपने जो यह विज्ञापन जारी किया उसमें ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्षः** इतना पूरा स्पष्ट कर दिया, अब क्या चाहते हैं आप ? ...(व्यवधान)

**श्री संयम लोढ़ाः** माननीय अध्यक्ष महोदय, दो मिनट, आप बात सुन लीजिए। हायर सैकण्डरी विज्ञान मय भौतिक शास्त्र एवं गणित अथवा समकक्ष, इसमें आपने कहीं पर यह क्लेरीफाई नहीं किया कि दूसरे बोर्ड की डिग्री को आप उस रूप में गिन रहे हो? दूसरा, मैं निवेदन यह करना चाहता हूं कि जब उन्होंने आवेदन कर दिया, आपने परीक्षा शुल्क किस बात का लिया फिर? किस बात का आपने परीक्षा शुल्क लिया और किस बात की आपने परीक्षा दिलवाई? आप पहले ही यह व्यवस्था कर देते कि इस तरह से फार्म सब्मिट नहीं हो। दूसरी जो आपने वेकेंसी निकाली है, वहां पर बच्चे एपीयर होते, आपने उस अवसर से भी उनको वंचित कर दिया। 19 बच्चों को नौकरी प्राप्त करने के अधिकार से वंचित करने का काम आपने किया है। हम आपसे फरियाद माननीय अध्यक्ष महोदय माध्यम से कर रहे हैं कि उन बच्चों को न्याय दिलवाने के लिए आप कोई कार्यवाही की घोषणा करें इसमें। ... (व्यवधान)

**डा. सी.पी. जोशीः** माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्रीजी, प्रक्रिया आपकी बिलकुल ट्रांसपरेंट है, उसमें प्रश्न नहीं है। आप तो यह बता दें कि हायर सैकण्डरी फिजिक्स और मैथेमेटिक्स के समकक्ष कौनसी डिग्री है ? बात यह बता दीजिए कि आप किसको समकक्ष डिग्री मानते हैं? ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्षः** हां, बस यह बता दो आप ।

**श्री गुलाब चन्द कटारियाः** अपन जब कभी भी कोई भर्ती करते हैं तो समकक्ष शब्द लिखते हैं। जैसे हमारे यहां पर बी.ए. तीन साल का कोर्स है, किसी स्टेट में हो सकता है कि पुराना इण्टरमीडिएट प्लस टू प्लस करके बी.ए. होगा, समकक्ष का मतलब उसके बराबर की उसकी क्वालिफिकेशन । समकक्ष का मतलब कोई सब्जैक्ट नहीं है। मतलब अगर समकक्ष नहीं लिखना होता तो हम उसके साथ बायालोजी साथ ही लिख देते।

**डा. सी.पी. जोशीः** मैं इसलिए कह रहा हूं आपको खाली कि गणित सब्जैक्ट ऐसा सब्जैक्ट है जो सब्जैक्ट आर्ट्स वाला भी ले सकता है, कोई जरूरी नहीं है कि वह साइंस वाला ही गणित ले। जब हम 12वीं को क्वालिफिकेशन मान रहे हैं और थ्रू आउट इंडिया टेन प्लस टू स्कीम लागू है तो इसके समकक्ष कोई चीज नहीं हो सकती। हमको यह बात क्लीयर कर देनी चाहिए कि हायर सैकण्डरी फिजिक्स एण्ड मैथेमेटिक्स ही एलिजिबल है और समकक्ष शब्द नहीं लगाते हम तो कोई तकलीफ नहीं होती। समकक्ष शब्द हमने लगाया है तो हमारा मतलब यह है कि टैन प्लस टू जो सब्जैक्ट है, क्योंकि साइंस बायालोजी भी अलाउ है । चार काम्बिनेशन है, आज की डेट में टेन प्लस टू प्लस फिजिक्स, केमिस्ट्री, मेथेमेटिक्स और बायोलॉजी। कुछ इंजीनियरिंग कालेज में हिन्दुस्तान में बायालोजी प्री-रिक्विजिट है मैथ्स के साथ में। मैं खाली यह निवेदन करना चाहता हूं कि प्रक्रिया सारी ट्रांसपरेंट है इसमें कोई शिकायत नहीं है, बस क्वालिफिकेशन में समकक्ष लिखने से बच्चों ने फार्म भर दिया, यह समकक्ष नहीं लगाते, उसे मालूम था कि 12वीं के साथ मेरे फिजिक्स, मैथेमेटिक्स है, वह फार्म ही नहीं भरता तो समकक्ष के पीछे विभाग की मंशा क्या है यह स्पष्ट कर दें तो बात खतम हुई।

**श्री गुलाब चन्द कटारियाः** ऐसा है, मैं सोचता हूं कि जो विज्ञापन हमारा है उसमें पुलिस दूरसंचार, कांस्टेबल, ऑपरेटर, हायर सैकण्डरी विज्ञान यही लिखकर समकक्ष लिख सकते थे लेकिन यह नहीं लिखा। हायर सैकण्डरी विज्ञान मय भौतिक शास्त्र एवं गणित, भौतिक शास्त्र एवं गणित अथवा समकक्ष ... (व्यवधान)

**डा. सी.पी.जोशीः** हां, समकक्ष कोई हो ही नहीं सकता।, माननीय अध्यक्ष महोदय, इसका समकक्ष नहीं हो सकता, यही तो बात थी। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** समकक्ष ने ही तो गड़बड़ कर दी सारी बात। ... (व्यवधान)

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** यहां पर मतलब यह है कि पहले जो अपने कोर्स चलता था वह 11वीं तक का चलता था। टैन प्लस टू वाला और यह जो कोर्स है, अपने यहां पर कई जगह बच्चा सैकण्डरी करने के बाद प्री-यूनिवर्सिटी करके भी वह परीक्षा देता है तो प्री-यूनिवर्सिटी जिसने पास की है वह इसके इक्विलेंट होता है।

**डा. सी.पी.जोशी:** मैं माफी चाहता हूं । आप जो बातें कह रहे हैं वह प्री-यूनिवर्सिटी टैन प्लस टू के बाद सब खतम हो चुकी है। उसकी एज के कारण कोई ऐसा आदमी जिसने प्री-यूनिवर्सिटी की है वह एलिजिबल ही नहीं है। ... (व्यवधान)

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** नहीं, अपने यहां पर ... (व्यवधान)

**डा. सी.पी.जोशी:** क्योंकि एज ए राइडर, नहीं, हिन्दुस्तान में, कटारिया साहब, पूरे राजस्थान में टैन प्लस टू लागू होने के बाद सामान्यत: आपने देखा होगा ... (व्यवधान)

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** जितने भी विज्ञापन जारी होते हैं उसमें अपन समकक्ष शब्द डालते हैं।

**डा. सी.पी.जोशी:** ठीक है वह।

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** मान लीजिए, किसी जगह इसी प्रकार की क्वालिफिकेशन वाला कोई कोर्स चल रहा है तो ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** इसी समकक्ष ने तो गड़बड़ कर दिया न काम । ... (व्यवधान)

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** जो 12वीं अपने भौतिक शास्त्र और गणित के बराबर हो तो उसको इसमें समाहित किया जा सकता है। उसको बाहर नहीं किया जाए। इसके कारण से दूसरे किसी भी स्टेट में कहीं भी ऐसी कोई परीक्षा जो उसके बराबर की रखता हो। लेकिन सब्जैक्ट स्पष्ट लिखा है कि उसमें भौतिक शास्त्र और गणित होनी चाहिए, यह उसकी थी। पुराने कोर्स से भी अगर जैसे कोई मिलिट्री के लोग आते हैं, वह मिलिट्री के लोग रिटायर होने के बाद भी हमारी कांस्टेबल की भर्ती के लिए योग्यता रखते हैं तो उसमें भी उस समय उनके समकक्ष का मतलब अपने हायर सैकण्डरी थी। 11वीं क्लास जो आप और मैं करके आये तो इस प्रकार समकक्ष शब्द जो भाव था, अगर यही होता कि विज्ञान और समकक्ष तब तो केवल कोई बात आ जाती। लेकिन

विज्ञान लिखने के बाद भी हमने भौतिक शास्त्र और गणित यह लिखा, इसका मतलब विज्ञान में कौनसा है, वह भौतिक शास्त्र और गणित वाला है, बायलोजी वाला नहीं है, यह उसमें स्पष्ट है।

**डा. सी.पी. जोशी:** आपका बहुत परफैक्ट सिस्टम है। अच्छा होता कि समकक्ष शब्द नहीं आता। बाकी आपका इसमें कोई इश्यू नहीं है। ... (व्यवधान)

**(समय: 17.00 बजे)**

**श्री संयम लोढ़ा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, समकक्ष लिखने की वजह से ही यह गफलत पैदा हुई है। मैं आपके माध्यम से उन 19 बच्चों के लिये सरकार से न्याय की फरियाद करता हूं। वे प्रतिभावान बच्चे है, आपकी परीक्षा पास करके आये हैं, आपने छांटा हैं उनको राजस्थान के गृह मंत्री इस रूप में अगर करेंगे तो यह घोर अन्याय होगा। माननीय मंत्री महोदय, आपने समकक्ष क्यों लिखा फिर? ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** श्री नन्दलाल बंशीवाल। सामान्य वाद-विवाद पर चर्चा।

**डा. सी.पी. जोशी:** ऐसा सम्भव हो सके, इनकी इलिजिबिलिटी के आधार पर आप कोई ठीक समझते हों तो इसको कंसीडर किया जाना चाहिये। दूरसंचार के लिये नहीं करें आप, लेकिन कांस्टेबल के ठीक समझते हों तो सोचा जाना चाहिये।

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी** (स्वायत्त शासन मंत्री): मुझे जवाब देना है। ... (व्यवधान)

**श्री गुलाब चन्द कटारिया** : कांस्टेबल के विषय पर आपने जो बिन्दु बताये, अगर उन्होंने परीक्षा पास कर ली, जो कांस्टेबल की परीक्षा पास है, पास करना, उसकी मिनिमम क्वालिफिकेशन है, तो बैठकर विचार करेंगे कि इन लोगों का क्या कर सकते हैं। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** मैंने नन्दलाल बंशीवाल का नाम पुकार लिया। (व्यवधान) आपको इनके बाद। ...(व्यवधान) आप स्थिति स्पष्ट करें। ...(व्यवधान)

**श्री संयम लोढ़ा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, आप इनको दूसरी जगह कंसीडर करें। ...(व्यवधान)

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** अगर वास्तव में इनकी मदद करना सम्भव होगा हमारे लिये तो हम जरूर करेंगे, क्योंकि उनकी मिनिमम क्वालिफिकेशन

सैकण्डरी तो है ही, सैकण्डरी वे पास हुए हैं। अगर दूरसंचार में नहीं हो सकते तो इस विषय पर हम बैठकर विचार करेंगे और कोई रास्ता मिलेगा तो मदद करेंगे। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** वह तो समय चला गया, अब क्या कर दोगे? क्या कर देंगे? वह तो हो गयी उनकी परीक्षा, तो अब क्या कर देंगे? ...(व्यवधान)

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** अभी चल रही है। अभी हमारे कई जिलों के इंटरव्यू होने बाकी हैं जिनकी परीक्षाएं हो रही हैं, रिजल्ट आ रहा है। किसी की 15 तारीख है, किसी की 18 तारीख है, अलग-अलग हैं फिजिकल। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** आपका कहने का मतलब यह है कि आप यह विज्ञान, भौतिक शास्त्र और गणित को इसके अलावा ...(व्यवधान) ...

**श्री गुलाब चन्द कटारिया:** अभी नहीं, मैंने यह कहा कि बैठकर हम अपने अधिकारियों को कहेंगे । कांस्टेबल में हमारी मिनिमम क्वालिफिकेशन सैकण्डरी थी, उसमें न गणित थी, न आर्टस, उसमें कुछ भी नहीं था। ...(व्यवधान) अगर उसमें कहीं होगा तो बैठकर हम लोग विचार करेंगे। क्या हम इसको समाहित कर सकते हैं या नहीं कर सकते, यह उस पर विचार करेंगे। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** स्थिति स्पष्ट करें।

## हनुमानगढ़ नगरपालिका में प्रस्तुत अविश्वास प्रस्ताव से उत्पन्न स्थिति

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी** (नगरीय विकास मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, हनुमानगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य ने जो हनुमानगढ़ नगर पालिका में अविश्वास प्रस्ताव आया है उसके बारे में स्थिति स्पष्ट करने के लिये कहा है। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** अविश्वास का प्रस्ताव नहीं लाये, उन्होंने कहा है न वहां चेयरमैन है, न वाइस चेयरमैन है, दोनों ही हट गये हैं अविश्वास प्रस्ताव के जरिये, और कोई दूसरा वहां पर न आपने चुनाव करवाया है, न किसी और को मनोनीत किया है। यह प्रश्न है, यह स्थिति स्पष्ट करनी है आपको। ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** वह पूरी स्थिति स्पष्ट कर रहा हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, नगरपालिका हनुमानगढ़ में 12.1.2006 को अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया था और 13.1.2006 को उपाध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया था। अविश्वास प्रस्ताव एक तरह से चुनावी होता है, ट्रांसपेरेंसी रखने के लिये इस चुनाव में, जिसका चुनाव अधिकारी जिला कलक्टर होता है। हमारे विभाग से इस प्रकार के चुनाव नहीं होते। यह बात सही है कि उन्होंने चुनाव करवा दिये। उसके बाद दो जो को-ऑप्टेड मैम्बर हैं, उन्होंने कुछ शिकायतें कीं चुनाव से संबंधित। कलक्टर ने उसके बारे में मार्ग-निर्देशन विभाग से पूछा, स्वायत्त शासन विभाग से पूछा, पर चूंकि कलक्टर खुद ही इसमें निर्णय करने के लिये सक्षम हैं, इसलिए विभाग ने कलक्टर को कहा कि आप खुद ही सक्षम हैं, आप खुद निर्णय करें। चुनाव कराने का अधिकार या अविश्वास प्रस्ताव पास कराने या पास नहीं कराने का प्रस्ताव का अधिकार आपको है। फिर भी मैं, माननीय अध्यक्ष महोदय, निवेदन करना चाहूंगा, इस बीच वर्तमान में वहां पर कुछ कर्मचारियों के वेतन संबंधी दिक्कत आई कि उनका वेतन कौन चुकाएगा, क्योंकि प्रक्रिया ऐसी है कि अध्यक्ष और यूओ दोनों ही चैक पर साइन करते हैं, तब जाकर चैक से पैसे निकलते हैं और कर्मचारियों की तनख्वाह चुक सकती है। हमने इसका बीच में से रास्ता निकाला, चूंकि अधिशासी अधिकारी को 25-25 हजार तक के पॉवर हैं, हमने 25-25 हजार के चैक काटकर उन सभी कर्मचारियों को, और भी वहां पर जिनका लेन-देन बाकी था, उनकी व्यवस्था कर दी है। यह बात सही है कि अभी जो अविश्वास प्रस्ताव आया उसमें कोई निर्णय कलक्टर ने नहीं किया है। मैं आपके माध्यम से कलक्टर को आदेश दे रहा हूं कि इस पूरे प्रकरण को मैरिट के आधार पर तीन दिन में निपटाकर मुझे सूचित करेंगे। इस प्रकार का मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को आश्वासन देना चाहता हूं, सदन को अवगत कराना चाहता हूं।

**श्री अध्यक्ष:** जनवरी के अंदर अविश्वास का प्रस्ताव पास हुआ, मार्च का महीना चल रहा है, आपने इतने दिन तक क्या किया?

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें विभाग कहीं बीच में नहीं आता है। इसमें सरकार कहीं बीच में नहीं आती। यह जो भी प्रोसिडिंग या कार्यवाही करनी थी, सब कलक्टर को करनी थी। ...(व्यवधान)

**चौ.विनोद कुमार** (हनुमानगढ़): माननीय अध्यक्षजी, मैं दो मिनट में कुछ कहना चाहता हूं कि वहां बीजेपी का बोर्ड है । ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** कलक्टर ने किन्हीं कारणों से नहीं की और उल्टा विभाग से यह पूछा कि आप मार्ग-निर्देश दें। तो हमने कलक्टर को कहा है कि आप खुद सक्षम हैं, आप इस पर जो भी मैरिट के आधार पर निर्णय और जो भी निस्तारण कर सकते हैं, करें। आपने जब यह सवाल उठाया इसके बाद मैंने जिला कलक्टर से भी ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** क्या सरकार इसे अविश्वास का प्रस्ताव नहीं मान रही है? यही माना जाए न कि अविश्वास का प्रस्ताव पास नहीं हुआ उनके खिलाफ यही माना जाए? ...(व्यवधान)

**चौ.विनोद कुमार:** ऐसी बात नहीं है। मैं आपको दो मिनट में अपनी बात कहना चाहूंगा। ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** अविश्वास प्रस्ताव पर अभी निर्णय नहीं हुआ है। ...(व्यवधान)

**चौ.विनोद कुमार:** ऐसा है, अध्यक्षजी, इनकी नीयत ठीक नहीं है। जिस दिन 12 तारीख को चुनाव हुआ है उसी दिन पांच पार्षदों को इन्होंने सस्पैण्ड किया है, उसके बावजूद भी अविश्वास प्रस्ताव पारित हो गया और जो निर्वाचन अधिकारी थे उन्होंने स्थान रिक्त घोषित कर दिया। उसके बावजूद आज तक उनको वहां कोई तनख्वाह नहीं मिली है। जब यहां स्थगन प्रस्ताव लगाया है इन्होंने कुछ पैसे दिये, जनवरी तक के दिये हैं, फरवरी के पैसे आज भी नहीं दिये हैं। लोग जुलूस निकाल रहे हैं, हड़ताल कर रहे हैं। सफाई की व्यवस्था ठप्प हो गयी है, विकास का काम ठप्प हो गया है और हालात बद से बदतर हो रहे हैं। इनकी मंशा मुझे कुछ अच्छी नहीं लग रही है। मेरे ख्याल में दो-ढाई महीने हो गये, अब तक चुनाव हो जाने चाहिये थे। मेरी आपसे प्रार्थना है कि चुनाव डिक्लेयर करें आप। जल्दी से जल्दी चुनाव हो जाएं। ...(व्यवधान) ...

**श्री अध्यक्ष:** मंत्रीजी, मेरी बात सुनिये। अविश्वास का प्रस्ताव जब पेश होता है तो कलक्टर किसी न किसी अधिकारी को रिटर्निंग आफिसर नियुक्त करता है, तो वह कलक्टर ने किया होगा। कलक्टर ने किया होगा न ? ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** इसमें कर दिया। मैंने पढ़ दिया, हां, साहब। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** फिर उसके बाद रिपोर्ट आई होगी कि अविश्वास का प्रस्ताव पास हो गया, आई होगी रिपोर्ट ? ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** कोई नहीं आई। रिपोर्ट ही नहीं आई। ...(व्यवधान)

**श्री प्रद्युम्न सिंह** (राजाखेड़ा): अध्यक्ष महोदय, यह तो लोकतंत्र का मखौल है। ...(व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** पांच-पांच पार्षदों को तो निलम्बित कर दिया। ...(व्यवधान)

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** उसके बाद पास हो गया। यह तो लोकतंत्र का मखौल हो रहा है।...(व्यवधान)

**चौ. विनोद कुमार:** कलक्टर ने उनको बहाल भी कर दिया, जो पार्षद हैं। हमने कलक्टर साहब से बात की। उन्होंने भी कहा, मेरे लेवल की बात नहीं है। आप ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** पाच पार्षदों के सस्पेंशन का जहां तक सवाल है ...(व्यवधान) ... उनकी गंभीर शिकायतें थीं। ...(व्यवधान)

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** अविश्वास प्रस्ताव पास हो जाए और हम मजूंर नहीं करेंगे, वाह भाई वाह। ...(व्यवधान) ...

**श्री अध्यक्ष:** क्या सरकार ने उसके बाद किसी को निलम्बित किया है? ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हनुमानगढ़ के पांच पार्षदों के खिलाफ गंभीर शिकायतें थीं इसलिये उनको निलम्बित किया है। निलम्बित पहली बार नहीं हुए हैं, ये भी करते आये हैं, हम भी कर रहे हैं। ...(व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** अविश्वास प्रस्ताव के बाद ...(व्यवधान)

**चौ.विनोद कुमार:** जब वह मीटिंग में आ गये, मीटिंग में आने के बाद उनको नोटिस दिये हैं कि आपको निलम्बित कर दिया गया है, आप मीटिंग से बाहर चले जाओ। ...(व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** एक साथ उन्होंने ऐसा क्या अपराध किया है? एक आदमी तो गड़बड़ कर सकता है, पांच पार्षदों ने एक साथ क्या किया?

**चौ.विनोद कुमार:** वे पार्षद जब हाई कोर्ट में गये तो उनको बहाल कर दिया गया है। उन पार्षदों को अब बहाल कर दिया। अध्यक्षजी, बहाल भी कर दिया उनको। ...(व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** यह तो फिर प्रजातंत्र ही खतम हो गया। फिर

(श्री हेमाराम चौधरी)

प्रजातंत्र रहा ही नहीं। राठौड़ साहब, आप बहुत उछलते हो, हर बार उछलते हो, यह प्रजातंत्र है क्या ? आप वहां पर राठौड़ी कायम करना चाहते हो। क्या आप राठौड़ी लागू करना चाहते हो? हम राठौड़ी लागू नहीं होने देंगे। ...(व्यवधान)

**श्री जुबेर खान** (रामगढ़): अध्यक्ष महोदय, उन पांच पार्षदों को हाई कोर्ट ने बहाल कर दिया तो मंत्रीजी यह बता दें कि अविश्वास प्रस्ताव की मीटिंग का प्रस्ताव क्या पास हुआ? गिरा या पास हुआ, वह बताइये ना? ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** माननीय अध्यक्ष महोदय, इसका जवाब निर्वाचन अधिकारी दे सकता है, कलक्टर है। ...(व्यवधान)

**चौ.विनोद कुमार:** अध्यक्षजी, कलक्टर साहब कह रहे हैं मेरे लेवल की कोई बात नहीं है। ...(व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** अध्यक्ष महोदय, यहां कलक्टर जवाब देने आएंगे या मंत्री जवाब देंगे? यह कह रहे हैं, इसका जवाब कलक्टर दे सकते हैं। ...(व्यवधान)

**चौ.विनोद कुमार:** कुछ नहीं, कलक्टर ने जवाब दे दिया। ...(व्यवधान)

**श्री जुबेर खान:** अध्यक्ष महोदय, आपने इनको सुबह निर्देशित किया अभी तक आपने जवाब ही नहीं लिया कलक्टर साहब से? फिर आप खड़े कैसे हो गये जवाब देने के लिये? जब आपके पास सूचना ही नहीं आई तो आप जवाब कैसे दे रहे हैं? ...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** यह तो बता रहा हूं कलक्टर निर्वाचन अधिकारी हैं। ...(व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** आप कह रहे हो कलक्टर जवाब देगा।...(व्यवधान)

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** कलक्टर ही पूरी चुनाव प्रक्रिया करवाता है। ...(व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** माननीय अध्यक्ष महोदय, यह गंभीर मामला है और गंभीर मामलों की इस तरह से लीपापोती की जा रही है। ...(व्यवधान)

**श्री रामनारायण मीणा:** आप कृपा करके सदन में बोल रहे हैं। यदि

(श्री रामनारायण मीणा)

अधिकारी आपको इन्फार्मेशन नहीं देते हैं, इतने दिनों बाद नहीं आती है आपके पास और सरकार कहती है हमें उसका पता नहीं है, राजस्थान विधान सभा के इस आनरेबल सदन में गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार कर रहे हो आप सदन के सामने। यह सदन की गरिमा के खिलाफ है। आप सदन की तौहीन क्यों करना चाहते हो, माननीय मंत्री महोदय, कृपा करके आप जवाब दीजिए? ढंग से जवाब दीजिए जिस हिसाब से क्वेश्चन पूछा।

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** यह काम कलक्टर का है, मेरे विभाग का क्या जिम्मा है इसमें।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** अध्यक्ष महोदय, एक मिनट।

**श्री अध्यक्ष:** हां, फर्माएं।

**श्री प्रद्युम्न सिंह:** अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा हूं, यह तो लोकतंत्र का गला घोटने वाली बात हो गयी। आप स्वयं आसन पर विराजमान हैं, आप इतनी पुरानी सदस्य हैं इस सदन की, कभी ऐसा हुआ है? जीवन में नहीं हुआ कि नो-कांफिडेंस मोशन के बाद पांच-पांच आदमियों को दो-दो महीने बीत जाएं। कलक्टर को यह कि रिपोर्ट मत भेजना, उसकी क्या हिम्मत है? ऐसा तो आज दिन तक कभी नहीं हुआ।

अध्यक्ष महोदय, मंत्रीजी के पास पूरी सूचना नहीं है, फिर हम जब यहां अपनी बात बारबार कहेंगे तब आप नाराज होंगी हम से, आप हमें बोलने नहीं देंगी।

**श्री अध्यक्ष:** सुनिये। जब आपको स्थिति स्पष्ट करने के बारे में कह दिया था तो आपको सारी इन्फार्मेशन मंगा लेनी चाहिए और मंगाने के बाद में स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** मैं तो स्थिति स्पष्ट कर रहा हूं, साहब। बिलकुल, कहीं कोई बात छिपा नहीं रहा हूं। फरवरी तक का तो उनका सब का पेमेंट हो गया कर्मचारियों, का किसी प्रकार का कर्मचारियों का बाकी नहीं है। कलक्टर को निर्देशित कर दिया है...(व्यवधान) तीन दिन में इसका मैरिट जो भी है...

**श्री अध्यक्ष:** वन एट ए टाइम, एक समय में एक ही माननीय सदस्य बोलें, आप दोनों बैठ जाएं, मंत्रीजी को बोलने दें। आप बैठें न। नावां से आने वाले माननीय सदस्य, आप विराजें। आप बोलिये, मंत्रीजी।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी** (शिक्षा मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मामला बहुत गम्भीर है और जिला कलक्टर को इसमें तुरन्त कार्यवाही भी करनी चाहिए थी, रिपोर्ट भी देनी चाहिए थी। मैं राज्य सरकार की तरफ से आपको यह आश्वस्त कर सकता हूं कि तीन दिन में इस समस्या का हम समाधान कर देंगे। कर देंगे समाधान इसका।

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** एक मिनट, अध्यक्ष महोदय।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** वो यही चाहते हैं।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** तीन दिन में इस समस्या का समाधान कर देंगे। जो उचित कार्यवाही है, सारी कार्यवाही करा देंगे।

**श्री राजेन्द्र राठौड़:** कानून सम्मत सारी कार्यवाही करेंगे।

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** कानून सम्मत सब कार्यवाही हो जाएगी।

**श्री अध्यक्ष:** चुनाव की तारीख तय होगी, कोई एक दिन में कर देंगे क्या चुनाव? चुनाव की तारीख तय होगी, टाइम दिया जाएगा ऐसे एकदम ही थोड़ी हो जाएगा?

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** जो भी कानून सम्मत, विधि सम्मत काम है वह तीन दिन में करके, अध्यक्ष महोदय, आपको सूचित कर देंगे। तीन दिन में, खैर, वो सूचित कर देंगे। इस बात को यहीं समाप्त करें।

**श्री प्रताप सिंह सिंघवी:** कह दिया, साहब, बात हो गयी।

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** एक मिनट, अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से स्वायत्त शासन मंत्रीजी से यह पूछना चाहता हूं...

**श्री अध्यक्ष:** कह दिया न उन्होंने सब, अब मंत्रीजी ने बता दिया।

**डा.बुलाकीदास कल्ला:** 12 जनवरी को अविश्वास का प्रस्ताव पारित होने के बाद पत्रावली आपके पास लम्बित है, कलक्टर आपसे दिशा-निर्देश चाहते हैं, आपने क्या दिशा-निर्देश दिये अब तक? इस देरी के लिए आप जिम्मेदार हो सीधे तौर पर।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** राज्य सरकार को जो भी दिशा-निर्देश देना है, कलक्टर को राज्य सरकार दिशा-निर्देश भी देगी और सारा काम करेगी, तीन दिन में इस काम को करेंगे।

**श्री अध्यक्ष:** ठीक है।

**श्री अशोक बैरवा 'खण्डार':** मंत्री महोदय, यह बताओ कि दो महीने तक जिस अधिकारी ने कार्यवाही नहीं की, उसके खिलाफ आप क्या कार्यवाही करेंगे?

**श्री अध्यक्ष:** स्थान ग्रहण करें।

**श्रीमती ममता शर्मा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, दिशा-निर्देश तो पूरी रिपोर्ट नहीं आने के दिये जाते हैं कि तुम बोलो ही मत।

**श्री अशोक बैरवा 'खण्डार':** दो महीने तक उस विभाग के अधिकारी का और सम्बन्धित अधिकारी का कोई जवाब नहीं आए, उसके लिए क्या कार्यवाही करेंगे?

**श्री अध्यक्ष:** जब उन्होंने आश्वस्त कर दिया, सरकार ने आश्वस्त कर दिया तीन दिन के अन्दर-अन्दर वे इस बात से सदन को अवगत कराएंगे कि आगे क्या कार्यवाही कर रहे हैं, तीन दिन में सब कर लेंगे वो। आप उन्हें तीन दिन का समय तो दीजिए। कल छुट्टी आ गयी है...(व्यवधान)

**श्री हेमाराम चौधरी:** यह तो प्रजातंत्र का गला घोटना चाहते हैं।

**श्री अध्यक्ष:** तो तीन दिन का समय मांगा है उन्होंने। ...(व्यवधान) हां, बस ठीक है।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** सारी कार्यवाही करेंगे। रामनारायणजी, बैठो। ...(व्यवधान)

**श्री रिछपाल सिंह मिर्धा:** मंत्रीजी ने कहा इन्होंने किया। इन्होंने किया। आप भी यही करेंगे? फिर आप में और इनमें क्य फर्क हुआ?

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** करके बता देंगे आपको।

**श्री घनश्याम तिवाड़ी:** जो कानून और विधि सम्मत होगा, तीन दिन में पूर्ण करके बता देंगे।

**श्री रिछपाल सिंह मिर्धा:** नहीं, किया तो इन्होंने भी था। हमारे पार्षद यह लेकर भाग गये थे कांग्रेस के शासन में।(व्यवधान) उन्होंने किया, आप ही करोगे तो फिर क्या फर्क है दोनों में?

**डा.बुलाकीदास कल्ला:** तीन दिन में क्या होता है? दो महीने से अविश्वास का प्रस्ताव आया हुआ पड़ा है और आप कहते हैं हम तीन दिन में कर देंगे। तत्काल आप उसमें नये चुनाव करवाएं और अध्यक्ष को घर बैठाइये। आप अपनी पार्टी के लोगों को संरक्षण दे रहे हैं। ...(व्यवधान)

**श्री रामनारायण मीणा:** अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक निवेदेन करना चाहता हूं, मेरे कोटा जिले में तीन हजार आदमी..., आपकी इजाजत से।

**श्री अध्यक्ष:** कहां हनुमानगढ़ कहां कोटा, वो उत्तर में वो दक्षिण में, आप बैठो। अपना स्थान ग्रहण करो। श्री नन्दलाल बंशीवाल।

**श्री रामनारायण मीणा:** अध्यक्ष महोदय, मैं पाइंट ऑफ इन्फार्मेशन पर निवेदन करना चाहता हूं।

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** अध्यक्ष महोदय, सात बजे तक चलता है, माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं आज।

**श्री अध्यक्ष:** श्री नन्दलाल बंशीवाल।

**श्री रामनारायण मीणा:** माननीय मुख्य सचेतक महोदय, कोटा जिले में जालमपुरा के सामने तीन हजार किसान...

**श्री अध्यक्ष:** अंकित नहीं करें।

**श्री रामनारायण मीणा:** ×××

## आय-व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अध्यक्ष महोदय, हमारी यशस्वी और ओजस्वी मुख्य मंत्री ने जो 2006-07 का बजट पेश किया है उसका समर्थन करने के लिए मैं यहां अपने विचार व्यक्त कर रहा हूं।

**श्री रामनारायण मीणा:** ×××

**श्री महावीर प्रसाद जैन:** कांग्रेस का कुछ नहीं है, आपस का ही है, बैठो। अभी, उप नेता महोदय, बोलने दो।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अध्यक्ष महोदय, यह सदन और सदन के सभी माननीय सदस्य अकाल पर अपनी चिंता व्यक्त कर रहे हैं।

**श्री रामनारायण मीणा:** ×××

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अब बैठ जाओ, मेरा नम्बर आ गया, बैठ जाओ। कहां कोटा और कहां पर बजट है, कहां पर क्या हो रहा है?

**श्री रामनारायण मीणा:** ×××

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अब सुनलो न आप। हम भी यही कह रहे हैं, हम भी अकाल की बात कर रहे हैं।

**श्रीमती ममता शर्मा:** मुआवजा जो मांगने जा रहे हैं उनको डंडे मार रहे हैं। मामला किसानों का है आपके बजट का मामला नहीं है। बहुत गम्भीर विषय है।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** हम भी अकाल की बात कर रहे हैं।

**श्रीमती ममता शर्मा:** तीन हजार किसान जो मुआवजा मांगने जा रहे हैं उन पर मुकदमे दर्ज किये जा रहे हैं और उनको डंडा मारा जा रहा है।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** हम भी वो ही...

**श्रीमती ममता शर्मा:** आप बजट पर बोलना चाह रहे हैं, वह पाइंट ऑफ इन्फार्मेशन का मामला था।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अलाऊ किया नहीं अध्यक्षजी ने।

**श्री अध्यक्ष:** आपका हो गया, बस, आप विराजिये अब।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अच्छा, हो गया न आपका। हो गया।

**श्री रामनारायण मीणा:** हमारा तो यही निवेदन है।

**श्री अध्यक्ष:** हो गया निवेदन आपका।

**श्री रामनारायण मीणा:** सरकार इस मामले पर ध्यान दे और वहां इन्फार्मेशन दे कि लोगों की मार-पिटाई नहीं करे, उनके साथ जोर-जबरदस्ती नहीं करे। राइट मेन कैनाल टूटने से तीन हजार रुपये बीघा का मुआवजा सरकार ने दिया है, उन किसानों को भी तीन हजार रुपये बीघे का मुआवजा दे। और नहीं तो जिस भी अधिकारी ने दिया है उसकी जांच करे। तीन हजार एक तरफ दे रहे हो, एक तरफ आप 400 रुपये भी देने में लोगों की पिटाई कर रहे हो। हमारा तो इतना ही कहना है, इस सरकार के ध्यान में लाना है, सरकार अपनी जिम्मेदारी समझे और उनको परेशान नहीं करे।

**श्री अध्यक्ष:** बस, ठीक है, हो गया आपका।

**श्री रामनारायण मीणा:** और सरकार उनके हितों को देखे।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अध्यक्ष महोदय, इस सदन के सभी माननीय सदस्य बड़ी गम्भीरता से अकाल के ऊपर चर्चा कर रहे हैं कि बारिश हो गयी, ओलावृष्टि हो गयी, अकाल पड़ गया। यह गम्भीर बात है। बजट पर बोल रहा हूं, मैं बजट पर ही हूं, आप इन्टरवीन नहीं करें। ...(व्यवधान) आप कोई मेरे हैडमास्टर लग रहे हो जो मेरे से पूछोगे?

**श्री अध्यक्ष:** आप इनकी बातों का जवाब नहीं दें, आप तो बोलें।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** यह मेरे हैडमास्टर लग रहे हैं क्या? ...(व्यवधान)

**श्री रामप्रताप कासनिया:** 27 हजार ग्यारह सौ तीन रुपया।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** आप कोटा की चिंता करो।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे विपक्ष के माननीय सदस्यों ने बजट भाषण की कड़े शब्दों में आलोचना की है और यह कहा है कि माननीय मुख्य

(श्री नन्दलाल बंशीवाल)

मंत्रीजी ने इस बजट में यह कमी रख दी, इस बजट में यह कमी रख दी। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस बजट के अन्दर माननीय मुख्य मंत्रीजी ने महिला सशक्तीकरण के लिए, महिला दिवस के दिन महिलाओं का विशेष रूप से ध्यान रखते हुए उनके लिए योजनाएं चालू करने की घोषणा की है। मैं विपक्ष के माननीय सदस्यों से पूछना चाहता हूं कि क्या आप महिलाओं का सम्मान और इज्जत करना नहीं जानते हो? आप नहीं करते हो क्या? ... (व्यवधान)

**श्री रामनारायण मीणा:** आप मुझ से पूछ रहे हैं इसलिए जवाब दे रहा हूं। इसीलिए आपके सदस्य के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी हुआ। (व्यवधान)

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** मैं बता रहा हूं, बता रहा हूं।

**श्री अध्यक्ष:** आप स्थान ग्रहण करें। ...(व्यवधान)

**श्री रामनारायण मीणा:** यह तो हमारी भलमनसाहत है कि हम ऐसे मामले नहीं उठा रहे। एक मंत्री के खिलाफ जारी हुआ है, आपके मंत्री फर्जी सर्टिफिकेट से पकड़े गये। (व्यवधान) यदि कोई ईमानदार सरकार होती तो... (व्यवधान)

**(समय: 17.18 बजे)**

**(श्री रामनारायण विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदासीन)**

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** आपके राज में तन्दूर काण्ड हुआ। ... (व्यवधान) आपने एक महिला को जिंदा जला दिया, काट-काट कर तन्दूर में जला दिया। तन्दूर काण्ड हुआ आपका, बोलो, ममताजी, बोलो।

**श्री रामनारायण मीणा:** वह आपके मिलने वाले थे।

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** जेसिका लाल हत्याकाण्ड हुआ, वह आपके राज में हुआ कि नहीं हुआ, यह बताओ मेरे को?

**श्री जयराम जाटव:** उपाध्यक्ष महोदय, जब बहस पर माननीय सदस्य बोल रहे हैं तो प्रतिपक्ष के सदस्यों को शांत रहना चाहिए। ...(व्यवधान)

**श्री रामनारायण मीणा:** यह मुझ से पूछ रहे थे, मैंने जवाब दिया है। इस मंत्रिमण्डल के आधे सदस्य इस लायक नहीं हैं कि उनको मंत्री रखा जाए।

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य।

**श्री रामनारायण मीणा:** मैं चैलेंज के साथ कहता हूं, आधे सदस्यों के खिलाफ मुकदमे हैं। किसी के खिलाफ फौजदारी...(व्यवधान)...कोई बलात्कारी है...(व्यवधान) मैं राजेन्द्रजी के अलावा कह रहा हूं, मैं राजेन्द्रजी के लिए नहीं कह रहा।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** उपाध्यक्ष महोदय, एस.टी., एस.सी. के लिए हमारे विपक्षी सदस्य, (व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य, किस बात पर कह रहे हैं?

**श्री रामनारायण मीणा:** बाकी आधे सदस्य हैं, एक को छोड़ दो जो कि घनश्यामजी के पास बैठे हैं। कृपा करके सुधारो, इनको सुधारो। शिड्यूल्ड कास्ट के लोगों को नौकरी थोड़े ही दे रहे हैं यह।

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** आप सुनो तो सही, आप शिड्यूल्ड कास्ट की चिंता मत करो। हम उधर बैठे थे...

**डा.जालम सिंह रावलोत:** माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इतने वरिष्ठ सदस्य हैं, बीच में टोकाटाकी कर रहे हैं, यह ठीक नहीं है। नैनवां से आने वाले माननीय सदस्य, बार-बार बीच में उठ रहे हैं, यह अच्छी बात नहीं है।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** हम यही बोला करते थे और आप सुनो। शिड्यूल्ड कास्ट की बात सुनना चाहते हो, शिड्यूल्ड कास्ट का आपने कभी ध्यान नहीं रखा। उपाध्यक्ष महोदय, हम उधर बैठे थे, मैं विपक्ष में था। मैं निर्दलीय विधायक था, कांग्रेस के लोग उधर बैठा करते थे, उपाध्यक्ष महोदय, आप भी हमारे साथ उधर थे । हम बात किया करते थे, हम कहते थे कि आप एस.सी.एस.टी. का ध्यान करो, नहीं तो आपकी हालत खराब होने वाली है। आपने एस.सी. एस.टी. का ध्यान नहीं रखा। आपका क्या हश्र हुआ? 54 में 44 एस.सी. एस.टी. के विधायक हमारी पार्टी के साथ, हमारे साथ बैठे हुए हैं । अब भी आप एस.सी. की बात करते हैं कि एस.सी. के लिए हमने कुछ नहीं किया। हमारी मुख्य मंत्रीजी ने जितने भी एस.सी. के बैकलाग थे उनको पूरा करने की व्यवस्था कर दी है और करीब-करीब सारा बैकलाग एस.सी. का पूरा कर दिया है। (व्यवधान)

**श्री रामनारायण मीणा:** जात पूछकर मंदिरों में दर्शन करने देते थे, इसी को करा दो ठीक।

**प्रो. बीरू सिंह राठौड़:** राज्य सभा का सदस्य नहीं बनाया।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** मैं आगे आ रहा हूं। माननीय जुबेर खानजी यहां बैठे हैं, यह चिन्ता कर रहे थे कि माननीय वसुन्धराजी ने 200 घंटे की हवाई यात्राएं कर लीं, मैं पूछना चाहता हूं कि दो साल में हमने 200 घंटे की उड़ान की है, आपके शासन के अन्दर आपके मुख्य मंत्री अशोक गहलोतजी ने 900 घंटे की उड़ान की थी। उसका अगर हिसाब लगाएं, हम पांच साल के अन्दर अगर 100 घंटे प्रति वर्ष के हिसाब से उड़ रहे हैं तो हम 500 घंटे उड़ पाएंगे । आपने 400 घंटे अतिरिक्त उड़ानें कहां कीं, इसका भी हिसाब हम पूछना चाहते हैं आप से ...(व्यवधान) आप कहते हो, हमारे मुख्य मंत्रीजी अकाल राहत कार्यों के अन्दर उड़ाने भरते थे..(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य, माननीय सदस्य..

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** क्या आप हवाई जहाजों से अकाल राहत कार्यों का जायजा लिया करते थे क्या? हवाई जहाजों से अकाल राहत कार्यों का जायजा लिया जाता है क्या? मैं पूछना चाहता हूं आपसे, हैलीकोप्टरों से ...(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य, माननीय सदस्य बंशीवालजी, आप उधर मत बात कीजिए, आप इधर बात कीजिए।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** माननीय जबुरे खानजी बड़ी चिन्ता व्यक्त कर रहे थे ..

**श्री उपाध्यक्ष:** आप काहे के लिए बार-बार उनसे ....

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** कि मुख्य मंत्रीजी ने 200 घंटे की उड़ानें उड़ लीं, आपके मुख्य मंत्री ने जब 900 घंटे की उड़ानें उड़ीं तब आपने ध्यान नहीं दिया कि राज्य व्यय गलत इस्तेमाल किया जा रहा है । आप कह रहे हो कि मुख्य मंत्रीजी ने अपने आवास के अन्दर इतना रुपया खर्च कर दिया, सचिवालय के अन्दर इतना रुपया लगा दिया। मैं आपसे पूछना चाहता हूं सचिवालय किसी की निजी प्रापर्टी है क्या ? यह 8- सिविल लाइन है वह किसी की निजी प्रापर्टी है क्या ? आज हम सत्ता में हैं, कल दुबारा सत्ता में आएंगे, यह बात नहीं है कि तीसरी दफा भी आएंगे कि नहीं आएंगे, दुबारा तो पक्का आएंगे। मैं कहता हूं कि दुबारा आएंगे तो दस साल का तो हमारा कब्जा है। पांच साल बाद अगर आप प्रयास करो, अच्छे-अच्छे काम करो, अच्छे जिसकी मुझे उम्मीद नहीं लगती कि आप अच्छे काम करोगे । अगर अच्छे काम किये होते, 156 से 56 पर नहीं टिकते। आप अपनी दशा देखिए, आप चिंतन मंथन कीजिए।

(श्री नन्दलाल बंशीवाल)

आप कहते हैं बिजली नहीं मिलती है, उपाध्यक्ष महोदय, बिजली के लिए पहले दिन से जिस दिन से सत्र चालू हुआ पहले दिन से ये चिल्लाने लग गये कि सरकार बिजली नहीं दे रही, बिजली नहीं दे रही, हमने 1700 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया। आपने ठीक है 1700 मेगावाट का उत्पादन किया, हमने दो साल में उसको 1300 मेगावाट का अतिरिक्त उत्पादन करके तीन हजार मेगावाट किया। आपने पांच साल में 1700 किया, हमने दो साल में 1300, यानि तीन हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन करके हमने किसानों को बिजली दी है, हमने पढ़ने वाले बच्चों के लिए बिजली की व्यवस्था की है। आप कहते हैं बिजली नहीं देते। पहले दिन से आपने मुद्दा बना लिया, हम भी विपक्ष में बैठे थे, हमने भी देखा था, भैरोंसिंहजी यहां प्रतिपक्ष के नेता थे, मैं निर्दलीय यहां पर था, मैंने देखा कि दो साल तक आपसे कुछ नहीं पूछा। आप यहां पर कुछ भी कहते थे हम लोग बैठकर चुपचाप वहां सुना करते थे, पर आपकी सुनने की क्षमता ही नहीं है, आपमें बर्दाश्त करने का माद्दा ही नहीं है। आपने पहले दिन से पुकारना शुरू कर दिया कि बिजली नहीं है, बिजली नहीं है, पानी नहीं है पानी नहीं है । आपने क्या हाल कर रखा था पानी का? आपने क्या हाल कर रखा था बिजली का?

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सम्वत् 2059 के अन्दर अकाल पड़ा था उसके अन्दर राजग की सरकार थी दिल्ली के अन्दर, यहां पर कांग्रेस की सरकार थी। यहां पर जब अकाल पड़ा गहलोत साहब ने बड़ी विनम्रता से पूछा, मांगा कि साहब अकाल पड़ा है, कुछ केन्द्र सरकार सहायता करे। मैं बताना चाहूंगा उस समय बत्तीस पाइंट कुछ लाख मीट्रिक टन गेहूं अटल बिहारीजी वाजपेयी की सरकार ने यहां पर दिया था सम्वत् 2059 के अकाल के अन्दर गेहूं। बोलो, दिया था कि नहीं दिया था? कोई है क्या आपका पुराना माननीय सदस्य, मुझे सब नये-नये नजर आ रहे हैं। कोई उस टाइम नहीं था मौजूद, ममताजी मौजूद थीं, अशोकजी मौजूद थे। तीन जने हैं इनमें से, बाकी सब...

**श्रीमती ममता शर्मा:** माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह बजट पर बोल रहे हैं या पूर्व सरकार पर बोल रहे हैं, पहले तो मैं इनसे यह पूछना चाहती हूं?

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** मैं बजट पर ही बोल रहा हूं।

**श्रीमती ममता शर्मा:** आप बजट पर बोल रहे हो या पुरानी सरकार पर बोल रहे हो?

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** मैं बजट पर ही बोल रहा हूं।

**श्री रामनारायण मीणा:** उपाध्यक्ष महोदय, मैं माफी चाहता हूं । एक बात मैं सदन को बताना चाहता हूं आपको अशोक गहलोत, मुख्य मंत्री बेटे की तरह प्यार करते थे, सारे काम करते थे कि नहीं करते थे ? फिर आप उनकी खिलाफत क्यों कर रहे हो?...(व्यवधान)

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** कबड्डी में काकाजी नहीं हुआ करते।

**श्रीमती राजकुमारी शर्मा:** हमारी मुख्य मंत्रीजी भी तो आपको बेटों से ज्यादा प्यार करती हैं ।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** बेटे की तरह प्यार करते थे और भाई की तरह प्यार करते थे।

**श्री मदन राठौड़:** यह भावनाओं में बहने की कोशिश मत करो ।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** उपाध्यक्ष महोदय, 968 करोड़ रुपया नकद उस टाइम इनको दिया था। आज ये चिल्ला रहे हैं कि अकाल का प्रबंधन आपने सही नहीं किया, अकाल पड़ा हुआ है ।

**श्री रघुवीर सिंह मीणा:** आपने खुद कहा 32 दिया था, 32 क्या दिया था?

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** 32.05 लाख मीट्रिक टन गेहूं दिया था, 968 लाख रुपए नकद दिए थे ।

**श्री जुबेर खान:** नंदलालजी, क्विंटल में बताओ ताकि समझ में आए। मीट्रिक टन में कोई समझ में हमारे आ नहीं रहा, क्विंटल में बताओ।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** कैलकुलेटर नहीं है मेरे पास, नहीं तो मैं अभी बता देता आपको। (व्यवधान) दोनों मिलाकर, उपाध्यक्ष महोदय, 3200 करोड़ रुपया हो गया। अब उसका क्या परिणाम हुआ? उस समय सारे गोदाम भर गये, रखने की जगह नहीं रही। फिर कांग्रेसी अपने घरों में उठाकर ले गये और उन्होंने गेहूं की चोरी कर ली। अब कह रहे हैं हमारे को कि अकाल का प्रबंधन सही नहीं कर रहे, हमारे को गेहूं नहीं दे रहे, आज हम गेहूं मांग रहे हैं । उपाध्यक्ष महोदय, आज सम्वत् 2062 का अकाल पड़ा हुआ है, यू.पी.ए. की सरकार दिल्ली के अन्दर है, हम उनसे कह रहे हैं अकाल घोषित हमारे राजस्थान में हो चुका है, कई जिले घोषित हो चुके हैं ।

**श्री रघुवीर सिंह मीणा:** अभी उदयपुर में गये थे छापे मारे वहां, कौन कौन दलाल थे, गेहूं का कब्जा करने वाले?...(व्यवधान) उन्होंने चिट्ठी लिखी...

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य, माननीय सदस्य ।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** 168 मुकदमे दर्ज हुए हैं और उसमें अधिकांश कांग्रेस के लोग हैं । माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक निवेदन करना चाहूंगा, सी.पी. जोशीजी भी चले गये, कल्लाजी भी चले गये, ममताजी मौजूद हैं, अशोकजी मौजूद हैं और रघुवीरजी मीणा भी मौजूद हैं, पुराने वाले, और उससे पुराना तो कोई मुझे दिख नहीं रहा है । इनकी कथनी और करनी में अन्तर बताता हूं। यह हमारी सरकार को दोष दे रहे हैं कि बजट में यह कमी रख दी, बजट में वो कमी रख दी, बजट में वो कम कर दिया। हमने जो काम किया है, आपको पचास साल मौका दिया है इस प्रदेश की जनता ने । आपने कभी जनता का ध्यान नहीं किया। आपने हमेशा अपने वोटों की चिन्ता की। आपने हमेशा एस.सी. और एस.टी. को अपना वोट बैंक माना है । आपने एफ डी आर माना है एस.सी. और एस.टी. के वोटों को । आपकी एफ डी आर खिसक गयी है। मैं आपको बता रहा हूं, 54 में से 44 हम लेकर बैठे हैं, और भी इसके अन्दर इजाफा होगा, कमी नहीं आएगी। मैं एक बात पूछना चाहता हूं कांग्रेस के भाइयों से, ये कह रहे हैं बजट, मैं बजट पर बोल रहा हूं, इनकी कथनी और करनी में अन्तर बता रहा हूं। इनको आलोचना करनी है हमेशा आलोचना करेंगे, आलोचना करने के अन्दर ये माहिर हो गये हैं । पहले कहते थे विपक्षी बड़ी अच्छी तरह से आलोचना करते हैं, मगर मैं इसको गलत कहता हूं, विपक्षी आलोचना हम नहीं करते बी जे पी वालों पर आरोप लगाया करते थे, अब मैं यह कहता हूं कि कांग्रेस के लोग को अच्छे ढंग से आलोचना करना इनको आ गया है, अच्छी बात है ये विपक्ष में जरा लम्बा बैठेंगे इसलिए इनको आलोचना आने लग गयी है।

मैं पूछना चाहता हूं, सी पी जोशीजी चले गये और कल्लाजी भी यहां से चले गये, कि 1989 के अन्दर पूर्व प्रधान मंत्रीजी भारत के राजीव गांधीजी अपनी पत्नी सोनियाजी के साथ, प्रियंका वडेरा उनकी बच्ची, राहुल गांधीजी के साथ रणथम्भौर आये थे उनके साथ एक मात्र व्यक्ति कौन आया था, अमिताभ बच्चनजी उनके पारिवारिक मित्र थे। आपने तम्बू में बम्बू गाड़कर टाइगर सरिस्का रणथम्भौर में देख लिया। आपने तम्बू में बम्बू गाड़कर टाइगर देख लिए रणथम्भौर में। देखे कि नहीं देखे? ...(व्यवधान) आपको मालूम है। आज ऐसा क्या हो गया, उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनसे पूछना चाहता हूं, कि जो इनके पारिवारिक मित्र थे, सोनिया गांधी के इशारे पर अमिताभ बच्चन की पत्नी जया बच्चन को राज्य सभा से बाहर करवा दिया आपने ।

**श्री जुबेर खान:** उपाध्यक्ष महोदय, इस बजट में न तो अमिताभ बच्चनजी का कोई लेना देना है सोनियाजी का कोई लेना देना है। यह गलत परम्परा मत डालिए। कि जो बात करने की है वही करें। अगर इस तरह के मुद्दे उखाड़ेंगे तो हमारे पास भी बहुत हैं मुद्दे उखाड़ने के लिए। रिलेवेंट क्या है इस बात में?

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** आपको रोक कौन रहा है?

**श्री जुबेर खान:** इस बात का क्या रिलेवेंट है कि ...(व्यवधान) 1984 में कौन आया था रणथम्भौर?

**श्री अशोक बैरवा (खण्डार):** तम्बू बम्बू की क्या बात कर रहे हैं आप ?

**डा. किरोड़ी लाल मीणा:** मामला बजट का है। रणथम्भौर में बजट नहीं दिया मनमोहन सिंहजी ने..(व्यवधान)

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** मैं इसीलिये कह रहा हूं...

**एक माननीय सदस्य:** सत्य कड़वा होता है, सहन नहीं हो रहा है।

**श्री जुबेर खान:** यह बता रहे हैं न राहत मंत्रीजी, 1989 तब तक तो विश्वनाथ प्रताप सिंहजी प्रधान मंत्री बन गये थे।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** पूर्व प्रधान मंत्री बोला है मैंने। आप रिकार्ड में देख लें।

**श्री जुबेर खान: 1989** जो आप बता रहे हो न कि 1989 में आये थे। 1989 में तो वी.पी.सिंहजी प्रधान मंत्री बन गये थे...(व्यवधान)

**डा. जालम सिंह रवलोत:** नवम्बर में, 11 महीने तक आपके राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे...

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** अब आपको सुनना अच्छा नहीं लग रहा तो मैं दो मिनट में बात समाप्त करके बैठ जाता हूं।

**श्री उपाध्यक्ष:** हां, ठीक है।

**श्री जुबेर खान:** उचित रहेगा आप अपने पूर्वी राजस्थान की बात करो। दौसा की बात करो, भरतपुर की बात करो, वह ज्यादा ठीक है।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** दौसा की बात तो यह है कि मुख्य मंत्रीजी ने दौसा के अंदर जो कमियां थीं वे दो साल के अंदर पूरी कर दी हैं। हमें दौसा के अंदर कोई आवश्यकता नहीं है किसी चीज की...(व्यवधान)

**श्री रघुवीर सिंह मीणा:** आप तो बोलो जी, महाराज, आपसे बढ़िया

बंडल कोई हांक ही नहीं सकता है। आपसे बढ़िया, अच्छा बंडल कोई नहीं हांक सकता, इसलिये बोलो आप तो।

**श्री अशोक बैरवा:** रेलवे ब्रिज बन गया क्या ?

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** आर.ओ.बी. का बजट सत्र के तुरन्त बाद मुख्य मंत्रीजी शिलान्यास करने जा रही हैं और मेरा सभी भाइयों से निवेदन है जो पूर्वी राजस्थान के माननीय सदस्य हैं, कि वे इस कार्यक्रम में जरूर पधारें। आप सबका स्वागत है दौसा के अन्दर। आप मुख्य मंत्रीजी के कार्यक्रम में जरूर पधारें जब आर.ओ.बी. का शिलान्यास हो।

**श्री रघुवीर सिंह मीणा:** किरोड़ी लालजी, आपसे निवेदन करूंगा, इनको कौन बताएं कि गेहूं खा गया...(व्यवधान) माननीय सदस्य अभी कह रहे थे। कांग्रेसी खा गये। आप उदयपुर पधारे थे, किसने कहा गेहूं खाया है और वह चिट्ठी भी जो आप टेबल कर रहे हो वह चिट्ठी लिखी थी आपने मुख्य मंत्रीजी को...(व्यवधान)

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** मैं इसीलिये कह रहा हूं मुझे दुःख है। हमारे वन मंत्रीजी ने सरिस्का, रणथम्भौर के लिये पैकेज बनाकर भारत सरकार को भेजा, डेढ़ साल हो गये, डेढ़ साल से ऊपर ही हो गया, वहां से पैकेज सैंक्शन होकर नहीं आ रहा। (व्यवधान) वहां राजीव जी रुके थे। राजीव जी सरिस्का में भी गये थे, राजीव गांधीजी रणथम्भौर भी थे। उन्होंने बजट नहीं दिया। क्यों नहीं दिया ? मैं पूछना चाहता हूं कि आपका दायित्व नहीं बनता ? यह आपका प्रदेश नहीं है ? कांग्रेस के लोगों का प्रदेश नहीं है ? आपकी भी पूरी, बराबर की जवाबदारी बनती है कि आप हमारा सहयोग करें। केन्द्र सरकार हमें पैसे दिलवाएं। आप क्या यहां पर सिर्फ भाषण, झाड़ने ही आते हो? आप दिल्ली जाओ, दिल्ली जाकर अपनी केन्द्र सरकार से कहिये कि हमारी बराबर की जवाबदारी है जनता के प्रति। बराबर की भागीदारी है जनता के प्रति। राजस्थान प्रदेश के विकास में अगर इस तरह का भेदभाव होगा तो ठीक नहीं होगा। आपके कुकर्मों से आप वहां बैठे हो और मुझे यह लगता है कि आप चिपककर बैठे रह जाओगे वहां पर...(व्यवधान) नहीं कर रहे हैं यह कुछ। जा ही नहीं रहे हैं। मैं यह कह रहा था उन्होंने निकाल दिया, राज्य सभा से निकलवा दिया जया बच्चनजी को। मैं यह पूछना चाहता हूं कि ऐसा क्या अपराध किया था अमिताभ बच्चनजी ने? आपके पारिवारिक मित्र थे। अकेले

(श्री नन्दलाल बंशीवाल)

रणथम्भौर उनको लेकर आये थे आप। सिंगल मैन कोई व्यक्ति आया था उनके साथ तो अमिताभ बच्चनजी थे। सोनिया गांधी के इशारे पर निकाल दिया। अब सोनिया गांधीजी भी सरकारी मशीनरी का वहां बैठी दुरुपयोग कर रही हैं। सरकारी बंगले उनके चल रहे हैं। टेलीफोन चल रहे हैं। सरकारी गाड़ियां चल रही हैं। सरकारी तंत्र उनके साथ है, यू.पी.ए. की चेयरमैन बनकर बैठी हैं। पूरा सरकारी लाभ ले रही हैं।  मैं कह रहा हूं कि अब सोनिया गांधीजी को वहां से किक आउट कर देना चाहिये।

**श्री जुबेर खान:** वसुन्धराजी को हमें किक आउट कर लेने दो पहले। वसुन्धराजी को जब किक मार देंगे तब सोनिया गांधी का नाम लेना। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप यह चाहते हो कि यहां गलत, अनर्गल बातें की जाएं? आप सदन चला रहे हो, आप व्यवस्था कीजिये। किसी के बारे में कोई भी बात कह दी जाएगी, क्या उसको बर्दाश्त कर लेंगे। अगर हम वसुन्धराजी को किक मारने की बात करेंगे ये बर्दाश्त कर लेंगे ? बिलकुल गलत बात है यह। सरासर गलत बात है यहां मुख्य मंत्री तो सामने बैठी हैं, रोज किक मारने की बात करेंगे, यह गलत बात है। आप इस पर कण्ट्रोल करिये। यह कोई बात हुई क्या ? आप तो हेमा मालिनी को नचाओ, उसको पैसा दो। शर्म नहीं आती किसी महिला के बारे में इस तरह का बयान करके...(व्यवधान)

**श्रीमती ममता शर्मा:** उपाध्यक्ष महोदय, यह क्या बोल रहे हैं ? नेता प्रतिपक्ष हैं वह, यह क्या बोल रहे हैं? आप पहले इनको यह तो पूछिये। और आप लोग सामने देखकर इनको एनकरेज कर रहे हैं इन सब बातों के लिये, शर्म की बात है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन सब बातों के लिये मुसकरा मुसकरा कर आप लोग एनकरेज कर रहे हैं। माननीय सदस्य को कहें कि कोई काम की बात करें। माननीय मंत्री महोदय, आप तो कम से कम वरिष्ठ सदस्य हैं इस सदन के। कोई बजट पर बोलिये, हम सुनने को तैयार हैं। हमारी सरकार की बुराई करें, हम सुनने को तैयार हैं। अब उन्हें क्या जो इस दुनिया में नहीं हैं, उनकी बात कर रहे हैं आप बार-बार। यह आपके हल्केपन का एक उदाहरण है। इस सदन में आपके हल्केपन का उदाहरण है ...(व्यवधान)

**श्री वीरेन्द्र बेनीवाल:** उपाध्यक्ष महोदय, हमारी नेता के लिये इस तरह की बात करना...(वयवधान) जिस भाषा का उपयोग किया जा रहा है हमारी सम्माननीय नेता के प्रति, हम बर्दाश्त नहीं करेंगे।(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्षः** अब अंकित नहीं होगा..(व्यवधान)

**श्रीमती ममता शर्माः** ×××

**श्री नन्दलाल बंशीवालः** ×××

**श्री जुबेर खानः** ×××

**श्री उपाध्यक्षः** माननीय सदस्य, बिराजिये। (व्यवधान)

**श्री जुबेर खानः** ×××

**श्रीमती ममता शर्माः** ×××

**श्री नन्दलाल बंशीवालः** ×××

**श्री उपाध्यक्षः** माननीय सदस्य, आप अपने विषय पर आ जाइये। माननीय सदस्य, आप समाप्त करें...(व्यवधान)

**श्री जुबेर खानः** ×××

**श्री उपाध्यक्षः** वह रिकार्ड में नहीं आ रहा है सुनिये आप, वह अंकित नहीं होगा...(व्यवधान) कोई अंकित नहीं होगा। माननीय सदस्य, आप समाप्त करिये।

**श्री अशोक बैरवाः** ×××

**श्री नन्दलाल बंशीवालः** मैं निवेदन करना चाहता हूं बहुत आदर सहित कि इनके राज में ये बहुत बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं कि माननीय अशोकजी गहलोत साहब ने बड़े अच्छे-अच्छे काम किये और कोई राष्ट्रीय पुस्तक के अन्दर छपवा लिया मुख्यमंत्री नम्बर वन। अब वह मुख्य मंत्री, आप सुनो तो सही...(व्यवधान)

**श्री रामचन्द्र सराधनाः** माननीय उपाध्यक्षजी, हमें गाली निकालने से इनकी प्रतिष्ठा बढ़ रही है तो बढ़ाओ आप। इलाके में आपकी इज्जत होगी, बहुत इज्जत होगी। क्या हल्की बातें कर रहे हैं। बार-बार अशोक गहलोत की बात कर रहे हैं, कब आये अशोक गहलोत, राजीव गांधी, ये बातें क्यों कर रहे हो। ढाई वर्ष हो गये अब तो, अब तो नयी बात छेड़ो। कोई मतलब की बात करो आप। मैं आपका प्रेमी हूं इसलिये बोल रहा हूं आपकी इमेज खराब हो रही है वहां।

**श्री नन्दलाल बंशीवालः** आप क्या बात कर रहे हो? मुझे आपसे प्रेम नहीं चाहिये। मुझे ऐसा मूंछो वाला प्रेमी नहीं चाहिये।

**श्री रामचन्द्र सराधना:** राजस्थान हाउस में हमने ही बचाया था आपको। राजस्थान हाउस में मैंने ही बचाया था आपको, आपको मालूम नहीं है उसका। आज कह रहे हो, प्रेमी नहीं हैं। उस दिन मैंने ही बचाया था। मैं तो आपके लिये कहना नहीं चाहता हूं। हल्की बातें कर रहे हैं आप। बिना मूंछों की बात कर रहे हो, हल्की बात कर रहे हो। आप बजट पर बात करना चाहते हो, लोग बैठे हुए हैं अपनी तैयारी करके, हमें समय नहीं मिल रहा है, आप हल्की बात कर रहे हो। आप मंत्री लोग बैठे हैं मैं आपको निवेदन करता हूं कि अपने लोगों को रोकें। इस तरह से बात करेंगे अगर...(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य। माननीय सदस्य। (व्यवधान)

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** आप क्या बार-बार बीच में बोल रहे हैं?

**श्री रामचन्द्र सराधना:** कितनी हल्की बातें कर रहे हैं और आप लोग हंस रहे हो। आप लोग बहुत सीनियर हो, आप लोग हमसे वरिष्ठ हैं, आप लोगों को चलाना चाहिये। सदन कैसे चलेगा? आप लोग करते ही नहीं हो।

**श्री नन्दलाल बंशीवाल:** उपाध्यक्ष महोदय, यह मेरे मित्र हैं, मेरा टाइम इनको दे दो आप।

**डा. जालम सिंह रावलोत:** आप बीच में व्यवधान मत डालो, बोलने दो आप। आप तो बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं प्रेमी-प्रेमिका का क्या मतलब है यहां सदन में ? सदन में प्रेमी-प्रेमिका का क्या मतलब है ? आप तो बोलने दो माननीय सदस्य को।

**श्री उपाध्यक्ष:** डा. जालमसिंह रावलोत। (व्यवधान) वह बोल नहीं रहे हैं। यह अपनी मर्जी से बैठे हैं।

**श्री मदन राठौड़** : यह गलत है। बंशीवालजी पूरा बोलें। एक दलित विधायक को दबाने की कोशिश की है इन्होंने। एक दलित को दबाने की कोशिश की है इन्होंने, यह ठीक नहीं है। (व्यवधान)

**श्री खुशवीर सिंह** (जोजावर) : सुमेरपुर से आने वाले विधायक, आप इनकी बात खुलवाना चाहते हो हमारे सराधना साहब से। अगर आप इनकी बात खुलवाना चाहते हो तो यह खोल देंगे। आप इनसे अब खुलवाना चाहते हो। (व्यवधान)

**श्री मदन राठौड़ :** दलित को रोकने की कोशिश की है। दलित को अपनी बात पूरी नहीं करने दिया गया। यह तो इनके साथ अन्याय है। यह किसी भी ...(व्यवधान) यह तो उनका हक है। ये बीच में कौन हैं बोलने वाले...(व्यवधान) उनकी बात को रोका

गया है, उनको बोलने नहीं दिया गया है, यह ठीक बात नहीं है। उन्हें पूरा बोलने दिया जाना चाहिए। यह अन्याय है, इसकी घोर निंदा करते हैं। (व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य, विराजें ।

**श्री रामचन्द्र सराधना:** उपाध्यक्ष महोदय, सुमेरपुर से आने वाले माननीय सदस्य से निवेदन है कि मेरे और नन्दलाल जी बंशीवाल के बीच में आप न आएं। (व्यवधान)

**श्री जयराम जाटव:** उपाध्यक्ष महोदय, इनको दबाया गया है ।

**श्री अशोक बैरवा:** दौसा से आने वाले सदस्य के प्रति हमारी भी भावना है इसलिए आप कनफ्यूज मत कीजिये । वह बाद में हमारे साथ ही आकर मिलने वाले हैं ।

**श्री जयराम जाटव:** नन्दलाल जी बंशीवाल पूरा बोलेंगे ।

**श्री खुशवीर सिंह जोजावर:** माननीय सुमेरपुर से आने वाले विधायक, आप सराधना साहब से कुछ भेद खुलवाना चाहते हो?(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** वह इतने कमजोर दलित सदस्य नहीं हैं, दबने वाले नहीं हैं । आप चिंता मत कीजिये। (व्यवधान) जालम सिंह जी ।

**डा.जालम सिंह रावलोत** : उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री आदरणीय वसुन्धरा जी ने ...(व्यवधान)

**श्री जयराम जाटव:** माननीय सदस्य बोल रहे थे इस हिसाब से उनको वापस बोलने दिया जाए ।

**श्री उपाध्यक्ष:** बोल लिये, बोल लिये ।

**मोहम्मद माहिर आजाद:** आप बुला लो, बुलवा देंगे ।

**एक माननीय सदस्य:** हम सुनना चाहते हैं ।

**मोहम्मद माहिर आजाद:** मैटर तो खतम हो गया था, था क्या बोलने को और?

**डा. जालम सिंह रावलोत** (शिव) : उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री आदरणीय वसुन्धरा जी ने आठ मार्च को जो अपना शानदार तीसरा बजट वित्त मंत्री के रूप में प्रस्तुत किया मैं उसके पुरजोर समर्थन के लिए खड़ा हुआ हूं । जैसी कि पूरे राजस्थान से प्रतिक्रिया आयी है, इस बजट में राजस्थान के सभी वर्गों का और राजस्थान के हर क्षेत्र का पूरा

ध्यान रखा गया है । मैं इस बजट के कुछ पहलुओं पर अपना भाषण केन्द्रित करूंगा । हमारी मुख्य मंत्रीजी ने दो साल पहले जब पहला बजट प्रस्तुत किया था उस समय कहा था कि महिला सशक्तीकरण उनका प्रथम कर्तव्य है । उस दिशा में जो पहला काम बजट में किया गया वह यह था कि जो महिलाएं कृषि भूमि क्रय करना चाहती हैं उनके लिये जो मुद्रांक शुल्क लगता था, वह 11 प्रतिशत से घटाकर साढ़े 5 प्रतिशत किया । उसका परिणाम हुआ कि दो साल की कम अवधि में दो लाख से ज्यादा महिलाओं को भूमि का मालिकाना हक प्राप्त हुआ । इसी प्रकार से माननीय मुख्य मंत्रीजी का सोच था कि प्राइमरी स्तर की पढ़ाई की छात्राओं का प्रतिशत बढ़े तथा मिडिल में ठहराव बढ़े। इस हिसाब से मैं बताना चाहता हूं कि जो प्रयत्न हुआ उसमें एनरोलमेंट का प्रतिशत प्राइमरी में 32 से 38 प्रतिशत हुआ तथा मिडिल में ठहराव का प्रतिशत 80 से 87 हुआ। महिला शिक्षकों की संख्या मात्र 32 प्रतिशत थी, हमारी मुख्य मंत्रीजी और हमारे शिक्षा मंत्री जी के प्रयत्नों से जो नियुक्तियां हुईं उसमें महिलाओं का 30 प्रतिशत आरक्षण किया गया और 2371 विधवाओं को तथा 563 परित्यक्त महिलाओं को नियुक्ति दी गयी, जिसके कारण स्थिति में सुधार हुआ है। इस बजट में जिस प्रकार से 40 हजार शिक्षकों की और नियुक्तियां होगी उससे निश्चित रूप से महिलाओं का जो 30 प्रतिशत का कोटा है, महिला शिक्षकों के प्रतिशत में और ज्यादा सुधार होगा ।

कालेज स्तर पर जो बालिकाओं की संख्या कम थी, उस पर भी हमारी मुख्य मंत्रीजी ने चिंता व्यक्त की है और सबसे अपेक्षा की है कि विशेषकर एस.सी., एस.टी. और ओबीसी की गर्ल्स को कॉलेजों में बढ़ावा दिया जाए । यह सब इस बात की ओर संकेत है कि हमारी मुख्य मंत्रीजी महिला सशक्तिकरण की अग्रसर हो रही हैं, उसमें पूरे राजस्थान का सहयोग अपेक्षित है।

उपाध्यक्ष महोदय, पन्ना-धाय जीवनामृत योजना, मुख्य मंत्रीजी का सोच है कि प्रत्येक बीपीएल परिवार को बीमे का फायदा मिले। यह शानदार योजना राजस्थान की जनता को दी है उसमें प्रीमियम की राशि का भुगतान सरकार वहन करेगी । इस हिसाब से दुर्भाग्यवश मृत्यु होने पर 50 हजार रूपये और प्राकृतिक मृत्यु होने पर 20 हजार, शारीरिक क्षति होने से परिवार को 50 हजार और ऐसे ही सामान्य शारीरिक क्षति होने पर 25 हजार रूपये एक शानदार प्रावधान है । खास तौर से ग्यारहवीं और बारहवीं में पढ़ने वाली बालिकाओं के लिए 1200 रूपये प्रति वर्ष छात्रवृत्ति का एक सराहनीय काम इस दिशा में किया गया है ।

(डा. जालम सिंह रावलोत)

उपाध्यक्ष महोदय, सहयोगिनियों की भर्ती का मामला, जैसा कि हम सब जानते हैं कि आंगनबाड़ी केन्द्र जो 35 हजार चल रहे थे उनकी शानदार उपयोगिता को देखते हुए पिछली बार 35 हजार सहयोगिनियों की भर्ती हुई और अब 11 हजार सहयोगिनियों की और भर्ती की जा रही है जिसके माध्यम से राजस्थान की चार लाख छियालीस हजार दो सौ की संख्या में बच्चों, गर्भवती स्त्री और धात्री महिलाओं का भला होगा । इसमें 179 करोड़ का प्रावधान रखा गया है । वृद्वावस्था पेंशन की राशि दो सौ से बढ़ाकर 400 करने का अनुकरणीय काम माननीय मुख्य मंत्रीजी ने किया है ।

समाज कल्याण के क्षेत्र में हमारे नगर से आने वाले माननीय सदस्य ने राज्यपाल के अभिभाषण के समय बोला था कि इस सरकार ने एस.सी., एस.टी. के लिए कोई काम नहीं किया । उपाध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहता हूं कि मैं छात्र राजनीति से यहां तक पहुंचा हूं और मेरा कार्य क्षेत्र समाज कल्याण छात्रावास ही रहे हैं मेरे जीवन का जो पहला आंदोलन था वह समाज कल्याण छात्रावासों की व्यवस्था को लेकर मैंने किया था । उस समय 1989 में कांग्रेस का राज था और समाज कल्याण छात्रावासों की स्थिति बद से बदतर थी । लेकिन हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने लगातार इस दिशा में सुधार किया है । सौ समाज कल्याण छात्रावासों का निर्माण किया है। पिछली बार के बजट में 602 रंगीन टी.वी., 602 गेम्स किट, 602 फर्स्ट एड बाक्स, तीन हजार दरियां, 4200 कम्बल, 62 हजार चद्दरें, 3500 खेस ऐसे डेढ़ करोड़ से ज्यादा का काम किया है। गरीब एस.सी., एस.टी. के विद्यार्थियों के लिये 675 रूपये छात्रवृति प्रति माह दी जाती थी उसको बढ़ाकर 725 किया है, यह बहुत शानदार, स्वागत योग्य काम है। मैं उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। 95 छात्रावास भवन जो किराये में चल रहे थे, उनके भवन निर्माण पर 34 करोड़ रूपये का जो प्रावधान है वह बहुत शानदार काम है । इतना ही नहीं हमारे एस.सी., एस.टी. के विद्यार्थी जो आई.ए.एस. और आर.ए.एस. बनने से वंचित रह जाते थे, उनके लिये अनुवृति योजना है । उसके अंतर्गत प्रिलिमिनरी परीक्षा पास करने पर 75 हजार रूपये आई.ए.एस. के लिये, 30 हजार रूपये आर.ए.एस. के लिये और मेन परीक्षा उत्तीर्ण करने 25 और 15 हजार रूपये का प्रावधान किया है। जोरदार काम किया है एक सौ पॉंच कैंडीडेट इससे लाभान्वित हुए हैं । उपाध्यक्ष महोदय, पालनहार योजना जो सभी वर्गों के अनाथ बच्चों के लिए प्रारंभ की गयी है। उसकी मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं ।

(डा. जालम सिंह रावलोत)

उपाध्यक्ष महोदय, स्वास्थ्य की बात चल रही है, स्वास्थ्य मंत्रीजी यहां विराजमान हैं, माननीय पूर्व वित्त मंत्रीजी प्रद्युम्न सिंहजी बोल रहे थे कि स्वास्थ्य के लिए उन्होंने कई भर्ती की। जहां तक मेरी जानकारी है, स्वास्थ्य के लिए उनके राज में कोई भर्ती नहीं हुई । बड़े दु:ख की बात है कि न इन्होंने कोई शिक्षा में भर्ती की, न स्वास्थ्य में भर्ती की है। माननीय चिकित्सा मंत्री जी मेरे जैसेलमेर जिले में एक बार निवेदन करने पर आये थे, मैं यह कहना चाहूंगा कि उस समय जब जैसलमेर और बाड़मेर की स्थिति को उन्होंने देखा तो हमको और हमारे क्षेत्र के अन्य विधायकों को कहने की जरूरत नहीं पड़ी । उन्होंने माननीय मुख्य मंत्रीजी को बताया जहां राजस्थान के लिए एक ए.एन.एम. की भर्ती नहीं हुई, वहीं बाड़मेर और जैसलमेर के लिए 570 ए.एन.एम. की भर्ती की। इतना सराहनीय काम किया। और अभी 558 डाक्टरों की और भर्ती की है। स्वयं स्वास्थ्य मंत्री ने कहा है कि उनमें प्राथमिकता बाड़मेर और जैसलमेर को दी जा रही है । मैं भूरि-भूरि प्रशंसा माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी और माननीय मुख्य मंत्रीजी की करता हूं । तीन सौ वाकल नर्सेज की भर्ती, चौवन नर्सिंग टयूटर की नियुक्ति हुई है । लेकिन भर्ती प्रक्रिया अभी बंद नहीं हुई है । सौ डाक्टर, सौ-सौ ए.एन.एम., सात सौ नर्सेज का प्रावधान इस बार है । 586 सब सेन्टर, 33 पी.एच.सी, 39सी.एच.सी. का प्रावधान किया जा चुका है । सौ सब सेन्टर, 22 पी.एच.सी, 10 सी.एच.सी. का प्रावधान इस बजट में है । संजीवनी शिविर मरू क्षेत्र के लिए और आदिवासी क्षेत्र के लिए जोरदार काम किया है । 3 पी.एच.सी., 3 सी.एच.सी., 21 पी.एच.सी, 227 सब सेंटर की बिल्डिंग बनाने का काम राजस्थान हैल्थ सिस्टम डवलपमेंट प्रोजेक्ट के माध्यम से 472 करोड़ रूपये खर्च करके राजस्थान की सी.एच.सी. और जिला अस्पतालों का काया-कल्प होने जा रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, शिक्षा के क्षेत्र में जितना कहूं उससे ज्यादा काम हुआ है । माननीय शिक्षा मंत्री जी विराजमान हैं, इनके सदस्य कह रहे थे क्या किया है, 16 हजार राजीव गांधी पाठशालाओं को इस बार प्राइमरी करने का प्रावधान रखा गया है। यह राजीव गांधी पाठशालाएं ढाणियों में और गांवों में इन्होंने खोली थीं। न अध्यापक लगाये, न बिल्डिंग बनायी । लेकिन हमारी सरकार इन 16 हजार राजीव गांधी पाठशालाओं को प्राइमरी करने जा रही है । उनको प्राइमरी करने का नाटक नहीं कर रही है, बिल्डिंग बनाकर देगी, टीचर्स

नियुक्त करके देगी और कम्प्युटर तक से जोड़ेगी, इंटरनेट से भी जोड़ेगी। ऐसा शानदार काम होने वाला है । 5 हजार प्राइमरी को यू.पी.एस. करने का प्रावधान, कुल मिलाकर 40 हजार प्राइमरी और मिडिल स्कूल करने का और सैकण्डरी स्कूल करने का प्रावधान सराहनीय है । शिक्षा विभाग में 95 हजार की भर्ती, बल्कि एक लाख लागों की भर्ती, बहुत सराहनीय काम हुआ है । इन्होंने एक व्यक्ति की नियुक्ति नहीं की और हमारे मुख्य मंत्रीजी ने और शिक्षा मंत्री जी ने एक लाख शिक्षकों की भर्ती करने का काम किया है । इतना जानदार काम किया है, इतना शानदार काम किया है । छः सौ कोर्टेज के केस को सुप्रीम कोर्ट तक निपटाया, मैं स्वागत करता हूं। कि रोजगार के लिए तकनीकी शिक्षा एक महत्वपूर्ण कदम है। पिछली बार राजस्थान में तकनीकी विश्वविद्यालय, मेडिकल विश्वविद्यालय और 5 पोलीटैक्निक कॉलेज और 20 आई.टी.आर ई. खोलने का जो शानदार काम किया है मैं उसका स्वागत करता हूं । लेकिन इस बार सरकार ने 12 जिलों में कालेज पोलीटैक्निल और 113 आई.टी.आई. खोलने निजी सहभागिता से खेलने का जो शानदार प्रयास किया है उससे यह और बढ़गा । राजस्थान एजुकेशन इंस्टीट्यूट के माध्यम से राजस्थान के गांवों में, ढाणियों में जो स्कूलें हैं,

महिला पोलीटैक्निक के हिसाब से बिल्डिंग बनाने का जो काम है, वह शानदार काम है । रामगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य भी माननीय शिक्षा मंत्रीजी सुन रहे हैं हमारी बात, यह विषय रखा, पूरे सदन और सबकी सोच है कि प्राइमरी स्कूल के बारे में निश्चित रूप से दो सालों में अच्छा काम हुआ है पर सैकण्डरी स्कूल के बारे में माननीय मुख्य मंत्रीजी जब अपना बजट भाषण का उत्तर दे तो कुछ प्रावधान करें, निश्चित रूप से राजस्थान की जनता, विशेषकर बाड़मेर और जैसलमेर के हर पंचायत केन्द्र पर सैकण्डरी स्कूल की हमारी मांग है, उसको पूरा किया जाना चाहिए। हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी और माननीय शिक्षा मंत्रीजी माध्यमिक शिक्षा को सार्वजनिक करने के लिए जो अखिल भारतीय स्तर पर प्रयत्न कर रहे हैं, मैं उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं।

खेल और युवा मामलों के बारे में राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का प्रतिनिधित्व बढ़े, खिलाड़ी प्रोत्साहित हों, खेल सुविधाओं का विकास हो, इस हिसाब से सरकार पूरे प्रयत्न कर रही है। सभी जिलो में स्टेडियम हो, इसके लिए प्रयत्न हो रहे हैं। खासकर युवा आवासों का 13 जिलों में निर्माण का काम है, वह बहुत सराहनीय काम है।

(डा. जालम सिंह रावलोत)

रोड़ के क्षेत्र में इतना काम हुआ है, इसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है। माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी की मैं प्रशंसा करता हूं। मेगा हाइ वे की कल्पना हमारे मुख्य मंत्रीजी की सोच है कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का नाम विकसित राज्य के हिसाब से हो, अन्तरराष्ट्रीय स्तर की रोडों के निर्माण का काम मुख्य मंत्री सड़क योजना के माध्यम से हो रहा है, उससे निवेश बढ़ेगा, जोरदार काम हुआ है, इस हेतु बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। हमारे राज में प्रति दिन 12 किलोमीटर सड़कों का निर्माण होता है, उनके राज में केवल 4 किलोमीटर प्रति दिन, एक दिन में वे एक गांव जोड़ते थे और हमारे राज में हम एक दिन में चार गांवों को हम सड़क से जोड़ रहे हैं।

प्रधान मंत्री सड़क योजना में जो शानदार काम की शुरूआत की है, हमारे माननीय अटल बिहारीजी वाजपेयी ने की है और अखिल भारतीय स्तर पर राजस्थान नम्बर वन पर आया है, यह बहुत सराहनीय बात है। बाड़मेर और जैसलमेर ज़िले को इसका विशेष फायदा मिला है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात को दो मिनट में पूरा करने का प्रयत्न करता हूं। मुझे बहुत कम मौका मिलता है, आज थोड़ा समय दें।

प्रधान मंत्री सड़क योजना के माध्यम से 13400 किलोमीटर सड़कों का निर्माण हुआ है और खासकर जो 5412 राज्य सड़कों को स्टेट हाइवे में बदलने का प्रयत्न है, वह शानदार काम है।

विद्युत के क्षेत्र में भी हमारी सरकार बहुत जोरदार काम कर रही है। सरकार ने विद्युत उत्पादन को बढ़ाने के लिए, वितरण और प्रसारण व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए 33 के वी ए के 180 जी एस एस का जो काम हाथ में लिया है, सराहनीय काम है। 1049 करोड़ रुपए सुदृढ़ीकरण और ग्रामीण विद्युतीकरण पर खर्च किए जाएंगे, यह एक सराहनीय काम है। सरकार 4500 मेगावाट बिजली का निर्माण कर रही है।

पुरातत्व महत्व के भवनों और पुरा वस्तुओं के महत्व को देखते हुए हैरिटेज प्रोटेक्शन एण्ड प्रमोशन बोर्ड का गठन सराहनीय काम है।

10 हजार गांवों और ढाणियों, 500 एस सी और एस टी की बस्तियों और सभी स्कूलों में पेयजल पहुंचाना एक बहुत सराहनीय काम है। 12वें वित्त आयोग ने हमारे राजस्थान के सीमावर्ती और मरुस्थलीय जिलों के लिए माननीय मुख्य मंत्रीजी की पहल पर जो विशेष प्रयत्न किए हैं, उनके लिए

(डा. जालम सिंह रावलोत)

सहमति दी है, यह निश्चित रूप से सराहनीय काम है। बाड़मेर लिफ्ट कैनाल जिसका कांग्रेस के जमाने में अशोकजी गहलोत ने केवल शिलान्यास किया था, उसका काम आगे बढ़ेगा। बालोतरा लिफ्ट कैनाल का काम प्रगति पर होगा और इन्दिरा गांधी नहर गडरा रोड तक पहुंचाने के काम में प्रगति होगी। दावोस में जिस हिसाब से काम हुआ है पानी को लेकर, वह सराहनीय है।

ग्रामीण विकास के बारे में मुझे कहना है कि जिस तरीके की बात नगर से आने वाले हमारे माननीय सदस्य और लूणकरणसर से आने वाले माननीय सदस्य ने कही है कि सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कुछ नहीं किया, क्या 16 हजार राजीव गांधी पाठशालाएं गांवों और ढाणियों में आपने जो खोली उनको हम नहीं चालू कर रहे, क्या 10 हजार गांवों और ढाणियों में पानी पहुंचाना ग्रामीण क्षेत्र के लिए नहीं है? 95 हजार अध्यापक जो लग रहे हैं, वे गांवों के लिए नहीं है? क्या दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण योजना गांवों के विकास के लिए नहीं है? इतने सारे काम ग्रामीणों के लिए हुए हैं, लगभग 20 ऐसी योजनाएं हैं। रोजगार सृजन, गरीबी उन्मूलन, सामुदायिक परिसम्पत्तियों के निर्माण के लिए लगभग 1400 करोड़ का प्रावधान है, यह निश्चित रूप से सराहनीय काम है। इन्दिरा आवासीय योजना के बारे में काम हुआ है।

**(समय-समाप्ति-सूचक घण्टी)**

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरी काफी तैयारी है और मुझे हमेशा कम मौका मिला है, एकदम जल्दी से मैं अपनी बात धाराप्रवाह पूरी कर रहा हूं।

कृषि के क्षेत्र में जयपुर के साथ-साथ संभागीय मुख्यालयों पर कृषि भवनों का और कृषि विषय पर छात्र-छात्राओं की छात्रवृत्ति को बढ़ाने का काम किया है, मुख्य मंत्रीजी के इस कदम की मैं सराहना करता हूं। राजस्थान में पशु हमारी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है, 50 नए पशु अस्पताल और 100 पशु उप केन्द्र, 200 डाक्टरों की भर्ती इस दिशा में जोरदार काम है।

300 करोड़ रुपए से इन्दिरा गांधी नहर के आधुनीकरण और सुदृढ़ीकरण के काम किए जाएंगे, इस हेतु तथा 20 हजार हैक्टेयर भूमि पर खाळों के निर्माण के लिए जो 28 करोड़ रुपए का प्रावधान है, वह बहुत शानदार काम है।

गैलेण्ट्री अवार्ड की राशि में दस गुना बढ़ोत्तरी की गई है। सैकिण्ड वर्ल्ड वार के सैनिकों की विधवाओं की पेंशन 800 रुपए और सैनिकों के लिए 800 रुपए पेंशन करना एक सराहनीय काम है।

(डा. जालम सिंह रावलोत)

कर्मचारी कल्याण के हिसाब से जिस तरह से राजस्थान की सरकार और माननीय मुख्य मंत्रीजी ने प्रयत्न किए हैं, सरकारी कर्मचारियों के लिए डी ए जो दिया जाता था उसका नकद भुगतान पहली बार राजस्थान के इतिहास में हुआ है, उसकी सराहना करता हूं।

अकाल के बारे में निवेदन करना चाहता हूं कि जिस तरह का शानदार काम हुआ है हमारे टाइम में उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। माननीय मुख्य मंत्रीजी अभी मुनाबाव पधारी तब पशु शिविर प्रारम्भ करने की घोषणा की, उस दिशा में जोरदार तैयारी चल रही है और पशु शिविर शीघ्र हमारे यहां चालू होने वाले हैं।

**(समय-समाप्ति-सूचक घण्टी)**

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक दो विषयों पर और अपनी बात कहना चाहता हूं।

राजस्थान में विद्युत शुल्क बढ़ाने के हिसाब से सभी प्रकार के काम में हो रहे हैं विद्युत शुल्क में कमी का जो प्रावधान किया है, वह निश्चित रूप से हमारे नए उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए तथा वर्तमान उद्यमियों को राहत पहुंचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण काम करेगा।

दूसरा महत्वपूर्ण काम वैट की व्यवस्था को चालू करने का है। वैट की व्यवस्था में सुधार के बारे में निश्चित रूप से राजस्थान अग्रणी राज्यों की श्रेणी में आएगा।

भू-जल के बारे में इसमें उल्लेख किया गया है कि राजस्थान में पानी की कमी है, राजस्थान की सरकार की पहली प्राथमिकता पेयजल और सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराना है। इस हेतु जो नया बिल लाने वाले हैं उसके अन्दर मेरा सुझाव है कि उसमें ऐसे व्यक्ति जो केवल पानी का दोहन करे, सिंचाई के लिए दोहन न करे, नमक आदि के उत्पादन के लिए करेंगे उनको उस शुल्क से मुक्त रखा जाए ताकि राजस्थान की जनता का भला हो।

**श्री उपाध्यक्ष:** धन्यवाद। श्री गोपाल बाहेती।

**डा. जालम सिंह रावलोत:** मैं अपनी बात को एक मिनट में समाप्त करते हुए राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी ने जो शानदार बजट प्रस्तुत किया है, उन्होंने जो कल्पना की है राजस्थान को भारत का एक विकसित राज्य बनाने की, उसको देखते हुए इस बजट में राजस्थान के सभी वर्गों का, सभी क्षेत्रों का पूरा ध्यान रखा है, मैं इस बजट का पुरजोर समर्थन करता हूं। धन्यवाद ।

**श्री सुभाष चन्द्र शर्मा** (कोटपूतली): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, निर्दलीय सदस्यों को भी बुलवाइए, अभी केवल दो बोले हैं, आपसे आग्रह है कि हमारा भी ध्यान रखें।

**श्री उपाध्यक्षः** बुलवाएंगे। डा. श्रीगोपाल बाहेती।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (ब्यावर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बजट पर बोलने का अवसर दिया, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

एक शायर ने लिखा है –

बड़ा शोर सुनते थे पहलू में दिल का

पर्दा उठाया तो कतरा ए खूं निकला

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी सत्ता पक्ष की ओर से यह किया, वह किया, यह दिया, यह दिया, कहा गया। मैं आपसे केवल दो बात कहना चाहता हूं, राजस्थान सरकार का जो वित्तीय प्रबन्धन है वह कैसा है, यह आज ही रिपोर्ट आई है सी ए जी की, उसमें लिखा है, कि सरकार 2977 करोड़ रुपए की वसूली करने में नाकाम रही। यह सरकार का वित्तीय प्रबन्धन है। दूसरा मैं कहना चाहता हूं कि सरकार ने सोशल खर्चे में जो बजट था 8548.75 करोड़ रुपए का, उसको रिवाइज करके किया 8098 करोड़, यानि 450 करोड़ रुपए की कमी की इन्होंने सोशल सर्विसेज में। इसी तरह सामान्य सेवाओं में 25 करोड़ रुपए बढ़ाये लेकिन घटा क्या? कैपिटल खर्चे में सोशल में कम किये 357 करोड़। तो जिस सरकार ने सोशल सर्विसेज में और विकास की मदों में खर्चा कम किया और जिस सरकार ने गैर विकास मदों का खर्चा बढ़ाया, वह सरकार किस बात की डींग हांकती है कि हमारा वित्तीय प्रबन्धन बहुत अच्छा रहा है? मेरे से पहले माननीय प्रद्युम्न सिंहजी बोल रहे थे आंकड़े देकर कि सरकार का वित्तीय प्रबन्धन जिसके सहारे अच्छा रहा है वह थी केन्द्र सरकार की सहायता। एक बात और कहना चाहता हूं, ग्रामीण विकास की बात सरकार करती है, एग्रीकल्चर में 394 से 227, एनर्जी में 2272 से 1999, साइन्स और टैक्नोलोजी में 2.8 से 2.5, इस प्रकार इस सरकार ने हर मद में जो खर्च करना था विकास के लिए, गांव, गरीब, किसान के लिए उसमें कमी की है और खर्चा गैर विकास में बढ़ाया। उसके बाद भी हम बात करते हैं कि सरकार ने बहुत बड़ा काम किया।

**(समय:18.00 बजे)**

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूं, जिस

गांव के विकास की बात यह सरकार करती है, जिस किसान की बात यह सरकार करती है, चाहे आंकड़े कुछ भी दिखाएं, चाहे आपने कितने टीचर भर्ती किये होंगे, चाहे कितने डाक्टर भर्ती किये होंगे, लेकिन आप भी गांव से आते हैं और जो विधायक गांव से आते हैं मैं उनसे पूछना चाहता हूं स्कूलों की हालत क्या है? स्कूलों में अध्यापक नहीं। ...(व्यवधान)... आप संतुष्ट हो सकते हैं। आप संतुष्ट हो तो आपको मुबारक हो। स्कूलों में अध्यापक नहीं, हास्पिटल के अंदर डाक्टर नहीं, किसान को कृषि के लिए बिजली नहीं, गांव के विद्यार्थी को पढ़ने के लिए लाइट नहीं। गरज यह कि गांव का हर व्यक्ति चाहे वह किसान हो, चाहे वह मजदूर हो, चाहे वहां रहने वाला हो उसको न बिजली है, न पानी है, न वहां टीचर है, न वहां पर डाक्टर है। उसके बाद हम किस प्रकार से बात करते हैं?

आपने इसमें बात की दीनदयाल उपाध्याय आदर्श गांव बनाने की। मैं आपसे कहना चाहता हूं, इसके पहले आप गांव के अंदर इस बात की व्यवस्था कीजिए कि गांव का इंफ्रास्ट्रक्चर ठीक हो। गांव में इस बात की व्यवस्था करें कि राज्य कर्मचारी गांव में रह सके। उसके लिए मेरा सदन से निवेदन है, पक्ष और विपक्ष दोनों से, हम यह फैसला करें कि गांव में रहने वाले राज्य कर्मचारी को हम ग्रामीण भत्ता दें ताकि उसका ठहराव गांव के अंदर हो। जब गांव में उसका ठहराव होगा तो गांव का विकास भी होगा, गांव के आदमी को बिजली भी मिलेगी, उसको पानी भी मिलेगा, उसको स्वास्थ्य सेवाएं भी मिलेंगी, उसको रेवेन्यू सेवाएं भी मिलेंगी। आज स्थिति यह है कि गांव के व्यक्ति को कुछ चीज नहीं मिलती है।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूं, जैसे अकाल की बात आप करते हो, गांव के आदमी से पूछिए, आज गांव का आदमी पलायन की स्थिति में आ गया है। मैं आपको अजमेर जिले का उदाहरण देता हूं और वही स्थिति पूरे राजस्थान की है। अजमेर जिले में फरवरी महीने में 10 हजार की लेबर की सीलिंग थी उसमें कितने लगे? 4572 । मार्च में सीलिंग 15 हजार की थी, 4361 लगे। दूसरे विभाग से जो सीलिंग थी 15 हजार, लगे कितने, 4700 । यह तो इनकी कम्पीटेंस है। यह लेबर भी कौनसी है जो एसजीआरवाई और बारहवें फाइनेंस कमीशन से एमएलए, एमपी लैड से डवटेल किया गया। जो 317 करोड़ रुपये सीआरएफ का पड़ा है उसमें से सरकार ने कोई खर्चा नहीं किया। जबकि पूर्ववर्ती गहलोत सरकार के समय अगस्त में

(डा. श्रीगोपाल बाहेती)

अकाल राहत काम चालू हुए थे और जितने गांवों को आवश्यकता थी उतनी लेबर लगी उतना उनको गेहूं मिला। आज गांव की स्थिति यह है कि वहां न गेहूं बीपीएल का है, न वहां गेहूं एपीएल का है, न वहां केरोसिन है। आप किस प्रकार की व्यवस्था की बात करते हैं?

उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जो स्थिति हमारे गांवों की है, जो स्थिति अकाल राहत कार्यों की है, उसको देखते हुए लगता नहीं है कि सरकार ने कोई वित्तीय प्रबंधन बहुत अच्छा किया हो या सरकार की प्राथमिकताएं दूसरी हों। यह बात हो सकती है कि सरकार की प्राथमिकता 30 मार्च का राजस्थान दिवस हो। उसमें आप है लाखों रुपया बाहर से लाकर खर्च करके नर्तकियों को नचाया, गाने गवाये, वह सब बात ठीक है, वह करिए आप। लेकिन गांव के किसान को आप बिजली दीजिए, गांव के विद्यार्थी को पढ़ने के लिए बिजली दीजिए। गांव का विद्यार्थी पढ़ने की स्थिति में नहीं है।

यहां डाक्टर साहब हमारे स्वास्थ्य मंत्रीजी बैठे हैं, मेरी कांस्टीट्युएंसी में अधिकांश गांवों के जो हास्पिटल हैं पीएचसी के, उसमें डाक्टर नहीं हैं, एएनएम नहीं है। और तो और जो सैटेलाइट होस्पिटल बना है अजमेर में 2.7 करोड़ रुपया लगाकर एडीबी के पैसे से, एक साल से एडीबी की बिल्डिंग बनकर तैयार है, उस बिल्डिंग में हास्पिटल शिफ्ट नहीं हो रहा है। इसलिए नहीं हो रहा है कि वहां स्टाफ नहीं है। उस सैटेलाइट में फोर्थ क्लास की पोस्ट भी नहीं है, यह स्थिति आपकी सरकार की है। इतना दिवालियापन आपकी सरकार की व्यवस्था का है। जिस प्रकार आप बात कर रहे थे मुझे समझ में नहीं आता है कि किस प्रकार से मुख्य मंत्रीजी इस बात की डींगें मार रही थीं कि मैंने यह किया, मैंने वो किया, मैंने वो किया।

मैं जब अजमेर आ रहा था तो मुझे मेरे मित्र ने एक शेर दिया कि आप उसको बोलना और मुख्य मंत्रीजी को कहना। वह एक ऐसा ग्रामीण मतदाता है जिसको कोई ध्यान नहीं कि पोलिटिक्स क्या होती है? उसने कहा ...(व्यवधान)...

**डा. दिगम्बर सिंह:** सारे उधार के ही शेर लेकर आये हो क्या?

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** उसने दिया जो मैं बता रहा हूं, मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। ''किश्तों में किया गया मेरा कत्ल इस तरह। मैं सोचता हूं आज, यही जनता का राज है।'' जिस सरकार ने इतनी बड़ी-बड़ी बातें कीं कि हमने

(डा. श्रीगोपाल बाहेती)

38 हजार मास्टर भर्ती कर लिये, हमने इतने डाक्टर भर्ती कर लिये, एएनएम भर्ती कर लीं, हमने वो भर्ती कर लिये, हमने वो भर्ती कर लिये, ये सब कहां खप गये? जब तक ग्राम रियलिटी पर आप नहीं आओगे, जब तक आप हकीकत में नहीं आओगे आप मानकर चलना इस प्रान्त का भला नहीं हो सकता। केवल आंकड़ों के मायाजाल में जो आपकी जगलरी है, इससे काम चलने वाला नहीं है।

**श्री अमराराम चौधरी** (गृह राज्य मंत्री) : पुष्कर से आने वाले माननीय सदस्य, आप मेरे साथ चलो, वहां डाक्टर है या नहीं, नर्सें हैं या नहीं।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** आप चलिए मेरे साथ।

**श्री अमराराम चौधरी:** आप ऐसी बातें क्यों कर रहे हो? आप तो आंकड़े दे रहे हैं, बजट में होता है वह काम हुआ है।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** आज चलूंगा। आप चलिए मेरे साथ, मेरा आपको निमंत्रण है। आप भी चलिए और स्वास्थ्य मंत्रीजी को और ले लें।

**श्री अमराराम चौधरी:** यह भर्ती हो रही है पुलिस वालों की आपके सामने। उसी को आप मानते नहीं हैं।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** मैं बात पुलिस की नहीं कर रहा हूं। मैं बात कर रहा हूं टीचर और डाक्टर की, आप आ गये पुलिस पर। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं ...(व्यवधान)...

**श्री हीरालाल** (निवाई): आपके राज में बिजली के कितने आंदोलन हुए? मुख्य मंत्रीजी को भी चप्पल, जूते लेकर दौड़ना पडा था।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** जब इतनी ही बात हो रही है तो आप नाम लिख लें, मैं आपको जगह का नाम लिखवा रहा हूं- बुधवाड़ा, कालेसरा, मांगलियावास यहां पर जब अस्पताल के अंदर तालाबंदी हुई तब सीएमएचओ ने यहां का वहां और वहां का वहां किया। यह आप अपने सोर्स से पता लगा लें।

**डा. दिगम्बर सिंह:** माननीय सदस्य, मैं कम से कम इन दो वर्ष के लिए इतना आपको कह सकता हूं कि राजस्थान में जितने भी सिंगल डाक्टर पीएचसीज अगर खाली है तो कहीं न कहीं राजस्थान के हमारे सीएमएचओज ने जिले में उनकी व्यवस्था कर रखी है। परन्तु इस स्थिति को अगर पांच साल के अपने शासन से आप कंपेयर करें तो आपको खुद को पता लग जाएगा। यह बात माननीय सदस्य ने कही, 570 एएनएम भर्ती की तो की।

(डा. दिगम्बर सिंह)

जैसलमेर, बाड़मेर दो जिलों के लिए की, केवल दो जिलों के लिए। हमने ट्राइबल बैल्ट के लिए 1100 एडिशनल एएनएम्स भर्ती कीं। इसमें कोई गलत बात नहीं हे। हमने कितनी पीएचसी खोली, आपने कितनी पीएचसी खोली ...(व्यवधान)...

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** मंत्री महोदय, आप अपने स्थान से फर्माएं।

**डा. दिगम्बर सिंह:** हमने कितनी सीएचसी खोलीं, आपने कितनी सीएचसी खोलीं, यह सारा सबके सामने है।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** मैं तुलना करने नहीं आया हूं। यदि तुलना से काम चलता हो कि अशोक गहलोत ने काम नहीं किया, इसलिए हम काम नहीं करेंगे तो आपको मुबारक हो। मैं यह बात आपसे कह ही नहीं रहा हूं, जो वर्तमान में स्थिति है, जो ग्राउंड रियलिटी है मैं वह बता रहा हूं। यदि आप किसान की बात करते हैं, गांव की बात करते हैं, गरीब की बात करते हैं तो पूरी शालीनता से आप मेरी बात सुनिए। आपको लगे कि मेरी बात में तथ्य है तो आप व्यवस्था कीजिए और आपको लगे कि केवल पोलिटिक्स करनी है तो वह आपको मुबारक है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से मैं कहना चाहता हूं हमारे शिक्षा मंत्रीजी चले गये उन्होंने लास्ट भाषण में कहा था कि जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कालेज के अंदर स्टाफ की भर्ती कर दूंगा। आज भी वहां न्यूरो फिजिशियन और नेफ्रोलोजिस्ट की पोस्ट वेकेंट पड़ी है, आज भी वहां भर्ती नहीं हुई है। और तो और, कार्डियोलोजी में वहां केवल दो डाक्टर हैं, उसमें से एक डाक्टर को गृह मंत्रीजी के जिले में भेज दिया क्योंकि वहां कोर्डियो थोरेसिक की उदयपुर में परमिशन नहीं मिल रही थी तो अजमेर का आदमी वहां भेज दिया अजमेर की कार्डियोलोजी एक डाक्टर के भरोसे है और तीन एमओ के भरोसे है। यह स्थिति आपके डिपार्टमेंट की है। जबकि अगले महीने अजमेर में कैथ लैब लगने वाली है उस कैथ लैब में हर विधायक ने पैसा दिया है। वह कैथ लैब लग जाएगी और वहां स्टाफ नियुक्त नहीं करेंगे तो वह कैथ लैब लोहे के भाव बिकेगी। इसलिए बजाय काउंटर करने के आप बातें नोट करें और बातें नोट करके ...(व्यवधान)...

**डा. दिगम्बर सिंह:** मैं सारी बात आपकी नोट कर रहा हूं।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** इसके अलावा भी मैं आपको कहना चाहता था...(व्यवधान)...

**डा. दिगम्बर सिंह:** अगर आपको ध्यान हो तो आपके अजमेर मेडिकल कालेज की रिकोग्नाइजेशन भी आपके टाइम पर खतरे में थी। यह हमारी सरकार है जिसने रिकोग्नाइजेशन को बचाया है।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** नहीं, नहीं, हमारे टाइम नहीं थी, यह बात भी मैंने लास्ट बजट में उठायी थी। उसके बाद केवल आर्थोपेडिक्स में लगाया, आज भी वहां डिपार्टमेंट खाली पड़े हैं। आप वहां से रिपोर्ट मंगा लें। आपके हास्पिटल्स में एआरबी इंजेक्शन, जब कुत्ता खा जाता है वह इंजेक्शन अवेलेबल नहीं है और गरीब आदमी को 250 रुपये का इंजेक्शन लगाना पड़ता है। जब वह कम्पनी बंद हो गई...(व्यवधान)

**डा. दिगम्बर सिंह:** आप खुद जानते हैं, आप खुद क्वालीफाइड आदमी हैं, एआरबी क्यों अवेलेबल नहीं है, यह आप जानते हो मेरे खयाल से। यह मुझे बताना नहीं चाहिए।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** आप जरूरी नहीं है हर चीज का जवाब दें यहां पर। मैं कहता हूं एआरबी अवेलेबल नहीं है, नहीं मिल रहे हैं। तो जो रिलीफ सोसाइटी है वह रिलीफ सोसाइटी दूसरी जगह से परचेज करके गरीब को लगाए, मैं यह बात कह रहा हूं। और तो और अभी कुछ दिन पहले अख़बार में आया है, मैं बताता हूं आपको।

**एक माननीय सदस्य:** बजट पर बोलें, माननीय सदस्य।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** मैं बजट पर बोल रहा हूं क्योंकि हैल्थ का पैसा हम ही देते हैं। दवा को तरसे एड्स के मरीज। आप खुद डाक्टर हैं, यदि तीन दिन दवा नहीं मिलेगी एड्स के रोगी को, पूरा कोर्स उसका खतम हो जाएगा। यह काम मैंने नहीं किया है, यह काम भी एसएमएस का है, अजमेर का नहीं है।

तीन दिन तक दवाई नहीं मिली यह इसी महीने का है।

**डा. दिगम्बर सिंह:** माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एस.एम.एस. में एक भी दिन ऐसा नहीं आया जिस दिन एड्स की दवाई मौजूद नहीं थी, यह केवल अख़बार की है आप कोई तथ्यों की जानकारी करते तो ज्यादा अच्छा लगता।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** : आपके डा. जे.पी. ऋषि का बयान इसके अन्दर है कि हमें सूचना देर से मिली।

**श्री जयराम जाटव** (खैरथल): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कांग्रेस का समय पूरा हो गया।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): यह लिखा है इसके अन्दर।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज शिक्षा की बात कर रहा था कि गांवों में अधिकांश स्कूलें आज भी बिना अध्यापक के हैं। मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि गांवों की स्कूलों में अध्यापक लगाएं। आप यह भी मुझे कह देंगे कि अख़बार की बात है, यह बयान तो आपके मंत्रियों का ही है। यह पढ़िए, यह आपके मंत्रियों का ही है, जो सांवरलालजी ने कहा है कि स्कूलों में मास्टर नहीं हैं। सांवरलालजी यहां पर हैं नहीं। माननीय शिक्षा राज्य मंत्री देवनानी जी ने कहा है कि हमारे पीने का पानी नहीं मिलता। ये बयान मेरे नहीं हैं, ये बयान आपके मंत्रियों के हैं, यह बात तो मानें कि आपके मंत्री कह रहे हैं कि स्कूलों में अध्यापक नहीं हैं, आपके मंत्री कह रहे हैं कि पीने का पानी नहीं हैं। उसके बाद भी कहते हैं कि हमारा बजट बहुत बढ़िया है। हमने बहुत काम किया है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं मेरी बात समाप्त करने से पहले मेरी बात पूरी तो करूं कम से कम, यह देखिए, साल भर नहीं मिल ही किताब कैसे हो इम्तिहान? यह भी मार्च का समाचार है।

**श्री जयराम जाटव** (खैरथल): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो अतारांकित, तारांकित जो प्रश्न लगाये जाते हैं उसके कागजों के ऊपर फोटोस्टेट करा रखा है, कागजों का दुरुपयोग कर रहे हैं।

**श्री अशोक नागपाल** (सूरतगढ़): उपाध्यक्ष महोदय, हम भी नये हैं, हमें भी समय दिया जाए बोलने का।

**श्री जयराम जाटव** (खैरथल): राजस्थान विधान सभा के पैसे से जो फार्म खरीदे जाते हैं उसके ऊपर फोटोस्टेट कर रखी है।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): ये कागज मैंने एक्स्ट्रा रखे हैं। ये आपके यहां के नहीं हैं।

**श्री अशोक नागपाल** (सूरतगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमें भी बोलने का समय दिया जाए, हम टेल के काश्तकार हैं हमें समय ही नहीं दिया जाता, हम भी टेल के रहने वाले हैं, हमें भी समय दिया जाए।

**श्री जयराम जाटव** (खैरथल): कांग्रेस का समय पूरा हो गया, माननीय उपाध्यक्ष जी।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): माननीय अध्यक्ष जी, जो बात चल रही है।

**श्री अशोक नागपाल** (सूरतगढ़): पानी के हिसाब से टेल पर है, राजस्थान का सबसे आखिरी छोर है हमारा, हमें भी समय दिया जाए।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): सरकार की संवेदनशीलता की वह बात मैं उनको बता रहा हूं कि सरकार कितनी संवदेनशील है। इसमें यह देखिए कि अनुसूचित जाति, जनजाति का शिष्ट मण्डल मिलने आया, मुख्य मंत्री जी से, उसको अन्दर ले गये, मुख्य मंत्री जी उनसे नहीं मिली, उसके बाद भी संवेदनशील हैं ये आप यह देखिए, सब असत्य है।

**श्री वीरेन्द्र मीणा:** माननीय सदस्य, गलत बात बोल रहे हो आप।

**श्री हीरालाल** (निवाई): कौन कौन गये थे। एस.सी. के आदमी, उनके नाम बताओ?...(व्यवधान)

**श्री वीरेन्द्र मीणा:** सबसे मिली मुख्य मंत्री जी । ...(व्यवधान)

**श्री हीरालाल** (निवाई): कैसे नहीं मिली? असत्य बोल रहे हो।...(व्यवधान)

**एक माननीय सदस्य:** अनुसूचित जाति, जनजाति के ऊपर आंसू बहाते हो।

**श्री हीरालाल** (निवाई): सबसे मिलती हैं मुख्य मंत्री जी । ...(व्यवधान)...

**श्री जयराम जाटव** (खैरथल): उपाध्यक्ष महोदय, कांग्रेस का समय पूरा हो गया, हमारे सदस्यों को बुलवा दो। ...(व्यवधान)

**मोहम्मद माहिर आजाद** (नगर): यह गलत तरीका है। ...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): उपाध्यक्ष महोदय, आप यह देखिए कि पुष्कर की क्या स्थिति है। ...(व्यवधान)... और आप कहते हो कि सरकार बहुत काम कर रही है, मुझे समझ में नहीं आता कि ...(व्यवधान)...

**एक माननीय सदस्य:** सरकार ने अनुसूचित जाति, जनजाति के लिए जो तोहफा दिया...(व्यवधान)...

**श्री हीरालाल** (निवाई): घड़ियाली आंसू बहा रहे हो ? ...(व्यवधान)...

**एक माननीय सदस्य:** कांग्रेस राज में अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्र छात्राओं ने पढ़ना लिखना बन्द कर दिया, बी.एड. बन्द और जितने छात्र ओब्लाइज हो रहे थे...(व्यवधान)...

**श्री कनकमल कटारा:** उपाध्यक्ष महोदय, सरकार पर आरोप लगाना

अच्छा नहीं है, एस.सी., एस.टी. के लिए तो मुख्य मंत्री जी ने जितना किया है उतना किसी ने नहीं किया है जितना किया, उतना कभी किया नहीं। ...(व्यवधान) इस तरह से कहना, इतने वरिष्ठ सदस्य हैं।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): उपाध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे निवेदन है कि जितना समय जाया किया गया है, मैं पूरा बोलूंगा। ऐसे नहीं है। हम नये नये मेम्बर हैं और हम यह बात नहीं बोलेंगे तो बात चलेगी नहीं यह। ...(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, मैं बात करता हूं ...(व्यवधान)

**श्री हीरालाल** (निवाई): क्या किया कांग्रेस ने पाँच साल के राज में ? ...(व्यवधान)... जो आप एस.सी., एस.टी. की बात करते हो। इस सरकार ने तो एक लाख रुपये भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के लिए दिया, आरएएस के लिए 45 हजार रुपये दिया।

**एक माननीय सदस्य:** उपाध्यक्ष महोदय, आप समय व्यतीत कर रहे हैं, हमें भी बोलना है।

**श्री हीरालाल** (निवाई): क्या किया आपने एस.सी., एस.टी. के लिए जो आप बार बार एस.सी.,एस.टी. की बात करते हैं ? आपको कोई हक नहीं है। कोई हक नहीं है एस.सी., एस.टी. के लिए कहने का। मुख्य मंत्री जी के लिए, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गलतबयानी करते हैं। एस. सी. एस. टी. के लिए वह समर्पित भावना से काम कर रही हैं।

**श्री जयराम जाटव** (खैरथल): माननीय उपाध्यक्ष जी, कांग्रेस के सदस्य 12, 13 और 14 तक बोलते हैं, हमें कोई आपत्ति नहीं है। ...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): मैं मेरी बात नहीं बोल रहा हूं।

**श्री उपाध्यक्ष:** आप तो अपनी बात करो। ...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): बोलने दो मुझे, आप मेरा प्रोटेक्शन कीजिए, मैं तो बोलूंगा मेरी बात को। ...(व्यवधान)...

**श्री उपाध्यक्ष:** बोल रहे हैं आप।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): तो क्या बोलूं, मैं? बीच में बोल रहे हैं ये?...(व्यवधान)...

**श्री हीरालाल** (निवाई): बोलो, पर गलत मत बोलो आप।

**श्री जयराम जाटव** (खैरथल): आपका टाइम पूरा हो गया।

**श्री हीरालाल** (निवाई): बिलकुल सही बोलिए। ...(व्यवधान)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मिथ्या बयान कर रहे हैं, ये मिथ्या बयानी न करें। ...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): मैं आपको जो बात बोल रहा हूं यह सब टेबल कर देता हूं, आप जांच करा लो। मिथ्या होगी तो मैं आइंदा नहीं बोलूंगा। उपाध्यक्ष महोदय, एस. सी. एस. टी. आयोग ने राजस्थान सरकार से बैकलॉग की रिपोर्ट मांगी है। ...(व्यवधान)

**श्री हीरालाल** (निवाई): 45 साल कांग्रेस ने राज किया वह कहां है बैकलॉग आपके टाइम का ? ...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): आप रोकिये इनको। ...(व्यवधान)...

**श्री हीरालाल** (निवाई): विरोध को मुश्किल से 10 साल का टाइम मिला है।...(व्यवधान)

**श्री खुशवीर सिंह जोजावर:** आप कांग्रेस की बदौलत आज इस सदन में बैठे हैं।...(व्यवधान) अनुसूचित जाति जनजाति को आरक्षण देने वाली कांग्रेस ही है।...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): अब देखिए, स्थिति यह है, सुन लीजिए आप, मैं आपसे कह रहा था, उपाध्यक्ष महोदय, कि.. ...(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य।

**एक मानानीय सदस्य:** जो आज बोल रहे हो आप वह कांग्रेस की देन है।...(व्यवधान)

**श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल** (देसूरी): कांग्रेस ने हमको आरक्षण नहीं दिया है।...(व्यवधान)... हमको बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने दिया है, अपनी जानकारी दुरूस्त कर लें। ...(व्यवधान)

**श्री कनकमल कटारा:** पहले कभी चिन्ता नहीं हुई, ये सब माननीय सदस्य जान रहे हैं इसके बावजूद भी उसका बखान करने का मतलब क्या है इस सदन में?...(व्यवधान) यानी इस सब का मतलब है कि यहां सब ने इस राज में रहते हुए भी संघर्ष करते हुए बैकलॉग भरने की और शिक्षा विभाग में भी बैकलॉग भरने का काम किया है, यहां सब जान रहे हैं। ...(व्यवधान)

**श्री हीरालाल** (निवाई): 45 साल एस. सी. एस. टी. को चकमा देकर राज किया है आप लोगों ने। श्यामाप्रसाद मुखर्जी, वीर सावरकर जैसे नेताओं ने

(श्री हीरालाल)

आजादी की लड़ाई लड़ी और कांग्रेस कांग्रेस में करते हैं। डा. अम्बेडकर ने संविधान बनाया, अगर कांग्रेस कोई योग्य आदमी होता तो क्यों नहीं संविधान बनाया आपने?...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): उपाध्यक्ष महोदय, आप मुझे कह रहे हो, मुझे तो बोलने ही नहीं दे रहे हैं। आप मुझे ही मुझे कह रहे हो, उनको क्यों नहीं कह रहे हो? मैं कहां बोलूं मेरी बात को ? ...(व्यवधान)

**श्री उपाध्यक्ष:** कनक्लूड करें आप। ...(व्यवधान)

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): कैसे बोलूंगा मैं ? ऐसा अनुशासित यहां का सिपाही हूं मैं, किसी को डिस्टर्ब नहीं करता हूं। अपनी बात वह कहें, मेरी बात मैं कहूं। कैसे कहूं यह बताइए मुझे।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार के मंत्रियों को कहना चाहता हूं और विशेषकर दवे साहब से जो वन मंत्री हैं, वन मंत्री जी जिस दीन दयाल उपाध्याय के नाम पर आप गांव का विकास करना चाहते हैं, मेहरबानी करके उस दीन दयाल उपाध्याय की किताब-एकाध तो मानें बात, अपने मैम्बरों को पढ़ाएं। पढ़ें उसको तो पढ़ने के बाद पता पड़ेगा कि किस प्रकार से...(व्यवधान) आप बीच में मत बोलिए, आप बैठिये। ...(व्यवधान) उसको पढ़ने के बाद जो इनका वह सहकारिता मंत्री जी करते हैं, वह बात खतम हो जाएगी।

मैं आपको यह भी कहना चाहता हूं कि जिस प्रकार से इनके मंत्री लोग साम्प्रदायिकता भड़काते हैं वह इस राजस्थान के लिए, इस लोकतंत्र के लिए इस देश के लिए प्रतिकूल है। आप गोलवलकर की, बात करते हैं आप दीन दयाल उपाध्याय की और आचरण करते हैं आप दूसरा। इसलिए आप अपने आप के अन्दर झांकिये, मेहरबानी करके उनके नाम को बचाइए। मैं आपको और कहना चाहता हूं कि गांव को विकास के लिए जो काम केन्द्र सरकार ने किया।

**श्री उपाध्यक्ष:** आप कनक्लूड कीजिए।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती** (पुष्कर): हां, कर रहां हूं।, जो काम केन्द्र सरकार ने किया राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना के तहत राजस्थान के 6 जिले लिये, इसके लिए प्रधान मंत्री जी, यू.पी.ए. की चेयर पर्सन माननीय सोनिया गांधी जी और ग्रामीण विकास मंत्री का मैं आभार प्रकट करता हूं और सदन के

(डा. श्रीगोपाल बाहेती)

माध्यम से मैं यह मांग करता हूं कि उस गारंटी में लिया जाए, उस काम में लिया जाए। को ताकि राजस्थान के ग्रामीण विकास को गति मिल सके।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी मेरे साथी नाराज हो रहे थे अब मैं इनके कीर्तिमान की बात करता हूं। इस सरकार ने कीर्तिमान कायम किये हैं, उनकी बात नहीं करेंगे तो बात कैसे गलत होगी क्योंकि कीर्तिमान कायम किये हैं, वादाखिलाफी में पहले इन्होंने कहा कि अजमेर में खोलेंगे, एस्ट्रो टर्फ बनाएंगे, इन्होंने नहीं बनाया। इन्होंने कहा कि कर्जा माफ करेंगे किसान का, इन्होंने नहीं किया । ...(व्यवधान) दूसरा इनका कीर्तिमान है विकास अवरूद्ध करने में, तीसरा इनका साम्प्रदायिकता भड़काने में, सरकार का मंत्री 26 जनवरी को साम्प्रदायिकता का भाषण देवे, वह सरकार धन्यवाद की पात्र है। ...(व्यवधान) और चौथा इनका जो है सबसे बड़ा, वह भ्रष्टाचार। मेरे पहले माननीय वक्ताओं ने बात की सेज की ...(व्यवधान) मैं दो मिनट में भाषण समाप्त करता हूं।

सेज का विरोध नहीं है, विरोध इस बात का है कि सेज का विरोध इनकी सरकार के दो मंत्रियों नौ किया उसके बाद इनकी सरकार ने उन मंत्रियों की अनुपस्थिति में मीटिंग करके और एक मंत्री के डीसेंट नोट देने के बाद भी सेज का प्रस्ताव पास कर लिया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस सेज के अन्दर 3500 करोड़ रुपये का घपला है, आप चाहें तो सी बी आई से जांच करा लें। यह मामला ताज कोरिडोर से बड़ा है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूं...

**श्री वीरेन्द्र मीणा:** आपके पूर्व वित्त मंत्री जी सेज की प्रशंसा कर रहे थे, यह भी तो सुनो।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** ...जयपुर रोड के ऊपर इन्होंने जमीन ली, इनके आदमियों ने परचेज की किसानों से सस्ते भाव में। और जमीन परचेज करने के बाद सरकार ने एक्वायर की और जमीन एक्वायर करने के बाद आनन-फानन में आई जी रजिस्ट्रेशन से बिना किसी मीटिंग के उसकी डी एल सी बढ़वा दी जो अपने आप में एक इतिहास है। कभी यह नहीं होता है कि एक्वीजिशन होने के बाद डी एल सी रेट बढ़ती हो। वो इन्होंने बढ़ाई, इसकी जांच कराई जाए। मेरा कहने का यह आशय है कि सेज के अन्दर या तो मुख्य मंत्री जी गलत हैं या इनके दो मंत्री गलत हैं। या तो वो इस्तीफा दें या इनसे इस्तीफा लें। जो सरकार बात करती है आदर्श की, बात करती है दीनदयाल की,

बात करती है चरित्र की, बात करती है एकता की, वह सरकार यदि शासन करेगी तो राजस्थान का भला नहीं हो सकता। (समय समाप्ति सूचक घंटी) मैं आंकड़े पूरे लेकर आया था लेकिन आप बार-बार घंटी बजा रहे हैं...

**श्री उपाध्यक्ष:** कृपया समाप्त करें, माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, मैं दूसरे माननीय सदस्य का नाम पुकार रहा हूं।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** लेकिन मैं मेरी बात समाप्त करने से पहले यह जरूर कहना चाहूंगा कि जो वादाखिलाफी सरकार ने की किसानों का ऋण माफ करने की, गृह कर समाप्त करने की, अजमेर में....

**श्री उपाध्यक्ष:** कह दिया आपने।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** ... बीसलपुर का पानी यदि आप दूसरी जगह देते हो तो वहां पर चम्बल का पानी लाइये। बीसलपुर मूलत: अजमेर के लिए बना है वह आप सब जगह बांट रहे हैं। आप बांटिये लेकिन मैं कहता हूं, आप वहां चम्बल का पानी लाइये। पुष्कर के विकास के लिए, दरगाह के विकास के लिए डवलपमेंट बोर्ड फिर से बनाइये जिसके अध्यक्ष मुख्य मंत्री जी हैं। इस प्रकार से केवल आंकड़े दिखाकर आप किसान का भला नहीं कर सकते। मेरा आपसे यह भी निवेदन है कि हम जिस विधान सभा में बैठते हैं, वह विधान सभा हमारी बपौती नहीं है। वह मतदाता की जागीर है, हम तो उसके कस्टोडियन हैं। मैं तो कहता हूं कि विधान सभा का ए. सी. बन्द करके यदि किसान को बिजली दी जाए तो भी सौदा सस्ता है। किसान राजस्थान की आत्मा है, गांव का बच्चा पढ़ नहीं सकता, मेरा आपसे निवेदन है, माननीय मुख्य मंत्री जी, माननीय वित्त मंत्री जी और माननीय बिजली मंत्रीजी, से कि कम से कम आप दो महीने पूरे गांवों के अन्दर सिंगल फेस की बिजली पूरी रात दीजिये। गांव का किसान कोई ऊपर से पड़ा है ? किसान का बेटा पढ़ नहीं सकता? उसके भी पेपर वो ही आते हैं जो शहर के स्कूलों के बच्चों के आते हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि इस बजट पर आप पुनर्विचार करें।

**श्री उपाध्यक्ष:** अब आप समाप्त करें। श्री शंकर सिंह राजपुरोहित। मैंने नाम पुकार लिया है, माननीय सदस्य।

**डा. श्रीगोपाल बाहेती:** नहीं, मेरी अंतिम बात है, मैं कनक्लूड कर रहा हूं।

शहरी विकास की बात करने वाली सरकार ने शहरी विकास को ठप्प

(डा. श्रीगोपाल बाहेती)

कर दिया है। और तो और, इस सरकार ने 15 प्रतिशत यू आई टी और 30 प्रतिशत जे डी ए से मांगकर यह सिद्ध कर दिया है कि यह सरकार केवल और केवल जमीन बेचकर सरकार चलाएगी। आप देखिये, जो हश्र ए डी बी का अजमेर में हुआ है, जवाहर लाल नेहरू मिशन में करोड़ों रुपये राजस्थान को मिलेंगे जयपुर, अजमेर, पुष्कर के लिए, मेरा निवेदन यह है कि उसमें सावचेती बरतें। जो घपला ए डी बी के कामों में हुआ है इस सरकार के आने के बाद, सारे काम ठप्प हो गये। 121 करोड़ के बदले में केवल 71 करोड़ के काम हुए हैं और उसके बाद में आप बात कर रहे हैं। आपने पानी और लैण्ड टैक्स लगाकर जजिया कर की याद दिला दी। जहां राजस्थान के सेठ लोग गर्मियों में प्याऊ लगा रहे हैं वहां मुख्य मंत्री जी पानी पर टैक्स लगा रही हैं। जमीन पर टैक्स लगा रही हैं। यह आपकी जजिया कर है। (व्यवधान) तो मेरा आपस यह कहना है कि यह बजट...

**श्री उपाध्यक्षः** आप बार-बार रिपीट कर रहे हैं।

**डा. श्रीगोपाल बाहेतीः** गांव, गरीब, किसान, अबला, महिलाओं, अल्पसंख्यक, सब के विरोध में है। सरकार को अधिकार नहीं है कि ऐसा बजट दे। धन्यवाद। जय हिन्द।

**मोहम्मद माहिर आजादः** इनका तो आज एक्सीडेंट हो गया, आप तो परसों बोल लेना। आज तो रैस्ट की जरूरत है, डाक्टर ने कहा है कि अभी मत बोलिये, 2-3 दिन रैस्ट करके फिर बोल लेना।

**श्री उपाध्यक्षः** कम बोलेंगे।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहितः** कम बोलता हूं।

**डा. श्रीगोपाल बाहेतीः** माननीय मंत्री जी, रखूं क्या टेबल पर ?

**डा. दिगम्बर सिंहः** इनको आप अपने ब्रीफकेस में संभाल कर रख लीजिये, सनद रहेगी, याद रहेगा।

**डा. श्रीगोपाल बाहेतीः** आप कह रहे हो कि गलत है इसलिए कह रहा हूं।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित** (आहोर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज आपके माध्यम से मुख्य मंत्री महोदया के द्वारा जो बजट भाषण प्रस्तुत किया गया है उसके समर्थन में मैं मेरी बात, आज वास्तव में अस्वस्थ हूं लेकिन पूरी बात जितनी मैं कह पाऊंगा उतनी 2-4 बिन्दुओं में कर दूंगा। समय की कमी है उसकी पूर्ति मैं कर दूंगा। धन्यवाद।

मैं मेरी बात छत्रपति शिवाजी के कार्यकाल से प्रारम्भ करूंगा। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, छत्रपति शिवाजी महाराज के समय में एक महारानी को छत्रपति शिवाजी के सैनिक यह सोचकर कि छत्रपति शिवाजी महाराज खुश हो जाएंगे इसलिए यह तोहफा लेकर गये लेकिन शिवाजी महाराज ने कहा कि यह मेरी देवी है, यह मेरी मां है और उसको ससम्मान वापस भेजा। यह मैं कहना चाहूंगा इस सदन के माध्यम से कि यह है हमारा हिन्दू चिन्तन, जो यह कह रहे हैं कि 26 जनवरी के दिन एक मंत्री ने कहा, यह हमारा हिन्दू चिन्तन है।

**श्री खुशवीर सिंह जोजावर:** माननीय सदस्य, बादशाहों की महारानी नहीं हुआ करती थी, बेगम हुआ करती थी।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** आप मुगलों की भाषा में बेगम कहें, हम यह कहते हैं कि उनकी महारानी थी।

**श्री खुशवीर सिंह जोजावर:** महारानी कह कर इसको गलत मत करो।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह बात मूल रूप में इसलिए कहना चाहता हूं कि छत्रपति शिवाजी महाराज का राज चारों तरफ गूंजा था, इसका कारण यह है कि उस समय में महिलाओं का सम्मान हुआ था, उस समय में महिलाओं के आत्म विश्वास की रक्षा हुई थी। आज की मुख्य मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में अपना बजट महिला शक्ति को सशक्त करने के लिए पेश किया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से 2-3 काम जो बजट में मेरे विधान सभा क्षेत्र में हुए हैं उनकी बात कहूंगा। मैं और बातों में नहीं जाऊंगा लेकिन एक बात निश्चित रूप से कहूंगा, एक मूल मंत्र है, जानना चाहे तो जान ले सदन। एक बहुत बड़े अर्थशास्त्री, ज्योतिषाचार्य ने कहा है कि यह सरकार गई है सिफ पांच शब्दों के मंत्र के कारण और इस सरकार की वाह-वाही हुई है सिर्फ पांच शब्दों के मंत्र के कारण, थोड़ा सा फर्क है। अब वह मंत्र मैं बाद में बताऊंगा, आपकी जिज्ञासा जगे। (व्यवधान) बताना पड़ेगा ? बता दूं ? सदन की इच्छा है ? मैं वापस एक बात कहता हूं, जैसे मावली से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा था काली, सरस्वती, लक्ष्मी, त्रिवेणी, महापती का रूप जो इस सदन में देखा गया, चौथी देवी अगर कोई होती है तो वह सुख

(श्री शंकर सिंह राजपुरोहित)

सम्पदा और एक बहुत बढ़िया... (व्यवधान) माहौल खड़ा करती है मैं कांग्रेस के सदन के सदस्यों से भी कहना चाहूंगा, अगर आप चाहें तो चौथी देवी को भी इस चौथी लाइन में रख सकते हैं। (व्यवधान) नहीं, नहीं, मैंने यह थोड़े ही कहा है। मैंने तो यह कहा है कि ज्योतिषाचार्य, अर्थशास्त्री ने पांच शब्दों का मंत्र जो कहा, जिसके कारण से कांग्रेस की सरकार गई और जिसके कारण से वसुंधरा जी की सरकार की वाह-वाही हो रही है वो पांच शब्द हैं, बताऊ? बता देता हूं, 'खजाना खाली'। और जिन शब्दों के कारण, पांच शब्दों के कारण इस सरकार की वाह-वाही हो रही है वो शब्द हैं 'खजाना भरा'। इसके अन्दर पूरी दुनिया आ गई। यह है मंत्र। (व्यवधान) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अब ये इतनी सारी उपलब्धियां हैं बजट के माध्यम से, क्या गिनाएं, क्या नहीं गिनायें। वास्तव में 2006-07 का जो बजट पेश किया है... (व्यवधान) ममता जी पधारी हैं, ममता जी का मेरे पर आशीर्वाद है इसलिए आप चिंता मत करिये। ये मेरी बात को स्वीकार करती हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जैसी कि बात चली, इस बात को मानना पड़ेगा, कि किसी की बात पर आज इन्वैस्टमेंट करने वाले लोग या जैसे कोई बिजनस है, उसकी क्रेडिट बढ़ती है कि हमारे पास तो खूब है, हम खूब करेंगे। या हमारे पास कुछ नहीं है, कुछ नहीं कर पाएंगे। कंगाली का कटोरा लेकर गहलोतजी की सरकार दर-दर की ठोकरें जाती घूम रही थी लेकिन राजस्थान के मतदाता ने इनकी औकात बता दी। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, 2006-2007 की वार्षिक योजना का जो आकार बनाया, यह अपने आप में एक ऐतिहासिक कदम है 8500 करोड़ रुपये का और इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा।

आज महिलाओं की बात आई, वास्तव में यह स्टाम्प ड्यूटी वाला जो विषय है, यह एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक कदम है, वसुन्धरा जी का और उसके कारण पूरे राजस्थान के अन्दर मैक्सिमम प्रोपर्टी महिलाओं के नाम पर होने के बाद महिलाओं के आत्म-सम्मान की रक्षा हुई और महिलाओं को सशक्त बनने का मौका मिला, इसके लिए मैं वसुन्धराजी को बहुत बहुत धन्यवाद करना चाहूंगा। वार्षिक योजना का आकार बढ़ा है। 20 सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन से जैसाकि हमने बताया है, हम उत्तम हैं। अकाल राहत में कुशल प्रबन्धन में पिछले वर्ष इसमें कोई दो राय नहीं है कि कहीं पर भी किसी प्रकार की

शिकायत नहीं हुई। मैं पिछली सरकार के गुनाहों को दोहराना नहीं चाहता हूं लेकिन मुझे कहते हुए अफसोस होता है कि चोरियां करो लेकिन कुछ जगह तो होनी चाहिए। उस गरीब व्यक्ति का पेट काटकर तुम्हें क्या मिलेगा? अकाल राहत के गेहूं का घोटाला कर दिया और घोटाले मैंने कई बार गिनाये हैं। सिरोही में 11 घोटाले हैं, माननीय सदस्य की उपस्थिति में और उन्होंने उस घोटालेबाज को बचाने के लिए फोन किये। नाथद्वारा में घोटाले, बीकानेर में घोटाले, कहां घोटाले नहीं थे?

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** बीकानेर में कौनसा घोटाला हुआ, बताओ, बताओ? आपकी सरकार के हाथ में चूडियां हैं क्या?

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** अकाल राहत कार्यों के तीन केस, अकाल राहत के गेहूं घोटाले के तीन केस बीकानेर में भी हुए हैं।

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** हां तो उनके खिलाफ आपने क्या कार्यवाही की? क्या कार्यवाही की? फिर क्या कहना है आपको?

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** हमने कार्यवाही की, कार्यवाही कर दी हमने। हमने कहा है, आपकी शह है।

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** हमारी कोई शह नहीं है। पहले बात तो आपने की कि खजाना खाली, खजाना भरा, मैं उस पर बोला नहीं जान-बूझकर। कोई मंत्र-वंत्र आता नहीं आपको, मंत्र है क्या यह सब? मंत्र किसको कहते हैं? मंत्र की परिभाषा जानते हो क्या?

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** धन्यवाद, आपकी कृपा है। यह मंत्र है, मंत्र वह है जिस के कारण कोई चीज चली जाती है और जिस शब्द के कारण कोई चीज मिल जाती है, वह मंत्र है।

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** यह कोई मंत्र नहीं है। (व्यवधान)

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** उपाध्यक्ष महोदय, अब यह कहते हैं कि यह तो हम भी कर लेते। मारवाड़ी में एक कहावत है कि ''बुआजी के अगर मूंछे होती तो वह काकाजी कहलाती, वह बुआजी नहीं कही जाती''। यह हकीकत है। बुआजी के अगर मूंछें होती तो उनको काकाजी कहते है। वह बुआजी नहीं कहलाती। हम जब यह कह रहे हैं कि यह हमने किया तो ये कह रहे हैं कि यह हम भी कर सकते थे। सर्व शिक्षा का पैसा केन्द्र सरकार का है

(श्री शंकर सिंह राजपुरोहित)

लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूं कि सर्वशिक्षा में यह बजट का प्रावधान, यह जो विषय चालू किया वह अटल बिहारी वाजपेयीजी ने प्रारम्भ किया, और आपकी सरकार थी, अगर आप चाहते थे तो कर सकते थे। हमने तो शिक्षा का एक जाल फैला दिया। गांव-ढाणियों के अन्दर बैठा हुआ अभागा युवक, वह अभागा बालक जो शिक्षा से वंचित था, उसको शिक्षा जगत से जोड़कर आदरणीय वसुन्धराजी ने अपने एक बेटे के बराबर, एक मां के बराबर उनको प्यार देकर लिपटा शिक्षा के अन्दर गांव का भी मान-सम्मान वही है जो शहरों के अन्दर है। इस बार के बजट में हमने लिया है कि 16,000 राजीव गांधी पाठशालाओं को हम प्राइमरी में करेंगे, आप भी कर सकते थे, आपने नहीं किया इसलिए वहां गये। हम करेंगे, हमने किया है और हम रहेंगे। हमने तो पाँच शब्दों का मंत्र कर लिया जाप। हजारों-हजारों बार कर दिया है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, शिक्षा जगत के अन्दर इस बार जो बजट में एक ऐतिहासिक फैसला किया नौकरियों में लगाने के लिए 31,000 पदों पर, यह अपने आप में एक ऐतिहासिक कदम है। हम जब कहते हैं तो वह कहते हैं कि यह तो हम भी कर सकते थे। आप यह करते तो आपकी यह हालत नहीं होती। फिर मैं वह उदाहरण दोहराता हूं कि ''बुआजी के मूंछे होती तो वह काकाजी कहलाती? बुआजी क्यों कहलाती''? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कोई भी डिपार्टमेंट ऐसा नहीं है, अब विधवा और परित्यक्ता की बात करें। एक अभागिन युवती जो....

**श्री अमराराम** (धोद): राजपुरोहित साहब, बुआजी कमजोर होती है? बुआजी कमजोर होती तो फिर तो मुख्य मंत्री जी वैसे भी कमजोर है।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित**: विराजिये, विराजिये। आप तो वास्तव में बहुत सम्मान के लायक हैं। आपने इस देश के तंत्र को कमजोर किया। यह कम्युनिज्म ने पूरे सोवियत राष्ट्र के टुकड़े-टुकड़े कर डाले हैं और आप इस देश के टुकड़े-टुकड़े करने पर तुले हुए हो, इसलिए आप बोलने के अधिकारी नहीं हो।

विधवा और परित्यक्ता की बात है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक अभागिन युवती, जिस युवती का सब कुछ छीन लिया, उसका यह समाज अगर कुछ नहीं करे, उस को शिक्षा विभाग के जरिये नौकरी दिलवाकर वसुन्धराजी ने और तिवाड़ीजी ने बहुत बड़ा एक उपकार का काम किया है, इसके लिए वे बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र हैं। मिड-डे-मील कोई योजना है...

**श्री उपाध्यक्षः** माननीय सदस्य। आप कुछ बंशीलाल जी के लिए छोड़ दो। मैं बंशीलाल जी का नाम पुकार रहा हूं, थोड़ा उनके लिए छोड़ दो। (व्यवधान)

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहितः** आप मेरा सुन लो। देखिये, एक विभाग और है। अब सार्वजनिक निर्माण विभाग है, बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। यह पी.डब्ल्यू.डी. अपने आप में नम्बर एक, पूरे हिन्दुस्तान में इसको एक लेबल मिला हुआ है। इसके लिए पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री और वसुन्धराजी बहुत-बहुत धन्यवाद की पात्र हैं। जो ये सारे गिनाये हैं सब, इनकी बिलकुल तीन गुना रोड की है, वह सब साक्ष्य है। सबसे बड़ी बात है सारी कंट्री में हमारे यहां पर एचीवमेंट करने के लिए 1000 करोड़ की अन्तरराष्ट्रीय स्तर की रोड का बजट हमने किया है। यह भी अपने आप में ऐतिहासिक है। मंत्र और बताऊं, बताऊं?

**श्री उपाध्यक्षः** माननीय सदस्य, विराजिये।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहितः** माननीय उपाध्यक्ष महोदय, खाली एक बात और है। देखिये, मैंने यह कहा है कि हम व्यक्ति की सही भावनाओं के साथ खिलवाड़ नहीं करेंगे और हम कभी अपने स्वार्थों के लिए व्यक्तियों की होली नहीं जलाएंगे। लेकिन मुझे यह कहते हुए अफसोस होता है कि पिछले साल होली के समय सोजत के अन्दर साम्प्रदायिक दंगे हुए, पर होली विवाद था, एक जुलूस निकला था, उस पर पत्थरबाजी हुई। पत्थरबाजी करने वाले घर के अन्दर प्रतिपक्ष के नेता जाकर यह कहकर आये उनको, आप दंगा करवाओ। भड़काकर आये। यह हम नहीं होने देंगे, यह हमारा चिंतन नहीं कहता है, हमारा चिंतन कहता है कि जीओ और जीने दो। एकात्म मानववाद भी वही कह रहा है। कि हम एकात्म मानववाद को जानते हैं। मैं पढ़ा हूं, समझा हूं। हमने यह कहा है कि सभी सुखी रहें, जीओ और जीने दो।

**श्री उपाध्यक्षः** श्री बंशीलाल खटीक। माननीय सदस्य, समाप्त कीजिये। श्री बंशीलाल खटीक। हो गया, बहुत हो गया।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहितः** कानून व्यवस्था के मामले में कहना चाहता हूं, कि आतंकवादियों को पकड़ने में एक बहुत ऐतिहासिक काम किया। पिछले साल घीया मूर्ति कांड वगैरह थे, ये सब कांग्रेस सरकार के पाले पोसे हुए घीया मूर्ति कांड में करोड़ों रुपयों की, 300-300 करोड़ रुपयों की मूर्तियों को विदेशों में बेच दिया गया, हिन्दुस्तान की अस्मिता को बेच दिया गया। उनको कांग्रेस के लोगों ने शह दी। आज वसुन्धराजी की सरकार ने उनको सरे

(श्री शंकर सिंह राजपुरोहित)

आम सज़ा दी। उसके अन्दर काम करने वाले अधिकारियों को हमने प्रमोशन दिये, इसके लिए मैं गृह मंत्रीजी को बहुत बहुत धन्यवाद करता हूं।

मैं एक मुख्य बात और कहना चाहता हूं, सबसे बड़ी बात है। देखिये, आज जो युद्ध के शौर्य करता है, जो पुलिस विभाग में शौर्य करता है, उसे कितना सम्मान दिया, 10 गुना। यह अपने आपमें वसुन्धराजी ने ऐतिहासिक काम किया है। पुलिस पराक्रम के लिए...

परमवीर चक्र हेतु बाईस हजार की जगह दो लाख पच्चीस हजार ऐसे ही शौर्य पराक्रम के लिए, शूरवीर के लिए, अशोक चक्र के लिए दस गुना, ये अपने आप में एक ऐतिहासिक कदम है। ऐसा पचास वर्षों में किसी सरकार ने नहीं किया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अब खेलों के बारे में हमने जो चाहिए वो किया है, सारे स्टेडियम्स को अच्छा डेकोरेट करने के लिए भी किया है। आज मैं एक बात खाली जयपुर की एक समस्या...

**श्री उपाध्यक्ष:** माननीय सदस्य, नहीं, अब जयपुर की समस्या जयपुर वालों के लिए छोड़ दो।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** बजट के अन्दर जयपुर को भी संवारने और सजाने का वसुन्धरा जी ने जो सपना देखा है उस सपने को साकार करने के लिए हम सबकी जवाबदारी भी है। आज जयपुर में सबसे बड़ी समस्या उजागर हो रही है वो पार्किंग व्यवस्था है कि जयपुर एक परकोटे के अन्दर आया हुआ है उस परकोटे के अन्दर किस प्रकार से पार्किंग की व्यवस्था दी जाए जिससे आने वाले पर्यटक को किसी तरह की तकलीफ नहीं हो इसके मैं आपके माध्यम से वसुन्धरा जी से बहुत नम्र निवेदन करूंगा कि मेकेनाइज्ड पार्किंग जो शुरू की जाए एक चौथाई जगह में एक तीन चार स्टोरी की पार्किंग। मुम्बई में है मैं म्युनिसिपल कारपोरेशन में इस बोर्ड का मैंबर था और हमने एक मैकेनाइज्ड पार्किंग वहां पर डवलप की है। वो टैकनोलोजी यहां पर लाकर जयपुर को बहुत अच्छा, सुरक्षित बना सकते हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक विषय रह गया है खाली। मेरी सबसे बड़ी बात। पशुपालक अपने पीछे बच्चों को बांध कर हजारों हजारों मील अपने पशुओं को चराने जाते हैं, उनकी आज दिन तक किसी ने चिन्ता नहीं की उनके बच्चे अनपढ़ रहते हैं या ऐसे ही बस वो भेड़-बकरियां चराते-चराते बड़े होते हैं लेकिन पचास साल के इतिहास में पहली बार वसुन्धरा जी ने इस बात की चिन्ता की और पशुपालकों के लिए

(श्री शंकर सिंह राजपुरोहित)

आवासीय विद्यालय जो मेरे विधान सभा क्षेत्र में 6 करोड़ रुपये की लागत से पास किया। उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं, और हजारों-हजारों पशुपालकों की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

**श्री उपाध्यक्ष:** श्री बंशीलाल खटीक।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** एक शेर। एक मिनट में एक शेर कहता हूं।

**श्री उपाध्यक्ष:** बस, एक शेर नहीं।

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** उपाध्यक्ष महोदय, शेर तो राजस्थान से गायब हो गये हैं ये कहां से लाएंगे शेर?

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** शेर गायब नहीं हुए हैं, शेरों के रखवाले बैठे हैं यहां।

**श्री लक्ष्मीनारायण दवे:** कल्ला साहब, गायब हो गये वो आप लोगों के कारण। सब गायब नहीं हुए हैं, सरिस्का में हैं।

**(समय: 18.43 बजे)**

**(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)**

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** कांग्रेस के लोगों ने शेरों की तस्करी की और खाले बेचकर खा गये।

**डा. बुलाकीदास कल्ला:** हमारे कारण से क्यों गायब हो गये? हमारे खिलाफ कार्यवाही करें।

**श्री लक्ष्मीनारायण दवे:** आप लोगों की नीतियों के कारण, कल्ला साहब।

**श्री बंशीलाल खटीक:** कांग्रेस के समय में शिकारियों को शरण दी गई। शेर सब कांग्रेस के राज में चले गये।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा समय भी हो गया है और थोड़ा आश्वस्त भी हूं नहीं तो और कुछ बोलना था। एक शेर मैं सुना देता हूं 'थोक में या किश्त में...

**श्री अध्यक्ष:** शेर ऐसे थोड़े ही बोला जाता है शेर हो तो वैसे ही बोलिये। पढ़कर थोड़े ही बोला जाता है शेर कोई।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** जी हुकुम। अध्यक्ष महोदय, अभी-अभी बनाया है, 'थोक में या किश्त में संवारा करिये हुजूर पर मेरे नसीब को निखारा करिये हुजूर'। धन्यवाद। जय हिन्द।

**श्री अध्यक्ष:** हुजूर तो इधर कहां हैं? हुजूर तो उधर हैं।

**श्री शंकर सिंह राजपुरोहित:** मैं यह कह रहा था अध्यक्ष महोदय, हमारे काम को ये निखारेंगे । हम ये कह रहे हैं कि हमने काम किया है कुछ तो निखारो।

**श्री अध्यक्ष:** श्री बंशीलाल खटीक।

**श्री बंशीलाल खटीक** (राजसमन्द): माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा प्रस्तुत 2006-07 का बजट माननीय सदन के विचारार्थ व अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार में यशस्वी, तेजस्वी, ओजस्वी..

**श्री अध्यक्ष:** वर्चस्वी।

**श्री बंशीलाल खटीक:** और वर्चस्वी माननीय मुख्य मंत्री महोदया वसुन्धरा राजे जी सिंधिया द्वारा सदन में बहुत ही अच्छे तरीके से बजट पेश किया गया मैं उस बजट का पुरजोर हृदय से पूरे राजस्थान की जनता की ओर से समर्थन करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम माननीय मुख्य मंत्रीजी द्वारा राज्य के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए, गरीबों के हृदय की वेदना को पूरी तरह से समझते हुए, उनकी परिवर्तन यात्रा के समय गरीबों की प्रत्यक्ष स्थिति को देखते हुए गरीब को गणेश मान कर जो उनके सर्वांगीण विकास के लिए कृतसंकल्पित विचार हैं, बहुत ही सराहनीय हैं, प्रशंसनीय हैं। गत दो वर्षों में हमारी सरकार ने तेज गति से जो विकास किया है वास्तव में हमारा राजस्थान प्रगति की ओर अग्रसर हुआ है। राज्य में महिला द्वारा कृषि भूमि खरीदने पर मुद्रांक शुल्क 11 प्रतिशत से घटा कर 5.5 प्रतिशत किया गया जिससे महिला शक्ति में जागति आयी है, मेरे पूर्व के माननीय सदस्यों ने इस बात का इस सदन में विवरण दिया है । मेरा अन्त में नंबर आया है तो मैं इसको दुहराना भी चाहता हूं, क्योंकि महिला शक्ति के लिए इतना बड़ा बजट पेश किया है तो मैं भी पीछे नहीं रह सकता। महिलाओं के नाम पंजीयन की आठ हजार की संख्या थी वो बढ़कर चौंतीस हजार हो गयी ।

**श्री अध्यक्ष:** आप ये पेपर ऊपर ले लें। कागज को ऊपर ले सकते हैं आप आंकड़े बताने में कोई दिक्कत नहीं है।

**श्री बंशीलाल खटीक:** धन्यवाद। माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्य में महिलाओं के पंजीयन की आठ हजार की संख्या थी यह बढ़कर चौंतीस हजार हो गयी। बढ़ते-बढ़ते दो वर्षों में दो लाख से अधिक महिलाओं को भूमि का

(श्री बंशीलाल खटीक)

मालिकाना हक मिला है जिससे महिला सशक्तीकरण की ओर अग्रसर हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में हमारी सरकार ने जो अभूतपूर्व काम किये हैं वो आपके समक्ष हैं। प्राथमिक स्तर पर छात्राओं की एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ठहराव दर दोनों ही बढ़ी है । वर्ष 2000-01 में छात्राओं का प्रतिशत 32.60 था वह बढ़कर 2004-05 में 38.96 पहुंच गया है। पूर्व की कांग्रेस सरकार ने महिला शिक्षकों पर कोई ध्यान नहीं दिया परन्तु हमारी सरकार ने तीस प्रतिशत आरक्षण करके 2371 विधवाओं एवं 563 परित्यक्ताओं को नौकरी देकर अच्छा काम किया है। अभी वर्तमान में भी माननीय मुख्य मंत्री महोदया महिला सशक्तीकरण के लिए अग्रसर हैं। राजस्थान दो वर्ष से निरक्षरता का अभिशाप झेल रहा था पर हमारी सरकार के आते ही साक्षरता में प्रगति हुई है जिसने देश विदेश में नयी छाप छोड़ी है। विद्यालयों के क्रमोन्नयन और शिक्षकों की भर्ती में अलग ही कीर्तिमान स्थापित किया है। मेरे विधान सभा क्षेत्र की मैं बात करता हूं। मैं इस अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद प्रेषित करना चाहूंगा कि उन्होंने मेरे क्षेत्र में विद्यालय के क्षेत्र में बहुत ही बड़ी उपलब्धि ह हासिल की है। मैं इस अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने मेरे क्षेत्र में पांच सीनियर सैकण्डरी खोले और आठवीं और दसवीं की तो गिनती ही नहीं है। जितने दिये उसके लिए बहुत ही हम इस अवसर पर सम्मान करते हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे क्षेत्र में....

**श्री अध्यक्ष** : आपके पांच सीनियर सैकेण्डरी खोल दिये?

**श्री बंशीलाल खटीक :** दो वर्षों में सीनियर सैकेण्डरी खोले हैं। मेरे पर विशेष कृपा थी माननीय अध्यक्ष महोदय। और जितनी जरूरत थी उनके लिये भी मैंने आवेदन किया है । पांच सीनियर सैकण्डरी स्कूल दो वर्ष में, अभी नहीं। हमारा क्षेत्र पिछडा हुआ है तो उन्होंने विशेष कृपा की है ।

अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार ने पेयजल के बारे में हमारे क्षेत्र में किसी प्रकार की कमी नहीं रखी । जिस समय हम निवेदन करते उस समय पेयजल समस्या का निवारण हुआ है । पर एक निवेदन करना चाहता हूं, मेरे क्षेत्र में राजसमंद झील है जिसको पूरा देश जानता है, कि जब कभी अध्यापक छात्रों को सागर बताने के लिये ले जाते थे तो मेरी झील को बताते थे कि ऐसी बड़ी झील होती है। पर दुर्भाग्य है कि आज वह हमारी झील खाली है और

(श्री बंशीलाल खटीक)

उस झील के कारण हमारे क्षेत्र में पूरा जो काश्तकारी एरिया है, पूरा सूखा है । पेयजल का भी संकट है । मैं आपके माध्यम से माननीय पेयजल मंत्री जी को और सिंचाई मंत्री जी को निवेदन करता हूं कि मेरे क्षेत्र में कोई बड़ी योजना शुरू करें ताकि हमारे क्षेत्र में पेयजल का संकट नहीं हो ।

अध्यक्ष महोदय, स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में माननीय मुख्य मंत्री महोदया ने हमारे यहां जिला चिकित्सालय का उदघाटन किया और हमारे उन्होंने नई शुरूआत की। एक करोड़ की राशि से आर के मार्बल ने हमारे इस चिकित्सालय में सहयोग किया है और राजकीय सहयोग से भी हमारा एक विशाल चिकित्सालय बना है। अध्यक्ष महोदय, जिला चिकित्सालय होने के नाते पूरा ग्रामीण क्षेत्र उससे जुड़ा हुआ है । मेरा माननीय चिकित्सा मंत्रीजी से निवेदन है कि वहां 100 बैड पर्याप्त नहीं हैं, उस चिकित्सालय को 200 बैड का चिकित्सालय किया जाए और सभी डाक्टरों के रिक्त पदों को भरा जाए ताकि ग्रामीण अंचल का गरीब अपने जिला चिकित्सालय में इलाज करा सके । उनके अभाव में उदयपुर जाना हमारे वहां के ग्रामीण अंचल के गरीबों बस का रोग नहीं है। माननीय चिकित्सा मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि जल्दी से जल्दी 200 बैड का हमारा यह चिकित्सालय क्रमोन्नयन करें । अध्यक्ष महोदय, अभी-अभी हमारा चिकित्सालय जो पूर्व में पुरानी बिल्डिंग में था, वह एक नई बिल्डिंग में गया है । नगर की जो व्यवस्था है, नगर की आवश्यकता के लिये एक सिटी डिसपेंसरी खोली जाए । उसमें पर्याप्त मात्रा में डाक्टरों के पद भरे जाएं ताकि नगर की जनता को राहत मिल सके क्योंकि नगर के सेंटर में वही एक चिकित्सालय था। लोगों की उसी चिकित्सालय पर नजर है। उस चिकित्सालय के लिये हमारे नगर के लोगों ने निवेदन भी किया है कि हमारा जो नगर का चिकित्सालय है वह यथावत रहे और उसमें पर्याप्त मात्रा में सुविधा रहे ।

**श्री अध्यक्षः** दो मिनट में अपनी बात समाप्त करें ।

**श्री बंशीलाल खटीक :** अध्यक्ष महोदय, तीन दिन से इंतजार कर रहा था, अभी मेरा नंबर आया है। आज मुझे अंतिम ही समझें, और दूसरा वक्ता नहीं होगा । अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के समय भी मेरा लास्ट बोलना था और योग है कि आज भी लास्ट हूं। इसलिए आज मुझे अंतिम ही रहने दीजिए, मेरे दूसरे साथियों को 16 तारीख को मौका दें ।

**श्री अध्यक्ष:** आप तो वैसे ही बहुत बोल लेते है बीच-बीच में भी बोल लेते हैं ।

**श्री बंशीलाल खटीक :** अध्यक्ष महोदय, बजट पर तो मैं पहली बार ही बोल रहा हूं, आपकी कृपा रहे ।

अध्यक्ष महोदय, मैं जिस क्षेत्र से आता हूं वह एक जिला मुख्यालय है, जिला राजसमंद। राजसमंद जिला मुख्यालय पर जो सुविधा होनी चाहिये, जैसा मेडिकल कालेज होनी चाहिये, केन्द्रीय विद्यालय होना चाहिये, सैनिक विद्यालय एवं संस्कृत महाविद्यालय होना चाहिये, यह वहां की मूलभूत आवश्यकता है । मैं माननीय शिक्षा मंत्रीजी को निवेदन करना चाहता हूं कि वह ये सभी विद्यालय मेरे जिला मुख्यालय पर खोलें ताकि पूरे जिले को लाभ मिले, न कि मेरी विधान सभा को । मैं मेरी विधान सभा का ही नहीं कह रहा हूं, पूरे जिले की बात कर रहा हूं । अध्यक्ष महोदय, निर्धन का दुःख हमारी मुख्य मंत्रीजी ने समझा है और संगठित श्रमिकों के लिये सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराने की योजना शुरू की है । अध्यक्ष महोदय, थोडा ध्यान दें, अभी अनुसूचित जाति जनजाति के बारे में विपक्ष के मेरे माननीय सदस्य घडियाली आंसू बहा रहे थे। घडियाली आंसू बहा-बहा कर वे इतने घायल हो गये कि सदन से ही बाहर चले गये । अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर इनके दोगलेपने का बखान करता हूं जिन्होंने 45 वर्ष तक इस देश में राज किया ।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, आपको बोलते 11 मिनट हो गये हैं, 6.44 पर शुरू किया था । आपके मुख्य सचेतकजी ने मुझे यह कहा है कि सभी माननीय सदस्यों को 10 मिनट से अधिक समय नहीं दिया जाए ।

**श्री बंशीलाल खटीक:** अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे करबद्ध निवेदन करना चाहता हूं कि मेरी सब बात रह जाएगी । मुझे कल क्षेत्र में जाना है, मैं मेरी बात रखूंगा तभी मैं वहां कह पाऊंगा कि मैंने सदन में मेरी बात रखी । क्षमाप्रार्थी हूं, आप मुझे समय दें। करबद्ध निवेदन करता हूं, माननीय मुख्य सचेतकजी, ध्यान दें आप।

## सदन की कार्यवाही

### विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

**श्री अध्यक्ष:** सदन की अनुमति है क्या सदन का समय बढ़ाने के लिये?

(श्री अध्यक्ष)

**(स्वीकृत)**

लेकिन आपका समय नहीं बढेगा ।

**श्री बंशीलाल खटीक :** आप जैसा कहेंगी वैसा करूंगा, लेकिन मैं निवेदन कर रहा हूं कि बढ़ा दें ।

**श्री अध्यक्ष:** सदन का समय साढ़े सात बजे तक के लिये बढ़ाया जाता है ।

**श्री बंशीलाल खटीक:** इतने में मैं बोल लूंगा ।

**श्री अध्यक्ष:** अब आप अपनी बात दो मिनट में समाप्त कर दीजिए ताकि सात बजे किसी और को बुलाऊं । नहीं, आप ज्यादा मत चढ़ाओ उन्हें ।

## आय-व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

**श्री बंशीलाल खटीक:** अध्यक्ष महोदय, मुझे तो समय दें साढ़े सात बजे तक । अध्यक्ष महोदय, मैं बात कर रहा था कि इस देश में सबसे ज्यादा राज करने वाली पार्टी कौनसी है यह तो आप भी जानते हैं, हम भी जानते हैं और ये भी जानते हैं । 45 वर्ष तक इन लोगों ने...

**श्री अध्यक्ष:** आप जिक्र अपने बजट का करो, इनका मत करो ।

**श्री बंशीलाल खटीक:** अध्यक्ष महोदय, आप नहीं पधारे थे उससे पहले बहुत घड़ियाली आंसू बहा रहे थे एससी, एसटी पर मैं कह रहा हूं कि एससी, एसटी के लोगों के ऊपर, गरीब वर्ग के लोगों के ऊपर, झोपड़ी में रहने वाले लोगों के ऊपर इन्होंने लोक लुभावने नारे देकर, उनसे वोट बटोर बटोर कर इन्होंने राज हासिल किया है लेकिन उन गरीब लोगों को, एससी, एसटी, के लोगों को कुछ भी नहीं दिया है । आज भी स्थिति वही की वही है । वह झोंपड़ी में चिमनी जलाकर अपना गुजर-बसर कर रहा है । माननीय मुख्य मंत्री महोदया द्वारा हमारे क्षेत्र में सभी ढाणियों को बिजली से जोड़ने के लिये जो प्रयास किया गया है, आजादी के बाद उन झौपड़ियों में कोई दिया जला है तो वह माननीय मुख्य मंत्री महोदया वसुन्धरा राजे द्वारा जलाया गया है। ये कौनसे घड़ियाली आंसू बहाते हैं, इनको क्या अधिकार है जो एससी, एसटी के ऊपर इतना बौखलाते हैं?

अध्यक्ष महोदय, युवाओं में नशे की प्रवृत्ति सबसे ज्यादा फैलती जा रही है । नशा मुक्ति केन्द्र के लिये हमारी मुख्य मंत्री महोदया ने एक पहल की है कि जर्दा, तंबाकू इनके ऊपर ज्यादा कर बढाकर हमारे युवाओं को नशे की

श्री बंशीलाल खटीक)

लत से छुडाया जाए। इस सदन की ओर से मेरी ओर से उनका बहुत-बहुत आभारी हूं कि उन्होंने नशे की प्रवृत्ति को छुड़ाया है ।

**श्री अध्यक्ष:** अब धन्यवाद आपको ।

**श्री बंशीलाल खटीक:** अध्यक्ष महोदय, सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी को मैं कैसे भूल सकता हूं?

**श्री अध्यक्ष:** 7 बजे तक का आपका समय निश्चित था, अब आप गलत बात कर रहे हैं ।

**श्री बंशीलाल खटीक:** सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी का मैं बहुत-बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मेरे क्षेत्र में दिसम्बर, 2003 से आज तक 15 करोड़ 44 हजार 86 हजार की सड़कें दीं। कांग्रेस के लोगों की बात बता रहा हूं, पांच साल में खाली...

**श्री अध्यक्ष:** आप इनकी मत बताओ, आप तो अपनी बताओ।

**श्री बंशीलाल खटीक:** पांच साल में कहीं भी नामोनिशान नहीं है, इन्होंने ऐसी रोड्स बनाई हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं।

**श्री अध्यक्ष:** आपने 6.44 पर भाषण देना शुरू किया था, 16 मिनट हो गये। आप स्थान ग्रहण कीजिए।

**श्री बंशीलाल खटीक:** कृषि मंत्री के बारे में, गौशाला के बारे में निवेदन करना चाहता हूं, गाय के बारे में।

**श्री अध्यक्ष:** अब नहीं, बिलकुल नहीं, आप स्थान ग्रहण करिये।

**श्री बंशीलाल खटीक:** अध्यक्ष महोदय, गाय के बारे में, मेरा परम विषय है।

**श्री अध्यक्ष:** आप स्थान ग्रहण कीजिए।

**श्री बंशीलाल खटीक:** गाय के बारे में मेरा निवेदन सुन लें, इस पूरे सदन से मांग करता हूं कि सबसे ज्यादा यदि बजट देना है, वैसे आपने बहुत दिया है पर गाय को बचाना है तो सबसे ज्यादा बजट गायों पर बढ़ाएं।

**श्री अध्यक्ष:** अब आप विराज जाएं।

**श्री बंशीलाल खटीक:** इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पुरजोर समर्थन करता हूं जय हिन्द, वन्देमातरम।

**श्री अध्यक्ष:** श्री बृजकिशोर शर्मा।

**श्री बृजकिशोर शर्मा** (जयपुर ग्रामीण) : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मत्रीजी ने 8 तारीख को जो बजट पेश किया है 2006-07 का, मैं उसके विरोध में खड़ा हुआ हूं। जिस तरीके का नीरस बजट माननीय मुख्य मंत्रीजी ने प्रस्तुत किया उसका उदाहरण इससे बड़ा कुछ नहीं हो सकता है कि जब मुख्यमत्री जी बजट भाषण पढ़ रही थीं, बजट के प्रस्ताव पेश कर रही थीं, तब सत्ता पक्ष और उनके मंत्री सो रहे थे। उनमें जो सो रहे मंत्री थे...

**श्री अध्यक्ष:** मैं सबको देख रही थी, कोई नहीं सो रहा था।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** माननीय अध्यक्षजी, यह राजस्थान पत्रिका अख़बार में छपी हुई फोटो है, मैं टेबल करने को तैयार हूं। माननीय अध्यक्ष जी, उस समय सो रहे थे समाज कल्याण मंत्री मदन दिलावर और इंटर स्टेट ट्रिब्यूनल के इंजार्च विष्णु मोदी, माननीया सूर्यकांता व्यास, वीरूसिंह आदि, इस बजट की नीरसता की वजह से सो रहे थे। उसके बावजूद भी अगर आप कहती हैं...(व्यवधान)

**प्रो. बीरूसिंह राठौड़:** बिलकुल नहीं सो रहा था। (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** कब की फोटो है?

**श्री अशोक नागपाल:** चिंतन कर रहे थे कि बहुत अच्छा बजट आ रहा है। चिंतन किया जा रहा था न कि सो रहे थे। चिंतन कर रहे थे कि ऐसा बजट कभी भी नहीं आया।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** बृजकिशोरजी, वीरूसिंह प्रोफेसर हैं और यह चिंतन कर रहे थे, आप उसको सोना कह रहे हो।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** ऐसा ही चिंतन किया तो बहुत अच्छा है। मैं आपको और इनको दोनों को मुबारकबाद देता हूं। जैसा नीरस बजट माननीय मुख्य मंत्रीजी ने पेश किया उसकी शुरूआत भी नीरसता से ही हुई। इंटर वाटर स्टेट ट्रिब्यूनल के जो अध्यक्ष है और मसूदा से आने वाले हैं, उसी नीरसता के साथ उन्होंने बजट भाषण शुरू किया, प्रस्ताव पेश किया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में सत्तापक्ष के सदस्यों ने बहुत आंकड़ों का जाल दिया और आकड़ों के जाल की जगलरी पैदा की। चाहे कैपीटल आउटले हो चाहे बजट हो, इतना तो मेरे समझ की बात नहीं है लेकिन इन सब का जवाब मेरे दल के माननीय सदस्य विद्वान साथी आदरणीय प्रद्युम्न सिंहजी और संयम लोढ़ा ने जिस सहजता से दिया, इससे ज्यादा आपके बजट के बारे में और कोई नहीं हो सकता।

(श्री बृजकिशोर शर्मा)

बहुत अच्छा बनाया, इससे अच्छा तो बजट बन ही नहीं सकता। आप सुनो तब आपको पता लगेगा कि कितना अच्छा बजट बना है। बजट में जितनी घोषणाएं की गयी हैं, हम तो एक बात जानते हैं, अपने कहावत है कि क्या काम किया उसका अंत क्या अच्छा हुआ या बुरा हुआ? एक ही चीज आती है बजट में, महीने में कितने पैसे जेब में आये और कितने बचे। यही बजट होता है। इन्होंने क्या किया 12 महीनों में? पिछला बजट जो पेश किया उसमें क्या किया? इसकी कुछ मिसाल मैं आपको देना चाहता हूं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर के बारे में जो बजट घोषणाएं आपने पिछली बार की थीं, उसमें जयपुर की आपकी कौन कौनसी योजनाएं आज तक पूरी नहीं हुई है, मैं उसके बारे में निवेदन करना चाहता हूं। आमेर किले में 35 करोड़ रुपये की योजना 11 नवम्बर, 2005 को शुरू की थी आज तक वहां प्राधिकरण, गठन नहीं किया गया है। जलमहल विकास योजना जिसमें आपने 15 करोड़ 47 लाख रुपये मंजूर किये थे और मुख्य मंत्रीजी के पिछले बजट भाषण में था कि हम जून, 2005 को पूरा कर देंगे, आज तक पूरा नहीं हुई। यह मैं नहीं कह रहा, यह एक अख़बार के द्वारा 21 फरवरी, 2006 यानि बजट के सात दिन पहले जो आंकड़े प्रस्तुत किये गये हैं वह निवेदन कर रहा हूं।

इसी तरीके से जवाहर कला केन्द्र में काष्ठ म्यूजियम, कागजी काम, बस्सी मैट्रो डेयरी परियोजना-फिलहाल सरस के अलावा कोई रूचि नहीं। माननीय अध्यक्षजी, यहां पर आपके इलाके की बात कर रहा हूं, आपके झुन्झूनूं जिले में युद्ध, विधवा आवास गृह, राज्यपाल महोदया प्रतिभा पाटिल भूमि का अवलोकन भी कर चुकीं लेकिन नतीजा आज तक विफल।

मृदा परीक्षण प्रयोगशाला के भवन की रिपेयरिंग और आलटरेशन का कार्य हो चुका लेकिन नियुक्तियां आज तक भी नहीं हुई हैं, यह आपके जिले की बात बता रहा हूं। यहां पर स्टेट फाइनेंस मिनिस्टर बैठे हुए हैं, मैं भी उसी जिले का हूं और यह भी उसी जिले में रहते हैं, उस जिले की मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं कि समग्र सहकारी विकास कार्यक्रम अगले वर्ष शुरू हो जाएगा, 22 करोड़ का प्रस्ताव तैयार है, लेकिन वहां भी कुछ नहीं हो रहा।

माननीय संसदीय कार्य मंत्रीजी यहां पर बैठे हुए हैं, इनके जिले का भी मैं निवेदन करना चाहता हूं। जल विकास की चूरू-बिसाऊ परियोजना, अब तक लोगों का सपना। बजट में ड्रेनेज योजना की स्वीकृति भी जारी की गयी लेकिन आज तक कुछ नहीं हुआ है, यह क्रियान्वयन की बाट जोह रही है।

**श्री अध्यक्ष:** उसका काम तो प्रगति पर है।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** मालूम नहीं। आज तक तो हुई नहीं। साल का बजट खतम हो रहा है, पिछली घोषणएं की थीं।

**श्री अध्यक्ष:** प्रगति पर है।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** मृदा परीक्षण प्रयोगशाला फिलहाल कागजी खेल है। ये मैंने कुछ उदाहरण पेश किये हैं। माननीय मुख्य मंत्री जी ने जब हाउस टैक्स का मसला विधान सभा में उठाया था तब बड़े गर्व से यह बात कही थी कि मैंने जो चुनावी घोषणा पत्र था उसके 70 प्रतिशत काम पूरे कर दिये लेकिन राजस्थान के 32 जिलों में से 23 जिलों में पिछले साल जो बजट में घोषणाएं की थीं वे आज भी मुंह बांयें बाट जो रही हैं। 70 प्रतिशत नहीं 30 प्रतिशत काम हुआ है। (व्यवधान) राजस्थान की बात नहीं कर सकता?

**श्री अध्यक्ष:** नहीं, नहीं, आप करिये, समस्त राजस्थान की करिये। आप पूरे राजस्थान की करिये। भारत की भी कर लीजिए। आपको तो भारत की करने की भी अनुमति है।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** ये जो जिले हैं जिनके काम नहीं हुए, मैं उनके भी नाम गिना दूं आपको- गंगानगर, बाड़मेर, जोधपुर (व्यवधान) क्या काम नहीं हुआ, मेरे पास है। आप विराज जाइये।

**श्री अशोक नागपाल:** पिछले पांच साल का रिकार्ड निकाल लीजिए और इन दो सालों का रिकार्ड निकाल लीजिए, गंगानगर जिले में जितने विकास के कार्य हुए हैं आपके कार्यकाल में कभी भी नहीं हुए।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** बाड़मेर, जोधपुर, बूंदी, जयपुर, हनुमानगढ़, करौली... (व्यवधान), नागौर, पाली, कोटा, बारां, उदयपुर, जालौर... (व्यवधान)

**श्री मोहन लाल गुप्ता:** जयपुर में विकास के काम नहीं हुए क्या? आपके क्षेत्र में विकास के काम नहीं हुए, आप एम.एल.ए. हैं।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** आप विराज जाएं, आपका टाइम आ जाए तब बोलना। आप थे नहीं, आप अभी आये हो। मैं बोल चुका, जयपुर में क्या नहीं हुआ।

अजमेर, जयपुर, सीकर, दौसा, सिरोही, झुंझुनूं, अलवर टौंक, जैसलमेर और चूरू।

**श्री जयराम जाटव:** अलवर में बहुत काम हुए हैं।

**श्री हीरालाल:** बीसलपुर का पानी मिल गया तो गंगानगर की जमीनें हो गयीं टौंक की तो। बीसलपुर योजना टौंक की तो देन है।

**श्री अध्यक्ष:** आपने तो पूरे ही 32 जिले गिना दिये।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** मैंने 23 जिले गिनाये हैं। आप रिकार्ड उठाकर देख लीजिए, 23 जिले गिनाये हैं मैंने, 32 नहीं गिनाये हैं। 30 प्रतिशत जिलों में काम हुआ है, वे नहीं गिनाये हैं मैंने।

**श्री हीरालाल:** बीसलपुर की देन है जो जयपुर-अजमेर को पानी मिलता है।

**श्री तगाराम चौधरी:** अध्यक्ष महोदय, नाम लेते हो विकास का, बाड़मेर तो दुनिया के नक्शे पर आ गया, आपको तो पता ही नहीं है।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, कौन सा किस नक्शे पर आ गया, यह तो ये जानें। लेकिन 2005-06 में जो योजनाएं सरकार ने पिछले बजट में रखी थीं, उनका क्रियान्वयन नहीं हुआ है, ये मैं आपके आंकड़े पेश कर रहा हूं। आपकी सरकार ने पिछले साल 2005-06 में, वित्त मंत्रीजी यहां विराजमान हैं, स्टेट फाइनेंस मिनिस्टर साहब, केन्द्रीय बजट में गैस पर 4 प्रतिशत टैक्स कर दिया 28 तारीख को, 4 प्रतिशत टैक्स।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** केन्द्र ने पैट्रोल और डीजल पर क्या किया, वह भी बता दो।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** माननीय अध्यक्षजी, केन्द्रीय सरकार ने गैस पर 4 प्रतिशत टैक्स मेंडेटरी कर दिया, स्टेट को उस को लागू करना था। आज तक जो भी टैक्स प्रपोजल केन्द्रीय सरकार द्वारा पेश किये जाते हैं, उसी दिन से लागू हो जाते हैं। आज भी इस सरकार ने महिला सशक्तीकरण और महिलाओं के लिये क्या नहीं किया? गैस, घरेलू गैस सिर्फ महिलाओं के काम आती है, उसका 14.4 प्रतिशत टैक्स आज भी वसूल किया जा रहा है। ये बहुत महिलाओं का सशक्तीकरण करने वाले हैं, उनके लिये सोच का विषय है। मैं आपके माध्यम से, माननीय अध्यक्षजी, सरकार से, माननीय मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि इस विसंगति को जल्दी से जल्दी दूर किया जाए जिससे राजस्थान की जनता के ऊपर जो 10.4 प्रतिशत का भार एक्स्ट्रा लादा जा रहा है, उसको तुरन्त खतम किया जाए। जौहरी बाजार से आने वाले माननीय सदस्य मेरी इस बात की ताईद करेंगे कि डीजल पर है या पैट्रोल पर सैस है, यह भी सैस का काम आपकी सरकार ने किया है आज तक

हिन्दुस्तान में किसी भी स्टेट में 50 पैसे का सैस नहीं लगा, जो आपकी सरकार लगाकर....

**श्री अशोक नागपाल:** माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में जब केन्द्र में सरकार थी उस वक्त डीजल का रेट मात्र 20 रुपये था, आपकी सरकार केन्द्र में आने के बाद आज 35 रुपये लीटर डीजल हो गया, किसानों के साथ घोर अन्याय इससे बड़ा और क्या हो सकता है?

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** आपके उस समय क्या रेट थी और अब क्या रेट है, मैंने इसका जिक्र नहीं किया।

**श्री अशोक नागपाल:** आप गैस की बात कर रहे हैं तो हम पेट्रोल-डीजल की बात कर रहे हैं।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** मैंने जिक्र इस बात का किया है कि 28 फरवरी, 2006 को केन्द्रीय बजट में घरेलू गैस पर 4 प्रतिशत टैक्स हो जाने के बावजूद राजस्थान की सरकार आज तक 14.4 प्रतिशत टैक्स वसूल कर रही है। आपकी सरकार इस टैक्स को कम करना चाहती है या नहीं, कृपया स्पष्टीकरण दें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये कुछ आंकड़े मैं और प्रस्तुत करना चाहता हूं। बजट की बहुत बातें की जा रही थीं, बजट में जो घोषणाएं पिछले साल हुईं उन घोषणाओं पर कितना-कितना पैसा खर्च हुआ, मैं इस पर भी कुछ निवेदन करना चाहता हूं । बजट आबंटित किया गया, आज 11 मार्च है, कुल 20 दिन इस साल में बचे हैं। आपने कुल कितना पैसा खर्च किया है, इस पर कुछ बातें निवेदन करना चाहता हूं। कृषि एवं एलाइड सेवाओं पर 41 प्रतिशत यानि 59 प्रतिशत, आपका आज तक भी बचा हुआ है। उद्योग पर 44 प्रतिशत, हार्टिकल्चर पर 20 प्रतिशत, भू-जल पर 30 प्रतिशत, गंग-कैनाल पर 42 प्रतिशत, भू-जल विभाग पर 36 प्रतिशत, इन्दिरा गांधी नहर परियोजना पर 40 प्रतिशत, पर्यावरण पर 20 प्रतिशत, साक्षरता एवं सतत् शिक्षा पर 12 प्रतिशत और पुलिस प्रशासन पर 7 प्रतिशत।

**श्री मदन राठौड़:** आपकी पूरी बातें समझ में नहीं आ रही हैं।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** आपके तो आएंगी भी नहीं, क्योंकि आपकी अपर स्टोरी टू-लैट है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं और निवेदन करना चाहता हूं, माननीय शिक्षा मंत्रीजी बैठे हुए हैं, शिक्षा मंत्रीजी शायद मेरी बात का जवाब देंगे, कि मुख्य मंत्रीजी ने 16 हजार राजीव गांधी प्राथमिक शालाओं को क्रमोन्नत किया है या नाम बदला है, प्राथमिक शालाओं में बदला है। मैं रुपयों की बात नहीं करना चाहता हूं, रुपयों की बात तो बाद में करुंगा, लेकिन मैं सिर्फ यह बात निवेदन करना चाहता हूं, मंत्रीजी, प्राथमिक शाला और राजीव गांधी पाठशाला दोनों ही पांचवीं तक हैं, तो क्या इससे यह नहीं झलकता है कि आप राजीव गांधी का नाम हटाना चाहते हैं? यदि नहीं हटाना चाहते हैं तो आप इसमें साफ कहकर आइये कि इन शालाओं का नाम राजीव गांधी प्राथमिक शाला होगा, तब तो हमारी समझ में आ गयी। अदरवाइज तो इसका मतलब सीधा-साफ है कि आप राजीव गांधी के नाम को हटाना चाहते हैं।

**श्री अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, आपको 18 मिनट हो गये हैं बोलते हुए।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** आप इजाजत देंगे तो मैं बोलूंगा, नहीं देंगे तो मैं बैठ जाऊंगा।

**श्री अध्यक्ष:** आप कृपया दो मिनट में अपनी बात समाप्त कर दें।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** जो हुकुम ।

**श्री कालीचरण सर्राफ:** प्राथमिक शालाओं का नाम तो राजीव गांधी पाठशाला करें, और मिडिल स्कूलों का क्या करें, सैकण्डरी का क्या करें, उनका भी नाम बता दें।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** चलिये, कोई बात नहीं, मैं उस पर ही आ जाता हूं। (व्यवधान) माननीय अध्यक्षजी, मुझे बोलने दें।

**श्री अध्यक्ष:** शान्त रहें।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** माननीय अध्यक्षजी, अभी जौहरी बाजार से आने वाले माननीय सदस्य सैकण्डरी स्कूल पर बात कर रहे थे, मैं शिक्षा मंत्रीजी को और मुख्य मंत्रीजी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि 5 हजार प्राइमरी स्कूलों को क्रमोन्नत कर मिडिल स्कूल बनाया जा रहा है। लेकिन माननीय शिक्षा मंत्रीजी, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, इस साल तो आपने 5 हजार मिडिल स्कूल खोल दिये, उन 5 हजार मिडिल स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र जब हायर सैकण्डरी और सैकण्डरी स्कूल में जाएंगे तो उसके लिये आपने क्या व्यवस्था की है?

(श्री बृजकिशोर शर्मा)

पांच हजार स्कूल इसलिए खोल दिये आपने, क्रमोन्नत कर दिये कि दिल्ली से पैसा आ रहा है। आपके पास खर्च करने को पैसा हो और आप सैकण्डरी और हायर सैकण्डरी स्कूल भी अगर खोलते तो हम आपको मुबारकबाद देते और आपसे अब प्रार्थना करते, निवेदन करते कि आप अब भी सैकण्डरी और हायर सैकण्डरी स्कूल कुछ खोलने की घोषणा कर दें तो बच्चों का भला हो जाएगा। खास तौर से ज्यादा भी नहीं करें तो महिला सशक्तिकरण के साल में कम से कम हम बच्चियों के सौ-एक सैकण्डरी और सौ-एक हायर सैकण्डरी स्कूल खोल दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी।

**श्री अध्यक्ष:** बस आप समाप्त करिये।

**श्री बृजकिशोर शर्मा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, उसका बहुत-बहुत धन्यवाद । जय हिन्द ।

**श्री अध्यक्ष:** श्रीमती राजकुमारी शर्मा।

**श्रीमती राजकुमारी शर्मा** (सीकर): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। तीन दिन के उपरान्त, संगम में बैठी हूं त्रिवेणी के और आज संध्याकाल के समय मेरा नम्बर आया है तो मैं इसमें नहाना जरूर चाहूंगी।

**श्री अध्यक्ष:** बिलकुल नहाओ आप।

**श्रीमती राजकुमारी शर्मा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, संध्या भजन के समय तीनों देवियों को नमस्कार।

अध्यक्ष महोदय, विधान सभा में दिनांक 8 मार्च को वर्ष 2006-07 का बजट माननीय मुख्य मंत्री साहिबा ने रखा, यह इतना प्रशंसनीय है, कि हमारे प्रतिपक्ष के जो माननीय सदस्य हैं, उसका उल्लेख करते हैं बार-बार जब अटल बिहारी वाजपेयीजी विराजमान थे और आपकी सरकार थी, विपक्ष वालों की, तब उन्होंने कोई भी चीज के लिए इनको ऐसे नहीं कहा कि यह नहीं देंगे, वह नहीं देंगे। उन्होंने बिना भेदभाव के अपने पुत्रों के जैसे रखकर। और हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने बेटों के जैसे रखकर उनको दिया, जिसका हम उपयोग करते हैं। बजट के समय भी हम आपस में मिलकर काम करेंगे। फिर भी उनके बात कुछ समझ में नहीं आती है। (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** लोग बोलते हैं और चले जाते हैं। ... (व्यवधान)

**श्रीमती राजकुमारी शर्मा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, पन्नाधाय जैसी योजना बनाकर माननीय मुख्य मंत्री साहिबा ने जो बी.पी.एल. परिवारों को एक

(श्रीमती राजकुमारी शर्मा)

तोहफा दिया है, इसकी मैं बहुत सराहना करती हूं। बजट में उन्होंने महिलाओं के लिए, बच्चियां पढ़ने के बाद कृषि के क्षेत्र में आगे आएं, उनको पढ़ाने के लिये पैसे दिये हैं पर हमारी जो बच्चियां हैं, हमारी जो बेटियां हैं इसमें आना कम चाहती है। माननीय चिकित्सा मंत्री हैं उन्होंने भी हमारे क्षेत्र में इतने काम किये हैं, पूरे राजस्थान में ए.एन.एम. की भर्ती की है। डाक्टरों की भर्ती की है। मेरे सीकर में भी, यह शायद 55वां साल होगा, 57वां होगा, माननीय अध्यक्ष महोदय, क्षमा चाहूंगी, आप तो बहुत पुराने हो, आपको पता है, आज तक इतना गंदा था मेरे सीकर का हास्पिटल, उसको दो करोड़ रुपये देकर उन्होंने इतना काम करवाया है, ट्रोमा यूनिट जैसी चीज दी। यह राष्ट्रीय राज मार्ग पर है, उसमें उन्होंने बहुत बढ़ोतरी की है, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

माननीय शिक्षा मंत्रीजी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करूंगी कि उन्होंने मेरे गांव में हायर सैकण्डरी स्कूल दी, और सैकण्डरी स्कूले। आजकल प्रत्येक वर्ग ढाणी में बस गया है, जहां 40 बच्चे थे, ढाणी-ढाणी में इतनी स्कूलें खोली हैं, तो मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूं। ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** सीकर उनका घर है, खोल दी है तो क्या बड़ी बात है ? (व्यवधान)

**श्रीमती राजकुमारी शर्मा:** माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहती हूं कि सीकर में एक महिला कालेज दिया है। माननीय शिक्षा मंत्रीजी मैं बताना चाहूंगी कि जो स्कूल, एक प्राइवेट संस्था चलाती है, उसमें न क्रमोन्नत करके जो नये नाम उनके पास आये हैं, उनको दिया जाए तो मैं उनका हृदय धन्यवाद से करती हूं।

सार्वजनिक निर्माण मंत्री, उन्होंने हमारे शाकम्भरी माता का एक परिक्रमा मार्ग है, कितने ही करोड़ रुपये देकर और पत्थरों को काट कर ... (व्यवधान) मेरे यहां पर पहली बार रोड बन रही है। आजादी के 57 साल बाद में मेरे यहां पर रोड बन रही है। वहां के लोग उछल-कूद रहे हैं कि हम लोग परिक्रमा करते हैं, परिक्रमा मार्ग पर जाएंगे। तो उनका बहुत-बहुत धन्यवाद कर रहे हैं इसलिए मैं हमारे सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी को भी धन्यवाद देना चाहूंगी। अध्यक्षजी, मैं एक बात कहना चाहूंगी कि राजीव गांधी पाठशालाओं को हमारे शिक्षा मंत्रीजी क्रमोन्नत कर रहे हैं। प्रतिपक्ष के माननीय सदस्य कह रहे थे कि जो देव लोक हो गये हैं उनका नाम मत लीजिए। उनका नाम मत

(श्रीमती राजकुमारी शर्मा)

लीजिए, इसलिए शिक्षा मंत्रीजी ने सोचा कि उनका नाम नहीं लेकर उनको संकुल में परिवर्तन कर देते हैं। इसलिए उन्होंने यह परिवर्तन किया है। हमारे एक पंचामृत अभियान लागू किया गया है। वंचित दूरस्थ गांवों को दूर-दूर छोटी -छोटी ढाणियों में सेवाएं नहीं पहुंचती थीं वहां के लिए उन्होंने यह बहुत अच्छा काम किया है।

एक जो विकलांग बच्चों को नियुक्ति देने के लिए माननीय मुख्य मंत्री साहिबा ने घोषणा की है, मैं उनकी हृदय से बहुत-बहुत सराहना करती हूं। उन्होंने विधवा महिलाओं को, पचास वर्ष की महिला थी। उसको भी नौकरी दी है। हरेक महिला कहती है कि आपकी मुख्य मंत्रीजी तो वास्तव में वात्सल्य की मूर्ति हैं कि उन्होंने महिलाओं की यह तो बात सुनी। मैं तो मुख्य मंत्रीजी को यह निवेदन करना चाहूंगी आपके माध्यम से कि महिला जिसके कितने भी पुत्र हों और विधवा हो गयी है, चाहे वह दसवीं पास हो, चाहे पाचवीं हो, उनको सबको नौकरी दें। आप उनसे मेरा निवेदन कर देना।

पर्यटन में भी उन्होंने हमारे बहुत अच्छे काम किये। पर्यटन में भी जो कला-संस्कृति विभाग है, उसको बहुत बढ़ावा दिया है। उद्योगों में जो छोटे-छोटे जैसे अगरबत्ती के थे, चरखा चलाते थे, उनको भी उन्होंने बढ़ावा दिया है। इसलिए मैं उद्योग मंत्री और माननीय मुख्य मंत्रीजी को निवेदन करते हुए बताना चाहूंगी कि बजट तो इतना अच्छा है। गौ-माता को समर्पित हमारे राजसमन्द से आने वाले माननीय सदस्य चले गये होंगे, उन्होंने गौ माता के लिए समर्पित भावना से कहा था। मैं भी उनकी बातों का पुरजोर समर्थन करती हूं कि गौ माता हमारे देश की एक ऐसी मां है हमारे महाराष्ट्र में कहते हैं कि - खाते गाय गबड़से डांडा, भरून देत दूध दही हाण्डा। खाती तो हैं घास, भूसा और देती हैं दूध जैसा अमृत। उससे पांच चीज निकलती हैं। पांच गव्य। ऐसी मां का आज कहीं-कहीं कटना, कहीं-कहीं डंडे खाना, यह हिन्दू धर्म की प्रकृति नहीं है इसीलिए ओले बरस रहे हैं। गाय माता को जो डंडे पड़ते हैं वह कृष्ण भगवान सहन नहीं कर सकते इसलिए ओले रूपी डंडे अपने ऊपर पड़ रहे हैं। गौ माता के जो डंडे पड़ रहे हैं वह प्रत्येक हिन्दू के ऊपर डंडे पड़ रहे हैं प्रत्येक भारतीय नागरिक के ऊपर डंडे पड़ रहे हैं इसलिए गौ-शाला ज्यादा खोली जाए । चाहे किसी के भी सहयोग से खोली जाएं या अपनी सरकार के सहयोग से । एक मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगी कि जितने अपने चारागाह, जोहड़ थे, पहले तो उन चारागाहों में गायें चरने जाती थीं, आजकल कोई गाय चरने नहीं जाती है तो वहां गौशाला बना देनी चाहिए। हमारी चारागाह जमीन पर स्कूलें खोल दी गयी हैं, राजीव

गांधी पाठशालाएं खोल दी गयी हैं। जहां बचा है, चारागाह उनको गौ शाला में परिवर्तित कर दिया जाए तो मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करूंगी।

एक हमारे माननीय सदस्य जो नगर से आने वाले हैं उन्होंने कहा था मरी जबान से उन्होंने धमकी दी थी, कि आपकी मुख्य मंत्री साहिबा ने यह मिड-डे मील चलाया है, गर्म भोजन का, तो उन्हें गर्म दूध पिलाते। गर्म दूध तो

**(समय-समाप्ति-सूचक-घंटी)**

चालीस साल जब मुख्य मंत्री साहिबा का हो जाएगा तो गर्म दूध तो क्या गर्म रबड़ी के मालपुए भी खिलाएंगे। लेकिन पांच साल तक घूघरी खा-खाकर उनके पेट इतने खराब हो गये हैं कि ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** समाप्त करिये।

**श्रीमती राजकुमारी शर्मा:** इसलिए माननीय मुख्य मंत्रीजी ने इनको मिड-डे मील में गर्म खाना देने के लिए कहा है। मैं नगर से आने वाले माननीय सदस्य को बताना चाहती हूं, उन्होंने कहा था कि हवा में उड़ जाए ... (व्यवधान)

**श्री अध्यक्ष:** समाप्त करें, सदन का समय खतम हो रहा है, अब आप समाप्त करें।

**श्रीमती राजकुमारी शर्मा:** मैं एक शेर कहना चाहूंगी

हम उन पत्त में नहीं जो हवाओं में उड़ जाएंगे।
न रहबर में इतना दम जो हमें राहों में लूट पाएंगे
बातों से बात करना हमारी आदत में नहीं।
क्या चीज हैं हम वो करके दिखाएंगे।
हम इतना काम करके दिखाएंगे कि वह देखते रह जाएंगे।...(व्यवधान)

**श्री बंशीलाल खटीक** (राजसमन्द): माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीकृष्ण बाल्मीकि को राज्य सभा का सदस्य बनाया है और एस.सी., एस.टी. में एक नया संदेश दिया है। एक हरिजन को राज्य सभा का सदस्य बनाया है, यह करना चाहिये। यह क्या करते हैं ? पहली बार भारतीय जनता पार्टी की तरफ से राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया।

**श्री अध्यक्ष:** मैं सदन के सभी माननीय सदस्यों को इस रंगों और ठिठोली के

(श्री अध्यक्ष)

हमारे त्यौंहार पर, होली के त्यौंहार पर सबको बहुत-बहुत बधाई देती हूं। राजस्थान की जनता को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई देती हूं।

सदन की बैठक गुरुवार दिनांक 16 मार्च, 2006 के 11.00 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

**(तदनन्तर सदन की बैठक 19.31 बजे 16 मार्च, 2006 के 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई)**